भूमिका

उस सच्चिदानन्द ईश्वर को धन्यवाद है, जिसने मनुष्यों के कल्याणार्थ रोगों को दूर करने के लिये अपनी अपूर्व रचना से वैद्यक विद्या को प्रकट किया। इस विद्या की उत्पत्ति इस भाँति है कि जब देवता और दैत्यों ने समुद्र-मंथन किया, तो धन्वन्तरिजी महाराज दो घड़ोंको हाथमें लेकर समुद्रसे उत्पन्न हुए, जो चौदह रत्नोंमें से एक रत्न गिने जाते हैं। इनका माहात्म्य इस विद्या में बहुत है, इनके अतिरिक्त इस सिद्ध और अपूर्वविद्या के जाननेवाले बहुत से सामर्थ्यवान् वैद्य प्राचीनकाल से अब तक उत्पन्न होते आये हैं, उनका वर्णन कहाँ तक किया जावे।

यूनानियों के ऐतिहासिक प्राचीन ग्रंथों में लिखा है कि 'तिब' में मुख्य अफलातून हुए हैं अर्थात् उन्हीं से इस विद्या का प्रचार हुआ। इसके उपरांत बहुत से बुद्धिमान् हकीम हुए, जिनका आज तक डंका बज रहा है।

इन दोनों विद्याओं के देखने से भली भाँति सूचित होता है कि इनमें एक ही प्रकार, वही निदान, वही औषध, पर कुछ थोड़ा अन्तर है, वह मतांतर व देशान्तर का कारण है, और दोनों विद्यायें मनुष्यों के लिये, जो लिखने के प्रमाण पर चलते जावें जीवन-मूल हैं।

यह परमोत्तम पुस्तक 'इलाजुल्गुरबा भाषा' जिसका नाम अनुवादक ने 'चिकित्सा-कलिका' रक्खा है, फारसी-भाषा में थी, जिसको हकीम असगरअली साहब ने, मौलवी मुहम्मद यूसुफअली साहबकी प्रेरणा से उर्दू में अनुवादित किया और वह अनुवाद यंत्रालय के व्यय से हुआ। इसमें मुख्य करके नीचे लिखी हुई बातें और ग्रंथों से विशेष महत्त्व की हैं।

जो इलाज सैकड़ों रुपयों के खर्च करने से होता है, वह इस पुस्तक के द्वारा थोड़े ही में हो जाता है अर्थात् और ग्रंथों की औषधों में, सैकड़ों रुपये के खर्च करने से वह लाभ

न हो, और इसमें कौड़ियों के खर्च से फायदा दिखाई दे, इसीलिये यह गरीब और अमीर सबके लिये गुणदायक है और बीमारियों की पहिचान और उनके निदान तो इस तरह लिखे गये हैं, जो थोड़ा भी लिखा-पढ़ा हो, समझ सकता है और दूसरे की दवा कर सकता है, इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अभ्यास द्वारा वैद्य हो सकता है।

इस प्रकार 'उर्दू' में इस पुस्तक की बड़ी चर्चा हुई, तो वैद्यों, या यों कहना चाहिये सब लोगों की इच्छा हुई कि यदि यह विचित्र और सिद्ध पुस्तक नागरी अक्षरों में अनुवाद करके छापी जावे, तो सबके लिये लाभकारी और उपकारी हो, अतएव 'अवध-समाचार' के संपादक तथा नवलकिशोर-प्रेस के प्रोप्राइटर मुंशी नवलकिशोरजी सी. आई. ई. ने आज्ञा दी कि इस पुस्तक का नागरी भाषा में अनुवाद हो, तो इस आधीन ने इसका प्रत्यक्षर प्रथम ठेठ भाषा में वैद्यक की रीति से अनुवाद कर दिया। श्रेष्ठ जन जहाँ भूल पावें, क्षमा करके सुधार लें।

तथा पुस्तक के अन्त में सब प्रकार की तौलों का विस्तार भी लिख दिया गया है जिससे कि पाठकों को किसी प्रकार का भ्रम न पड़े।

अन्त में ईश्वर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे उपकारी, सदाचारी, धर्म-व्रत-धारी, गुण-ग्राहक, गुणि-जन-सुखदायक, श्रीमन्मुंशी नवलकिशोर साहब की आयु, आरोग्य, प्रताप और धन की वृद्धि करें और चारों ओर यश छाया रहे और यह पुस्तक पढ़ने-पढ़ानेवालों और रोगियों को कल्याण-दायक तथा गुण-दायक हो, और हाथों हाथ बिककर, फिर छापने का अवसर मिले।

यह ग्रंथ अनुवादित यंत्रालय के व्यय से हुआ है, इसलिये कोई इसके छापने का विचार न करे।

काशमीरी पं० प्यारेलाल शर्मा रुग्गू.

इलाजुलगुरबा भाषा का सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कुचों के रोग का यत्न, लेप	१३१	पक्काशय में दूध और रुधिर के जमने का यत्न और लक्षण	१४७
मेदे अर्थात् पक्काशय का यत्न	१३२	स्वभाव जो कोइला और मिट्टी खाने की इच्छा करने का यत्न	१४८
सोंठ की जवारिश	१३३	जी के मतलाने और उबकाई आने का यत्न	१४८
मीठे और खट्टे ऊद का पाक	१३३	कालीमिरच की गोली	१५०
कुन्दर का पाक	१३३	कलेजे के रोगों का यत्न इस्तस्का अर्थात् जलंधर	१५०
सादे आमले का पाक	१३३	यरकां अर्थात् कमलवायु का यत्न	१५६
सादी अजवायन का पाक	१३४	नाक में टपकाने की औषधि	१५६
सादी कुलींजन का पाक	१३४	तिल्ली अर्थात् तिल्ली की सख़्ती का यत्न	१५८
कलौंजी का पाक	१३४	अफतैमून की सिकंजबीन	१५८
मस्तगी का पाक	१३५	तुरबुद की गोली	१५९
वज का पाक	१३५	सँभालू की टिकिया	१५९
पुदाने की माजून	१३५	चमगादर की गोली	१५९
अनीसून का पाक	१३५	एलवे की गोली	१६०
लोहे के मैल का पाक	१३५	फराश के पत्तों का शरबत	१६३
बड़ा इतरीफल	१३५	आंतों के रोग और अतीसार .... का यत्न	१६३
नोन की गोली	१३६	नरकचूर की जवारिश	१६३
सनाय की गोली	१३६	बरों का चूर्ण	१६९
सुहागे की गोलियाँ	१३६	जहीर का यत्न	१७२
नोन की गोली	१३८	कूलंज का यत्न	१७७
[illegible]ाल हरताल का रस	१४०	पेट के कीड़ों का यत्न	१८२
वे[illegible] अंजीर का तेल	१४०	कांच के निकल आने की औषधि	१८५
सोये का तेल	१४०	बवासीर का यत्न	१८६
नकछिकनी का तेल	१४१	कालीजीरी का चूर्ण	१८९
शुण्ठ्यादि चूर्ण	१४१	अखरोट का चूर्ण	१८९
अनारदाने का चूर्ण	१४२	हुलहुल का चूर्ण	१८९
भोजन के पाचन का चूर्ण	१४२		
पान का अरक	१४२		
बालछड़ का शरबत	१४३		
नाजबो का शरबत	१४३		
विसूचिका अर्थात् हैजे का यत्न	१४४		
हिचकी का यत्न	१४५		
कुन्दर की टिकिया	१४६		
प्यास की अधिकता का यत्न	१४६		

इलाजुलगुरबा भाषा।

प्रकृति के विषय में।

वह बातें जो प्रकृति से सम्बन्ध रखती हैं वह सात हैं। उनमें से एक तत्त्व है। वह चार हैं अग्नि गर्म और खुश्क है; वायु गर्म व तर है; पानी ठंढा व तर है; खाक सर्द व खुश्क है; दूसरे के नवप्रकार हैं—चार विषम गर्म सर्द, तर, खुश्क और चार संयुक्त गर्म खुश्क; गर्म तर, सर्द, व खुश्क, सर्द व तर नवाँ मोतदिल अर्थात् मध्यम, वह दो प्रकार का है मोतदिल हकीकी और गैरहकीकी मोतदिल हकीकी का कोई शरीर नहीं तीसरे दोष और वह चार हैं। एक रक्त है; जो गर्म व तर है। उत्तमोत्तम रुधिर लालरंग का मीठा व बिना दुर्गन्धि का होता है। जो इन गुणोंसे बदलजावे वह ठीक नहीं। दूसरा पित्त जो गर्म व खुश्क है। उत्तमोत्तम पित्त लालजर्दी लिये तेज मजा है और गैरतबई चार हैं:—मर्रासफरा, सफराय मुही, सफराय कराती, और सफराय जगारी। मर्रासफरा वह कि बाजे हिस्से पित्त के जलकर बाकी हिस्सों में मिलजायँ और रंग उसका गँदने के सदृश होता है। उसकी उत्पत्ति पक्काशय में है। सफराय

जगारी वह है जो बिल्कुल जलजाय और रंगत उसकी जंगार कीसी होती है। वह विष के तुल्य है। उसकी उत्पत्ति कलेजे से होती है। तीसरा, कफ जो ठण्ढा व तर है। उत्तमोत्तम कफ वह है, जो रुधिर होजावे और कफ गरतबई स्वाद के कारण होगा या कवाम की राह से पतला है उसको माइ कहते हैं व गाढ़ा उसको जस्सी और गच के सदृश वा अन्य अन्य कवाम कि बाजे भाग उसके पतले हों और बाज़े गाढ़े, उसको मखाती बोलते हैं। चौथा दोष सौदा वह सर्द और खुश्क है। निर्मल सौदा रुधिर का तलछट है। उसका काला रंग खटाई लिये और सौदाय गैरतबई (अर्थात् न्यूनाधिक्य) हर दोष के जल जाने से उत्पन्न होता है। यहाँ तक कि जो सौदा जलजावे और हरदोष का जलना उसके कवाम के गाढ़े होने को कहते हैं और दोष का न्यूनाधिक्य उस दोष के न्यूनाधिक्य के जल जाने से है। लाभ दोषों की उत्पत्ति द्वितीय बेर के पाचन से होती है। पाचनशक्ति चार हैं:—प्रथम पाचनशक्ति पक्काशय में उसके रस को कैलूस कहते हैं। उसका फोग विष्ठा है। दूसरी पाचनशक्ति कलेजे में इस प्रकार से कि भोजन का रस महीन रगों से जो हृदय और पक्काशय में है हृदय में आकर पचता है, उसके रसको कैमूस कहते हैं। उसका फोग मूत्र है। तीसरा हजम अरूक अर्थात् रगें हैं। चौथा पचने का रस जोड़ों में है। इन दोनों पाचनशक्ति का फोग पसीना और मैल होकर बालों के छिद्रों के द्वारा और कुछ नाक कान आदि से दूर होता है। चौथे जोड़ हैं, उनके दो प्रकार हैं, अलग अलग और मिले हुए। अलग जोड़ों से हड्डियां, यह शरीर की मूल हैं। यह सब दोसौ अड़तालीस हैं। दूसरे कुर्री तीसरे पट्ठे वह दो प्रकार के हैं—एक ब्रह्माण्ड से उगे हैं, उनके सात जोड़ हैं, जोड़ों की प्रेरणा उन्हीं से है। दूसरे हराममगज से उगे हैं। वह इकतीस और एक फर्द है सिवाय गर्दन के सम्पूर्ण

जोड़ों की प्रेरणा उनसे सम्बन्ध रखती है। चौथे अजला अर्थात् अद्ला वे कुल पांचसौ उन्नीस हैं। पाँचवें ताँत इन दोनों का लाभ कि जोड़ों को हिलाते हैं। छठे रुबात वह भी महीन पट्ठे हैं। वह जोड़ों को बाँधतेहैं; सातवें शराईन अर्थात् हिलानेवाली रगें जो मन से उगी हैं और वह सब रगें सिवाय शिरियान वरीदी के दो तह हैं। उनमें यह गुण है कि जीव को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाती हैं और दह अर्थात् स्थिर रगें कलेजे की पीठ से उगी हैं और सब ओर वह शिरियानवरीदी के सिवाय दो तह हैं वह सम्पूर्ण शरीर में रुधिर पहुँचाती हैं। नवें झिल्ली कि वह जोड़ों की रक्षा करती है। यह सब जोड़ वीर्य से उत्पन्न होते हैं। दशवाँ मांस वह गाढ़े रुधिर से उत्पन्न होता है और चरबी रुधिर के पतले पानी से उत्पन्न है और सफेद मांस जिससे मनुष्य मोटा होता है मेद और मज्जा से संयुक्त है। ग्यारहवें त्वचा और बाल और नाखून बाजे हकीमों ने इनको जोड़ गिना है और बाजों ने मल और आजायरईस जिनसे मनुष्य का जीवन है तीन हैं:—मन, ब्रह्माण्ड, कलेजा और जिनके कारण मनुष्यत्व रहे चार हैं। ऊपर वर्णन किये हुए तीन जोड़ोंमें चौथी लिंगेन्द्रिय है। पाँचवें प्राकृतिक विषयों में प्राण हैं वे प्राण एक उत्तम धुवें के सदृश हैं कि—दोषों की उत्तमता से उत्पन्न होते हैं। प्राण तीन प्रकार के हैं—रूह हैवानी जो मन में है; रूह नफ़्सानी जिसका स्थान ब्रह्माण्ड है और रूह तबई जिसका स्थान हृदय है। छठे मानसी विषय में बलहै और वह तीन प्रकारका है:—एक कुव्वत हैवाली जो मन में है; दूसरे कुव्वत नफ़्सानी, जो ब्रह्माण्ड में है; तीसरे कुव्वत तबई जो हृदय में है कुव्वत नफ़्सानी भी दो प्रकारकी है मदरका अर्थात् मालूम करनेवाली और हिलानेवाली। प्रगट में पांच हैं सुनना १ देखना २ स्पर्श करना ३ चखना ४ सूँघना ५ और अप्रगट भी पाँच हैं खयाल, वहम, विचार, स्मरण और क्रोध।

अवस्था विचार ।

अवस्था चार हैं:—एक बढ़नेवाली, जो तीस वर्ष पर्यन्त है; दूसरी जवानी, जो पैंतीस वर्ष पर्यन्त है और बाजे चालीस वर्ष तक बताते हैं। इस अवस्था में विशेष करके पित्त की प्रबलता रहती है। तीसरी अवस्था अधेड़ जो साठ वर्ष पर्यन्त है। इस अवस्था में शीतका अधिकार रहता है। चौथी अवस्था बुढ़ापा, यह साठ वर्ष से आयुके पूर्ण होने पर्यन्तहै। इस आयु में शीत तरीके साथ प्रकृति पर वेग करताहै और स्त्री नपुंसक की प्रकृति गर्द मर्द के मुवाफिक होती है।

सते जरूरिये (छः आवश्यक वस्तुओं का वर्णन)

प्राणों के लिए ये जरूरी चीजें हैं उनमें से एक वायु है। उत्तमोत्तम वायु वह है जिसमें बुखार और धुवाँ मिला न हो। वायु हर ऋतु में बदलती रहती है। ऋतु चार हैं—सैफ, खरीफ, सर्मा और रबीअ हकीमों के विचार से खरीफ और रबीअ का समय डेढ़ डेढ़ महीने का होता है और सैफ अर्थात गरमी और शीत अर्थात सरदी के साढ़े चार २ महीने होते हैं रबीअ में वायु का गुण गर्मतर, गरमी में गर्म खुश्क खरीफ में सर्द खुश्क और जाड़े में सर्दतर होता है। हिंदुस्तान में तीन ऋतु होती हैं, गर्मी, बरसात और जाड़ा। इन तीनों ऋतुओं का समय चार चार महीने का है। गर्मी फाल्गुन से शुरू होती है और चैत, वैशाख ज्येष्ठ पर्यन्त रहती है। यद्यपि गर्मी का प्रारम्भ फाल्गुन से है; परन्तु रात्रि से प्रभात पर्यन्त सर्दी रहती है और दिन को दोपहर के वक्त गर्मी होती है। इस महीने में सरदी और गरमी से बचना चाहिये; ताकि शरीर पीड़ा आदि से रक्षित रहे। गर्मी में थोड़ा भोजन करना चाहिये। इस ऋतु में, गर्मी के कारण, ठण्ढा जल बहुत पिया जाता है जिससे पाचनशक्ति निर्बल हो जाती है। इस ऋतुमें ठंढी चीजों का सेवन और ठण्ढे मकानों में रहना चाहिये।

बरसात का प्रारम्भ आषाढ़ से और श्रावण, भादों तथा कुवार तक रहता है। बरसात की दशा गर्मी और सर्दी इन दो ऋतुओं से भिन्न होतीहै। जब जल बरसता है तो पवन शीतल और जब नहीं बरसता तो गर्म हो जाती है। यह ऋतु जल वायु के विरुद्ध होने और सर्दी गर्मी के कारण मनुष्य-शरीर के लिये अच्छी नहीं है।

जाड़े का प्रारम्भ कार्तिक से और अगहन, पूस तथा माघ तक रहता है। शीत ऋतु में पाचनशक्ति बलवती होती है। भीतर गर्मी रहती है। इस ऋतु में अधिक भोजन करने से कुछ हर्ज नहीं होता और परिश्रम करना गुणकारी है। पाचनशक्ति के लिये यह ऋतु सम्पूर्ण ऋतुओं से उत्तम है। गर्मी के प्रारम्भ होते ही बहुधा रोग उत्पन्न होते हैं। और जब तक वायु ऋतु के अनुकूल न होजावे शान्त नहीं होते।

दूसरा सता जरूरिया खाना पीना है।

जिस भोजन से पतला रुधिर उत्पन्न हो, उस भोजन को लतीफ़ (श्रेष्ठ) कहते हैं और जिस भोजन से गाढ़ा रुधिर पैदा हो उसको कसीफ़ (नेष्ट) कहते हैं। जिस भोजन से उत्तम रुधिर उत्पन्न हो, वह भोजन महमूदउल्कमूस है, और जिससे नष्ट पैदा हो वह रसउल्कैमूस। जिससे बहुत रुधिर प्राप्त हो वह कसीरुल्गिजा कहलाता है। नहीं तो कलीलुल्गिजा जानना चाहिये। आरोग्यता के रक्षक को उचित है कि दो दिन में तीन बार भोजन करने का अभ्यास डाले। यानी एक दिन सुबह और शाम दो वक्त, और दूसरे दिन दोपहर में दिन को भोजन करे और सच्ची भूख विना न खावे। भोजन अच्छी तरह चबावे ताकि जल्दी पचजावे और जब दो तीन ग्रास की क्षुधा शेष रहे छोड़ दे, ताकि पचने के समय अफरा और बोझ पक्वाशय में न हो। आरोग्यता में उपाधि करने के वास्ते भोजन की आधिक्यता से अधिक कोई खराब नहीं,

इसीकारण हकीम लिखते हैं कि बहुत से शरीर के रोग पेट भरे रहने से उत्पन्न होते हैं। जब तक भोजन पच न जावे तब तक जोड़ों का हिलाना जैसे मैथुन, परिश्रम और दौड़ना बुरा है। यदि चिकना भोजन अधिक खाया हो तो उसकी दुरुस्ती नमकीन चीज से करे और जो खट्टी चीज खाई हो तो उसकी दुरुस्ती मीठी चीज से करे। गाढ़ी और उत्तम वस्तु जमा हो तो पहिले उत्तम चीज खावे और सच्ची भूख में अवश्य भोजन करे। न खाने से दुष्ट मल पक्वाशय में गिरते हैं। मनुष्य के वास्ते उत्तमोत्तम भोजन गेहूं की रोटी और हलवान का मांस है। यह भोजन नहीं किन्तु यह भोजन और औषध दोनों का काम देता है।

अन्न का विषय।

मनुष्य के लिये उत्तम अन्न गेहूँ है क्योंकि पाचनशक्ति अधिक रखता है और गर्मी तथा सर्दी में सम है। इसके उपरांत खाने के लिए चावल भी उत्तम हैं। जितने सुगन्धवाले, महीन, पकाने पर लम्बे हों और साबित रहें वही उत्तम होते हैं। चावल गर्मी और सर्दी में समान, परन्तु दूसरे दरजे में खुश्क हैं। बाजे हिन्दुओं के विचार से ठंढा है और मुख्य करके गर्म स्वभाव में गर्मी और ठंढे स्वभाव में सर्दी पैदा करता है। लाल और गुदे चावल पाचनशक्ति में कम हैं और कब्ज अधिक करते हैं। गेहूं की भूसी में पकाने से चावल की दुरुस्ती हो जाती है। इसके उपरांत मूंग है, यह ठंढा और कुछ खुश्क है। शीघ्र पचता है और अफरा नहीं करता इसीलिये बहुत से वैद्य इसको रोगों में खाने को देते हैं। उपरान्त चना, यह गर्म है; छिलका उसका तर है। उसमें पाचनशक्ति अधिक और बलदायक है, परन्तु उदर में वायु पैदा करता है। उसके उपरान्त जौ ठंढा, खुश्क, हलका, अफरा का करनेवाला और काबिज है। पुराने जौ जिसको एक वर्ष बीता हो अच्छे होते हैं मसूर और अरहर इन सबमें मसूर कुछ खुश्क, ठंढा और

उसका छिलका अरहर से गर्म है। अरहर गर्म, खुश्क और कई वैद्यों के विचारसे मसूरके समान है और अफरा मसूर से अधिक रखताहै। यह दोनों बुरे दोषपैदा करते हैं और उड़द सर्द और तर है, साथ ही देर में पचता है। उसके दुरुस्त करनेवाली सोंठ और हींगहै। अरहर और मसूर से पाचनशक्ति अधिक रखता है। यदि कब्ज न करे और पच जावे तो अपनी लस से दूध और वीर्य पैदा करता है। बाजरा ठंढा खुश्क, काबिज और पाचनशक्ति कम रखता है और खून को पैदा करता है। इसी कारण मुख में दाने पैदा करता है और खुश्की और प्यास अधिक लगाता है। इसी कारण हिन्दू लोग इसको गर्म कहते हैं। दुरुस्त करनेवाला इसका दूध है जुवार सफेद और गुन्दी अफरा कम करती है और खाने में अच्छी है परन्तु बद्धकोष्ठ-कारक है। मोठ को हिन्दू गर्म और खुश्क जानते हैं, अफरा करती है। बुरे दोषों को उत्पन्न करनेवाली और देर में पचती है। मटर अफरा करनेवाला, उपद्रवी, दोष का पैदा करने-वाला और अतीसार का कारण है। देहातियों का अन्न काकुन, मेडुवा, सावां और कोदों हैं। मेडुवा और काकुन, सावां और कोदों से उत्तम हैं। यह तीनों ठण्ढे खुश्क बद्धकोष्ठ करनेवाले और हल्के हैं। इनका दुरुस्त करनेवाला घी है।

खमीरी रोटी जो खट्टी न हो तो सादी रोटी से उत्तम है और जल्दी पचती है, परन्तु सादी रोटी से अफरा अधिक करती है और सादी रोटी खमीरी से देर में पचती है। मैदे की रोटी बहुत भारी होती है और वह रोटी जिसमें भूसी अधिक हो हल्की होती है। उससे सुद्दा नहीं पड़ता है। गर्म रोटी खाना कोष्ठ की तरी को खुश्क करता है। ठण्ढी रोटी कोष्ठ को तर करती है और जो रोटी कि सर्दी और गर्मी में समान है उसका खाना उत्तम है। सूखी रोटी खुश्की करने-वाली और देर में पचती है। बाजरे और जुवार की रोटी

इसकी खुश्क और कब्ज करनेवाली और कोठ को हानिकर है, जौ की रोटी बादी से शीघ्र पचती है; परन्तु इसकी खुश्क और अफरा करती है। जानना चाहिये कि उत्तम भोजन मनुष्य के लिये मांस है। पैगम्बर साहब के वचन के अनुकूल लोक परलोक का सुन्दर भोजन मांस है। परदार जानवरों का मांस चौपायों के मांस से हलका है। परदार जानवरों में मुरगा, तीतर बटेर, हंस, लवा, चिड़िया, सञ्जक का मांस उत्तम है। चौपायों में बकरी, भेड़, मेढ़ा, हरिण विशेष करके इनके बच्चों का मांस उत्तम है। परन्तु हरिण के मांस में गरमी अधिक है। ऊँट ऐसे बड़े जानवरों का मांस मोटा है क्योंकि जितना पशु बड़ा और मोटे शरीर का हो मांस उसका मोटा होता है। मांस में तरकारी डालकर, रोटी से खाना वह भोजन ही मानो औषधि है और सादा कलिया और कबाब उत्तम सालन है। कलिये से उत्तम मांस पैदा होता है परन्तु कबाब से अच्छा नहीं। पुलाव उत्तम भोजन है और दूध चावल से मनी अर्थात् वीर्य पैदा होता है।

जल का वर्णन।

नदी का जल उत्तम है। उसके उपरान्त कुएँ का पानी सदी प्यास लगने पर पीना चाहिये, चाहे भोजन करते हुए, करे या उसके पीछे। भोजन करने के उपरान्त दो तीन घड़ी के पीछे पानी पीना अच्छा है भोजन करने के पीछे तत्काल पानी पीना उत्तम नहीं; परन्तु जिस मनुष्य की गरम प्रकृति हो और कोठ में गरमी रखता हो उसे उचित है कि भोजन में थोड़ा पानी पिये, एक ही बार बहुत न पी ले। भूख के समय पानी कम पिये। चूसने की रीति से पिये या पानी के बदले शरबत या थोड़ा भोजन खाकर पिये ताकि हानि कम हो। निहार मुँह पानी पीना निषेध है, क्योंकि यह बुढ़ापे और रोगों का कारण है। इसी प्रकार रात्रि को जागते ही पानी पीने

से नजला पैदा होता है। परिश्रम करने, मैथुन करने, नहाने और तर मेवों के सेवन (जैसे तरबूज और खरबूजे आदि) के उपरान्त पानी पीना बहुत ही अवगुण करता है। हर समय बहुत पीना हानिकर है। वे कलईदार ताँबे के बर्तन में और शीशे के बासन में पानी पीना मना है। जो सफर आदि में तरह तरह के पानी पीने का अवसर पड़े तो उसके अवगुण के दूर करने के लिए कच्चा प्याज खाना चाहिये। जो भंग पीने का अभ्यास रखता है, उसे भी पानी नहीं लगता।

तीसरा सता जरूरिया सोना जागना है। चित सोना मना है। यह विपरीत स्वप्नों और दिमाग अर्थात् भेजे को हानिकारक है। जो अभ्यास भी हो तो छोड़ दे। पट इस तरह से सोना कि शिर को तकिये पर ऐसा रक्खे कि मुँह और दोनों आँखें दाहिनी या बाईं तरफ झुकें, गुण करता है और भोजन पचता है। बाईं और दाहिनी करवट सोना हानि नहीं करता। निहार सोना नजला पैदा करता है। भूख में सोना शरीर को क्षीण करता है। धूप में सोना मना है। चाँदनी में गुणदायक है। बहुत सोना सरदी और तरी का चिह्न है। अधिक जागना गरमी और खुश्की की निशानी है। सोने और जागने में समभाव रखना उत्तम है। अर्थात् न बहुत जागे और न बहुत सोवे, क्योंकि बहुत जागना क्षीणता और तबाही का कारण है और बहुत सोना माँदगी और इन्द्रियों के आलस्य का कारण है।

चौथा सता जरूरिया लाभकारी वेगों का रोकना और उपद्रवकारक मल से शरीर को खाली करना है। मनुष्य को दो बार दिशा जाना चाहिए, यह शरीर की आरोग्यता का कारण है। बद्धकोष्ठ की दशा में उचित है कि उत्तमोत्तम शोरवों, पालक के साग और फिसलानेवाली चीजों का सेवन करे और कब्ज करनेवाले द्रव्यों से परहेज करे। कब्ज से

भूख जाती रहती है जो दो समय दिया जावे और मल नरम हो तो कब्ज करनेवाले द्रव्यों का सेवनकरे। हर तरहसे अपना लाभ विचार ले।

पाँचवां सना जरूरिया उससें एक क्रोध और दूसरे खुशी है। इन दोनों से जीव को बाहर की ओर प्रेरणा होती है। गरमी और सरदी का गुण शरीर में मालूम होता है। प्रगट में शरीर गरम और अन्दर ठण्ढा हो जाता है। तीसरे भय चौथे चिन्ता और उन दोनों से जीव को अन्दर की ओर प्रेरणा होती है। प्रगट में शरीर ठण्ढा और अन्दर गरम हो जाता है। पांचवें लज्जा। इसमें पहिले जीव भीतर प्रेरणा करता है, फिर बाहर की ओर को किसी समय प्रगट में गरम होता है और किसी समय अन्दर. इस वास्ते लज्जावान् का मुख कभी लाल हो जाता है।

छठा सना जरूरिया स्थिर और अस्थिरता है। सामान्य शरीर का हिलना चलना शरीर को गरम करता और मल को निकालता है। अधिक चलना शरीर को ठण्ढा करता है। उससे पित्त पचता है और अधिक स्थिरता से भोजन नहीं पचता और चलने में यह बड़ा भारी गुण है जो भोजन को कोष्ठ से पक्वाशय में पहुँचाता है। वह परिश्रम जिससे सब शरीर के अंग फुर्त हों बदन की कीमिया है। अंग की सूरत दुरुस्त करता है, रोगों को दूर करनेवाला, गरिष्ठता को पचानेवाला, समभाव का बलदायक, शरीर को आरोग्यता देनेवाला है, मुख्य एक अंग का श्रम उसी अंग का बलदायक है परन्तु समभाव से हो अधिक नहीं। मलना और दबाना भी एक प्रकार का श्रम है जो मल को दूर करे परन्तु बहुत मलने और दबाने से शरीर क्षीण हो जाता है। समभाव से मलने और दबाने से पुष्टता होती है। मैथुन का उपाय वह भी शरीर में आवश्यक है, मैथुन समभाव से आवश्यकता

के अनुकूल बलवान् को बलवान् करता है और उसकी यह रीति है कि अति आवश्यकता पर जब लिंग खड़ा हो तो मैथुन करे। इस शर्त पर कि यह बात सहज स्वभाव और सुन्दर स्त्री के विचारने और उसका स्वरूप देखने बिना केवल वीर्य की अधिकता और इच्छा से हो, क्योंकि बुद्धिमानों ने लिखा है कि वीर्य का बिन्दु जीव का जल है जो उससे मनुष्य उत्पन्न होता है। उस बहुमूल्य मोती को कुसमय और व्यर्थ अलग न करना चाहिये। अधिक मैथुन की हानि लिखी नहीं जा सकती है। जो पुरुष युवावस्था में अधिक वीर्य से बहुत ही मैथुन करते हैं उसकी अधिकता से जल्द बूढ़े होकर दुःख झेलते हैं और बहुत बुरा है—मैथुन वह है जो बिना इच्छा और रंज से हो। कम उमर, बुढ़िया, ऋतु के समयवाली स्त्री से, कुरूपा, रोगिणी स्त्री से भोग करना अरुचिकारक है और अति हानि करता है। उत्तम यह है कि इस कार्य में लगा न रहे, बराबर भोग न करे, दो बेर मैथुन में तीन दिन का अन्तर अवश्य चाहिये। वैद्य एक बेर के भोग के उपरान्त तीन दिन की मोहलत उचित जानते हैं।

नहाने का उपाय।

गरीबों को हम्माम मयस्सर नहीं, इसलिये कुछ लाभ और हानि नहाने की लिखी जाती है। ठंढे पानी में नहाने से गुनगुने पानी से नहाना उत्तम है और हवा में ठंढे पानी से नहाना विशेष करके ठंढे स्वभाववाले को अवगुण करता है और कफ के स्वभाववाले को अधिक नहाना मना है और विशेष करके ठण्ढे पानी से नहाना नजलेवाले और अतीसार के रोगी और लड़कों और बुड्ढों को हानिकर है और जब कोष्ठ में भोजन भरा हो और मैथुन के उपरान्त शीघ्र नहाना हानि करता है और बहुत दिनों तक न नहाना शरीर को शीघ्र ही भद्दा करता है और शरीर की कान्ति और सफाई खो देता है। भोजन पचने के

उपरान्त नहाना उत्तम है और जाड़ों की ऋतु में गरमी से कम नहाना चाहिये और मैथुन के उपरान्त नहाना और शरीर को मलवाना भी हानिकर है और नहाना चाहे गरम पानी से हो या ठंढे पानी से हो पट्ठों को क्षीण करता है इसलिये गरम पानी से त्वचा और रगें ढीली हो जाती हैं और ठण्ढे पानी से रगों में शीतलता सरदी बढ़ जाती है इसीकारण बहुत से हिन्दुओं को जो सदा नहाते हैं चाहे युवावस्था में स्वभाव में गरमी होने से हानि कम मालूम होती है परन्तु जब युवावस्था से बढ़ जाते हैं रगों और गुरदे में निर्बलता के चिह्न प्रगट होते हैं और उनका वीर्य क्षीण पड़ जाता है और बाजे हिन्दू कई बेर नहाते हैं दिशा के पीछे भी नहाते हैं यह नहाना उनके शरीर को बहुत दुःख-दायक है।

नाड़ी के विषय में ।

नाड़ी का मालूम करना हकीमों के लिये बहुत ही कठिन है, फिर विद्यार्थी क्या जान सकेंगे सो हम भी थोड़ा सा वर्णन करते हैं। नाड़ी हिलानेवाली रगों का हिलना है जो सोती हुई पवन से प्राण को समभाव प्राप्त हो नाड़ी उस समय देखना चाहिये कि रोगी क्रोध और प्रसन्नता और परिश्रम और मांदगी और स्नान के छोड़ने से खाली हो और नाड़ी पर हाथ रखना कम से कम उस नाड़ी के बारह बेर हिलने तक देखना चाहिये परन्तु नाड़ी चार उंगल से लम्बाई में अधिक हो और उँगलियों को उसके हिलने का जोर मालूम हो और शीघ्र चलती हो और छूने में गरम मालूम हो गरमी है, और जो चार उंगल से लम्बाई उसकी कम हो और उँगलियों पर जोर न मालूम हो सरदी है और जो उंगलियों की चौड़ाई से उसका हिलना अधिक हो वह तर है और सरदी करनेवाली वह नाड़ी है जो छिद्रवाल है भीतर दबाने से उँगलियों में नरमी मालूम हो। इस रीति से उसमें उसका संयुक्त होना प्रमाण है। जो नाड़ी

एक ही रीति पर हो उत्तम है। जो सम न हो बुरी है और जो नाड़ी हरिण की भाँति उछले तो भोजन के कच्चेपन की है या लहर के मानिन्द हो वह मौजी है या चींटी की भाँति हो वह निमली है या कांपनी के मानिन्द हो वह मुरतअश है या तागा बटने की तरह हो वह मुल्तवी है या आरी के सदृश है वह मन्शारी है यह सब नाड़ी के प्रकार बिगड़े हुए और कमजोर हैं और पुरुषों की नाड़ी स्त्रियों से बलवान् होती है और लड़कों की नाड़ी नरम और कुछ जल्दी चलती है और जवानों की नाड़ी लम्बाई और चौड़ाई में अधिक होती है और बूढ़ों की नाड़ी सुस्त चलती है।

कारूरे का वर्णन।

कारूरा शीशी को बोलते हैं जो कि रोगी का मूत्र कई कारणों से शीशी में डालकर देखते हैं इसलिये मूत्र कारूरे के नाम से प्रसिद्ध हो गया—जानना चाहिये कि मूत्रपरीक्षा में यह बातें चाहिये कि सुबह को मूत्र किया हो और सोने के उपरान्त पानी न पिया हो। ऐसी वस्तु न खाई हो जिससे मूत्र रंगदार हो जाता है, जागने, क्रोध करने, मैथुन और मद्य से भी मूत्र का रंग बदल जाता है। जो देर तक कारूरा रक्खा रहे तो उसके देखने का कुछ निश्चय नहीं—जो मूत्र का रंग पीला हो तो पित्त और लाल हो तो रुधिर और सफेद हो तो कफ और काला रंग सौदा अर्थात् दूषित दोष और सब्ज रंग हो तो सरदी जानना—और जो मूत्र मांस के धोवन कासा हो कलेजे की नाताकती बताता है और जो दूध कासा रंग हो तो अंगों का खिलाना बतलाता है—निजिज अर्थात् मल के पकने का निशान पेशाब में यह है कि पहले पतला या गाढ़ा हो फिर उसका समान कवाम हो जावे, ज्वर में सदा मूत्र का गाढ़ा रहना बुराई की निशानी है। मूत्र का पतलापन सरदी बताता है, उसकी मुटाई दोष की अधिकता बताती

है, मूत्र में बिल्कुल दुर्गन्ध न होना मिजाज में सरदी बताता है, दुर्गन्धि से दोष का सड़ जाना मालूम होता है, मूत्र का बराबर करना हर विषय में उत्तम है, मूत्र में कफ की अधिकता और देर तक रहना अधिक बात के चिह्न हैं। जो मूत्र में सत्तू या छीछड़ों या तारों या बालू या चरबी के सदृश कोई वस्तु पाई जावे इसको रसूबतबई बोलते हैं चरबी जोड़ के खिलने को बतलाती है और पीब अन्दर के फोड़े के फूट जाने को और मूत्र की थैली के पत्थर या गुरदे को बताती है स्त्रियों का मूत्र पुरुषों से सफेद और गहरा होता है और गर्भवाली स्त्रियों का मूत्र साफ होता है परन्तु उसमें कुछ धुनकी हुई रुई के सदृश मालूम होता है और गर्भ की आदि में मूत्र पतला होता है और अन्त में कुछ सियाही लिये होता है—और तरीके स्वभाव से लड़कों और बुड्ढों का मूत्र गाढ़ा हो जाता है—लाभ—वैद्यक की रीति से मूत्र देखने की रीति यह है कि मूत्र प्याले में करके उस पर एक बूँद तिल के तेल की टपकावे जो बूँद मूत्र पर फैल जावे तो रुधिर और पित्त का उपद्रव है, जो तेल उसी प्रकार शेष रहे बुराई की निशानी है, जो बूँद मूत्र के नीचे चली जावे मृत्यु के लक्षण हैं, जो बूँद में छिद्र हो जावे वह भी काल के चिह्न हैं, जो बूँद मूत्र में चौड़ी हो जावे आरोग्यता है, जो बूँद टुकड़े टुकड़े हो जावे रोग बढ़ जावे, जो मूत्र में बूँद पूर्व की ओर झुके आरोग्यता है, मुँह पश्चिम की ओर झुके रोग बढ़जावे, जो दक्षिण और उत्तर को झुके बुराई की निशानी है, पीला और साफ पेशाब पित्त को बतलावे और जो पीला सुरखी से हो मिली हुई बीमारी का निशान है परन्तु पित्त की अधिकता बतावे, जो मूत्र बहुत हो और उसमें कुछ सफेदी हो अजीर्णता के लक्षण हैं, मांस के धोवन की तरह का मूत्र पार्श्वशूल को बतलाता है, जो कुन्दर के तेल के सदृश उसमें दाने दिखाई दें वह मूत्र शोथ और शरीर की नागवारी

और जलन्धर को बताता है, जो मूत्र मिश्री के रंग का सा हो वह कासश्वास को बताता है, जिस मूत्र का रंग केसरि की सदृश हो तो उसे दूषित पित्त और रुधिर का जानो और आग के रंग का मूत्र सरसाम अर्थात् भेजे के वरम को बताता है, जो मूत्र पीला और साफ हो कलेजे की पीड़ा को बतावे और मूत्र जरदी मायल और कुछ स्याही लिये हो कलेजे की गरमी के लक्षण हैं सामान्य मल वह है जिसके टुकड़े बराबर हों और पतलापन और गहरेपन में बराबर और गुड़गुड़ाहट और शब्द से खाली हो अर्थात् मल निकलने पर उदर में वात का शब्द न हो और निकलने के समय भी शब्द न हो और विष्ठा के रंग का हाल मूत्र के रंग के हाल के सदृश है, जो विष्ठा भोजन से अधिक और पतली और लसदार हो दोष की अधिकता या अजीर्णता या अंग का गलना बताती है, यह ज्वर में बुरा है और विष्ठा की अधिक दुर्गन्धि दोष की दुर्गन्धि को प्रगट करती है—
मुसिल—मुंजिज का सेवन मुसिल के पहिले उचित है मुंजिज अर्थात् दोष का पकाना उसे कहते हैं जो पेशाब का कवाम सम हो जावे। मुसिल उसको कहते हैं जो मल को रगों और जोड़ों से निकाल लावे। तलीन वह है जो मल कोष्ठ आँतों और उसके इधर उधर हो उसको निकाले पहिले मुंजिज देना चाहिये और तलीन नहीं और दो मुसिलों का सेवन एक दिन में न चाहिये। मुसिल पीने के समय नाक बन्द कर ले जिसमें मुसिल की दुर्गन्धि से ग्लानि न हो और कै न हो जावे और दोनों बाजू जोर से बाँधे और सुगन्ध सूँघना और इलायची और पोदीना लौंग के साथ चबाना कै नहीं होने देता। जबतक मुसिल अमल न करे कुछ न खाना चाहिये, मुसिल में सोना मना है, मुसिल बहुत मीठा न करें, आब-दस्त का पानी समान हो न गरम न ठण्ढा जब मुसिल बल-वान् दे और वह गुण न करे और उन्माद और मूर्च्छा प्रगट

हो शीघ्र ही वमन करे, और वृथा मुसिल बहुत हानि रखता है जिस तरह कि फ़स्द खुली और रोगी जो बलवान हो मुसिल तक उपर दे और जो निर्बल हो एक दो दिन के अन्तर से दे क्योंकि दस्तों की अधिकता से रोगी बदहाल न होजावे, मुसिल के दिन सरदी से बच जाना उचित है, खुश्क स्वभाववाले, लड़के बुड्ढे को बलवान मुसिल न देना चाहिये। मुसिल पर गोलियाँ या चूर्ण या माजून या सौंफ का अरक गुनगुना या गरम पानी दस्तों की मदद के लिये उत्तम है, मुसिल के बाद पर ठण्ढा अरक सौंफ का पीना चाहिये। मुसिल से छुट्टी पाने के पीछे गरम मिजाज को ईसबगोल और ठण्ढे मिजाज को बालंगो के बीज या सजलके के बीज पिलाना उचित है, कोई दवा मुसिल की ऐसी नहीं कि सिवा एक दोष के बाकी दोषों को न निकाले और जो औषधि कि पित्त या कफ या दूषित दोष के लिये बतलाई गई है उसका यह कारण है कि औषधि और दोषों से अधिक उस दोष को निकालती है। जानना चाहिये कि बाज़े आरोग्य पुरुष आप ही आरोग्यता के लिये प्रतिवर्ष मुसिल लेने का अभ्यास डालते हैं, बाज़े छः महीने के पीछे आदत रखते हैं यह आदत अच्छी नहीं। हां रोग की शान्ति के लिये आवश्यकता पर मुसिल ले जो ऐसी आदत हो, चाहिये कि धीरे धीरे उसको छोड़े क्योंकि आदत दूसरी प्रकृति है।

पित्त के मुंजिज अर्थात् पकाने की औषधि।

कासनी की जड़, नीलोफर, परसियावशान, खतमी की जड़, खुब्बाजी के बीज, बनफशा, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, शाहतरा, गुलकन्द मुंजिज देने के उपरान्त पित्त तीन दिन में पकता है परन्तु इस शर्त पर कि खाली पित्त हो और जो खाली गिलत हो तो पांच दिन में पकता है। कफ के मुंजिज की औषधि सौंफ की जड़, बड़े मुनक्के, मकोय, परसियावशान

अर्थात् काली झांपवारतिकोप, गावजबां, बादरञ्जबोया, बश-फायज, मुलहठी की जड़, अजखर किरफश के बीज अर्थात् अजमोद, कबरा की जड़, अनीसोनशकाई, अस्तखद्दूस कफ नौ दिन में पकता है और बहुत गाढ़ा कफ दो तीन दिन अधिक में और पतला कफ पांच दिन में सौदा अर्थात् दुग्ध-दोष की औषधि बादरञ्जबोया, गावजबां, लसोड़ा, कासनी, की जड़, सौंफ, शाहतरा, उन्नाब, अस्तखद्दूस, परसियावशान, मुलहठी, बशफाइज, सौदा पन्द्रह दिन में पकता है और कभी पन्द्रह दिन से कम या अधिक में भी पकता है पित्त के मुसिल की औषधि पीले हड़ की छाल, इमली, आलूबुखारा, अफनै तीन, सकमूनिया, गुलाब के फूल, बिना भूनने के सेवन न करे। भूनने की रीति बड़ी पुस्तकों में लिखी है कफ की मुसिल की ओषधि—इन्द्रायण का फल, माहीजहर, जंगारीकूनहुब्बुल, नीलतुर, अमलतास, सौदा के मुसिल की औषधि—काबिली हड़, कालीहड़, अफतैंसूहजर, लाजबई, गेरू, गारीकून, सनाइमक्की। रुधिर की स्थिरता का मुसिल—कासनी की जड़, खीरे ककड़ी के बीज, उन्नाब-अंजबार; केवड़े की जड़, तरबूज का पानी, बनफ्शा, इमली, खट्टा शहतूत, बुजुरक-तूना, शाहतरा, खाखशी प्रकट और अन्दर के बहुत से रोगों को गुण करे और बहुत स्वभावों को गुण करता है यहां तक कि गर्भवती स्त्री और बूढ़ों और बालकों को भी देते हैं ज्वर और शोथ को गुण करता है, सब माद्दों के मुवाफिक है आवश्यकता के अनुकूल अमलतास ले और गुलाब या गरमपानी या सौंफ के अरक या कासनी के अरक या मकोय के अरक में मले जो थोड़ा बादाम का तेल मिलावे उत्तम है नहीं तो घी डालकर गुलकन्द या शीरखिश्त या तुरंजबीन से मीठा करे, जो बनफ्शे के फूल, मुनक्के, उन्नाब, गावजबां और उसके सदृश आवश्यकता के अनुकूल कुछ गुलकन्द समेत अमलतास में मिलावे तो उत्तम है, दूध पीते हुये लड़के के लिये बादाम का

तेल मिलाने की आवश्यकता नहीं है, कुलञ्ज में मुंजिज देने की आवश्यकता नहीं।

फस्द का वर्णन।

फस्द से हरदोष निकलता है परन्तु रुधिर सब दोषों से अधिक निकलता है और बारह वर्ष से कम में फस्द लेना मना है फिर आयु के अन्त पर्यंत बल होने पर आवश्यकता हो तो उचित है परन्तु बाजों ने साठ वर्ष के उपरांत फस्द की मनाही की है, फस्द के पीछे लेटना चाहिये परन्तु तत्काल सोना मना है, उस दिन फस्द के पीछे भोजन थोड़ा और उत्तम खाना चाहिये। जिस दिन फस्द ले बुरा भोजन न दे, फस्द के पीछे हम्माम और ठंडाई मना है परन्तु गरम स्वभाववाले को ठंडाई पिलाना मना नहीं है, ठंडे मिजाजवाले को गरम द्रव्य देना चाहिये कि बल हो परन्तु आवश्यकता के बिना कुछ न देना चाहिये फस्द में रुधिर कम निकालने से माद्दा हरकत में आ जाता है, ज्वर आ जाता है उस समय आवश्यकता पर फस्द लेना उचित है जिस मनुष्य को फस्द के उपरांत मूर्छा आवे उत्तम उपाय यह है कि मुरग का पर गले में डालकर वमन करावे और वरीद और जबलअरजा एक रग है जो ऊपर को गई है शिर और गरदन को साफ करती है, फस्द हफ्त अन्दाम सम्पूर्ण शरीर को साफ करती है, इसी वह रग है जो बगल से आई है बदन की कोठी और नीचे के अङ्ग को गुण करती है, बासलीक को रक्षापूर्वक खोलना चाहिये कि उसके नीचे शिरयान है और अस्लीम कि बासलीक की एक शाख है कलेजे की बीमारी के लिये दाहनी ओर से खोले और तिल्ली और मासर्री रोगों के लिये बाईं ओर से परन्तु उसमें विशेष रुधिर न निकाले—और माथे के रग की फस्द शिरपीड़ा, नेत्ररोगों को गुण करे। चार रगों की फस्द जो दोनों नीचे होठों के हैं, वह होठों के अन्दर की ओर खोली जाती है मुख के अङ्गों को गुण करती है,

जिह्वा के नीचे की रग खुनाक को गुण करे। साफन के रग की फस्द जो पिंजली में है और माविज की फस्द जो घुटनों के नीचे है स्त्रियों के ऋतु के रुधिर के जारी करने को, बवासीर के रोग, नाक रस, दुवाली को गुण करे जो फस्द कि उत्पातकारक रुधिर के निकालने के वास्ते खोलते हैं जब रुधिर की बुरी रंगत बदल जावे और रुधिर अच्छा आने लगे बन्द कर दे अगर फस्द खोले और रुधिर बन्द न हो मकड़ी का जाला या गौ का चमड़ा कच्चा उस पर रखकर बाँध दे और जो शोथ के लक्षण प्रकट हों ठण्ढा लेप जैसे—रक्तचन्दन और रसात उस पर करे।

क्षौर पछने और सिंघियों और जोंकों के विषय में।

जो लड़कों के लिये मानों फस्द है क्षौर दो वर्ष से कम की आयु में उचित नहीं है, साठ वर्ष के उपरान्त निषेध है, क्षौर के दो प्रकार हैं एक केवल सिंघी पछने के बिना दूसरा प्रकार पछने देकर यह मुख्य जोड़ और त्वचा की तरफों के साफ करने के लिये श्रेष्ठ है मांस के मध्य में क्षौर कराना उत्तम है, पिण्डलियों का क्षौर फस्द बासलीक और साफन के बदले है त्वचा के रोगों में जोंक का सेवन उत्तम है परन्तु मल के अनुसार लगावे अधिक और कम न लगावे बाजी जोकें विषैली हैं वह बड़ी होती हैं और उन पर काली और सब्ज लकीरें होती हैं जोंकों के छूट जाने के उपरान्त रुधिर बहे तो राख महीन छानकर उस पर बाँधे।

दोषों की अधिकता का वर्णन।

रुधिर की अधिकता—रुधिर की अधिकता से मुंह मीठा, उसका रंग लाल रहे, मूत्र भी लाल हो, शिर और बदन भारी रहे, शरीर में दाने निकलें, दाँत और मसूढ़ों से बहुत रुधिर निकले।

पित्तदोष की अधिकता—मुँह आँख जिह्वा और मूत्र का रंग पीला रहे मुँह कड़वा और नाक में खुश्की और खरखराहट हो बहुत जगे और प्यास जलन की अधिकता हो।

कफ की अधिकता—मुँह जिह्वा आँख और मूत्र का रंग श्वेत और शरीर ठंढा होना हो, नाक में सरदी, प्यास कम, निद्रा बहुत हो, मुख का स्वाद बुरा हो।

सौदा अर्थात दूषितदोष की अधिकता—इसके होने से काला पड़ जाना है, मूत्र का रंग भी काला होता है, जलन, बदन की खुश्की, क्षीणता होती है मुँह खट्टा रहता है, अंग भारी रहता है, आलस्य की अधिकता, भूख कम हो जाती है, मूत्र गदरा रहता है, जानना चाहिये कि श्वेतरंग से शरीर की पुष्टता कफ के होने का प्रमाण है, पीलापन क्षीणता के साथ पित्त सिद्ध होता है, सुर्खी रंग पुष्टता के साथ रक्ताधिक्य जानो, कालारंग क्षीणता के साथ सौदावी है, क्षीणता बदन की खुश्की बतलाता है, मोटा होना कफ का चिह्न है, बालों का पेचदार होना और उनकी अधिकता गरमी बतलाता है, बालों का सीधा होना, उनकी कमी शीत बतलाता है, हर दशा में शीघ्र ही प्रभाव का स्वीकार कर लेना उस दशा की अधिकता का प्रमाण है, स्मरणाधिक्य बुद्धिमानी और जल्दी जल्दी बातें करना गरमी के चिह्न हैं। स्मरण का कम होना, लज्जा और प्रतिष्ठा की अधिकता शीतलस्वभाव को सिद्ध करता है, मल में पक्का रंग का होना गरमी है उसका विपरीत शीत है मल की अधिकता तरी है और उसकी कमी खुश्की है।

शरीर को रोगों से रक्षा करने का विषय।

वर्तमान आरोग्यता की रक्षा करना गई हुई आरोग्यता के फेरने से सुगम है। आरोग्यता की रक्षा करनेवाले को उचित है कि हानिकारक वस्तुओं से, जो आगे लिखी जावेंगी, पथ्य करे और अपनी आयुरारोग्य का मित्र रहे। किसी का लोभ न करे। जो छोड़ने के योग्य वस्तु है, उसमें कुछ भी रुचि न बढ़ावे और उसकी कुछ भी इच्छा न करे। विशेषकर रोग और निर्बलता में जिन वस्तुओं का सेवन अवश्य हो, उनमें कोताही न करे, किसी चीज की आदत न डाले;

क्योंकि आदत भी प्रकृति से मिल जाती है। सामान्य श्रम भी आरोग्यता का रक्षक, मल का पाचक और क्षुधा का कर्त्ता है उसे करना चाहिये। थोड़ी सी बीमारी में पौष्टिक ओषधियों का सेवन न करे किन्तु आरोग्यदायक भोजन करे। जहाँ ओषधिरूप भोजन से काम निकले ओषधि न खावे। जब तक एक ओषधि से काम निकले दो न खावे। इसी तरह जो दो दवाएँ पूरी हों तो तीन दवा न खावे। और सुगम दवा से उपाय करना आरम्भ करे। उपाय तीन प्रकार के होते हैं एक उद्योग और भोजन से, दूसरा दवा से, तीसरा हाथ के कामों से जैसे चीरना फाड़ना आदि। सते जरूरिये में भोजन भी संयुक्त है। काम में लाने का नाम उपाय है। कभी भोजन करना मना किया जाता है; जैसे बोहरान में। कभी बलकारक भोजन की आज्ञा दी जाती है जो कुछ बल बाकी रखना हो और पुष्ट भोजन वा उसका अनुमान राह से होता है वा भोजन के भारीपने से उसके अनुमान की कमी उस समय चाहिये कि भोजन न पचा सके और भारीपन की कमी उसी समय की जावेगी कि भूख बहुत हो और रगों में अधिक दोष हों। यद्यपि भोजन बलकारक है परन्तु शत्रु भी है क्योंकि रोग को सहायता देता है सो रोग में भोजन का सेवन उतना ही करना चाहिये जिससे इलाज हो सके। इलाज करने की तीन रीतियाँ हैं एक ओषधि का तोल मालूम करना, दूसरे दवा के हाल अर्थात् गरमी, सरदी, खुश्की, तरी का जाँचना—तीसरे रोग का समय मालूम करना कि चारों समयों में से कौन समय है।

सम्पूर्ण वैद्य इस बात की आज्ञा देते हैं कि पीली हड़ की छाल को एक वर्ष तक नीचे लिखी हुई रीति के अनुसार खाने से सम्पूर्ण रोग नाश हो जाते हैं और आरोग्यता प्राप्त होती है। चैत्र और वैशाख में तीन माशे शहद के साथ, ज्येष्ठ और आषाढ़ में मुनक्के के साथ, श्रावण और भाद्रपद में यथारुचि लाहौरी लवण के साथ, कुवार और कार्त्तिक में बराबर की

मिश्री के साथ, तीन माशे के अनुमान खावे ईश्वर चाहे तो सब रोगों और वक्रकोष्ठ से रक्षा रहेगी ।

शिर के रोग का वर्णन ।

जो शिर में एक ओर पीड़ा हो उसको शकीका बोलते हैं जो उसका कारण चारों दोषों से कोई दोष या वायु हो उसको माद्दी कहते हैं । जो उसका कारण इनमें से कोई वस्तु न हो उसको साजिज कहते हैं, जो धूप, अग्नि, वायु की गरमी या गरम दवा के खाने से हो वह हार साजिज है, ठण्डी हवा या ठण्डे पानी के सेवन या ठण्डी जगह में ठहरने या शीतल औषधि के खाने से उत्पन्न हो वह बारद साजिज है गरमी के चिह्न—त्वचा में जलन, गरमी और भारीपन का न होना और ठण्डी चीजों से आराम और गरम से हानि है सरदी के चिह्न—आलस्य और त्वचा में सरदी और जलन का न पाया जाना और ठण्डी चीजों से हानि और गरम से लाभ पाया जाना, मूल यह है कि किसी कारण में गरमी और सरदी के पहिचानने में कठिनता नहीं होती, हर दोष की अधिकता के चिह्न पीछे कह चुके हैं वायु के चिह्न एक ही जगह से दूसरी जगह पीड़ा का जाना और कान में किसी प्रकार का शब्द होना।

शिरोरोग का यत्न ।

जो रुधिर की अधिकता हो तो सरेरू की फस्द खोले, जो कफ या पित्त या दग्धदोष या वायु का जोर हो तो मुंजिज अर्थात मल के पकाने के उपरान्त ग्रंथों के अनुसार मुसिलों से मल को निकाले । साजिज मे प्रकृति को बदल डाले अर्थात् जो गरमी हो तो ठण्डा करे, जो सरदी हो तो गर्म करे—अब यहाँ थोड़े से नुसखे शिर की पीड़ा और शकीके के लिये जाते हैं। इत्रीफल, कशनीज जो शिरपीड़ा, शिरके घूमने, नेत्रके रोगोंको दूर करती है । पीली हड़ की छाल, काबिली हड़, काली हड़, धनियाँ छिला हुआ यह सब एक एक तोला कूटछानकर घी में भूनकर तीन भाग शहद के कवाम में माजून बनावे और दो तोले खावे।

इतरीफल मुलय्यन।

जो स्वभाव को नरम करता है, हानिकारक दोषों को पक्वाशय और दिमाग से निकालता है, कान के शब्द, भिनभिनाहट और नेत्रों की सियाही को दूर करता है, काबिली हड़ की छाल, पीली हड़ की छाल, आँवले की छाल, बहेड़ा और कालीहड़ यह सब तीन तीन दाम गुलाब के फूल, सना, तुरबुद की छाल एक एक दाम, सोंठ आधाटंक कूटछानकर बादाम के तेल में भूनकर तीन हिस्से शहद या मिश्री मिलावे रुचि के अनुसार शरबत ले।

पाशोया।

माद्दी या साजिज शिरोरोगों को आराम करता है खारी नोन दोदाम, गेहूँकी भूसी दो मुट्ठी, बेरकी पत्ती, खतमीकी पत्ती, मकोय के पत्ते हरएक आध आध पाव खतमी के बीज चार दाम पानी में काढ़े आधा पानी शेष रहे तो कुछ गरम से पाँव धोवे जो सब दवायें न मिलें तो जितनी ही मिल जावें आराम देंगी जो कोई दवा न मिले केवल गरम पानी गेहूँ की भूसी और खारी नोन ही लाभ देता है, पाँवों का दवाना और तलवे सुहराना ठण्ढी और गरम शिरपीड़ा को अच्छा करता है।

अन्य—पाँवशोया पाँवों का धोना और तलवों में झांबे करना शिरपीड़ा के लिये श्रेष्ठ है, सेना के पुत्र शेख अबूअली ने कानून में लिखा है कि मैं बहुधा शिरपीड़ावाले के हाथ पाँवों पर गरम पानी का तरेड़ा देता रहा जहाँ तक कि मालूम हुआ कुछ चीज शिर से हाथ पाँवों की ओर उतरती है इससे शिर की पीड़ा दूर हो गई और अबूमाहर ने लिखा है कि ठण्ढे पानी से नहाना गरम शिरपीड़ा को उत्तम है।

लाभ।

सर्व प्रकार की शिरपीड़ा में आराम से रहना, खाने पीने में कमी करना श्रेष्ठ है, इस रोग में बहुत हिलना झुलना न चाहिये, मलकारक और वद्धकोष्ठ और हानिकर भोजन से पथ्य करना उचित है।

बफारह भी शिरपीड़ा को दूर करता है। एक तगार में पानी भरकर अपने आगे रक्खे और अपने को अच्छी तरह चादर से छिपा ले, एक एक मिट्टी का ढेला गरम करके उसमें डाले, शिर भुकाकर उसकी भाफ का बफारह ले शिरपीड़ा दूर हो जावेगी।

अन्य–बफारह जो गरम और ठण्डी शिरपीड़ा को उत्तम है। काकजंघा एक वृक्ष है उसको मिस्सी बोलते हैं, टुकड़े टुकड़े करके जोश देकर बफारह ले उसके उपरान्त चन्दन दो भाग, रेंड़ी एक भाग पीसकर लेप करे।

हरीरा।

अत्यंत का अति बलकारक भूने हुये चनों का छिलका दूर करके नौ टंक महीन पीसकर बारह टंक बादाम के तेल में भूने फिर निशास्ता नौ टंक, सफेद खशखाश के बीज नौ टंक, मिश्री चार टंक मिलाकर गाय के दूध में हरीरा पकावे फिर नौ टंक घी में बघारकर गर्म खावे।

अन्य औषध–जो गर्म शिरपीड़ा के लिये अति श्रेष्ठ है– भनियाँ, काहू दोनों एक एक टंक पानी में पीसकर रस छानकर थोड़ी सी शक्कर से मीठा करके एक तोला ईसबगोल छिड़क के खावे या नीलोफर का शर्बत दो तोले मिश्री के बदले डाले।

अन्य–विशेष करके उस पीड़ा को दूर करती है जो नजले से हो–सीप सिरके में घिसकर कान की दोनों लवों में लगाते रहें।

अन्य–विशेष लाभ देती है–मँजीठ को शिर पर बाँधे।

अन्य–जिसको बहुत दिनों से शिरोरोग हो उसके लिये उत्तम है कि धतूरे के दो चार बीज रोज निगले।

महुये के फूलों का तेल।

जो सर्दी और गर्मी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है। सोंठ, बायबिड़ंग, छिलीहुई मुलहटी कुचलकर, भँगरा, महुये के फूल यह सब बराबर ले तिल का तेल चार भाग–महुये के पुष्पों का जीरा निकाल डाले और सब औषधियों को पहिले इतने पानी में कि तेल से दुगुना हो औटाके जब पानी तेल के बराबर रह जावे

साफ करके तेल में मिलाकर जोश दे जब तेलमात्र रह जावे और पानी जल जावे छानकर रक्खे छः बूँद नाक में टपकावे बहुत प्रकार की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

नास।

जो शिरपीड़ा और सरसाम पैत्तिक को दूर करता है—कपूर, चन्दन गुलाब में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—कद्दू, काहू, धनियाँ हरा, कासनी हरी, मकोय की पत्तियाँ सबको या एक एक या दो दो को यथाविधि निचोड़ साफ करके कई बूँद नाक में टपकावे।

अन्य नास—शिरपीड़ा और सब प्रकार के शीत की बीमारियों को उत्तम है—कालामिर्च, पीपल, लवंग इन सब या दो एक को समय के अनुसार सौंफ के अर्क में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—जो सर्दी और कफ की शिरपीड़ा को दूर करे, जूफे की पत्तियां का पानी साफ करके नाक में टपकावे।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को दूर करे—कटहल के मूल को उबालकर उसकी कुछ बूँद नाक में टपकावे।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को गुण करे—वायबिड़ंग, सोंठ, गुड़ बराबर गर्म पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—जो ब्रह्माण्ड को तरी से साफ करे—चमेली के पुष्प तीन, गुलरोगन में मलकर नाक में टपकावे।

अन्य—शकीका की पीड़ा को श्रेष्ठ है—गुलदुपहरिया एक प्रकार का प्रसिद्ध पुष्प है दोपहर के समय खिलता है उस फूल की पखुड़ियाँ मलकर उसका जल नाक में टपकावे।

अन्य—नाजबो के पत्तों के जल की कई बूँदें जो बाईं ओर पीड़ा हो तो दहने नथने में जो दहने नथने में पीड़ा हो तो बायें नथने में टपकावे।

अन्य—कालीमिर्च १ मक्खी की विष्ठा उसके बराबर उस स्त्री के दूध से टपकावे जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो, थोड़ा थोड़ा आँखों में भी लगावे।

अन्य-शर्कीका को गुणदायक-राई रवासन के फूल, फिटकरी, आधी कालीमिर्च के साथ पानी में पीसकर जो दर्द दहने तरफ हो तो वायें नथने में जो वायें तरफ हो तो दहने नथने में टपकावे।

तथा-शर्कीका को गुणदायक-गंठे की छाल को पानी में खूब मले जब कफ निकले गर्म करके ढाई बूँद दोनों नथने में टपकावे।

तथा-शर्कीके के लिये-सिरस के बीज थोड़े पानी में पीसकर कपड़े में पोटली बांधकर जिस तरफ शिर में पीड़ा हो ढाई बूंद उस तरफ के नथने में टपकावे।

तथा-शर्कीका को दूर करे-नौसादर, कालादाना, हरएक दो रत्ती पानी में पीसकर गौ के घी में मिलाकर नाक में टपकावे।

तथा-शर्कीका को, प्याज थोड़े महुवे के बीज चार कालीमिर्चों के साथ पानी में पीसकर जो वायें तरफ पीड़ा हो तो दहने नथने में और दहनी ओर हो तो वायें नथने में टपकावे-और केवल कालीमिर्च के साथ ही गाय का घी नाक में टपकाना शर्कीके को श्रेष्ठ है।

तथा-जो शर्कीके की पीड़ा का उत्तमोत्तम यत्न है-समन्दर फल की मींगी को जल में पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो तो दहने नथने में टपकावे अथवा दहने तरफ हो तो वायें कान में टपकावे-और जो उसकी तीक्ष्णता का भय हो तो स्त्री के दुग्ध में पीसकर सेवन करे।

अन्य-उस शर्कीके की पीड़ा के लिये श्रेष्ठ है जो वादी से आता हो-चन्द्राल पानी में भिगोकर जल छानकर दो बूँद नाक में टपकावे मस्तक के मल को बहाकर दूर करेगा।

चूर्ण-जिसको फंकी भी बोलते हैं-बनफशा दो माशे, अस्तखद्दूस एक माशा, धनियां दो माशे, बालछड़ एक माशा, मुण्डी एक माशा, गुलाब के फूल दो माशे, बादाम की गिरी दो माशे, मिश्री सब दवाओं के बराबर पीस छानकर एक तोला रोज खावे।

हड़ का शर्बत।

पैत्तिक शिरोरोग के लिये श्रेष्ठ है और स्वभाव को नर्म करता है दश पीले हड़ों की छाल जवकुट करके चीनी की प्याली में पानी में भिगोकर ३ दिन धूप में रक्खे चौथे दिन मलकर छाने और फिर पीली ग्यारह हड़ों की छाल को उसी रीति से उसी पानी में धूप में रोज रखकर चौथे दिन मलकर छानके एक सौ पचास मिस्काल सफेद शक्कर में कवाम करे और जो शक्कर के बदले सफेद तुरंजबीन हो तो श्रेष्ठ है।

शिरोरोग दूर करे—बनफशा, नीलोफर, गुलाब के फूल यह हरएक चार चार मिस्काल अस्तखद्दूस दो मिस्काल आलूबुखारे दश दाने पानी में भिगोकर ले ले और छानकर तिगुनी शक्कर में कवाम करे दो तीन तोले खावे जो आलूबुखारे न हों तो उसके बदले इमली मिलावे।

सूँघने की दवा।

जो गर्मी के शिरोरोग को श्रेष्ठ है—कपूर या चन्दन सूँघे और ककड़ी और खीरे का सूँघना भी पैत्तिक शिरोरोग को दूर करता है।

अन्य—सर्दी के शकीका और शीत की शिरपीड़ा को गुण करे नौसादर और हल्दी को मिलाकर सूँघे।

लाभ।

सम्पूर्ण भाँति के गर्म अतरोंके सूँघने से भेजे में बल होता है और इसी प्रकार से ठंढी सुगन्धोंका सूँघना भेजेको लाभ देताहै।

लेप।

शिरपीड़ा और शकीके को श्रेष्ठ है—सोंठ, चन्दन, एरण्ड की जड़ की छाल कूट छानकर पानी से धोकर साठी के चावल के साथ महीन पीसकर गहरा गहरा लेप करे।

अन्य—गरमी की शिर की पीड़ा को गुणकारक—ईसबगोल का लुआब खतमी के फूलों में मिलाकर पतला पतला लेप करे और पीना भी इसका उत्तम है।

अन्य–शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है जो गर्मी से हो–चुका और दूध दोनों को बराबर पानी से पीसकर शिर पर लेप करे।

तथा–ककड़ी के टुकड़े और कद्दू के ताजे छिलके शिर पर रखने भी अच्छे हैं।

तथा–गर्मी के शिरोरोग के लिये अतिश्रेष्ठ हैं–खतमी के पत्ते या बीज, धनियाँ सेरका जल में पीसकर शिर और माथेमें लेप करे।

अन्य–मेंहदी के फूल जल में पीसकर मले यह गरमी के शिरदर्द को श्रेष्ठ है।

अन्य–गर्मी के शिरोरोग को दूर करे–काहू के बीज पानी में पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य–गर्मी की शिरपीड़ा को गुणदायक–तिल के वृक्ष की पत्तियाँ सिरके या पानी में पीसकर मले।

अन्य–खुरफे के पत्ते–सिरके या पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–चन्दन घिसकर लगावे।

अन्य–काई मले।

अन्य–धनियाँ पीसकर अण्डे की सफेदी में मिलाकर मले।

अन्य–जौ का आटा पानी में घोलकर लगावे।

अन्य–लसोड़ा का लुआब गर्मी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

अन्य–साल की लकड़ी जिसको साज भी बोलते हैं पानी में घिसकर लगाना गर्मी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

अन्य–अफीम गुलरोगन में कजली करके शिर पर मले।

अन्य–कासनी के बीज गुलाब में या पानी में पीसकर मले।

अन्य–मेंहदी की पत्ती लगाना शिरपीड़ा और मस्तक-पीड़ा को गुण करती है।

अन्य–बकायन के पत्तों को पीसकर लगाना गरमी के शिरदर्द को दूर करना है।

अन्य–गीलचीनी गुलाब में पीसकर मले।

अन्य–कबाबह गुलाब में पीसकर मले।

अन्य–अनार की जड़ पानी में घिसकर गहरा लेप करे।

अन्य—सोंठ, रेंड़ी के तेल में घिसकर गरम करके लगाना सरदी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

अन्य—सरदी और साजिज और कफ की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—सहँजन के पत्ते पानी में पीसकर गरम करके लेप करे।

अन्य—सरदी और कफ की शिरपीड़ा को गुणकारक—पीपल पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—कलौंजी, कालीजीरी पानी में पीसकर मले।

अन्य—रेंड़ी, सोंठ, अजवायन पानी में पीसकर गरम करके लेप करे।

अन्य—सरदी की शिरपीड़ा को गुणकारक—नरकचूर पानी में पीसकर तलवे में मेहँदी की तरह लगावे।

अन्य—शिरपीड़ा को गुणदायक—निबौली की मींगी पीसकर माथे पर मले।

अन्य—गरमी और सरदी के शिरोरोग को सफेद चन्दन, तज बराबर घिसकर कुछ गरम करके लगावे।

अन्य—सरदी और गरमी की शिरपीड़ा को गुण करे—तरबूज के सफेद बीज, मुचकुन्द के फूल दोनों या एक इनमें से पानी में पीसकर गहरा लेप करे।

अन्य—शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है चाहे वह खुश्की से हो या गरमी से—बकरी का मक्खन शिर में मले।

अन्य—जो नजले से शिरपीड़ा हो उसके लिये उत्तम है—दो लौंग, अफीम चार रत्ती पानी में पीसकर कुछ गरम करके लगावे।

अन्य—शकीका को गुणकारक—हड़ के बीज गरम पानी में पीसकर मले।

तथा—शकीका को लाभदायक है—मुरगी की विष्ठा काली मिरच दोनों पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो दहनी ओर जो दहनी तरफ हो तो बाईं ओर शिर में मले।

अन्य—पुराने शकीके को दूर करे—जंगली कबूतर की बीट राई के साथ पीसकर लेप करे।

अन्य–जमालगोटा जल में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो मले। जब जलन हो कुछ गरम पानी से धो डाले, यह बीमारी दूर होगी लाभ इस रोग का यत्न शीघ्र ही करना उचित है नहीं तो यह पीड़ा अति कठिनता से दूर होती है। जब पुराना हो जावे निःसंदेह शीत से होगा गरम औषधियों के सेवन के विना कदाचित दूर न होगा।

अन्य–लेप जो शिरपीड़ा को आराम करे–एक बादाम की गिरी सरसों के तेल में पीसकर शिर पर मले पीड़ा दूर हो।

अन्य–रेंडी एलुवा बराबर पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे पीड़ा दूर हो।

अन्य उपाय–ठण्ढी शकीका और शिरपीड़ा दूर करे–बाबूने के पुष्प मेथी के लुआब में मिलाकर कपड़े में बाँधकर गरम करके रक्खे और टकोर करे।

पीसकर फूँकने की औषधि।

ठण्ढी शिरपीड़ा के लिये महीन पीपल पीसकर नाक में फूँके।

औषधि–ठण्ढे शकीका के लिये अकरकरहा दाँतों में दबावे।

टिकिया–तिकोनी शकीका की पीड़ा शिरोरोग को दूर करे–धनियाँ, आमला, काहू के बीज, सोंठ यह सब दो भाग अफीम, खुरासानी अजवायन, कतीरा हरएक २ भाग पीसकर तिखूँटी टिकियाँ बना रक्खे समय पर पानी में रगड़कर कुछ गरम करके मले।

अन्य–कान में टपकाने की पतली दवा शकीका की पीड़ा को गुणदायक–गाजर की पत्तियों को ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गरम करके उनका अरक निचोड़कर कान में टपकावे। यह यत्न मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है दो तीन बूँदें नाक में भी टपकावे बहुत छींकें आवेंगी और आधाशीशी की पीड़ा दूर हो जावेगी।

टकोर–गरम शिरपीड़ा के लिये नींबू के दो टुकड़े करके गरम तवे पर रक्खे। पहिले एक टुकड़े से माथे को सेंके जब वह ठण्ढा हो जावे उसको तवे पर रखकर दूसरे से सेंके इसी प्रकार एक घड़ी पर्यंत सेंकते रहे।

सुरमा–जो आधासीसी को लाभदायक है साबुनलाहौरी थोड़े पानी में पीसकर दोनों नेत्रों में या केवल उस नेत्र में जो पीड़ा की ओर है सुरमे की भाँति लगावें गुलकन्द बनफ्शा शिरपीड़ा, खाँसी और हृदयके रोगों को श्रेष्ठ है–बनफ्शा के फूल एक भाग मिश्री दो भाग परस्पर खूब मिलाकर रक्खे और एक तोला भर खावे।

चटनी–भेजे की बलकारक–मेहँदी के बीज तीन माशे पीसकर शहद में मिलाकर चाटे।

काढ़ा–जो पैत्तिक और शीतक शिरोरोग को अति उत्तम है–बाँस की जड़ पाँच टङ्क जवकुटकर पानी में काढ़ा करके छान के आधादाम मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य–ठण्ढी और कफकी शिरपीड़ा को गुणदायक है–जवकुट की हुई सौंफ दो टङ्क और अधकुचली सौंफ की जड़ चार टंक, अस्तखद्दूस तीनटंक, आध सेर जल में काढ़ा करे जब तिहाई जल शेष रहे साफ करके दो तोले शहतरा बनफ्शे के शरबत में डालकर पिये।

अन्य–काढ़ा शिरपीड़ा के लिये पीली हड़का बक्कल, सोंठ, धनियां, आमला, बहेड़े की छाल, बायबिड़ंग बराबर एक टंक कूट आधसेर जल में औटावे जब जल चतुर्थभाग शेष रहे छानकर पिये बाजे लोग सोंठ के बदले चिरायता मिलाते हैं।

तरेड़ा–शीत की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है–बाबूना, सोया, सौंफ औटाकर शिरपर तरेड़ा दे औषधि गरम शिरपीड़ा को गुणदायक दो तोले इमली जल में भिगोकर उसके साफ पानी को लेकर थोड़ी शक्कर मिलावे और पिये।

तरेड़ा–गरमी की शिरपीड़ा को गुणकारक–छिले जौ कद्दू के टुकड़े, काहू के बीज, ईसबगोल, बनफ्शा, खतमी के बीज, नीलोफर जल में औटाकर शिरपर तरेड़ा दे और तरेड़े का सेवन मुंजिज के सेवन के उपरान्त उत्तम है।

अन्य–शिरपीड़ा और आधासीसी के लिये सफेद कनेर की पत्तियाँ छाया में सुखाकर महीन पीस रक्खे जिस ओर पीड़ा

हो उसी नथने में दो चावल के बराबर फूंके छींकें लावेगा और नाक में से बहुत जल निकलेगा और पीड़ा दूर हो जावेगी बहुधा ऐसा हुआ है कि पाखाने और गन्दी जगहों की दुर्गंधि और चमड़े की सड़ांद से पैत्तिक शिरपीड़ा पैदा होती है उसके दूर करने का यत्न कुछ गरम पानी से नहाना और सिरका सूँघना और कभी ब्रह्मांड में कीड़े पड़जाने से शिर में पीड़ा होती है उसके लक्षण कीड़ों का भी निकलना और दुर्गंधि आना उसका यत्न सलीब एक लकड़ी प्रसिद्ध है उसे महीन पीसकर नाक में फूँके।

इस्पन्द का तेल ।

शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है । चार टंक इस्पन्द तेलमें जलावे जब खूब जलजावे उसी तेल में पीस डाले वह तेल हरदिन माथे पर मल करके तीक्ष्ण अग्नि से सेंके फिर गरम जल से धो डाले।

शतावर का तेल ।

जिसको हिन्दू बहुधा सेवन करते हैं शर्कीके की पीड़ा को दूर करता है—शतावर की ताजी जड़ कूटकर उसका अरक निचोड़ लें उसके बराबर तिल का तेल औटावें जब पानी जल जावे और तेल रहजावे शिरपर मलें ।

टपकाने की औषधि ।

शफ़्तालू की पत्तियों के रस में एलुवा मिलाकर दो तीन बूंदें नाक में टपकावे ब्रह्माण्ड के सब कीड़े मर जावेंगे ।

अन्य—नींब के पत्तों का जल मीठे तेल में मिलाकर कान में टपकावे कभी सर्प के काटने और उसका विष दूर होनेके उपरान्त शिरकी पीड़ा बाकी रह जाती है उसका यह यत्न है कि बिनौलेकी मींगी का शीरा एक तोलेभर पानी में निकालकर बहुधा शिर पर लेप करे और वह शिरपीड़ा जोकि चिन्ता की अधिकतासे उत्पन्न हो उसका यत्न—कोई वस्तु खालेना और अखरोटके वृक्षकी छाल की भस्म सिरके में या केवल जल में घोलकर शिर में मलना है।

सरसाम की विधियों और औषधियों का वर्णन ।

सरसाम ब्रह्माण्ड के शोथ का नाम है—मुख्य भेजे में हो या भेजे के पर्दों या दोनों में उसके कई प्रकार हैं ।

सरसाम के लक्षण—ज्वर बराबर रहे और कभी न उतरे प्रलाप और पीड़ा और शिर भारी रहे जो सरसाम पित्तकी अधिकतासे हो उसको करानीतसखालिस बोलते हैं कफ के सरसाम को लै-सरगस कहना चाहिये, हरएक दोष से उसदोष का पहिचानना सम्भावित है पैत्तिक और रक्त के सरसाम में ज्वर वेग से होता है। और कफ और दग्धदोष के सरसाम में कम होता है और पैत्तिक में कठोर चित्त और कफके सरसाम में आलस्य और रक्त में तेजी और दग्धदोषमें बहुधा विक्षिप्तता होती है। दग्धदोष का सरसाम कम होता है इस रोग में फस्द जल्दी खुलवानी उचित है विशेष करके रक्त के और पित्त के सरसाम में कभी गरम तप में बिना भेजे की सूजन के बाफ भेजे की ओर जाती है उससे बक और शिरपीड़ा होती है इस दशा को सरसाम गैरहकीकी बोलते हैं उस समय फस्द सरेरू और पिण्डलियों में पछने देकर सिंगी खींचना और रुधिर के सरसाम में बिना पछने के सिंगियां खींचना और दूसरे प्रकारों में पाशोया करना उचित है और ठंढाई पिलाना और स्त्री के दुग्ध को नाक में टपकाना और शिर पर दुहना उचित है। जो स्त्री का दुग्ध न मिले बकरी का दूध ही शिर पर डाले और कद्दू का तेल मलना उत्तम है।

कद्दू का तेल।

कद्दू का जल निचोड़कर छानके बराबर के मीठे तेल में जोश दे जब पानी जल जावे तेल का सेवन करे।

लखलखा—उसको कहते हैं कि गीली चीजें किसी शीशी में रखकर सूँघे जो गरम सरसाम को दूर करेगी—ताजे धनियें का पानी खीरे ककड़ी के बीजों का जल थोड़े सिरके में मिलाकर शीशी में रखकर सूँघे।

अन्य—चन्दन हरी कासनी के रस और तरबूज के जल में रगड़कर थोड़ासा कपूर भी मिलाकर शीशी में रखकर सूँघे।

नीलोफर का तेल।

जो सरदी की शिरपीड़ा और सरसाम को दूर करे नीलो-

फर के फूल लेकर गुलरोगन की तरह उसका तेल बना ले।

अन्य–उद की शरबत जो ब्रह्माण्ड को अतिबलदायक है–अर्थात् अगर पांच टंक, लौंग, बालछड़, दारचीनी हर एक डेढ़ डेढ़ टंक मिश्री पावभर यह सब दवा जवकुट करके वस्त्र में बांधकर गुलाब में भिगोकर जोश दे जब चौथाई शेष रहे छान कर मिश्री मिलावें शरबत का कवाम करें फिर ढाई रत्ती भर कस्तूरी और अम्बर मिलावें।

अन्य–गरम सरसाम को दूर करे–चन्दन और कपूर घिसकर काहू के पत्तों के पानी में मिलाकर नाक में टपकावें।

पाशोया–जो सरसाम को दूर करे–खेरू के फल, नीलोफर के फूल, छिला हुआ कद्दू, हरएक आध आध पाव, जौकी भूसी तीन मुट्ठी जल में जोश देकर कुछ गरमजल में पाशोया करे और चन्दन रगड़कर सुंघावे खाने को आश जो दे फिर ज्वर और शिरपीड़ा का यत्न करे।

मिरगी का वर्णन।

यह रोग बहुधा कफ से होता है और जब मिरगी आती है तो रोगी पृथ्वी पर गिर पड़ता है हाथ पांव टेढ़े हो जाते हैं चेष्टा बिगड़ जाती है कफ मुँह से निकलता है इस रोग में अवश्य करके शिर भारी होता है, जिह्वाकी नीची रगें सब्ज होती हैं।

मिरगी की औषधियां।

जब मिरगी आवे तो रोगी के अवयवों को मूलदशा पर देखते रहे–और सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, नौसादर, इन्द्रायन के फल के अन्दर का पग्दा कलौंजी आदि हरएक अलग अलग या मिलाकर पीसकर नाक में फूँके जब मिर्गी दूर हो तो मुंजिज देकर हब्बअयारज से मुसिल दे और चौपायों के मांस और तर मेवों और दूध, प्याज और मसूर वरन उन वस्तुओं से जो तन्द्रा या नशा करती हैं पथ्य करें और दुर्गन्धि के सूँघने और बहुत जागने और ठंडे पानी में नहाने और पेटभर कर सोने और धूप और मेह में फिरने और भयानक शब्दों और ठण्डी पवन से भी

अलग रहे जो लड़कों की मिर्गी में ज्वर बहुत हो तो गर्म वस्तुओं का अधिक सेवन न करें और अधिक ठंढाई भी मना है और शाफे अर्थात् बस्ति से बद्धकोष्ठ दूर करना उचित है इस जगह थोड़ीसी सुगम औषधियां जो इस रोग के लिये उत्तमोत्तम हैं लिखी जाती हैं।

गोलियां—जब मिरगी का दौरा न हो तो देनी चाहियें।

गूगल की गोली—मिरगी को गुण करे मुसिल देने के उपरान्त वैद्य प्रकृति के सम करने के लिये सेवन करते हैं—कूट, सोंठ, कबाबा, देवदारु हर एक तीन तीन टंक, भंगराकाला, कालीमिरच, अकरकरा, गजबेलि, सनके बीज हरएक नौ नौ टंक गूगल सबके बराबर कूट छानकर शहद में गोलियाँ बनावें खूराक २ टंक प्रभात और सन्ध्या को कुछ गरम पानी से निगलें।

औषधि—जदवार नरीना लड़केवाली स्त्री के दुग्ध में रगड़कर पिलावें।

दाग—लड़कों की मिरगी के लिये आजमाया हुआ है, दोनों भवोंके बीचमें मूँगे का दाना गरम करके दाग दें और बकरी की मेंगनी से भी दाग देना उत्तमोत्तम है।

अन्य—औषधि मिरगी के दौरे के समय श्रेष्ठ है—शरीफे की बीजों की गिरी को पीसकर कपड़े की बत्ती में रखकर उसका धुवां नाक में पहुँचावें।

अन्य—मिरगी के समय कपड़े का बन्द खटमल के रुधिर में भिगोकर उसका धुवां नाक में पहुँचावें।

अन्य—मिरगी के दौरे के समय या उसके आगे पीछे लाभदायक है—आक की जड़ का बक्कल बकरी के दुग्ध में घिसकर नाक में टपकावें। कछुये का रुधिर जौ का आटा शहद में सबको बराबर मिलाकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावें सुबह और शाम एक एक गोली खावें।

अन्य—मिरगी के समय ढाक की जड़ जल में रगड़कर नाक में टपकावें।

अन्य—गीदड़ के पित्त को कई कालीमिरचें डालकर सुखावें मिरगी के समय उनमें से दो मिरचें पानी में पीसकर दोनों नथुनों में दो तीन बूँदें टपकावें मिरगी जाती रहेगी ।

अन्य—मिरगी के समय काम आती है—आधे महुवे की गुठली अढ़ाई कालीमिरचों के साथ पानी में पीसकर नाक में टपकावें।

अन्य—मिरगी के दौरे के समय सेवन करने से तत्काल मूर्च्छा दूर हो कड़वी तोरई जलमें पीसकर दो तीन बूँदें नाक में टपकावें ।

अन्य—छोटी कटाई का दूध दौरे के समय नथुनों में टपकावें।

अन्य—रुई हाथीकी मस्ती में अर्थात उस तरी में जो मस्ती के समय हाथी के कान के पास या उसके माथे से बहती है भिगोकर मिरगी के समय दो तीन बूँदें नाक में टपकावें ।

अन्य—दो भाग नौसादर आधा हिस्सा सबसकूनरी अर्थात् फलुवा चौथे हिस्से तिलों के तेल में पीसकर कई बूँदें नाक में टपकावें ।

अन्य—कटाई की जड़ भंग के बीज बराबर लेकर लड़के के मूत्र में पीसकर नाक में टपकावें ।

अन्य—बकरी के सींग का धुवाँ दौरे के समय नाक में पहुँचाना शीघ्र ही लाभ देता है ।

चूर्ण—जो विशेषकरके इस रोगको दूरकरे—भैंसेका सुम जलाकर एक टंकके प्रमाण मिरगीवाले को खिलाना आराम करता है।

गुललाला का शरबत ।

अन्य समय या दौरे के वक्त मिरगी दूर करना है—लाले के फूल बीस टंक लेकर जल में औटावें और साफ करके चालीस टंक मिश्री से कवाम करके शरबत तैयार करें लड़के को आधा टंक और बड़े को दो टंक खिलावें ।

औषधि—दौरे के समय राई को पीसकर सूँघे ।

अन्य—कुन्दरू पिसाहुआ थैली में बाँधकर सूँघे—इस मिरगी के रोग के लिये जालीनूस की परीक्षा से अकरकरा अति उत्तम है मुस्हिल लेने के उपरान्त समय पर वा अन्य समय में अकरकरा

कूटकर बराबर सिरके में पीसकर तीन हिस्से शहद में पाक बनावें और सात माशे कुछ गरम जल से खावें।

अन्य—औषधि—छोटी कटाई कायफल सुखाकर कायफल, नकछिकनी दोनों छः छः माशे, तम्बाकू की नास चार तोले सबको कजली करके दो माशे के अनुमान प्रतिदिन सूँघे।

नाक में फूँकने की औषधि।

जो दौरे के समय काम में आती है घूँस के पित्ते में कालीमिरच भरकर छाया में सुखावें समय पर पीसकर दो चावल भर नाक में फूँकें।

अन्य—रत्नज्योति पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य—दौरे के समय वा अन्य समय सेवन कर सकते हैं साबूत रीठा उसके वक्कल और बीज समेत पीसकर नास लिया करें।

अन्य—समय पर मिरगी को दूर करे—बड़ा बोट कि आक के वृक्षपर अनेक रंग का होता है उछलता है उड़ नहीं सकता उसको सुखाकर कालीमिरच की बराबर लेकर पीसकर रोगी की नाक में फूँकें आजमाया हुआ है और साहब खैरुल्तिज़ारब ने कालीमिरच के बदले गौ का घी लिखा है।

अन्य—चूहे का भेजा सुखाकर पानी में पीसकर आधे माशे के अनुमान नाक में फूँकें तीन दिन में आराम हो जावेगा।

औषधि—जो विशेष करके मिरगी को दूर करे तिबफरीदी में लिखा है कि मिरगी के रोगी के गले में जायफल लटकाना अति लाभकारक है मिरगी को फिर नहीं आने देता इसी प्रकार हींग को लटकाना चाहिये। सुअर के सुम की अँगूठी मंगल के दिन दहिने हाथ में पहिनना मिरगी को दूर करता है वह मिट्टी जिस पर सुअर ने मूत्र किया हो अपने पास रखना विशेष करके मिरगी को दूर करे और भेड़िये के दाँत लड़के के गले में बाँधने से मिरगी नहीं आती।

अन्य—भेड़िये की विष्ठा और हड्डी अपने पास रखने से मिरगी दूर होती है।

अन्य–गाय के बायें सींग की अँगूठी बनाकर बायें हाथ में पहिनना भी श्रेष्ठ है ।

अन्य–चूहे का होंट लड़के की गरदन में लटकाना लड़कों की मिरगी को दूर करता है ।

सकते की औषधि का वर्णन ।

सकना वह रोग है कि जिसमें मनुष्य हिलजुल नहीं सक्ता और वह रोगी मुरदा मालूम होता है उसका कारण मुख्य भेजे में नल की गांठ पड़ने का है ।

यत्न–जो रुधिर से हो तो सरेरू की फस्द खोलें जो कफ की अधिकता हो तो कफ के वास्ते वस्तिकर्म और शाफे के द्वारा मल निकालें और शिरको भी सेंकें और कान में औषधियां टपकावें और सुँघें और वमन कराना उत्तम है और पांव का मलना और बांधना श्रेष्ठ है ।

अन्य–शिर में तालू पर नश्तर देकर उस पर पारा मलना लाभ देता है और मुंजिज के उपरान्त कफ के निकलने का उपाय करें जब इस रोग में साँस का चलना मालूम न हो तो असाध्य जानो, और जो साँसका आना जाना मालूम हो तो साध्य जानो सकने के बीमार और मुरदे में इतना अंतर है कि सकते की हालत में रोगी के नेत्र में देखनेवाले का प्रतिबिम्ब मालूम होता है और मुरदे की आँख में नहीं मालूम होता ।

नाक में टपकाने की औषधि ।

सकतेकोदूरकरे–नकछिकनी, पापड़िगा खेर, एलुवा, चुकन्दर की जड़ जल में पीसकर छान करके कुछ बूँदें नाक में टपकावें ।

अन्य–थोड़ी सी हींग सोंफ के अरक में पीसकर कराठ में टपकावे ।

औषधि–जो शिर मुंडाकर पछने लगाकर मनुष्य के मूत्र में बच्छनाग पीसकर उसपर मले तो तत्काल चैन होवे ।

निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने के रोग के विषय में ।

बहुधा बुढ़ापे में कफ की अधिकता से निसियान अर्थात्

स्मरण जाते रहने का रोग होता है जो यह रोग युवावस्था में हो तो ब्रह्मांड की बीमारियों के रोगों की खबर देता है इसका मुख्य यत्न यह है कि मलके पकने के उपरान्त ब्रह्मांड को ठण्ढे मुसिल से साफ करे।

भिलावें का पाक—जो निसियान और दूसरे रोगों को श्रेष्ठ है—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बालछड़, तज, तेजपात, नागरमोथा, अस्तखद्दूस हर एक डेढ़ डेढ़ तोला कालीमिरच, नरकचूर दो दो माशे, भिलावें का तेल सात माशे, सवापाव शहद में चटनी करके पाक बना लेवे।

अन्य--तज की माजून जो निसियान की बीमारी को दूर करे—तज, नागरमोथा दोनों दश दश टंक, सोंठि, कालीमिरच हर एक पाँच पाँच टंक कूट छानकर दुगुने शहद में मिलावें बाजी पुस्तकों में औषधियों की तोल बराबर लिखी है—खूराक दो टंक।

चूर्ण—जो इस रोग को दूर करे—कुन्दर, सोंठि, नागरमोथा बराबर कूटकर फंकी बनावें अपनी रुचि के अनुसार मुनक्के के सात दानों का रस निकालकर उसके साथ एक सप्ताहभर फाँकें।

अन्य—वज की माजून जो निसियान को दूर करती है और पट्ठों को गरम करती है सफेद शक्कर पाव भर कवाम करके तीन टंक वज औषधि पीसकर उसमें मिलाकर माजून तय्यार करें खूराक एक तोले के अनुमान।

औषधि—जो स्मरण को उत्तम है—कालीमिरच, पीपल, हल्दी, कूटमीठी, मुलहठी, कालाजीरा, सांभरनोन, अजमोद सब एक एक टंक महीन पीसकर प्रतिदिन एक टंक शहद और घी में मिलाकर खावें।

अन्य—यह औषधि ब्रह्मांड की सरदी के रोगों और निसियान को श्रेष्ठ है पाँच टंक भिलावाँ प्रति दिन खावे।

अन्य—एक तोला ब्रह्मदंडी कूट छानकर गाय के दूध से पंद्रह दिन फाँकें परन्तु जागने और शीतल जल से नहाने और मदिरा और बहुत पानी पीने से पथ्य करें।

जवारिश लौहि सादा को—जो कोष्ठ की बीमारियों में वर्णन होगी तिल्लियान के लिये लाभदायक है।

अन्य—मालकाँगनी का तेल पान में लगाकर एक माशा पारा उस पर रखकर खूब मलें पारा उसी समय बिथर जावेगा उसी समय उस पान को पारे से साफ करके पान की गिलौरी में रखकर खावें और इसी प्रकार सर्वदा खाया करें।

मालकाँगनी के तेल के निकालने की विधि।

मालकाँगनी को कूटकर गर्जी की थैली में भरकर उसका मुँह सींकर ताँबे के बरतन में रखकर उसके नीचे कोयले की आग सुलगावे और थैली पर एक भारी पत्थर रख दे तेल निकल आवेगा।

औषधि—जो तिल्लियान को अच्छा करे—एक टंक कुन्दर रात्रि को जल में भिगो दे प्रात समय साफ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

दार व सदर बीमारियों का वर्णन।

दार उस रोग का नाम है कि हर एक वस्तु फिरती हुई मालूम हो और सदर कि उठने के समय आँख के नीचे अँधेरा आ जाबे यह रोग दोषों की भाफ के हिलने और उनके दिमाग पर चढ़ने से पैदा होता है रोग के वेग के समय पर मुंजिज के उपरान्त भेजे को साफ करना उचित है।

ईतरीफल—जिसे शिरोरोग में वर्णन कर चुके हैं उत्तम है।

कल्क—दोनों रोगों को श्रेष्ठ है परन्तु जो वह पित्त से हो धनियां, आमला कुचल कर तीन टंक रात को जल में भिगो कर प्रभात को मलकर थोड़ी सी शक्कर या शहद मिलाकर पिलावें।

काढ़ा—दार का गुणकारक—सरफोंका, धनियां पीसी, हड़ की जड़ जवकुट करके हर एक साढ़े तीन तीन तोले औटाकर एक सप्ताह भर पिये।

अन्य—जो दौरानशिर को दूर करे खशखाश का रस दो टंक, धनियें का शीरा दो टंक, थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–द्वारको गुण करे–पटसन के बीजों को पीसकर गेहूँ के आटे में मिलाकर रोटी पकाकर खावे।

चूर्ण–जो सद्र और द्वार को गुण करे सफेद् खश्खाश, धनियाँ, बिनौले की मींगी बराबर लेकर दुगुनी मिश्री मिलाकर पीस छानकर प्रतिदिन गुलाब या जल के साथ फाँके।

सुबात अर्थात् अधिक सोने की दवाओं के विषय में।

यह रोग बहुधा अधिकता से भेजे पर चाहे सादा हो या मल का होता है।

औषधि–मुंजिजके उपरान्त कफका मुसिल्ल दें उसके उपरांत कालीमिरच घोड़े की लार में पीसकर नेत्र में लगावें निद्राके अधिक वेग को दूर करेगी और ठण्ढी वस्तु के खाने से पथ्य करें और सिरका सूँघना नींद की अधिकता दूर करता है और इतरीफल खाना उत्तम है।

सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन।

बहुत जागना भेजे की खुश्की का कारण है सादा हो वा मल का।

उपाय–भेजे को तर करे और जो यह रोग मल से हो तो भेजे को साफ करना भी आवश्यक है।

औषधि–बकरी का दूध हाथ की हथेली और पाँव में मलना श्रेष्ठ है।

अन्य–खश्खाश का तेल तलुओं और तालूपर मलना लाभ करता है और खश्खाश के तेल को बादाम के तेल की तरह निकाल लें।

अन्य–अफीम सूँघना और पसलियों पर मलना नींद लाता है।

अन्य–नाजबो के पुष्प का सूँघना और सोये के साग को तकिये के नीचे रखने से अवश्य ही निद्रा आती है।

औषधि–जो निद्रा लावे–खश्खाश के बीज के दो टंक काहू एक टंक शीरा निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाके पियें।

तेल पाँचबीजों का जिसका नाम रोगन हुबूबखमसा है- और नींद लाता है और शिरपीड़ा और पैत्तिक सरसाम को लाभ देता है।

काहू के बीज, कद्दू के बीजों की गिरी, नरबूज के बीजोंकी गिरी, खशखाश, तिल बराबर लेकर बादामरोगन की तरह तेल निकालकर शिरपर मलें।

काहू का तेल शिर पर मलने से नींद आती है।

तेल निकालने की रीति—काहू के पत्तों का जल दो भाग निकालकर एक भाग मीठे तेल में मिलाकर खूब औटावे जब तेलमात्र रहजावे तो उतार ले।

लेप जो निद्रा लावे—हरी भंग की पत्तियाँ बकरी के दूध में मेहँदी की भाँति पीसकर तलुओं में लगावे या भंग का तेल तलुओं में मले और भंग के तेल के निकालने की यह रीति है कि भंग के पत्ते बकरी के दुग्ध में पीसकर टिकिया बनाकर घी में जलावे जब काली हो जावे छानकर उस घृत का सेवन करे।

रोगी के हाथ पाँव इतने खींचकर बाँधे कि खिंचावट से पीड़ा करें और ऊँघा न जावे और एक दीपक उस रोगी के आगे जलावे और लोग इकट्ठे होकर किस्सा कहानी कहना शुरू करें जब देखे कि रोगी थक गया है हाथ पाँव खोल दे और सब चुप होजावें चिराग उठालें तो यह उपाय निद्रा लाने का है।

चक्की की आवाज और जल के बहने के शब्द, पवन और दरख्तों के पत्तों के हिलने की आवाज से भी निद्रा आती है काहू का तेल शिरपर मलने से भेजे की खुश्की दूर हो—कद्दू के तेल के निकालने की रीति सरसाम में वर्णन हो चुकी है।

औषधि—स्त्री के दूध को नाक में टपकाने से भेजेकी खुश्की दूर हो और भोजन के पच जाने के उपरान्त कुछ गरम जल से नहाना निद्रा लाता है और जो ज्वरके कारण निद्रा न आवे तो पाशोया करे।

चूर्ण—जो निद्राके दोष और नजले को दूर करे—और भेजेका बलदायक है भुनी हुई धनियाँ, काहू के बीज की मींगी भुनीहुई खशखाश के बीज हर एक अढ़ाई अढ़ाई मिस्काल शक्कर सफेद् बारह मिस्काल कूट छानकर चूर्ण बनावे शरबत दो मिस्काल।

औषधि—जो निद्रा लावे—बनफ्शा, पोस्ता, काहू के बीज, खशखाश, नाजवो औटाकर तरेड़ा दे।

अन्य—नास जो निद्रा लावे—खशखाश के बीज, काहू के बीज, धनियाँ, सूखे सोये के बीज बराबर लेकर भूने और कपड़े में ढीला ढीला बांध बांध सूंघे।

अन्य—हरे काहू का पानी लेकर छानकर स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे।

सुरमा—स्त्री की कंघी पर चिराग से काजल पारे और आंख में लगावे और कंघी शिरहाने रखकर सो रहे।

लकवह और फालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में।

फालिज उस रोग को कहते हैं कि जिससे आधा शरीर लंबाई में ढीला हो जाता है और लकवह में एक ओर को मुँह टेढ़ा हो जाता है। यह दोनों कफ से होते हैं इन दोनों रोगों का यत्न मिलता हुआ है इसलिये एकही जगह पर लिखा जाता है।

इस रोगके आदि में उत्तम से उत्तम यह उपाय है कि दो तीन लंघन कराकर जलकी जगह माउलअसल पिये और जो यह रोग बहुत बली हो सात दिन पर्यंत भोजन न करे।

माउलअसल बनाने की रीति।

शहद एक भाग, जल दो भाग औटावे जब तीसरा हिस्सा शेष रहे साफ करे और जहां शहद न मिले उसके बदले गुड़ ही ऊपरकी लिखी हुई रीति से औटाकर सेवन करे।

भोजन—कबूतर या चिड़िया का शोरबा और चनों का पथ्य दोष का पकाना रोग से चौथे दिन आरम्भ करके हुबअयारिज का नवें दिन या चौदहवें दिन मुसिल दें और दूसरी बार भी मल

निकालना इस रोगमें आवश्यक है और हर दोष के मुंजिज की औषधि हरदोष के नीचे वर्णन हो चुकी है ।

मुंजिज का काढ़ा—सौंफ छः माशे, सौंफ की जड़ एक तोला, सौंफ के बीज, अजवायन, अजमोद तीन तीन माशे, बालछड़ चार माशे, कासनी की जड़ एक तोला, गुलकन्द दो तोले डेढ़ पाव जल में औटावे जब आध पाव रहे तो पिये और प्रतिदिन इसी तरह सेवन करे ।

अयारज की गोलियाँ—फैकरा अयारज फैकरा छः टंक, पीले हड़ों की छाल पांच टंक, शोर्बी तुरबुद चार टंक, हुबुलनील दो टंक, इन्द्रायण के फल का गूदा दोनों एक एक टंक, हिन्दी नमक पांच टंक कूट छानकर गोलियाँ बनावे ।

अयारजफैकरा की तरकीब पिछले हकीमों की तरकीब पर ।

अस्तारों, बालछड़, तज, मस्तंगी, दारचीनी, अस्तखद्दूस, सौंफ, गुलाब के फूल हरएक एक एक टंक एलुवा दुगुना कूट-पीसकर छान ले मुस्लिों के दे चुकने के उपरान्त इस रोग के बराबर करने के लिये जिसका वर्णन किया जाता है सेवन करें ।

सौरनी और कफ के सम्पूर्ण रोगों तथा कमर और पेट के दर्द की गोलियाँ ।

धोई हुई गन्धक, पारा, लाल हरताल, बेशमदार जो एक प्रकार का विष है नीबू के जल में आठ पहर खरल करके उड़द के बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली से तीन गोली तक घृत के साथ खाय ।

अन्य—जो फालिज और लकवे में मुसिलों के उपरांत प्रकृति के बराबर करने के लिये श्रेष्ठ है—अकरकरा, कालीमिर्च, पीपल हर एक तीन तीन माशे, पीपलामूल छः माशे, सोंठ, मीठा-तेलिया एक एक तोला कूट छानकर गुड़ और घी में मिलाकर मूँग के बराबर गोलियाँ बनावे और एक या दो गोली खाय ।

सौरनी वैद्यक की रीति पर ।

मालकांगनी, गजपीपल, पीपल तीन तीन टंक मुसली काली

पन्द्रह टंक, सोंठ सोलह टंक, जमालगोटे की गिरी सब्जी दूर करके चार टंक यह सब दवा कूटछानकर जल मिलाकर खरल में पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे और दो गोलियां प्रतिदिन खाय।

लकवे की और गोलियां।

सोंठ, बच बराबर कूटकर शहद में मिलाकर अखरोट के बराबर प्रतिदिन दोबार खाया करे और इस औषधि के सेवन के समय में माउलअसल का पीना उचित है।

बफारह—फालिज और लकवे के लिये लहसन एक टंक, पक्का सोंठ एक टंक, बकायनके पक्के पत्ते, संभालू के पत्ते पाव पाव सेर, सोंठ जवकुट करके सबको मिलाकर दो सेर जल में औटावे जब आधा रहे रक्खा से लिहाफ के अन्दर उसका बफारा ले।

अन्य—कुचला फालिज लकवे और भेजे के रोगों और कटि-पीड़ा के लिये श्रेष्ठ है और शीतल प्रकृतिवालों के स्वभाव को अच्छा कर देता है—पन्द्रह कुचले पन्द्रह दिन जल में भिगोकर तीन दिन पीछे जल बदलते रहें जब पन्द्रह दिन पीछे नरम हो जावे बक्कल दूर करके सुखावें फिर अग्नि में इतना जलावें कि धुवाँ बन्द हो जावे कोयला बनाकर ठण्ढा करके उसके बरा-बर कालीमिरच मिलाकर पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बांधे एक गोली प्रतिदिन सुबह खाय।

अन्य—वैद्यक की रीति का नुस्खा जो फालिज और कफ के रोगों को शान्त करता है—कुचला, भंग के बीज, नकछिकनी आठ आठ टंक तीनों औषधियों को पावभर दूध और आध-पाव जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे कुचला और भंग के बीज छिलके उतारकर तज, पीपल, सोंठ, सौंफ हरएक डेढ़ डेढ़ टंक कूट छान हरी ब्रह्मदंडी या सूखी ब्रह्मदंडी के जल में औटाकर उसमें सब औषधियों को खरल करे और चने के बराबर गोलियाँ बनाकर प्रातः और संध्या को एक वा दो गोली खाय इस रोग में जब तक भूख सच्ची न हो भोजन न

करे और जब तक प्यास न लगे माउल्असल न पिये और लकवा के रोगी को अँधेरे निवासस्थान में बैठाना उचित है और जिसको फालिज ज्वर के साथ हो गरम दवायें न दे किन्तु पहिले ज्वर का यत्न करे फिर फालिज को दूर करे गरम जल फालिज के रोगी को हानिकारक है।

फालिज के लिये वैद्यों की आजमाई हुई औषधि।

कलई, जस्त, वेशुसियाह, पारा हर एक दश माशे, कालीमिरच पाँच टंक पहिले जस्त और कलई को गलाकर पारे में डाले कि गोला बँध जावे फिर छः पहर खरल करे फिर वेशुसियाह को थोड़ा थोड़ा उसमें छिड़ककर छः पहर पीसे फिर कालीमिरच थोड़ी थोड़ी डालकर उसी प्रकार खरल करे कि अठारह पहर खरल हो जावे और प्रभात उठकर एक चावल भर खावे और उड़नेवाले जानवरों का मांस भोजन करे।

बजकी माजून—जो लकवे के लिये आजमाई हुई है—बज बीस टंक, सोंठ, कालाजीरा सात सात टंक, सौ टंक शहद में मिलावे और प्रतिदिन एक टंक खाया करे इस औषधि के सेवन में माउल्असल पीना आवश्यक है।

अन्य—जो फालिज और सम्पूर्ण कफ के रोगों के लिये उत्तम है—बज दश टंक, कालीमिरच, पोदीना, कालाजीरा, कलौंजी तीन तीन टंक, पाव भर शहद में मिलावे और दो टंक खावे।

अन्य—बिलावे की मींगी को शक्कर के साथ विरेचन के उपरान्त खाना फालिज लकवे और मिरगी को दूर करे।

मलने की औषधि।

जिह्वा पर मलने से फालिज को अच्छी करे—राई, अकरकरा पीसकर शहद में मिलाकर जिह्वा पर मले।

औषधि—जो फालिज के रोगी की प्रकृति को समान कर्त्ता है एक बीरबहूटी शिरपाँव उखाड़कर पान की गिलोरी में प्रतिदिन खाया करे।

औषधि—फालिज में उत्तमोत्तम औषधि भंग है जालीनूस

कहता है कि जो कालीमिरंच महीन पीसकर तेल में मिलाकर मले कोई औषधि इसके बराबर नहीं।

अन्य—लकवे को श्रेष्ठ है—सन के बीज पाँच टंक शहद में मिलाकर जुलाब के उपरान्त पन्द्रह दिन खावे।

तेल—जिसका मलना फालिज और लकवे के रोगी को श्रेष्ठ है सफेद कनेर की जड़ की छाल, सफेद घुंघचीकी दाल, काले धतूरे की पत्तियाँ हरएक दो दाम सबको कूट छानकर टिकियाँ बनाकर पावभर तेल में तले जब टिकियाँ जलजावें उसी तेल में कजली करे जब वह थिरा जावे फालिज के रोगी के जोड़ों पर उस तेल को मले और इस तेल का लगाना वीर्य को भी बल देता है।

अन्य तेल—जिसका मलना अर्दित रोग को दूर करे मीठातेल पावभर, कठ, कलौंजी दोनों दो दो दाम इन दोनों को तेल में खूब जलाकर सेवन करे।

अन्य—जिसका मलना फालिज को अच्छा करे अरण्ड के पत्ते, धतूरे के पत्ते, आक के पत्ते, सहदेई के पत्ते, सहँजन के पत्ते, असगन्ध के पत्ते, सँभालू के पत्ते, सब बराबर कूटकर पानी निचोड़ कर बराबर मीठे तेल में औटावे यहाँ तक कि पानी जलकर तेल रह जावे उसके उपरान्त सोंठ और कड़वी कठ पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य—वह तेल कि पट्ठों को बल दे और फालिज और झोले को गुण करे और पेट की वात को निकाले—कूट दो टंक, वाल-छड़, अशना, तेजपात, अकरकरा, सोंठ, हरएक एक टंक जव-कुट कर जल में भिगोदे और प्रातःकाल औटावे कि तीसरा हिस्सा रह जावे और मलकर छानकर पावभर मीठा तेल मिलाकर फिर औटावे कि पानी जल जावे और तेल रह जावे।

दाउदी का तेल—जो बाबूने के बदले भी काम में आता है और सरदी के रोगों को उत्तम है—गुलदाउदी से यथाविधि रोगनगुल तैयार करे परन्तु फूल तीन बेर बदले।

तितली का तेल—उसका मलना बदन के झोले को और पट्ठों

को अतिश्रेष्ठ है—निरनली के हरे पत्तों को चौगुने मीठे तेल में औटावे जब केवल तेल शेष रहे मुर्वा साढ़े चार अदकिये नि-नली सेरभर जल में पकावे जब आधा रहजावे साफ करके एक अदकिया वही मीठा तेल डालकर यहाँ तक औटावे कि तेलमात्र ही शेष रह जावे ।

बाबूने का तेल—भेजे की सरदी के रोगों को अतिश्रेष्ठ है बाबूने के हरे फूल दो भाग, मेथी एक भाग, तिलका तेल छः भाग शीशी में करके चालीस दिन धूप में रक्खे और बाजलोग बाबूने के फूल और मेथी को दशभाग जल में औटाते हैं यहाँ तक कि तेलमात्र शेष रह जाता है ।

अन्य—निरनली के हरे पत्तों के साथ तिलों का तेल मिलाकर शीशी में करके धूप में रक्खे चालिस दिन के उपरान्त सेवन करे ।

अन्य तेल—जो मलने से फालिज और काँपनी को दूर करे, हुबा छिला हुआ चारदाम, कटकड़वी दो दाम, कायफल, धतूरे के बीज दो दाम, कूट छानकर पानी में टिकियाँ बनाकर बाँधकर दुगुने मीठे तेल में जलाकर साफ करके मले ।

वायु और कफ के दूर करने का तेल ।

अजवायन, अकरकरा, इस्पन्द, खारी नोन बराबर लेकर अधकुचला करे और आठ हिस्से जल में भिगोकर औटावे जब चौथा भाग रहे छानकर तिलों का तेल बराबर औषधियों को मिलाकर फिर औटावे कि तेल शेष रह जावे ।

फालिज के लिये बावची का तेल ।

बावची आधसेर, लुरव अजवाइन अढ़ाई दाम कूट छानकर पानी में टिकियाँ बनावे और अढ़ाई सेर धतूरे के वृक्ष का जल और साध सेर मीठा तेल मिलाकर लोहे की कड़ाही में पकावे जब टिकिया जल जावे छानकर मले ।

तेल—सम्पूर्ण शीत के भेजे की बीमारियों को दूर करे, माल-कांगनी, भिलावाँ, लहसुन बराबर कूटछानकर गोलियाँ

बनाकर तीन दिन सुखा के पातालयन्त्र में तेल खींचे एक घुंघची से चार घुंघची पर्यंत पान में खावे।

तेल–जो झोले के रोग और वायु आदिक शीतके रोगों को श्रेष्ठ है मैनफल पाँचदाम, सोंठ चारमाशे, करंजुवा, बाबूना, कठकड़वी तीनतीन दाम, कलौंजी, पवाँर के बीज, धतूरे के बीज, अजमोद, मालकाँगनी, इस्पन्द, पीपलामूल, कायफल, खुरासानी अजवाइन, अकरकरा, अजवाइन देशी दो दो दाम, दारुहल्दी, वायबिड़ंग एक एक दाम, तिलों का तेल दो सेर, रेंड़ी का तेल आधपाव, अलसी का तेल आधपाव यथाविधि तेल तैयार करके मर्दन करे परन्तु सरदी के दिनों में वायु और ठंढी चीजों से पथ्य करे।

फंकी–जो फालिज और वातज रोगों के लिये श्रेष्ठ है अजमोद, वायबिड़ंग, काबिली, नमक लाहौरी, देवदारु, शैतरा, चीता, पीपलामूल, सौंफ, पीपल, काली मिरच हरएक अढ़ाई टंक, पीले हड़की छाल साढ़े बारह टंक, बिधारा, सोंठ एक एक टंक कूट छानकर एक तोले से डेढ़ तोले पर्यंत खाया करे।

लहसुन का माजून।

आधपाव लहसुन के बड़े २ जवे छीलकर डेढ़पाव गाय के दूध में औटावे जब घुलमिल जावें छानकर कवाम करके बाबूने के फूल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, कालीहड़ की छाल, अकरकरा, कबाबा, खूलंजान अर्थात् कुलींजन एक एक दाम कूटछानकर कवाम में लावे।

अन्य औषधि–जो फालिज और लकवे को श्रेष्ठ है सोंठ, लाहौरी नमक पीसकर नाक में नास लें।

बावची की माजून।

जो शीत के रोगों को दूर करे बावची, सोंठ, तेजपात, बालछड़, नागरमोथा, कालीमिरच, अकरकरा, कलौंजी, कठ, शहद, भिलावाँ यह सब दो दो भाग, भंग, राई, पीपल एक

एक भाग कूट छानकर बादाम के तेल में पकाकर तिगुने शहद में मिलाकर रक्खे छः महीने के उपरान्त सेवन करे।

अवचन–एक टंक से दो टंक पर्यन्त।

नाक में टपकाने की औषधि।

जो लकवे और मिरगी को श्रेष्ठ है और भेजे को तरी से साफ करता है धोवी कलौंजी और इसपंद लेकर चुकंदर की जड़ और इन्द्रायन की जड़ को जल में पीस छानकर दो तीन बूंद नाक में टपकावे।

अवचन–जो लकवे और फालिज के रोगी के भेजे के साफ करने के लिये काम आता है।

सोंठ, वालछड़, कुलींजन एक एक मिस्काल, कालीमिरच, पीपल आधा आधा टंक यह सब औषधि कुचल के थैली में बाँधकर तीन सेर शहद और तीन सेर जल में औटावे और बार बार थैली को मलता रहे कि कवाम हो जावे और दो तोले प्रभात उठकर पिये।

चटनी–जो फालिज और कफ के रोगों को उत्तम है–बच, अकरकरा, कायफल, कुलींजन, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, नरकचूर, पीपलामूल बराबर लेकर बराबर शहद में मिलावे और वैद्य की सम्मति के अनुसार खाय।

मालखोलिया अर्थात विक्षिप्त होने का यत्न।

जो यह रोग अधिक हो तो उसको जनून कहते हैं और जो क्रोध और चिन्ता आदिक हो तो मानिया बोलते हैं और जो हँसी खेल और दुःख देना अधिक हो उसको दाउलकलब कहना उचित है जो अशीलता और मनुष्यों से अरुचि हो उसको फितरब कहते हैं मालखोलिया के यत्न में शीघ्रता अवश्य है– पहिले फस्द करे क्योंकि पहिले यह यत्न सुगम है और स्थिर होने के पीछे बड़ी कठिनता होती है। हदशा में रोगी को प्रसन्न रखना, अच्छी जगह बैठाना, घृतसंयुक्त भोजन खिलाना और बहुत सुलाना तथा कई बेर मुसिलों के द्वारा मल निका-

लना और मनको पुष्ट रखना उत्तम से उत्तम यत्न है, माल-खोलिया के रोगी को जो अच्छा लगे वही करने देना उचित है परन्तु एकान्त और भय हानिकारक है। जो ऐसा रोगी काम की अधिक चिन्तना करे तो आज्ञा देदे परन्तु अधिक नहीं और फस्द के उपरान्त माउलजवन पिलाना उत्तम है। माउल-जवन के सेवन के दिनों में बल देखकर मुसिल देता रहै।

अमलवेद की सिकञ्जबीन।

जो दग्धित दोष को श्रेष्ठ है—अमलबेद सात मिस्काल, शाह-तरा, गावजवाँ हरएक चार मिस्काल, मिश्री तीन भाग बहुत खट्टा सिरका, मिश्रीका तीसरा हिस्सा सबकी चाशनी करे बकरी का दूध जिसका माउलजबन बनावे इसी सिकञ्जबीनं से फाड़े मालखोलिया में बहुधा शिर पर मारना लाभ करता है कि उस को बुद्धि आवे और इन्द्रियों का बल पीड़ा के कारण चैतन्य हो जावे जो रोगी फिर जावे फिर मारे और अफीम खिलाना उसकी औषधि है और दो रत्ती से प्रारम्भ करके आधे टङ्क पर्यन्त पहुँचावे परन्तु यह उसीको लाभ करती है जो युवा हो। दागकर दागको छोड़ देना उत्तमोत्तम यत्न है तिब्बयूसफी में सर्वदा मद्य पीना और नाच दिखाना इसके यत्नमें लिखा है।

अन्य—सिकञ्जबीन अमलबेद माउलजबन में इस दग्धित दोष के रोग के लिये सेवन करते हैं कालीहड़, नमक हिंदी एक एक मिस्काल, अमलबेद पाँच मिस्काल, सिरके में भिगोकर इस सिरके से सादी सिकञ्जबीन बनाकर आधे अदकिये दो रतल भर दूध में मिलाकर पकाकर ठंढा करके टपकावे। पाँच अदकिये से नौ अदकिये पर्यन्त जितना चाहे खावे।

नाक में टपकाने की औषधि।

(जो विक्षिप्तता को लाभदायक है) मनुष्य के केश जलाकर गुलरोगन में कजली करके नाक में टपकावे।

कहानी—एक मनुष्यको अकेले बैठनेका व्यसन और उन्माद

शुरू हुआ गरीबी के सबब उस बेचारे को रोगशांति का मकदूर न था मैंने पहिले हफ्तन्दाम की फस्द खोली फिर उसको बकरी का दूध खाकसीर के साथ पिलाया बहुत गुण किया और मालखोलिया का एक प्रकार मिराक के साथ होता है और मिराक एककोष्ठ के ऊंचे का पर्दा है उसके लक्षण—गुदा के पवनकी अधिकता, अफरा, पीड़ा, उदरदाह और खट्टी डकार जली हुई और मन्दाग्नि और खफकान अर्थात् उन्माद है उसका यत्न हर चिल्ले में बासलीक की फस्द ले और ताजखरूस के पत्तों का रस पिलाना इस रोग में अति गुणदायक है और मालखोलिया का एक प्रकार और है उसको इश्क कहते हैं।

यत्न—रोगी को किसी और कामों में लगावे और उसके प्रियतम की भेंट धर्मशास्त्रानुसार उत्तम यत्न है। उन मनुष्यों को रोगीके आगे नियत करे कि उसके प्यारे की बुराई करें और जो प्यारा न हो उससे भोग करना भी प्रीति को कम करता है।

निबफरीदी में लिखा है कि लोहे के बुझे हुए जलका पीना प्रीति को कम करता है और उसकी यह रीति है कि लोहे को गरम करके जब पानी में बुझाने लगे यह कहे कि जिस तरह यह गरम लोहा पानी में ठंढा होता है उसी प्रकार अमुक के पुत्र अमुक की प्रीति अमुक की सन्तान अमुक से ठंढी करदे तीन बेर यह कहकर लोहा ठण्डा करे फिर उस जलसे प्रीति करनेवाले का मुख धोये और उसके हृदय पर छिड़के तीन दिन के सेवन में प्रीति भूल जावेगी।

निबफरीदी और अन्य पुस्तकों में लिखा है कि उस संगमर्मर का टुकड़ा जिसमें किसीके मरनेकी तारीख लिखी हो लेकर थोड़ा घिस कर प्यारे और प्यार करनेवाले के वियोग के संकल्प से दोनों को कहे विना खिलावे विशेष करके प्रीति को दूर करता है।

एक पुस्तक में मैंने देखा कि जो बिच्छूका डंक, कुत्तेका नाखून और कछुवे का नाखून ऊँट के चमड़े में यन्त्र बनाकर विक्षिप्त

रोगवाले के गले में बाँधे तो यह बीमारी दूर हो और यह यत्न मिरगी को भी उत्तम है।

औषधि नाक में टपकाने की।

फिरंगी डाक्टर ने विक्षिप्तता के दूर करने के लिये आजमाई हुई बताई है।

उल्लू का भेजा अढ़ाई रत्ती टिघलाकर कौड़ीभर कपूर मिलाकर पीसे कि खूब मिल जावे फिर अढ़ाई रत्ती कौवे का रुधिर उसमें मिलाकर दो यव के अनुमान लेकर कई बूँदें तुलसीके रस में नाक में टपकावे विक्षिप्तता दूर हो जावेगी।

अन्य--कद्दू का तेल जिसका सहर और सरसाम में वर्णन हुआ है विक्षिप्तता को उत्तम है।

अन्य--तोफतुल्मोमनीन में लिखा है कि नये कुल्हड़ में स्त्री के केश जलाकर उस कुल्हड़ में प्यार करनेवाले पुरुष को जल पिलाने से प्रीति कम होती है किन्तु उससे अरुचि हो जाती है।

शरीर के फड़कने का यत्न।

फड़कने का कारण पवन है फड़कनेकी अधिकता किसी रोग का कारण होती है।

यत्न--नोन और भूसीसे सेंके और जो तेल फालिजमें वर्णन किये गये हैं उनको मर्दन करे गरमदवा का लेप भी गुणकारी है जो इन चीजों से दूर न हो तो कफको मुसिल से निकाले।

अंगों के काँपने का यत्न।

जो मल कफ का हो तो उसके लक्षण मालूम करके उसी अंग के मल को साफ करे और जो काँपनी मैथुनकी अधिकता से हो तो मैथुन छोड़दे और जो मद्य की अधिकता से हो तो मदिरा छोड़दे और ताजा दूध पीना और आधा भूना मुरगी का अण्डा खाना काँपनी को गुणदायक है।

नेत्ररोग का यत्न।

शरीर का उत्तमोत्तम अंग नेत्र है जो इसमें कोई दोष आजावे

तो उसके यत्न में आलस्य न करना चाहिये और आँखको भाँप और धुयें और गंदी पवन से बचाना चाहिये और रोने की अधिकता और मैथुन और नशे और खींचनेवाली अधिक चीजें नेत्र को हानिकारक हैं और सर्वदा सूक्ष्म वस्तुओं को देखना निषेध है परन्तु श्रम की रीति पर उचित है हरियाली पर दृष्टि करना नेत्रके तेज को संचित करता है और नेत्ररोग पर जब तक तीन दिन न बीतें कोई यत्न न करना चाहिये—नेत्र की पीड़ा और शोथ को जो मांस के परदे की लाली के साथ हो रमद कहते हैं।

यत्न—मरोड़ की फस्द लें जो नाना प्रकार की रमद को गुणदायक है और जोंक लगाना भी लाभ देता है मांस और मिठाई और खटाई से पथ्य करना उचित है और रमद के प्रारम्भ में ठण्ढा जल नेत्र पर लगाना निषेध है और पीला कपड़ा हलदी में रंगकर या नीला कपड़ा आँख के सामने लटकाना उचित है अब कई दवा रमद की जो सुगम हैं वर्णन करता हूँ।

गोली—जो रमद के लिये श्रेष्ठ है लिखा है कि इससे रमद की पीड़ा के लिये कोई उत्तम यत्न नहीं है।

भुनी हुई फिटकरी पक्के दो दाम, हल्दी सात माशे जो कच्ची हो तो उत्तम है, अफीम पाँच माशे पक्के पावभर कागजी नींबू के रस में लोहे की कड़ाही में नरम आग में पकाकर कजली करे जब गोलियाँ बनाने के योग्य हो गोलियाँ बना रक्खें जल में रगड़कर पतला पतला आँख पर मले और नेत्र के किनारों की तरफ से थोड़ी आँख में भी लगावे।

औषधि—जो गुणकारी है और कान के जख्मों को टपकाने की दवा की रीति पर सेवन से गुणकारी है और दूधमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेना मूत्र के निकलने की जगह को उत्तम है—धोया हुआ सफेदा छः टंक, निशास्ता, कतीरा, बबूल का गोंद हरएक टेढ़ टंक कपूर दो दाम, कुन्दर अफीम आधी आधी दिरम = शाफा बनावे।

औषधि–नेत्र की पीड़ा को एक दम में ठहरावे–लोध, गेहूँ की मैदा, घी, हरएक चार टंक सबको खमीर करे और चार गोलियाँ बनावे और ठीकड़ा आग पर रखकर उसमें एक गोली रख दे जब कुछ गरम हो नरम नरम नेत्र पर बाँधे ठंढा होने के उपरान्त दूसरी गोली बाँधे इसी प्रकार चारों गोलियाँ बाँधने से पीड़ा दूर होती है।

पोटली–जो नेत्र की पीड़ा के लिये अद्वितीय है। घिकुवार की गूदी एक माशा, अफीम एक रत्ती खूब पीसकर घीकुवार की गूदी में पोटली बाँधकर पानी में भिगोकर आँख पर फेरे एक दो बूँद नेत्र के बीच में भी टपकावे।

अन्य–जो नेत्रपीड़ा के लिये आजमाया हुआ है–लोध एक माशा, भूनी फिटकरी एक माशा, अफीम आधा माशा, इमली की पत्तियाँ चार माशे सबको पीसकर पोटली बना के प्रति समय आँख पर फेरे।

अन्य–आँखों की पीड़ा और सबलवायु को उत्तम है इमली की पत्तियाँ, सिरस की पत्तियाँ, हल्दी, फिटकरी आधा आधा टंक महीन कूटकर पोटली बनाकर पानी में भिगोकर प्रतिसमय आँख पर फेरे और कुछ उसका जल आँख पर टपकावे।

तथा–रमद के लिये–कोकनार एक, अफीम एक रत्ती, दो लौंग, भूनी हुई बेलगिरी चार माशे, हल्दी चने के बराबर, इमली की पत्तियाँ थोड़ीसी पोटली बाँधकर पानी में भिगोकर आँख पर फेरे और अन्दर भी टपकावे।

तथा–कपूर तीन भाग, पठानीलोध एक भाग आपस में पीसकर पोटली बाँधे और दो घड़ी पानी में भिगोकर आँख पर फेरे और भीतर भी टपकावे।

तथा–लोध, फिटकरी, मुरदारसंग, हल्दी, जीरा सफ़ेद, हर एक टंक टंक अफीम चने के बराबर, कालीमिर्चें चार

तूतिया हरे उड़द के बराबर कूट छानकर पोटली बाँधकर पानी में भिगोकर आँख पर फेरे।

अन्य-रमद को दूर करे-पीली हड़ की छाल, काबिली हड़ की छाल, आँवला, रसोत, गेरू, इमली की पत्तियाँ, अफीम, भुनी फिटकरी, सफेद जीरा यह सब थोड़ी थोड़ी कपड़े में पोटली बाँधकर गुलाब हो तो अच्छा नहीं तो जल से भिगोकर आँख पर फेरे।

औषधि-(जो नेत्रों की पीड़ा को लाभ दे) कालाजीरा, सफेद लोध महीन पीसे और भुनी फिटकरी भी पीसकर घिकुवार के गूदे में मिलाकर पोटली बाँधे और पानी से भिगोकर फेरे।

अन्य-जो सर्वप्रकार के नेत्ररोग को गुण करे-अफीम एक माशा, भुनी फिटकरी दो माशे, इमली की पत्तियाँ दशमाशे सब महीन पीसकर पोटली बाँधकर आँख पर फेरे और पानी उसका आँख में टपकावे।

आँख की ललाई दूर करने की औषधियाँ।

फिटकरी एक माशा, अलसी दो माशे दोनों साबून पोटली बाँधकर पानी में भिगोकर आँख पर फेरे।

अन्य-(पैत्तिक नेत्रपीड़ा को गुणदायक है)-ईसबगोल का लुआब आँख में लगावे।

अन्य-जिस दिन नेत्रपीड़ा हो उसी दिन धतूरे की पत्तियाँ कुछ गरम करके कान में टपकावे जो बाईं आँख में हो तो दाहिनी में जो दाहिनी में हो तो बाईं में डाले।

अन्य-जो बच्चों के रमद को गुणदायक है-नीब की कोंपल पीसकर कुछ गरम करके जिस तरफ पीड़ा न हो उस ओर टपकावे और जो दोनों नेत्रों में पीड़ा हो तो दोनों कान में टपकावे।

अन्य-नेत्रपीड़ा को दूर करे-केवल घिकुवार की मींगी पीस कर सोने के समय आँख में टपकावे।

आँखों की पैत्तिक पीड़ा को दूर करने की औषधि।

गोंदी की पत्ती मलकर उसका पानी निकालकर आँख में टपकावे।

अन्य–हल्दी जल में पीसकर अन्योन्य ओर कान में टपकावे।

औषधि–विहीदाने का लुआब उस स्त्री के दुग्ध में जिसने बेटी जनी हो और धनियाँ के पत्तों का जल मिलाकर छानकर आँख में टपकावे तो आँख की ललाई को दूर करे।

औषधि–नींबू का रस लोहे के बर्तन में लोहे के दस्ते से हल करे जब काला हो जावे आँख के चौगिर्द अनुलेपन करे।

अन्य–लोध, आँवला, गाय के घी में भूनकर ठण्ढे जल में पीसकर मले परन्तु आँख के बीच जाने न पावे।

अन्य–पीली हड़ की छाल, गेरू, रसौत, जंगी हड़ घिसकर आँख के गिर्द लेप करे।

अन्य–आँख की ललाई को गुण करे–सूखी इमली बीज निकालकर पानी में भिगोकर मलकर छानकर अफीम तीन रत्ती, फिटकरी पाँचरत्ती उसी इमली के जल के साथ लोहे के बासन में पकावे कि पानी गाढ़ा हो जावे उसको सीप में रखकर लेप करे जो इमली न मिले उसके पत्तों का जल लेकर पकाकर लेप करे।

अन्य–सोंठ, सम्मगअरबी एक एक टंक गेरू एक मिस्काल अफीम दो टंक कूटछानकर पानी में कजली करके शाफा बनाकर लेप करता रहे।

अन्य–अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी के साथ खूब पीसकर लेप करे और आँख में टपकावे।

नेत्रपीड़ा को तत्काल दूर करने की औषधि।

बरगद का दुग्ध आँख में लगावे।

अन्य–नींब के पत्ते और सोंठ बराबर अलग अलग पीस छानकर दोनों को बराबर लेकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे समय पर जल से पीसकर लगावे।

औषधि—जो आंख की ललाई और गुबार को जो बगल की दुर्गन्धि से हो गुणदायक है—अढ़ाई काली मिरचें थोड़ी चूल्हे की मिट्टी, लाल जलीहुई तीनों को बांस के चोंगे या चीनी के प्याले में खूब कज्जली करे जब काला होजावे आँख में लगावे।

औषधि—(जो नेत्र की सुरखी को आराम करे) बाँसे के पत्ते पीसकर टिकिया करके तीन दिन आँख पर बांधे।

अन्य—कपास की पत्ती दही में जोश देकर पीसकर आँख में लगावे।

अन्य—अनार की पत्ती पीसकर टिकिया करके सोते वक्त आंख पर बांधे।

अन्य—जो लड़कों की रमद को गुण करती है। लड़के के मूत्र में रुई भिगोकर आँख पर बाँधे।

अन्य—जब रमद शुरू हो, जो पीड़ा दहने नेत्र में हो तो बायें अँगूठे के नाखून में और जो पीड़ा बायें नेत्र में हो तो दहने पाँव के अँगूठे के नख में मदार का दुग्ध भर दे।

औषधि—जो रमद को गुण करे—गोभी को पीसकर टिकिया बनाकर आंख पर बाँधे।

अन्य—आँख, हृदय और पेट की जलन को गुण दे—मकोय, आमला, मुलहठी, नागरमोथा, खस, नीलोफर के बीज, एक एक टंक, मिश्री नौ टंक कूट छानकर दो दाम के अनुमान खावे।

अन्य—कफ के रमद को गुणदायक—सहँजने के पत्तों का थोड़ासा रस शहद में मिलाकर आँख पर लगावे उस पर वस्त्र बाँधकर सो रहे प्रातसमय खोले तीन दिन में आराम होगा।

अन्य—जोलड़कों आदि के रमदको गुणकरे—साफ किया हुआ चाकसू दो मिस्काल, अंजरूत, मिश्री एक एक मिस्काल महीन कूट छानकर छिड़के और बाज़े अंजरूतकेबदले ममीरा डालते हैं।

अन्य—जली हुई मेथी का लुआब थोड़े कतीरे के साथ आंख में टपकाना बड़ी पीड़ा को दूर करता है।

अन्य—आँब की कैरी पीसकर आँख पर बाँधे।

अन्य--कटाई के पत्ते पीसकर आँख पर बाँधे और कटाई के पत्तों का पानी भी आँख में टपकाना अतिश्रेष्ठ है।

अन्य--सुरखी दूर करे--छीली हुई मुलहठी कूटके थोड़े जल में पीसकर रुई उसमें भिगोकर आँख पर रक्खे।

अन्य--सुरखी को दूर करे--लोध छः टङ्क, पीली हड़ की छाल दो टङ्क अनार के पत्तों के जल में पीसकर रुई उसमें भिगोकर तीन दिन बराबर रात को आँख पर रक्खे।

अन्य--वह औषधि पतली जिससे किसी अंग को धोवे जो नेत्रों के बुखार को दूर करे और खुजली को गुण करे और सुरखी को दूर करे--पीली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला जवकुट कर रात्रि को जल में भिगो रक्खे प्रातःकाल को उस जल से नेत्रों में एक दिन धोवे।

अन्य--कि आराम होनेकी--दश सेवन करने से एक वर्ष आँख न दूखे चालीस मुण्डी निगल जावे तो दो वर्ष पर्यन्त आराम से रहे यह आजमाया हुआ है यूनानी कहते हैं कि जो बुधवार को सूर्योदय के समय एक अनार की कली जो फूली न हो वृक्ष से मुख से तोड़कर निगले एक वर्ष पर्यन्त रमद् से रक्षित रहे जो दो निगले तो दो वर्ष पर्यन्त बचे रहे।

रतौंधी का यत्न।

कालीमिरच, कमीला, पीपल बराबर बारीक पीसकर आँख में लगावे।

अन्य--काली हड़, सोंठ, कालीमिरच कूट छानकर गोली बनाकर पानी में घिसकर लगावे।

औषधि--आजमाई हुई बौअली सैनाकी बकरीकी कलेजी का कबाब बनावे उससे जो जल टपके आँख में लगावे कई साबूत पीपल कलेजी में रखकर आगपर इतनी देर रखते हैं कि जल जावे फिर पीपल को निकालकर शहद मिलाकर आँख में लगाते हैं।

अन्य--प्याज का जल आँख में लगावे सिरस के पत्तों का पानी आँख में लगावे।

अन्य--समन्दर फल की गूदी बकरी के मूत्र में घिसकर आँख में लगावे।

अन्य--लाहौरी नमक की सलाई आँख में फेरे।

अन्य--दही के तोड़ में थूक मिलाकर आँख में लगावे।

अन्य--अदरक पीसकर उसका जल नेत्र में टपकावे जो अदरक न हो तो सोंठ पानी में घिसकर दो तीन बूँदें आँख में टपकावे।

अन्य--कालीमिरच थूक में घिसकर आँख में लगावे।

अन्य--रोहू मछली का पित्ता आँख में लगावे।

अन्य--कलौंधी के फूल का पानी आँख में लगावे।

अन्य--सहिजने की कोमल डाली का जल दो मिस्काल शहद में मिला कर आँख में टपकावे।

अन्य--सिरस के बीज चार दाम खूब पीसकर आटे में मिला कर रोटी पकाकर तीन दिन खावे।

अन्य--हड़, लालमिरच, शहद में मिलाकर आँख में लगावे।

अन्य--कालीमिरच रोहू के पित्ते में भिगोकर सुखावे जब पित्ता मिल जावे मिरच घिसकर आँख में लगावे।

अन्य--गधे का रुधिर ताजा आँख में लगावे दो तीन दिन में दूर हो।

अन्य--मनुष्य के कान का मैल पीली हड़ की छाल के साथ बराबर पीसकर गोलियाँ बनावे और जल में कजली करके संध्या के अनुसार आँख में लगावे।

अन्य--सरकंडे की गिरह से तोड़कर उसीके ऊपर की छाल जलावे जब चार अंगुल जलने से शेष रहे उसके दो टुकड़े करे लाहनरी कि उसके बीच जमा होगी आँख में लगावे यद्यपि वह तेजी के कारण पीड़ा और दाह करेगी परन्तु मल को आँसुओं के साथ बहाकर रोग को खो देगी।

अन्य--हुक्के की ने जिस पर चिलम रखते हैं उसकी कीट आँख में लगावे।

दिनौंधी का यत्न।

भेजे को तरकर और बकरे का कल्ला और पायँ और उरद की दाल खाया करे कि रुधिर गाढ़ा हो जावे ठण्डे जल में गोते लगाना उसमें आँखें खुली रहना गुण करता है।

पलकों के मोटा हो जाने का वर्णन।

सलाक पलकों के मोटा हो जाने को कहते हैं कि उसके साथ खुश्की और खुजली हो और पलक के बाल गिर जावें उसको लौकिक में बाम्हनी बोलते हैं उसका उत्तमोत्तम यह उपाय है कि सरेरू की फस्द ले और शिर के पीछे पछने लगावे फिर औषधि का सेवन करे।

सलाक का गुणकारक यत्न।

जो पलकों को घास की भाँति उगाता है रुई की बत्ती मदार के दुग्ध में भिगोकर सुखावे और दिये में मीठा तेल भर कर वह बत्ती जलाकर काजल पार के आँख में लगावे कई पुस्तकों में मीठे तेल के बदले घृत लिखा है।

अन्य—सलाक को गुण करे—धतूरे और भँगरे के पत्तों का पानी लेकर उसमें रुई भिगोकर छाया में सुखावे और मीठे तेल में वह बत्ती जलाकर काजल पारे वह काजल बासी पानी से आँख में लगावे।

अन्य—पुराने ढोल का चमड़ा कोयलों की आगपर जलाकर कोयला करके पीसकर धुनी हुई रुई में रखकर फतीला बनावे सरसों के तेल में जलावे और उसका काजल लेकर आँख में लगावे।

अन्य—मदार की जड़ जलाकर राख उसकी पानी में मिलाकर आँख के गिर्द अनुलेपन करे आँख की खुजली और सुरखी और पलकों के फूलने को दूर करती है और बाजी पुस्तकों में लिखा है कि जो नींब के पत्ते पीसकर उसका पानी लेकर आँख में लगावे तो खुजली और सलाक को दूर करे।

अन्य—अधिक बालों को जो पलकों में निकल आते हैं अर्थात् प्रबाल को श्रेष्ठ है और सलाक और आँसू और आँख

की खुजली और सुर्खी को दूर करे। दो दाम जस्त लोहे के बर्तन में कोयलों की आग पर पिघलाकर बथुये के साग का पानी थोड़ा थोड़ा उस पर टपकावे कि पीला या सफेद कुश्ता हो जावे उसे महीन पीसकर आँख में लगावे।

अन्य—पलकों के गिर जाने और सलाक को श्रेष्ठ है—छछूँदर का गूह आधा जलाकर और आधा वे जला दोनों को पीसकर शहद में मिलाकर लेप करे।

अन्य—जो सलाक को दूर करे और खुजली और पलक की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सफेद विसखोपड़े की जड़ छाया में सुखाकर पानी में घिसकर आँख में लगावे।

अन्य—मक्खी का शिर तोड़ करके सुखाकर पानी में पीस-कर मले।

अन्य—पलकों के फूलने को दूर करे—सीप जलाकर पीसकर नेत्र में लगावे।

अन्य—दिनौंधी को उत्तम है कटाई का फल पानी में उबाल कर इसका बफारा ले।

अन्य—कबूतर की बीट शहद में मिलाकर पलक पर लगावे।

अन्य—सर्प की केंचुली जलाकर तिल के तेल में मिलाकर पलक पर लेप करे।

अन्य—उस सलाक को दूर करे कि पलक गिर जावे और किनारे लाल हों बबूल की पत्तियाँ एक सेर पाँच सेर जल में औटावे जब चतुर्थांश रह जावे छानकर प्रतिदिन दो बेर पलक पर लेप करते रहें थोड़े दिनों में ईश्वर की कृपा से आराम हो जावेगा।

अन्य—गधे की लीद सुखाकर पाताल यन्त्र की रीति पर तेल खींचे और पलक पर मले।

अन्य—कद्दू को जलाकर उसकी राख सुरमे की भाँति लगावे।

अन्य—जो सलाक को श्रेष्ठ है—पुराना कपड़ा गाढ़ा या रुई तीन बेर हल्दी में रँगकर सुखा के फिर उसी प्रकार तीन बेर

निबौली की गिरी के सीरे में भिगोकर सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकर उसका काजल लेकर लगावे।

अन्य—संगबुसरी, तूतिया, कपूर, मिश्री बराबर कूट छान के पानी में खरल करके गोलियाँ बनावे आवश्यकता पर जल में घिसकर आँख में लगावे।

अन्य—कुन्दर को सुरमे की भाँति करके नेत्र में लगाना आँख की ज्योति को साफ करता है और आँख के घाव और आँख के जमे हुये रुधिर और आँख के आँसू बहने और सलाक और आँख की सफेदी और खुजली को गुण करता है। और धुन्ध को दूर करता है विशेषकर शहद में मिलाकर और कुन्दर का काजल भी यही गुण रखता है।

काजल पारने की रीति।

कुन्दर को दिये में जलाकर उस पर एक बर्तन औंधावे कि काजल उसमें इकट्ठा हो।

अन्य—पलकों के झड़ने को गुण करे—खुरसा के बीज तीन टंक बालछड़ दो टंक पानी में पीसकर आँख में लगावे।

अन्य—पलकों के बाल जमाने के लिये कि कोढ़ से गिर गये हों जंगीहड़, माजूफल को जलाकर सुरमा मिलाकर लेप करे।

मोतियाबिंद का यत्न।

उसके यह लक्षण हैं कि प्रारम्भ में रोगी के विचार मक्खी और मच्छर की भाँति नेत्र के सामने मालूम हों और दिन दिन अधिक होते जावें और उतरने के उपरांत पुतली बदल जावे और ज्योति जाती रहे।

पानी उतरने के बंद करने का यत्न।

पहले कनपटियों पर गुल देना है कि सुरमा बनानेवाले जानते हैं जोंकें लगाना कनपटियों पर प्रारम्भ में गुण करता है जब पानी सब उतर आवे मल के पकाने के उपरांत भेजे को साफ करे।

दन्त की माजून।

मोतियाबिन्द के प्रारम्भ में सेवन करना उचित है—बच, हींग, सोंठ, सोंफ बराबर लेकर शहद में मिलावे और एक मिस्काल के अनुमान खावे।

अन्य—मोतियाबिन्द को दूर करे—निर्मली शहद में पीसकर आँख में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द को दूर करे—हैंकून के बीज दो भाग, अफीम एक भाग कूट और छान के शाफा बनावे।

अन्य—नौसादर को सुरमे की भाँति नेत्र में लगाना मोतियाबिन्द को दूर करता है।

अन्य—सफेद घुंघची का जल कागजी नींबू के रस में मिलाकर प्रातःकाल नेत्र में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द के लिए आश्चर्यदायक गुण रखता है और अधिक होने नहीं देता—इमली के पत्ते दश तोले फूल के कटोरे में नीम की लकड़ी के दस्ते से कि उसमें पत्ता जमाया हुआ हो इतना कजली करे कि गाढ़ा हो जावे फिर उस स्त्री के दुग्ध में कि पुत्र जनी हो चालीस पहर खरल करके सेवन करे।

मोतियाबिन्दनाशक सोंफ का सुरमा।

सोंफ का हरा वृक्ष लेकर शीशे या चीनी के बासन में रक्खे जब सूख जावे पीसकर सुरमा लगावे।

सेवती का सुरमा।

सेवती के फूल कुन्दर बराबर पीसकर रुई में लपेटकर बत्ती बनाकर मीठे तेल में जलाकर उसका काजल लगावे।

औषध—भीमसेनीकपूर पुत्रवतीस्त्रीके दुग्धमें पीसकरलगावें।

अन्य—कौवे का पित्ता आधा वजन शहद में मिलाकर खूब कजली करके आँख में लगावे रोग शान्ति को प्राप्त होगा।

अन्य—निर्मली, हींग, सफेद फिटकरी, संगबसरी, तूतिया एक एक दाम बारीक पीसकर दही में खरल करे यहाँ तक कि

आठ सेर दही खरल में भलीभाँति कजली करे इसके उपरान्त गोलियाँ बनाकर रक्खे और आवश्यकता पर स्त्री के दुग्ध में घिसकर लगावे।

अन्य—प्रारम्भ में सेवन करने से मोतियाबिन्द दूर होता है—हड़ की गुठली की गूदी स्वच्छ जल में तीस पहर खरल करके गोलियाँ बनाकर नेत्र में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द के लिये आजमाया हुआ है—जो इस रोग के प्रारम्भ में सेवन करे अधिक होने न दे-दो कागजी नींबू का रस लेकर चार तोले गाय के मक्खन में खूब मलकर मक्खन में थोड़ा जल डालकर दो रातदिन रख दे फिर मक्खन को जल से धोकर उसी प्रकार दो नींबू के रस में कजली करके जल डाल कर दो रातदिन रक्खे और धोवे इसी प्रकार पचीस बेर करके चीनी व शीशा के बासन में रक्खे और दो दाने खशखाश के बराबर लगाया करे।

अन्य—नींब के बीज का सुरमा लगाना पानी उतरने को गुण करता है।

अन्य—मनुष्य के कान का मैल, हींग बराबर शहद में पीस कर आँख में लगाया करे दूध मछली खाना मोतियाबिन्द के रोगी को हानि करता है।

आँख और पलकों की खुजली का यत्न।

पहिले सरेरू की फ़स्द ले फिर खुजली की औषधियों का सेवन करे।

माजू, जंगी हड़ पीसकर आँख पर लेप करना आँख और पलकों की खुजली को गुण करता है।

मनुष्य के शिर के बालों का सुरमा।

मनुष्य के शिर के केश जलाकर महीन पीसकर आँख में लगावे।

अन्य—अंडे का छिलका जलाकर महीन पीसकर लगावे।

नींब का सुरमा बहुधा नेत्ररोगों को गुणदायक है नींब के पत्तों को आबखोरे में रखकर कपरौटी करके इतनी देर आग में रक्खे कि भीतर जलकर राख हो जावे उस राख को नींबू के रस में खरल करके लगावे ।

अन्य—आंख की खुजली और दाह को गुण करे सीसे का मैल आँख में लगावे और सीसे का मैल उस स्याही को कहते हैं कि सीसे के टुकड़े को जूती के तले या बाँस के चोंगले पर रगड़ने से प्रकट हो उस स्याही को उँगली में लेकर आँख में लगावे।

नेत्र की ज्योति का यत्न ।

यह रोग कई प्रकार से होता है बहुधा बुढ़ापे में नेत्र की भेजे की कमजोरी और अग्नि के मन्द होने से नेत्र की ज्योति कम हो जाती है यह असाध्य है परन्तु उपाय से हाथ न उठाना चाहिये कि अधिक न हो जावे ।

यत्न—भेजे का मल निकाले और वल दे कच्चे शलगम और पकाकर खाना नेत्र की ज्योति को गुण देता है और शिर में कंघी करना बूढ़ों की ज्योति को उत्तम है चाहिये कि प्रतिदिन कईबेर कंघी दे कि बुखार को आँख से शिर की ओर सुखा दे और शेखुलरईस ने कहा है कि साफ पानी में पैरना और उसमें आँख खोलना भी लाभ देता है और थोड़ा वमन आँख की ज्योति को गुण देता है और नीचे के शरीर का श्रम और उसका दबाना और मलना ज्योति को श्रेष्ठ है और ज्योतिकी हानिकारक यह बातें हैं बहुत रोना और गरदन के पीछे पछने लगाना और बहुत भूखा रहना और बहुत भोगकरना और सोया, मसूर और जो कुछ घनधकोष्ठकारक वस्तु हो विशेष करके ज्योति की हानिकारक हैं।

मुंडी के शरबत का नुसखा ।

जो ज्योति की हीनता और दिमाग की तरी को गुणदायक है और बुखारों को दिमाग से दूर करता है—मुंडी के फूल पावभर, शकर सफेद तीन पाव, मुंडी के फूलोंको डेढ़ सेर जल में रात्रि को

भिगोकर प्रातःकाल जोश दे जब तृतीयांश रहे छानकर शक्कर मिलाकर शरबत का कवास करे और चार तोले खावे मुंडीका अरक भी नेत्रों को बल देता है।

सौंफ का चूर्ण।

नेत्रों की ज्योति को बलदायक आजमाया हुआ है--तिब-दाराशिकोही से यह औषधि प्रति की गई--रात्रि को दो टङ्क सौंफ कूटछान के दो टङ्क सफेद शक्कर के साथ मिला खाकर सो रहे इसी प्रकार से सर्वदा सेवन करे सौंफ की अतर सौंफ के अरक से निकालकर आँख में लगावे बहुत गुण करता है।

गोली--चमेली के फूल डंडी तोड़कर बराबर मिश्री मिलाकर खरल करके आँख में लगावे।

अन्य--ज्योति को बलदे--सङ्गबुसरी आधातोला टुकड़े टुकड़े करके दो तीन कागजी नींबू के रस में भिगोवे और मिट्टी के वर्तन में रखकर कपरौटी करके जंगली कण्डों में रखकर आग दे फिर निकालकर पीसकर आँख में लगावे।

गोलियाँ--ज्योति को श्रेष्ठ हैं--हड़ के बीज की मींगी बारह, पीपल पाँच, कालीमिरच पाँच, आँवले के रस में इतना पीसे कि काली हो जावें फिर गोलियाँ बनाकर पानी में घिसकर आँख में लगावे।

अन्य--रीठे के वीजों की मींगी नींबू के रस में खरल करके गोलियाँबनाकर रक्खे प्रात समय थूंक में घिसकर आँख में लगावे।

गोली--ज्योति की हीनता को गुण करे और आँख की ललाई को श्रेष्ठहै--जंगीहड़ मिश्री बराबर पीसकर गोलियाँ बाँधकर आँख में लगावे।

सलाई--जिसका सेवन वैद्यक में लिखा है--शीशे को अग्नि में गलाकर त्रिफले के जल में बुझावे फिर मेंह के पानी में फिर भँगरे के जल में फिर घृत में बुझावे फिर शहद में फिर सलाई

बनाकर प्रातःसमय आँख में फेरे आँख की सब बीमारियों को श्रेष्ठ है और ज्योति को बल देती है।

औषधि--बहुधा नेत्र की बीमारियों को गुण करे और उसके सर्वदा सेवन से आँख अच्छी रहती है जब कि नींद से जगे अपना थूंक आँख में लगावे।

अन्य--ज्योति को उत्तम है--हँकून की गूदी पानी में पीसकर आँख में लगावे।

अन्य--निर्मली जल में घिसकर आँख में लगाना ज्योतिको अधिक करना है।

अन्य--सिरस का चूर्ण गजी का कपड़ा सिरस के पत्तों के पानी में भिगोकर सुखावे तीन बेर इसी तरह करे फिर उसकी बत्ती बनाकर चमेली के तेल में जलाकर उसका काजल लेकर रक्खे और अंजन की रीति पर आँख में लगाया करे।

लेप--आँख के बुखार और लाली और नेत्र की ज्योति की कमजोरी को गुण करता है परन्तु बहुत दिनों तक लगाना चाहिये--जंगी हड़ बहुत छोटी दो, अफीम चार रत्ती, लौंग शिर की तरफ़से सबको कूपजल में पीस रक्खे और आँख पर लगाया करे जो किञ्चित् नेत्र में जावे तो कुछ हानि नहीं।

औषधि--बहुधा नेत्ररोग और ज्योति और मोतियाबिन्दु के प्रारम्भ को श्रेष्ठ है--प्याज का जल शहद में मिलाकर आँखमें लगावे।

ज्योतिकारक सुरमा।

सोलह कालीमिरचें, साठ पीपल, पचास चमेली की कली, अस्सी तिलके फूल सबको मिलाकर खरल करके सुरमा लगावे।

अन्य--कालीमिरच एक माशा पीली हड़की छाल दो माशे छिली हुई हलदी तीन माशे, गुलाब या पानी में खरल करके सुरमे की भाँति करके आँख में लगावे।

अन्य--ज्योतिको श्रेष्ठ है--मोजिज़ फ़ारसी पुस्तककी प्रति--दो अखरोट, हड़की मींगी तीन दोनों को जलाकर पीसे और

चार कालीमिरचें मिलाकर खरल करके सुरमे की भाँति बनावे रसौत को सुरमे के बदले लगाना सर्वदा नेत्र को गुण करता है।

अन्य—नींब के फूल छाया में सुखाकर उसके बराबर कलमी शोरा लेकर सुरमा करके सोने के समय नेत्र में लगावे सबल और नाखुना को भी लाभ करता है।

औषधि—धुनी हुई रुई मदार के दुग्ध में भिगोकर छाया में सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेलमें जलाकर उसका काजल रक्षापूर्वक लेकर नीम की लकड़ी से फूल के कटोरे में गुलाब के साथ सात दिन खरल करे और सलाई के साथ आँख में लगावे।

सबलशाय और आँख की सफेदी इत्यादि का वर्णन।

सबल एक परदा है आँख की रगों में मल के भर जाने से उत्पन्न होता है उसको माड़ा और फूली बोलते हैं जफरह अर्थात् नाखुना आँख के बड़े कोये की ओर पैदा होता है आँख की सफेदी को हिन्दी में जाला बोलते हैं वह सफेदी है कि आँख की स्याही पर पैदा हो।

यत्न—पहिले फस्द सरेरू या माथे की रग खोले उसके उपरान्त जो दवायें आँखको साफ करती हैं सेवन करे—आँख के दर्द नाखुना और दमा को गुणकारक—अरहर का रस एक दाम छानकर बिना कलई किये हुये बरतन में उस नींब की लकड़ी से जिसमें पैसा जमाया हो दश कागजी नींबू के रस में खरल करके गोलियाँ बना रक्खे समय पर घिसकर आँख में लगावे।

गोली—सबल और आँख के गुण अर्थात् फूली को उत्तम है—सिरस के बीजों की मींगी खिरनी के बीज कूट छानकर सिरस के पत्तों के रस में मिलाकर खरल करके गोलियाँ बाँधकर समय पर स्त्री के दूध में घिसकर लगावे।

अन्य—फूली को गुणकारक—जंगी हड़, पलाशपापड़ा, लाहौरीनोन, रक्तचन्दन बराबर कूटछानकर गोलियाँ बनावे और पानी में घिसकर लगावे।

गोली—सबल और सलाक और नजले को गुणकारक है—समुद्रफल की सींगी, रीठे की मींगी, खिरनी के बीज, काली हड़ के बीज बराबर लेकर नीबू के रस में कजली करके खरल करे और गोलियाँ बनाकर लगावे।

अन्य—रक्तचन्दन एक तोला, भुनी हुई फिटकरी बराबर कूटछानकर घिकुवार के लुआब में खरल करके गोलियाँ बनाकर एक गोली घिसकर आँख में लगावे।

अन्य—नाखुने को श्रेष्ठ बुअलीसेना का आजमाया हुआ है—शहद बकरी के पित्ते में मिलाकर आँख में लगाया करे।

अमल—आजमाया हुआ है कि जाले को आँख से दूर करता है—नोन और शक्कर को जिह्वा पर रक्खे कि जिह्वा खरखरी हो जावे सो उस जिह्वा से आँख के जाले को चाटे।

गोली—नाखुना और सफेदी और पानी उतरने के प्रारम्भ को गुणदायक है—साबुन कच्चे पाँच दाम, तूतिया, राल साढ़े तीन तीन माशे साबुन को छुरी से टुकड़े टुकड़े करके लोहे के बर्तन में आग पर गलावे फिर तूतिया पीसकर साबुन में मिलावे फिर राल डालके उस बर्तन को आग पर रहने दे और लोहे के दस्ते से कजली करे जब काला हो जावे उतार ले समय पर खशखाश के दाने के बराबर लेकर सीप में मिलाकर आँख में लगावे फिर उसी प्रकार तीन दिन के उपरान्त लगावे।

नाखुने की औषधि—हल्दी, दारचीनी, आँबाहल्दी एक एक दाम, नीम के पत्ते छः टंक कूट छानकर छः महीने के बछड़े के मूत्र में दो पहर खरल करके गोलियाँ बनाकर छाया में सुखाकर आवश्यकता पर गुलाब में घिसकर लगावे।

तथा—एक हल्दी की गिरह लम्बी चौड़ी लेकर उसमें छिद्र करके गेहूँ की दो कच्ची रोटियों में उस गाँठ को रखकर तवे पर आग से पकावे जब रोटी जल जावे हल्दी निकाल ले समय पर हल्दी को फिटकरी के साथ घिसकर आँख में लगावे।

बारहसिंगे के सींग की गोलियाँ।

जो आँख के जाले को गुणकारक है—पहिले बारहसिंगे के सींग को पानी में पीसे फिर कागजी नींबू के रस में खूब पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनावे समय पर घिसकर आँख में लगावे थोड़े दिनों में आराम हो जावेगा।

जाले को दूर करने और मोतियाबिन्दु को खो देने का सुरमा।

मिश्री दो भाग, लाहौरी नोन एक भाग दोनों पीसकर सुरमे की भाँति करके आँख में लगावे एक सप्ताह में मोतिया-विन्दु जाता रहेगा।

औषधि—सबल को दूर करे—कबूतर या मुरगी की बीट कागजी नींबू के रस में कजली करके ताँबे के बर्तन में रक्खे समय पर आँख में लगावे।

अन्य—अबाबील की बीट शहद में मिलाकर आँख में लगावे तिबफरीदी के ग्रन्थकार ने जाले के लिये आजमाया हुआ लिखा है।

औषधि—जो जाले को गुण करे—बारहसिंगे का सींग दूध में घिसकर लगावे।

अन्य—लाहौरी नोन से सलाई बनावे और दिन में कई बेर आँख में फेरे नाखुना और जाले को गुणदायक है।

अन्य—फूली को गुण करे—कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर आँख में लगावे।

अन्य—नाखुना को गुणदायक—मदार की जड़ जल में घिसकर लगावे।

अन्य—नेत्रपीड़ा और जाले को दूर करे—कटाई की जड़ नींबू के रस में घिसकर लगावे।

अन्य—फूली अच्छी हो—अरहर के पुराने वृक्ष की जड़ घिसकर लगावे।

अन्य—सफेदीको दूर करे—बरगदके वृक्षका दूध आँखमें भरदे।

अन्य-फूली को उत्तम-बैंगन की जड़ पानी में घिसकर लगावे।

अन्य-फूली को गुणकारक-कड़वी तोरई के बीज की गिरी मीठे तेल में पीसकर आँख में लगावे।

अन्य-समुद्रझाग पीसकर लगावे और बाजे समुद्रझाग बिनौले के तेल में पीसकर लगाते हैं।

अन्य-सफेदी को श्रेष्ठ है-नाले का पुष्प शहद में महीन पीसकर लगावे।

अन्य-लड़कों की फूली को श्रेष्ठ है-मिश्री उस स्त्री के दुग्ध में कि बेटा रखती हो पीसकर लगावे।

अन्य-सोंठ, फिटकरी, लाहौरीनोन बराबर कूटछानकर प्रतिदिन आँख में लगावे कि जाला दूर हो।

अन्य-सफेदी को गुण करे-गधे का सुम जलाकर महीन पीस कर लगावे।

अन्य-चमेली के फूलों की गोलियाँ जो नेत्र की ज्योति के विषय में वर्णन हुआ जाले को उत्तम हैं।

औषधि-नाखुने को उत्तम है-प्याज का लाल पानी कई दिन आँख में लगावे।

अन्य-तेजपात महीन पीसकर आँख में लगाना आँखों की अँधेरी और नाखुना और मोतियाबिन्दु को गुण देता है।

औषधि-नेत्र की ज्योति को बल दे और नाखुना और फूली और बहुत से रोगों को गुणकारक है-कलमीशोरा बहुत सफेद महीन पीसकर हल्दी रंग के अनुमान मिलाकर लगावे।

औषधि-गुणदायक है-विषखपड़ की जड़ और सफेदा पानी में पीसकर लगावे।

अन्य-जो सबल को श्रेष्ठ है-रेंड़ी एक, मिश्री साढ़े चार माशे, अंजरूत शोधी हुई तीन मिस्काल पीसकर लगावें।

अन्य-शाफा सबल और नाखुने और खारिश में गुणकारक-जंगार, सम्मगअरबी, शफेदाकाशगरी बराबर पीसकर पानी

से शाफा बनाकर सुखाकर रक्खे समय पर जल से घिसकर लगावे ।

टपकाने की दवा ।

आँखकी फूलीको दो दाम आँवले जवकुटकर पानी में दो घंटे औटावे और साफ करके प्रतिदिन तीन बेर आँख में टपकावे ।

सुरमा—जो सबल फूली नाखुना को उत्तम है—चूरी सब्ज एक दाम महीन पीसकर नींबू के रस में खूब खरल करे जब सूख जावे आँख में लगावे ।

अन्य—सुरमा फूली, सबल, रतौंधी, तरी के सुखाने और ज्योति को गुण करे—नौसादर, फिटकरी बराबर महीन कूट छानकर अच्छी तरह खरल करके लगावे ।

अन्य—फूली को श्रेष्ठ है—आध सेर प्याज का जल निकालकर उसमें कपड़ा भिगोकर फिर सुखावे और खट्टे मीठे से बचावे फिर उसकी बत्ती बनाकर पावभर मीठे तेल में जलावे और उसका काजल पारकर आँख में लगावे ।

काढ़ा—वैद्य का बनाया हुआ सबल को श्रेष्ठ है पन्द्रह दिन सेवन करना चाहिये—पीली हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, नींब के वृक्ष की छाल, गुर्च, चिरायता, रक्त चन्दन, शहतरा, खस, मुण्डी के फूल तोला तोला भर औटा कर साफ करके एक दाम शुद्ध शहद मिलाकर पिये ।

अन्य काढ़ा—रक्तचन्दन, निबौलबेर, नींबू की छाल, आँबाहल्दी, पीली हड़ों की छाल, बहेड़ा, आमला, बाँसा दोदो दाम, कुटकी तीन दाम, फलूस की गिरी चार दाम, कडुवा चिरायता डेढ़ दाम, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा एक एक दाम सबको कूटकर प्रतिदिन दो दाम तीन पाव जल में औटावे जब आधपाव जल शेष रहे छानकर दो दाम शहद मिलाकर चौदह दिन तक इसी तरह पिये ।

मुंडी की माजून ।

आँख की बीमारियों को श्रेष्ठ है—पीली हड़की छाल, बहेड़े

की छाल, जंगी हड़ की छाल, काबिली हड़ की छाल, धनियाँ, शहतरा, मुलेठी एक एक तोला, गुलाई के फूल सब औषधियों के बराबर मिश्री तीन हिस्से सब हड़ों को तेल में भूनकर मिश्री में कवाम करे—खूराक दो तोले।

हलका अर्थात् आँख से अनियमय आँसू बहने का यत्न।

इस रोग में मुंजिज के उपरान्त जुलाब दे—फिर औषधियों का सेवन करे।

गोली—खुजली और हलके को दूर करे—पीली हड़ के बीज दो भाग, बहेड़े की मींगी तीन भाग, आमले के बीज की गिरी एक भाग पीसकर रक्खे और समय पर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—हलके को गुणदायक—सिरस के बीज, कालीमिरच, बनफ्शा अलग अलग कूट छानकर शहद में मिलाकर गोलियाँ बनाकर नेत्र में लगाया करे।

अन्य—जो हलके को दूर करे—जंगीहड़, माजूफल, बालछड़, पीली हड़ की छाल बराबर जल में पीसकर गोलियाँ बनाकर आँख में और आँख के गिर्द लगावे।

शाफा—किरमह, हलका, नेत्र की लाली और खुजली को गुण करे—समन्दरझाग, सफेद करथा, भुनी फिटकरी, पीली हड़ की छाल, रसौत, अफीम, तूतिया बराबर लेकर स्वच्छ जल में खरल करके शाफा बनाकर लगावे।

सुरमा—हलके को गुणकारक—जले हुए पीली हड़ के बीज तीन टंक, माजूफल, लाहौरीनोन डेढ़ डेढ़ टंक पीस छानकर सेवन करे और किसी किसी ने जली हुई पीली हड़ों के बदले जली हुई काली हड़ लिखी है।

सुरमा—हलके को गुणकारक—नोन, कालीमिरच एक एक भाग, पीपल दो भाग, समुद्रझाग अर्धभाग, सुरमा औषधियों के तीन भाग, सबको खरल करके सुरमा बनावे।

औषधि—जो घोड़े के ऊपर का दाँत पानी में रगड़कर आँख में लगावे पानी उतरने को श्रेष्ठ है।

औषधि—अधिक ढलके के पानी गिरनेको श्रेष्ठ है—तीन बत्तियाँ धुनी हुई रुई की बनाकर सात टंक धतूरे के जल में दो बेर भिगो कर सुखावे फिर मदार के दूध में दो बेर तर करके छाया में सुखाकर रेंड़ी के तेल से चिराग भरकर वही बत्तियाँ जलावे और उसका काजल लेकर थोड़े घृत और भुनी हुई फिटकरी और तूतिया में मिलाकर रक्खे और आँख में लगावे।

औषधि—ढलके को श्रेष्ठ है—कुन्दुर जलाकर गुलाब में मिला- कर आँख को उससे धोवे जो गुलाब न हो तो पानी काफी है।

अन्य—आबनूस की लकड़ी घिसकर आँख में लगावे।

अन्य—पीली हड़ की छाल अंजरूत बराबर पीसकर लगावे।

करंजे का यत्न।

जो जन्म से है तो उसका यत्न नहीं परन्तु लिखा है जब लड़का करंजा उत्पन्न हो तो उसको उस स्त्री का दूध जो बहुत काली हो पिलाना चाहिये जो दाई हब्शिनि हो तो सबसे उत्तम और शेखरईस ने अपनी पुस्तक कानून में लिखा है कि सलाई इन्द्रायन के हरे फल में चुभोकर आँख में फेरे और इसी प्रकार गाजर का छिलका महीन पीसकर लगाना गुण देता है।

अरब का यत्न।

यह एक नासूर है कि नाक की तरफ के आँख के कोये में होता है उस तरफ दबाने से उससे आलायश निकलती है।

यत्न—नासूर को मैल से साफ करके मरहम लगावे।

अन्य—संगजराहत के दो टुकड़े रेंड़ी के तेल में घिसे जब गाढ़ा होवे उसमें बत्ती भरकर नासूर में रक्खे।

अन्य—चिराग की कीट जो पुराने दिये की जगह पर जम जाती है लेकर कपड़े में लगाकर नासूर पर जमावे।

अन्य—बथुये के पत्ते, तम्बाकू के फूल बराबर लेकर गौ के घृत में कजली लगावे।

अन्य—हुक्के की नै की कीट अफीम बराबर पीसकर बत्ती बनाकर रक्खे।

अन्य—समुद्रशोष नरम पीसकर पानी मिलादे बत्ती बनाकर रक्खे।

अन्य—नीब के पत्ते, च्योंटीविर के पत्ते पीसकर कपड़े पर लपेट कर लगावे।

अन्य—कत्था, एलुवा बराबर पीसकर नासूर पर लगावे।

अन्य—कुत्ते की जिह्वा जलाकर थूक में मिलाकर लेप करे।

गुर्च का तेल।

गुर्च हल्दी को कूटकर मीठे तेल में औटाकर छानकर नाक में टपकावे।

औषधि—स्वच्छ शहद आग पर रखकर गहरा करके थोड़ा समुद्रझाग उसमें मिलाकर उतार ले और बत्ती उसमें डुबोकर नासूर में रक्खे।

अन्य—छिली हुई मसूर और अनार का छिलका कूट छानकर लगावे।

यांजनी का यत्न।

रसौत, गेरू, जंगीहड़, पोस्ता पीसकर लेप करे।

अन्य—लौंग, हल्दी पीसकर लेप करे।

अन्य—हींग सिरके में कज्जली करके कुछ गरम करके लेप करे—पुरानी कच्ची दीवार का कोयला गरम पानी में घिसकर लगावे।

जांगह यह नरम शोथ जो पलक पर जौ के आकार का होता है।

मक्खी का शिर दूर करके उस जगह मलकर गरम मोम से सेंके।

मशाल का यत्न।

बालों को अन्दर से उखाड़कर खटमल का रुधिर लगावे।

औषधि—बालों के उखाड़ने के उपरान्त नौसादर बकरी के पित्त में मिलाकर मले।

चूर्ण—जो आंख की बहुत बीमारियों को गुण करता है—मुण्डी की जड़ छाया में सुखाकर कूटकर उसके बराबर शक्कर

मिलावे आधा दाम हर सुबह को पन्द्रह दिन पर्यन्त गाय के दुग्ध में फाँके।

कर्णरोग का यत्न।

हकीमों ने लिखा है कि जो मनुष्य कान के रोगों से बचा रहना चाहे तो सोते वक्त कान में रुई रखकर सोये और कहा है कि जो वस्तु कान में टपकावे कुछ गरम करके टपकावे अब यहाँ कर्णरोगों की औषधियों का वर्णन करता हूँ।

औषधि—जो सरदी के कर्णशूल को गुण करे—बकरी की मेंगनी, अजवायन मनुष्य के मूत्र में औटाकर बफारा ले।

तथा—कर्णपीड़ा को गुण करे—घाव को पीब से साफ करके नींब के पत्ते औटाकर बफारा ले।

मूली का तेल।

मूली के पत्तों का रस तीनभाग तिलका तेल एकभाग सबको औटावे जब तेल शेष रहे छानकर कान में टपकावे।

अन्य तेल—सब प्रकार के कर्णरोगों को जो शीत से हों गुण करता है—इस्पन्द, मालकांगनी, अजवायन बराबर मीठे तेल में जो औषधियों की तौलके बराबर हो जलाकर छानकर सेवन करे।

अन्य—सरदी की कर्णपीड़ा को गुणकारक--कूट, इस्पन्द, सोंठ बराबर पीसकर टिकिया बनाकर सरसों के तेल में पकावे जब जल जावे साफ करके कई बूँद कान में टपकावे।

अन्य—सरदी की कर्णपीड़ा और शीत कीशिरपीड़ा को गुण देता है—किस्त अर्थात् कूट, चिरायता, बायविड़ंग, असगन्ध, विधारा, हल्दी, आँबाहल्दी, सँभालू के पत्ते, अंजीर की जड़, इस्पन्द, सुहागा, सोंठ, मिरच यह एक एक टंक तेल दो सेर दवा कूटकर, रात को आधसेर जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर छानकर तेल मिलाकर आग पर रक्खे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे तो सेवन करे।

टपकाने की औषधि—कान की पीड़ा को गुण करे—सुख-

दर्शन के पत्ते निचोड़कर उसका जल कुछ गरम करके कई बूँद कान में टपकावें।

अन्य–शीत की कान की पीड़ा को श्रेष्ठ है–लहसुन कूटके उसका साफ रस लेकर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य--गरमी और सरदी की कर्णपीड़ा को गुणदायक–भंग के पत्तों का रस निचोड़कर छानकर कुछ गरम कानमें टपकावे।

अन्य–भंग के पत्तों के रस में बत्ती लपेट कर कान में रक्खे या भंग को पीसकर मीठे तेल में जलावे और छानकर कान में टपकावे।

अन्य–कान की पीड़ा और कान के बहने को उत्तम है–महावर रंग को पानी में भिगोकर प्रातसमय साफ करके कुछ गरम करके तीन बूँद कान में टपकावे।

अन्य–कान की पीड़ा को गुण करे जो सरदी से हो–नींब की पीली पत्तियाँ अढ़ाई, थोड़ी अजवायन, हल्दी चने बराबर लड़के के मूत्र में पीसकर दो तीन बूँद कुछ गरम करके टपकावे।

अन्य–कर्णपीड़ा को गुणकारक–सिरस या आम की पत्ती का रस निकालकर कुछ गरम दो बूँद कान में टपकावे।

अन्य–कर्णपीड़ा को गुणकारक–थोड़ी मक्खी की विष्ठा जल में कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य--कान के दर्द को जो सरदी से हो श्रेष्ठ है--कालानोन मूत में पीसकर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य--दूध पीते बच्चे का मूत्र कुछ गरम करके कानमें टपकावे।

अन्य--मनुष्य के शिर के केश जलाकर उसकी राख गुल-रोगन में कजली करके कान में टपकावे।

अन्य--सिकुवार के पत्ते गरम करके दूसरे कान में टपकावे।

अन्य--जो पीड़ा शीतसे हो तो मुरमकी गो के मूत्र में मिला कर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य--रैशां अर्थात् लाजवो के बीज निचोड़कर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य–चुकन्दर निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य–आजमाई हुई–एक रत्तीभर अफीम जलाकर उसकी भस्म चार चावल भर लेकर गुलरोगन में कजली करके कान में टपकावे।

अन्य–कान में जमे हुए रुधिर को घुलाकर निकाल डाले–करम्ब के पत्तों का रस निचोड़कर सिरके या गुन्दनी के रस में कुछ गरम करके टपकावे।

अन्य–गौ का पित्ता कुछ गरम करके कान में टपकावे वात की और कफ की पीड़ा को शान्त करे।

अन्य–मुरगी के अण्डे की सफेदी कान में टपकाना कान के गरम शोथ को नाश करे।

अन्य–पक्के इन्द्रायन के फल के परदे मीठे तेल में मिलाकर टपकाना ऊँचा सुनने को गुण करे।

अन्य–राई का तेल कान के सुद्दे को खोलता है और दिनी बहिरपने को गुण करता है।

अन्य–पपड़ियाखार में कुछ गरम पानी मिलाकर टपकाना अत्यन्त पीड़ा को गुण करता है।

अन्य–खट्टे अनार का अरक शहद के साथ पैत्तिक कर्ण-पीड़ा को नाशकारक है।

अन्य–खुरफे के पत्तों का रस तेल के साथ पैत्तिक कर्ण-पीड़ा को नाश करता है।

अन्य–प्याज के रस में अंडे की सफेदी मिलाकर टपकाना श्रेष्ठ है।

लेप–कान की कठोरता को जो पित्त से हो गुणदायक है–पपड़िया खार खतमी पीसकर लेप करे।

ऊँचा सुनने का यत्न।

प्रारम्भ में जुल्लाब दे जब बहुत दिनों का होता है नहीं जाता है इसलिये उचित है कि शीघ्र इसरोग में हुबअयारज से जिसका

वर्णन कर चुका हूं व्रह्माण्ड के मल निकलने को जुलाब दे फिर दवा कान में डाले ।

औषधि–कान के भारी होने को गुण करे–मदार के पीले पत्ते जो सच्छिद्र हों आग पर गरम करके उसका रस कान में टपकावे इसी प्रकार दो सप्ताह पर्यन्त करे ।

अन्य–कान के भारीपने को–लहसुन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में औटाकर कुछ गरम कान में टपकावे ।

अन्य–ऊँचा सुनने को गुण करे–ऊँट का मूत्र कुछ गरम करके कान में टपकावे ।

अन्य–काली गाय कलोर का मूत्र सवासेर मधुरी अग्नि में औटावे जब पाँच दाम शेष रहे साफ करके शीशे में रखकर प्रतिदिन अढ़ाई बूँद कान में टपकावे ।

अन्य–प्याज का रस कुछ गरम कान में टपकाना और ऊँचे सुनने और भिनभिनाहट और पीड़ा और कान के बहने को गुणकारी है ।

इन्द्रायन का तेल ।

बहरेपन और कान की भरभराहट को श्रेष्ठ है–हरा इन्द्रायन का फल तिलों के तेल में तलकर साफ करके रक्खे दो तीन बूँद कान में टपकावे ।

औषधि–बहरेपनको नाश करे–दो कालीमिर्चें पीसकर छल्ले में रखकर प्रतिदिन एकबेर कानमें फूँके और चिल्लाने की आवाज और नक्कारह और नरसिंहा और तोप आदि का शब्द सुनना ऊँचा सुनने को श्रेष्ठ है कि यह कान के लिये मानों उत्तम परिश्रम है ।

अन्य–पपड़िया खार सिरके में कजली करके छानकर कुछ गरम कान में टपकावे ।

कान के मल का यत्न ।

जब कान से मल निकलनेलगे शीघ्र खुश्क औषधि का सेवन न करे कि उससे पीड़ा पैदा हो जाती है किन्तु उस मलको औषधि

से साफ करे उसके उपरान्त खुश्क दवा डाले और शहद कान में टपकाना बत्ती शहद में भिगो करके कान में रखना कान के मैल को साफ करता है और पीड़ा को नाश करता है और नींब के पत्तों का बफारा लेना भी कान के मैल को साफ करता है ।

अन्य–कान के घाव को गुण करे–प्याज का रस मुरग के अंडे की सफेदी में मिलाकर कान में टपकावे ।

औषधि–नींब के तेल में शहद मिलाकर बत्ती उसमें भिगो-कर कान में रक्खे ।

अन्य–कान के घाव को गुण करे–एलुवा, समुद्रझाग, गेरू, कुन्दर हरएक थोड़ी थोड़ी गुलरोगन में पीसकर सिरका मिला कर कान में टपकावे ।

अन्य–बकरी का पका दूध कान में टपकावे ।

अन्य–लड़के के मूत्र में अनार की छाल जोश देकर साफ करके कान में टपकावे ।

अन्य–भुनी फिटकरी, मुरमक्की हरएक बराबर शहद में मिलाकर उसमें बत्ती तर करके कान में रक्खे ।

अन्य–भुना सुहागा पीसकर छूछी में रखकर कान में फूंककर उसके ऊपर कई बूँद नींबू के रस को टपकावे ।

अन्य--मैल निकलने को गुण करे और घाव को भर दे--विशेष करके बालकों को अति उत्तम है–गँगनधूल कान में फूंक कर उसके ऊपर कई बूँद टपकावे ।

अन्य–खुजली और पीब बहने को गुण करे–मेथी दूध में सानकर और छानकर कुछ गरम कान में टपकावे कर्णपीड़ा में स्त्री का दुग्ध और दूधों से उत्तम है ।

अन्य--कान की आलायश को उत्तम है--घुड़बच पानी में पीसकर कुछ गरम कान में टपकावे ।

अन्य--कान के घाव को नाश करे--कान से मैल साफ होने के उपरान्त पीली कौड़ी जलाकर कान में फूँककर उसके ऊपर कई बूँद नींबू का रस टपकावे ।

अन्य--नोध मर्दान पीसकर कान में डाले अन्य कान के कीड़ों को नाश करे और घाव को सुखावे लाल साग का रस निचोड़कर कान में टपकावे ।

अन्य--कर्णव्रण को श्रेष्ठ है एक जुगनू गुलरोगन में पीसकर टपकावे ।

तेल--जो कान के नासूर को दूर करता है--छोटी घोंघी सजीव पावभर मर्दान खरल करके उसके बराबर सरसों पीसकर मिलावे और दो सेर जल डालकर इतना औटावे कि पानी जलकर तेल शेष रह जावे प्रतिदिन कान में टपकावे और जो घोंघा तेल में भूने वही गुण करता है और जहाँ सरसों का तेल न मिले मीठातेल ही डाले तेल नासूर और साफा को श्रेष्ठ है, जो एक प्रकार की फुन्सियाँ हैं--कडुवा तेल पावभर, आमला, मुराडी एक एक तोला, नीबू के पत्ते दश, कसीसा, कालीमिरच तीन तीन माशे, तूतिया एक माशा पहिले तेल को गरम करके कसीसे के सिवा सम्पूर्ण औषधि उसमें डालकर जलावे फिर निकालकर पीसे और कसीसा भी पीसकर मिलावे और कान में टपकाया करे औषधि उस घाव को दूर करे कि जो बहुधा लड़कों के कान के पीछे होता है गोली जिसका टीका लगाते हैं उसको बालक के मूत्र व जलमें पीसकर लगावे यद्यपि कुछदाहहोगा परन्तुबहुतगुणकरेगा।

कान बहने और उसके मैल के निकालने का यत्न ।

जो बोहरान के कारण से हो बन्द न करे और बोहरान से न हो माजू जवकुट कर सिरके में औटावे और मलकर छानकर कान में टपकावे ।

कान के शोथ का यत्न ।

जो शोथ कान के भीतर हो तो अति भयानक है इस दशा में सरेरू की फस्द खोलना उचित है लेप--इस सूजन को जो कान के पीछे हो श्रेष्ठ है--सर्गी अर्थात् चकसोन कि एक प्रसिद्ध वृक्ष है उसकी नई पत्तियाँ लाहौरीनोन केसाथ पीसकर लेप करे।

अन्य—उसी सूजन को गुण करे—सुपारी, विषमारी की जड़, करेले के बीज,गेरू, कालाजीरा, कुचला पानी में पीसकर कुछ गरम करके लेप करे।

अन्य—उसी शोथ को गुण करे—लहसुन की जड़ पीसकर कुछ गरम करके मले।

औषधि—कान के शोथ को अच्छा करती है, और शीघ्र ही बहाकर निकाल देती है—हुलहुल की पत्तियाँ कूटकर कई बूँद कई दिन तक कान में टपकावे।

अन्य—प्याज़ का रस मेथी या अलसी या ईसबगोल के लुआब में पकाकर टपकाना भी गुण रखता है।

कान के कीड़ों का यत्न।

कभी गरमी के कारण कान में कीड़े पड़ जाते हैं उसका यत्न—एलुआ जल में पीसकर उस पानी से कान को भर दे और देर तक भरा रहने दे जो कीड़े मर जावें फिर कान को इस तरह झुकावे कि पानी निकल जावे।

औषधि।

मलीम एक लकड़ी होती है उसे महीन पीसकर कान में डाले कीड़ों को दूर करे।

अथवा—सँभालू के पत्तों का रस कान में टपकावे।

अन्य—हल्दी की एक गाँठ और आधा दाम शहद नींब के पत्तों का रस सरसों के तेल में डालकर यहाँ तक औटावे कि औषधियाँ जल जावें इस तेल की दो बूँद कान में टपकावे शीघ्र आनन्द होगा।

अन्य—आधा टंक तिलों का तेल कान में टपकाने से कान के कीड़े और वह कीड़े जो कान में घुस गये हों मरजाते हैं इसी तरह प्याज का रस अगर वह मक्खी जो घोड़े और कुत्तों पर बैठती है कान में घुस जावे मकरा के पत्ते कि हिन्दू उसको चन्दन के बदले समझते हैं कान में टपकावे आश्चर्यदायक फल रखता है।

अन्य—तेज शराब कान में टपकाना कान की पीड़ा और मल को नाश करे।

कान की खुजली का यत्न।

तेल और सिरका औटाकर छानकर टपकावे खुजली दूर हो।

अन्य—चमेली के तेल में थोड़ा एलुवा कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावे।

कान में पानी रह जाने का यत्न।

छींकना और खाँसना उसको गुण करता है—और शिर उस तरफ झुका रखना कि जिस तरफ के कान में जल है या सोंफ की लकड़ी कान में लगाकर चूसे और तिल का तेल कुछ गरम करके टपकाना गुण करना है या हथेली कान पर रखकर एक पाँव पर खड़ा होकर जिस ओर के कान में पानी है शिर को उस तरफ झुकाकर कूदे।

नाक के रोगों का यत्न।

नाक में दो राहें हैं एक भेजे की तरफ दूसरी मुख की ओर और नाक की बीमारियों में एक रोग नकसीर है जो वह ज्वर या सरसाम या बोहरान के दिन कि चौथा सातवाँ ग्यारहवाँ चौदहवाँ दिन है नकसीर फूटे बन्द न करे क्योंकि बोहरानी नकसीर में मुख्य मलको इस ओर से दूर करती है परन्तु अधिकता में शीघ्र बन्द करे जो दोनों रानों और दोनों पाँवों और दोनों अंडकोषों को जोर से बाँधे तो नकसीर बन्द हो जाती है और ठंढा पानी शिर पर डालना उससे गरगरा अर्थात् कुल्ली करना उत्तम है—लेप—जो नकसीर को गुण करे—सरेस, मुलतानीमिट्टी बराबर पीसकर कुछ गरम माथे और नाक पर मले।

अन्य—ईसबगोल को सिरके में भिगोकर माथे पर मले।

अन्य—माजूफल खूब पीसकर नाक में फूँके।

अन्य—रसौत की राख नाक में फूँके।

अन्य—लत्ती की गर्द नाक में फूँके।

अन्य—उड़द का आटा नरम गूँदकर तालू पर लगावे।

अन्य–बेर की पत्ती पीसकर माथे पर मले।

अन्य–छोटी कटाई पानी में पीसकर तालू पर लगावे और उसके पत्तों और जड़ का पानी निचोड़कर नाक में टपकावे।

अन्य–केले के वृक्ष का रस सुड़कना नकसीर को गुण करे। अण्डे का छिलका इस तरह जलावे कि काला हो जावे उसको पीसकर छूँछी में रखकर जिस नथने में नकसीर फुटी हो फूँके।

अन्य–घोंघा और गौ का सींग और बकरी का सींग जलाकर महीन करके नाक में फूँके।

अन्य–आमला भिगोवे जब नरम हो जावे टिकिया बनाकर तालू में बाँधे।

अन्य–गधे की लीद निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य–गाय का सूखा गोबर पीसकर नाक में फूँके और ताजे गोबर को माथे पर लगाना गुण करता है।

अन्य–नींबके पत्ते और अजवायन पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य–शोराक़लमी सिरके में पीसकर माथे पर मले।

अन्य–बत्ती को मुरग़े के अण्डे की सफेदी में मिलाकर थोड़ा कपूर उसपर छिड़ककर नाक में रक्खे।

अन्य–गधे की लीद जलाकर उसकी राख नाक में फूँके।

अन्य–जंगली कण्डे की राख महीन पीसकर नाक में फूँके।

अन्य–गूलर के वृक्ष की छाल पानी में पीसकर तालूपर बाँधे।

अन्य–नींब के पत्ते चौलाई पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य–पुरानी गज पानी में पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य–जौ का आटा, मुल्तानी मिट्टी, धनियाँ, ईसबग़ोल, आमला, गेरू बराबर पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य–ऊँट के बाल जलाकर उसकी राख घी में मिलाकर पतला पतला नाक में टपकावे।

अन्य–ढाक के फूल चार सेर पानी में औटावे जब आधसेर शेष रहे ठण्डा करके तीन टंक शहद मिलाकर पिये नकसीर और स्त्री के ऋतु के रुधिर को बन्द करे।

अन्य–कुन्दुर महीन पीसकर नाक में फूँके ।

अन्य–हरी दूब कूट निचोड़कर उसका साफ रस लेकर नाक में टपकावे ।

अन्य–रक्तचन्दन पीसकर थोड़ा कपूर कजली करके कुछ दिन खावे नकसीर दूर होगी ।

अन्य–निशास्ता सिरके में मिलाकर शिर पर आगे की तरफ रक्खे ।

अन्य–नकसीर को गुणदायक–कुन्दुर अफीम एक एककौड़ी के बराबर लाल साग के रस में जो मिले तो उत्तम है नहीं तो पानी में पीसकर नाक में टपकावे ।

जुकाम और नजले का यत्न ।

जो मल भेजे से नाक की ओर निकले उसको जुकाम बोलते हैं और जो कण्ठ की ओर गिरे उसका नाम नजला है जो इन नरियों के निकलने में छीलन और पीलाई और नेत्र में जलन मालूम हो गरमी से है जो इस तरह न हो तो वह सरदी से है इस रोग में मैथुन और औंधे सोने और खटाई और दूध दही से पथ्य करे और शिर के नीचे ऊँचा तकिया न रक्खे और एक दो दिन भोजन न करे और न पानी पिये जुकाम चाहे शीत से हो या पित्त से सिर को खुला न रखना चाहिये अब कुछ औषधियाँ जुकाम और नजले की गुणकारक लिखता हूँ ।

माजून–जो जुकाम और नजले को गुण करे–अजवाइन, अफीम पाँच पाँच टंक, कालीमिर्च दश टंक, अकरकरा, बालछड़, नरकचूर, गूगल, तज, कायफल, सोंठ एक एक टंक, मुरमकी आधा टंक तिगुने शहद में कवाम करे ।

अन्य–जो जुकाम को उत्तम है–झाऊकी पत्तियों का बफारा ले ।

अन्य–कूट का बफारा ले और इस तरह कोरे कागज का धुआँ नाक में पहुँचाना जुकाम को गुण करता है ।

अन्य–शक्कर और चन्दरस का धुआँ गरम जुकाम को गुण करे ।

गोली–जो नजले और जुकाम को गुणकरे और भूख बढ़ावे–जंदबारखताई चार मिस्काल, अजवाइन पाँच मिस्काल, अफीम सात मिस्काल, कतीरा, बबूल का गोंद, मुलहठी, काली मिरच, इलायची के दाने दो दो मिस्काल, नरकचूर, नागरमोथा, बालछड़, तेजपात, कबाबा, खोलञ्जान, पीपल, अजवाइन, सोंठ, इस्पन्द दो दो टंक, मुरमक्की, अकरकरा आधा आधा मिस्काल पीस छानकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली रोज खावे।

खशखाश का खमीरा।

पैत्तिक जुकाम को गुण करे–खशखाश के पोस्त २५ पानी में भिगोकर आधसेर शक्कर में कवाम करे कवाम के अन्त में सफेद खशखाश का दूध ईसबगोल का लुआब पाँच पाँच मिस्काल उसमें डाले उतारने के समय बबूल का गोंद, खतमी के बीज, निशास्ता, छिली हुई मुलहठी चार चार टंक कूट छानकर मिलावे।

अन्य–जो नजले को छाती पर गिरने न दे और खाँसी को गुण करे–खशखाश के पोस्ते बिये समेत बीस टंक, सफेद मिश्री पचास टंक, पूर्ववत् कवाम में लावे खुराक दश दश टंक पानी के साथ।

अन्य–जुकाम को गुणकारक–सात काली मिरचें थोड़े पानी में निगल ले मुहम्मदजकरिया ने बरुलसाअत में लिखा है कि जो गरम पानी से जुकाम वाले के शिर पर तरेड़ा दे और पानी की गरमी भेजे में अपना फल करे तो शीघ्र शान्ति होती है और कपड़ा सेंककर तालू पर रक्खे जब गरमी उसके भेजे में पहुँचेगी तो शीघ्र ही आनन्द होगा।

अन्य–नजले को नाक की तरफ गिरावे पुरानी रुई की बत्ती नाक में रखना उत्तम है और कई बेर परीक्षा हुई है जो शिरपीड़ा नजले से हो उसको दूर करता है।

गोली–नजले को दूर करे–अजवाइन एक मिस्काल, काहू

के बीज एक मिस्काल, पोस्ता आधा मिस्काल, मूँग के बराबर गोलियाँ बनाकर मुँह में रक्खे।

अन्य—नजले को गुण करे और भेजे को तरी से साफ करे—समुद्रफल की मींगी स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य—जुकाम को गुण करे—कलौंजी भुनी हुई, नौसादर दो दो माशे, सोंठ तीन माशे, पोटली बाँधकर सूँघे और बाजे उसमें सिरका भी मिलाते हैं।

अन्य—जो सुद्दा खोलता है और जुकाम को गुण करता है इसबन्द थोड़े सिरके में भिगोकर भूनकर कपड़े में ढला बाँध कर सूँघे।

अन्य—कलौंजी पीसकर गुलरोगन में मिलाकर सूँघे।

लेप—नजले को गुण करे—मुरमक्की, एलुवा, बबूल का गोंद, निशास्ता, गेरू, कालिया तीन तीन माशे, अजवाइन, अफीम डेढ़ डेढ़ माशे कूटछानकर कागज पर कि सुई से उसमें छेद किया हो मलकर दोनों कनपटियों पर लगावे।

गोली—खशखाश के बीज, सफेद छिली हुई मुलहटी, कुचली अफीम तीन तीन टंक, सम्गअरबी जो एक प्रकार का विलायती गोंद होता है, कतीरा, निशास्ता, काहू के बीज दो दो टंक, अजवाइन, मुरमक्की, अकरकरा आधा आधा दाम कूटछानकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे खुराक दो गोली।

लेप—शीत के नजले को उत्तम है—लौंग पीसकर तालू में लगावे जुकाम को उत्तम है गेहूँ की भूसी भिगोकर उसका पानी लेकर सिरके में औटावे और सिरके को उसके बुखार पर रक्खे।

अन्य—कफ के जुकाम को गुण करे—सोंठ, धव के फूल डेढ़ डेढ़ माशा, खशखाश का पोस्ता एक, तीन पाव जल में औटावे जब चार दाम शेष रहे उसको चून की तरह पिये और चाहे मीठा कर ले।

अन्य नास—मस्तकपीड़ा को गुण करे और बन्द नजले को

खोलती है–हड़ के बीज छः माशे, सफेद घुँघुची की मींगी चार माशे, कालीमिरच दो माशे, नौसादर एक माशे कूट छानकर थोड़ा नास ले नाक से पानी बहेगा और बहुत तेज है।

अन्य नास–नजले को उत्तम है सिरस के बीजों को महीन पीसकर नास ले।

नाक की बदबू का यत्न।

यदि नासिका की दुर्गन्धि भेजे के दोष से हो ब्रह्माण्ड को साफ करे और जो नाक के घाव के कारण हो घाव पर मरहम लगावे।

अन्य–नाक की दुर्गन्धि को श्रेष्ठ है–तोंबे का रस एक बूँद भर नाक में टपकावे और जो हरा तोंबा न मिले तो सूखा तोंबा पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रभात को एक बूँद उसमें से नाक में टपकावे।

अन्य–गधे का मूत्र नाक में टपकावे।

बहुत छींकों के आने का यत्न।

यद्यपि थोड़ी छींकें आना आरोग्यता के चिह्न हैं परन्तु बहुत मनुष्य उसको रोग जानते हैं।

उपाय–छींक रोके छींगनिको उसी हाथ की तर्जनी उँगली और अँगूठे से पकड़ जोर से दबावे और जोर से मले और धनियें की पत्तियाँ और चन्दन सूँघना छींक को गुण करे।

अन्य–कुलींजन की पोटली बाँधकर सूँघे छींक को दूर करे जो बालक को छींकें आवें बकरी का कल्ला आग पर भूने जो पानी उससे टपके लड़के की नाक में टपकावे।

पीनस का यत्न।

यह वह रोग है कि रोगी नाक से बोलता है और बहुधा खाना पानी नाक से निकल आता है।

गोली–पीनस को दूर करे–सोंठ, पीपल, छोटी इलायची के दाने एक एक टंक, पुराना गुड़ चौबीस टंक कूटकर

गोलियाँ बनावे और दो माशे रात को प्रतिदिन खाया करे बहुत गुण करेगा ।

मुँह के रोगों का यत्न ।

किसी वस्तु के स्वाद न मालूम होने को वुतलानजौक बोलते हैं कभी इतना मुख का स्वाद जाता रहता है कि रोगी मिठाई और खटाई का स्वाद नहीं जानता इसका कारण तरी की अधिकता है ।

यत्न—पहिले मुंजिज के उपरान्त भेजे को जुल्लाब दे नातरुवाह और तीक्ष्ण वस्तुओं का चाबना जैसे कि मिरच और राई और सिरका और लहसुन और प्याज गुण करता है ।

दाँतों के रोगों का यत्न ।

दाँत के रोगी को उचित है कि कठोर वस्तु दाँतों से न तोड़े और जिस चीज के खाने से दाँत झूठे पड़ें न खावे और जब कोई वस्तु खाने के समय दाँतों में रह जावे दाँतों को खिलाल से साफ करना रहे कि दुर्गन्धि न आवे परन्तु इतना बहुत खिलाल न करे कि दाँतों की जड़ खराब हो जावे और गरम और सर्द चीजों से पथ्य करे ।

दाँतों की पीड़ा का यत्न ।

जो दाँतों के हिलने से हो और दाँत कम हिलते हों और बुढ़ापा न हो यत्न करे और जो अधिक हिलें दाँतों को उखाड़ डाले थोड़ा नरकचूर सदा मुँह में रखना दाँतों की रक्षा करता है जो पीड़ा के साथ मसूढ़ों पर शोथ हो तो उन चीजों से कुल्ली करे जो सूजन को गुण करे—और एक बेर गरम जल और ठण्डे पानी से कुल्ली करे और ध्यान रक्खे कि जिस जल से पीड़ा शान्त होती है जो गरम से पीड़ा होगी तो ठण्डे पानी से पीड़ा शांत होगी और जो शीत से पीड़ा होगी तो गरम जल से दर्द दूर होगा इस जगह कुछ सुगम औषधियों का जो दाँतों की पीड़ा को श्रेष्ठ हैं वर्णन करता हूँ ।

हल्दी महीन पीसकर कपड़े में रखकर जो दाँत कि पीड़ा करता है उसके नीचे रक्खे और इसका मञ्जन भी मलना उत्तम है।

अन्य—शीत के दन्तरोग को नाश करे—अदरक के वरक करके नोन पीसकर उस पर छिड़के और पीड़ावाले दाँत पर रक्खे।

अन्य—तुलसी की पत्तियाँ और कालीमिरच पीसकर गोली बनाकर दाँतों के नीचे दबावे।

अन्य—बिनौला गरम करके दाँत के नीचे दबाकर सो रहे और बिनौला औटाकर कुल्ली करना भी श्रेष्ठ है।

अन्य—मँजीठ का लगाना दाँत की पीड़ा को दूर करता है।

अन्य—अंजीर के दूध से रुई भिगोकर दाँतों के नीचे दबावे गुण करेगा।

अन्य—ईसबगोल सिरके में भिगोकर दाँतों पर रखना पत्तिक दन्तपीड़ा को शान्त करे।

अन्य—पुराने दाँतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है—कपूर दाँतों के नीचे रक्खे जो दाँतों को कीड़ों ने खाया हो छेदों में उसके भरदे अधिक छिद्र बढ़ने न देगा और कीड़ों को मार डालेगा।

अन्य—अकरकरा एक टंक, नौसादर, अफीम पाँच पाँच टंक महीन पीसकर कीड़े के खाये हुए छिद्रों में रक्खे।

अन्य—दाँतों की पीड़ा को शांत करे और कीड़ों के खाये हुये को गुण करे—सोंठ नरम कूटकर शहद और सिरके में मिलाकर दाँतों के छिद्रों में रक्खे।

अन्य—मदार की जड़ का बक्कल चौथाई टंक पानी में भिगोकर दाँतों पर रक्खे।

अन्य—नौसादर ज्वार के बराबर रुई में लपेटकर दर्दवाले दाँतों के नीचे रक्खे और जितना जल मुँह से निकले निकलने दे पीड़ा शांत हो जावेगी।

अन्य—दाँतों के कीड़ों को गुण करे—बायबिड़ंग छीलकर सालू में जो लाल कपड़ा है पोटली बाँधकर कीड़े खाये हुये दाँतों के नीचे रक्खे।

अन्य–थोड़ा गंधक सिरके में मिलाकर उससे रुई भिगोकर कीड़े खाये हुये दाँतों पर रक्खे।

अन्य–मुर्दासंग घिसकर दाँतों पर रक्खे।

अन्य–जो दन्तपीड़ा और मसूढ़ों की सूजन को गुण करे प्याज, कलौंजी दोनों बराबर चिलम में रखकर तम्बाकू के बदले इतना पिये कि मुँह से लार बहे।

अन्य–दाँतों को सुगमता से निकालता है सेंधे वृक्ष का दूध हिलते हुये दाँत पर रक्खे और इस बात की रक्षा करे कि दूध दूसरे दाँत पर न पहुँचे।

अन्य–दाँत के दर्द को गुण करे है–अकरकरा मस्तगी बराबर लेकर थोड़ा मोम मिलाकर एक चने के बराबर दाँतों के नीचे इतनी देर रक्खे कि लार मुँह से बहने लगे।

अन्य–उस दाँत के रोग को श्रेष्ठ है कि कीड़ों के खाने के कारण हो–छोटी कटाई का फल तम्बाकू की तरह हुक्के में पीकर उसका धुआँ मुँह में रोके।

अन्य–सुहागा मोम मिलाकर दाँतों के छिद्र में जिसको कीड़ों ने खाया हो रक्खे पीड़ा जाती रहेगी।

अन्य–विशेष करके दाँतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है–लड़के का दाँत जो छोटी उमर में गिरा हो उसको दूध का दाँत बोलते हैं चाँदी में यन्त्र बनाकर अपने पास रक्खे पीड़ा को दूर करे।

अन्य–पीलू की लकड़ी से दातोन करना दाँतों को पुष्ट करता है।

अन्य–नीम की लकड़ी से जो दातोन करने का अभ्यास करे तो दाँतों में कीड़े नहीं पड़ते हैं और गर्मी से दाँतों में दर्द नहीं होता है।

मंजन–जो दाँतों की पीड़ा को गुण करे–भुनी फिटकरी एक टंक, जले हुए करंजुवे दो, भुना तूतिया एक टंक, काली मिरच बारह कूट छानकर मले।

अन्य–जली फिटकरी बराबर उसके मिस्सी मिलाकर मले।

अन्य–शीत की दन्तपीड़ा को गुणकारी है–तम्बाकू दो भाग कालीमिरच एक भाग पीसकर दाँतों पर मले।

अन्य–हर प्रकार की दन्तपीड़ा को दूर करे–सुपारी और करथे की राख, पीपल की राख तीनों बराबर तूतिया एक औषधि का चतुर्थ भाग सबको कूट छानकर दांतों और दांतों की जड़ पर मलकर एक घण्टा शिर नीचे करे कि मुँह से लार निकले फिर कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

अन्य–करंजुवा जलावे और राख उसकी नमक में मिलाकर मले।

अन्य–ठण्ढी पीड़ाको गुण करे–सज्जी, कालीमिरच पीस कर मले।

अन्य–हर प्रकार की पीड़ा को शान्त करे–अक्करकरा, कपूर बराबर पीसकर मले।

अन्य–दांतों को दृढ़ करे–भुनी फिटकरी एक भाग, तूतिया भुना चतुर्थभाग करथा डेढ़भाग कूटछानकर मंजन बनाकर मले।

अन्य–तूतिया सब्ज आधा दामभर घी में जलावे और नींव की पत्तियों की राख कि उसको छोटे कुल्हड़े में जलाया हो आधादाम, संगजराहत एक दाम बराबर मिलाकर दांतों पर मले।

अन्य–करथा सफेद एक तोला गुलमेवती सूखी, गुलनार तीन तीन माशे, मस्तगी आधा माशा, बड़ी इलायची छः माशे, मिस्सी एक तोले, भूनी सुपारी डेढ़ तोला, भूनी धनिया छः माशे सबको जलाकर पीसे और मंजन बनावे।

अन्य–रेवन्दचीनी पीसकर मिस्सी उसमें मिलाकर मले शीघ्र ही आराम होगा।

अन्य–भिलावाँ जलाकर इस्पन्द महीन पीसकर मले दांतों को दृढ़ करता है।

अन्य–सुपारी, माजूफल, भिलावाँ तीनों औषधि जलाकर

मंजन बनाकर मिस्सी की भाँति मले लार मुँह से बहेगी और दांत दृढ़ होंगे और पीड़ा दूर हो जावेगी।

अन्य—पीड़ा को गुण करे और दांतों को दृढ़ करे—हिन्दी तूतिया तेल में भूनकर, सोंठ, सफेद कत्था, सुपारी जलाकर मंजन बनावे।

अन्य—उस दांत की पीड़ा और मसूढ़ों को गुण करे कि शीत से हो—सोंठ, हल्दी, लाहौरीनमक, कालीमिरच, तम्बाकू की नास सम्पूर्ण औषधि बराबर पीसकर दांतों पर मलकर लार मुँह से निकाले और एक घण्टे के उपरान्त पान खाकर दांतों को पीक से धोवे फिर दूसरी गिलौरी खावे जो आवश्यक हो तो दो घड़ी के उपरान्त पानी पिये।

अन्य—दांतों को दृढ़ करता है—फिटकरी दो टंक, नोन एक टंक कूटकर मंजन मले।

अन्य—गल का मंजन मलना गुण करता है।

अन्य—दांतों के दर्द और कीड़ों के खाये हुए दांत को गुण करे—तूतिया अग्नि पर रक्खे और लोहे के दस्ते से पीसे फिर अग्नि से उतार पीसकर दांतों पर मले।

अन्य—दांतों से रुधिर निकलने न दे—जामुन की लकड़ी जलाकर और पीसकर मले।

अन्य—चन्दरस मलना दांतों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—मौलसिरीकीलकड़ी जलाकर पीसकर मलना उत्तम है।

अन्य—संगजराहत मलना मसूढ़ों से रुधिर निकलने को बन्द करे।

अन्य—कचनार की लकड़ी जलाकर मंजन बनाकर मले।

अन्य—पीड़ा को गुण करे—राई पीसकर मंजन बनावे।

अन्य—बारहसिंगे का सींग जलाकर पीसकर मलना दांतों को बल देना और साफ करता है।

अन्य—बसद पीसकर मलना दांतों को दृढ़ और साफ करता है।

अन्य—मसूर जलाकर मले तो दाँतों को साफ करता है।

अन्य—सरू की पत्तियाँ जलाकर राख उसकी मलना दाँतों को साफ करता है।

अन्य—बरगद की छाल पीसकर दाँतों के नीचे रक्खे तो पीड़ा दूर हो।

अन्य—कालीमिरच, सोंठ, मुरमक्की, थोड़ा नमक मिला पीसकर मले तो दाँतों की पीड़ा को जो शात से हो गुण करता है।

अन्य—सीप जलाकर मलना दाँतों को साफ करता है।

अन्य—बालछड़ पीसकर मलना मसूढ़ों और दाँतों को बल देता है और मुख को सुगन्धित करता है।

अन्य—शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—पाह कालीमिरच बराबर कूट छानकर दाँतों पर मले।

अन्य—दाँतों को मजबूत और पीड़ा को दूर करे—सिरस का गोंद, कालीमिरच महीन पीस मंजन बनाकर मले।

अन्य—जलाहुआ माजूरक, बेजला एक, जली हुई छालियाँ एक बेजली एक कूट छानकर मंजन मले फिर कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

कुल्ली—जो दर्द को दूर करे और दाँतों को मजबूत करे—वायबिड़ंग सैंतीस दाने, कबाबचीनी अठारह दाने, मसूर की पत्तियाँ ग्यारह, झाऊ की कोंपल एक दाम आध पाव जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

अन्य—दाँतों के कीड़ों को उत्तम है—चँबेली की पत्तियाँ एक मुट्ठी, इस्पन्द डेढ़ तोला, सेर भर जल में औटावे जब पाव सेर शेष रहे तो साफ करके कुल्ली करे।

अन्य—दाँतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है—पीपल की छाल, बरगद की छाल, पानी में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—फिटकरी एक तोला, मोचरस छः माशे जवकुट कर आध सेर पानी में औटावे जब आधा शेष रहे कुल्ली करे तो पीड़ा को शांत करे और दाँतों को मजबूत करे।

अन्य—बबूल की छाल दो दाम, कायफल तीन माशे, इन्द्रायन तीन माशे कूटकर पाव सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे तो सोने के समय कुल्ली करे।

अन्य—उस पीड़ा को शांत करे जो नजले, वात, तरी और मसूढ़ों के ढीले होने से होवे—सकोय, खशखाश का पोस्ता, इन्द्रायन, मेजौट बराबर पानी में औटावे जब अर्ध भाग शेष रहे कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—अकरकरा, मसूर, खशखाश का पोस्ता औटाकर कई बेर कुल्ली करे।

अन्य—दन्तपीड़ा को गुणकारक—अबहलपाह जो कसीस की भांति होती है औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गेहूं की भूसी पुराने यव की भूसी औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—जो दांतों से मैल या पीब आने को गुण करे—फिटकरी, माजू औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पीड़ा को शांत करे—माजू, तोंवरी के बीज चार दाम के अनुमान लेकर एक सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके कुल्ली करे शीघ्र ही फल करेगा (तोंवरी खिले हुये दबावे की सूरत की होती है)।

अन्य—मसूढ़ों की सूजन को गुण करे—काले चने भिगो कर औटाकर कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—दांतों की पीड़ा और कीड़ों से खोखले हुये दांतों को गुण करे—कटाई का वृक्ष डाल फूल और फल समेत कूट कर पानी में निचोड़ कर उससे कुल्ली करे या कटाई को पानी में औटाकर चार दिन पर्यन्त कुल्ली करे।

अन्य—मरू के फूल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पियाबांसा की पत्तियाँ औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—मौलसिरी की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—सिरस के वृक्ष की छाल कुचलकर औटाकर कुल्ली करे।

अन्य–रूसे की पत्तियाँ औटाकर कुल्ली करे।

अन्य–अनार और गुलनार और माजू यह सब एक २ या दो दो और मसूर उसके बराबर मिलाकर औटाकर कुल्ली करना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर निकलने को बन्द करता है।

अन्य–गुनगुने पानी से कुल्ली करना मसूढ़ों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य–माजू दांतों पर मलना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर आने को गुण करे।

लेप–इस्पन्द पीसकर कुछ गरमजल में मिलाकर गालों के ऊपर जहाँ पीड़ा हो लगावे।

दांतों के खट्टे होने का यत्न।

खट्टे और कसैली चीज खाने से दांत खट्टे हो जाते हैं।

यत्न–गेहूँ की रोटी गरम दांतों में दबावे नारियल, बादाम, पीलामोम और हींग चबाना दाँतों के खट्टे होने को दूर करे–पैत्तिक प्रकृतिवाले को खुरफे के बीज चबाना और राई का मलना गुण करे और हर प्रकार के खट्टे दांतों को नोन पीसकर मलना लाभ करता है।

दांतों में छिद्र होने का यत्न।

नौसादर और अफीम कूटकर दाँतों के छिद्रों में रक्खे और थोड़ी मस्तगी पीसकर दाँतों पर लगावे।

कुल्ली–मसूढ़ों के शोथ और दन्तपीड़ा को गुण करे–पीले हड़ों की छाल, मकोय, धनिया, इस्पन्द दो दो मिस्काल, खशखाश के पोस्ते दो, अजवायन दो टंक, आधसेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके कुल्ली करे।

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने की औषधियां।

चिकनी चीजें जैसे कि अण्डे की जरदी, हराम मगूज, भेजा और मुरग़ का पर धीरे से दाँतों की जगह पर मले।

औषध–गुलरोगन मकोय के पत्तोंका रस निचोड़कर उसमें मिलाकर पीड़ाके समय मलना श्रेष्ठ है। ताबूलखवास में लिखा

है कि लड़के के गले में सांप का लटकाना मुख्य करके शीघ्रही दांतों को उगावेगा इस प्रकार होंठ छछूँदर का और सँभालू की जड़ का लड़के के गले में लटकाना मुख्य करके फल रखता है।

जिह्वा के रोगों की औषधियां।

यह रोग बहुधा नरों से होता है।

यत्न–राई, पीपल, सोंठ, नौसादर, अकरकरा इन दवाओं से एक एक या सब पीसकर जिह्वापर मले और कभी उसमें सिरका मिलाते हैं और कायफल के काढ़े से कुल्ली करना गुणकारी है।

अन्य–जिह्वा के भारी होनेको जो पित्तसे शोथ हो गुणकारी है–गुलाब के फूल छिली हुई मसूर दोनों के साथ पीसकर और मकोय की पत्तियों का रस मिलाकर जिह्वा की जड़ पर मले।

जिह्वा के दाह का यत्न।

दही पानी में मिलाकर कुल्ली करे और कत्था जिह्वा पर रक्खे।

जिह्वा के दानों का यत्न।

इसको मुँह आना भी कहते हैं कदाचित् रुधिर के दोष से हो तो दानों का रंग लाल होगा और पित्त की अधिकता में पीला कफ में सफेद और सौदावी अर्थात् दूषितदोष में काला रंग होता है जो यह रोग दूषितदोष से हो तो बहुत बुरा है जो बालकों को हो तो मृत्यु के चिह्न हैं।

यत्न–जो युवा मनुष्य का मुँह आवे तो चारबन्द की फस्द ले।

अन्य–औषध जो जवानों और लड़कों के मुँह आने को गुण करे–बकायन की छाल पीसकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर जिह्वा पर छिड़के।

अन्य–जला हुआ कागज, बड़ी इलायची के दाने, सफेद कत्था, भुनी फिटकरी बराबर पीसकर थोड़ा थोड़ा मुँह में छिड़के।

अन्य-मसूर जलाकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य-जला हुआ गावजवाँ उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँह में छिड़के।

अन्य-बड़ी इलायची के दाने, छालिया दोनों जलाकर महीन करके मुँह में छिड़के।

अन्य-सफेद कत्था, शोशाकलमी बराबर पीसकर मुँह में छिड़के।

अन्य-मुँह आने को गुण करे और विशेष करके लड़कों की जिह्वा के दानों को दूर करे-मिश्री पीसकर थोड़ा कपूर मिलाकर छिड़के।

अन्य-भुनी फिटकरी, माजू, बराबर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य-लड़कों के मुँह आने को दूर करे बाज या जुर्रा या बाशा की बीट दो रत्ती भर पीसकर लड़के के मुँह में छिड़के कफ के मुँह आने को गुण करे।

अन्य-छिले हुये जौ जलाकर कत्था सफेद बराबर मिलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य-लड़कों के मुँह आने को गुण करे-मनुष्य के शिर के केश जलाकर राख उसकी जिह्वा पर मले जो कफ से मुँह आवे तो शहद में मिलाकर मले।

अन्य-रसौत नींबू के रस में पीसकर मले।

अन्य-जो लड़कों के मुँह आने को गुण करे-निशास्ता जल में कजली करके मले।

अन्य-गुलाब की पत्तियाँ और खुरफे की पत्तियाँ चाबना गरमी के मुँह आने को दूर करे।

अन्य-अमलतास की पत्ती जिह्वा पर मले।

अन्य-शहतूत की पत्ती चाबे।

अन्य-गोंदी की छाल में कत्था लगाकर चाबे।

अन्य—बबूल की कोंपल पीसकर मलना और पीना हर प्रकार के मुँह आने को गुण करे।

कुल्ली—गरम मुँह आने को गुण करे—त्रिफला और सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गरम मुँह आने को गुण करे—माजू, गुलेनार सिरके में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—आमले पानी में भिगोकर उस जल से कुल्ली करे।

अन्य—सौदावी अर्थात् दूषित दोष के जिह्वा के दानों को गुण करे—मेंहदी की पत्तियाँ चबावे।

अन्य—गाय की हड्डी की सींगी मले।

अन्य—अनार की छाल, गोंदी की छाल, सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—बबूल की छाल, झड़बेरी की छाल औटाकर कुल्ली करना श्रेष्ठ है और जो पारे, शिंगरफ और रसकपूर खाने से हुआ हो उसको भी गुण करे।

अन्य—मुँह आनेको गुणकारक—अरहर की पत्तियों का शीरा निकाल कर उससे कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल पानी में भिगोकर उस पानी से कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल, मसूर की दाल औटावे और साफ करके कपूर मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—मेंहदी भिगोकर उसके जल से कुल्ली करे।

अन्य—उस मुँह आने को श्रेष्ठ है जो पारे और रसकपूर खाने से पैदा हो—त्रिफला, मोचरस, खशखाश का पोस्ता औटाकर कुल रोगों का तेल मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—जिह्वा के फट जाने को गुण करे—लसोढ़ा मुँह में रक्खे और इसबगोल के लुआब से कुल्ली करे और कत्था मुख में रखना गुण करता है।

मुख से लार बहने का यत्न।

बहुधा सोने के समय मुँह से लार बहना कोष्ठ की तरी से होता है।

यत्न—कोष्ठ को साफ करे और इतरीफल, सगीर खावे और पाई पीसकर उसमें शक्कर मिलाकर फाँकना गुण करता है और देरतक दातौन करना श्रेष्ठ है और कासनी जवकुटकर थोड़ा नोन मिलाकर चूर्ण बनाकर कुछ दिन फाँके।

औषधि—जो लार बहने को बन्द करे—शक्कर सफेद आधपाव कवाम करे, सात माशे मस्तगी उसमें मिलावे लड़के के लिये खुराक दो माशे जवान के लिये नव माशे।

ओंठों के फट जाने का यत्न।

ओंठों के फट जाने का कारण खुश्की है।

यत्न—घृत में नोन मिलाकर प्रतिदिन तीनबेर नाभि पर मले गुणदायक है।

अन्य—ओंठ और जिह्वा के फट जाने को उत्तम है—मीठे कद्दू के बीजों की मींगी या तरबूज के बीजों की मींगी पानी में पीस कर मले।

अन्य—कतीरा पीसकर और ईसबगोल का लुआब ओंठों पर मले।

अन्य—बायबिड़ंग की झाग निकालकर ओंठों पर मले।

कण्ठ के रोगों का यत्न (खुनाक)।

खुनाक वह शोथ है कि नरखरे या नरखरे के पट्ठे या मरी या मरी के पट्ठे में पैदा होना है नरखरा उसको कहते हैं कि उससे आवाज निकलती है और मरी से भोजन और मद्य का सेवन होता है जो नरखरे में शोथ हो तो उसके चिह्न श्वास का रुकना है और जो मरी में शोथ हो तो कठिनता से खाना पीना उतरना उसके चिह्न हैं।

यत्न—सरेरू की फस्द और जिह्वा के नीचे की रग खोले और अमलतास मुख में रखना बहुत लाभ करता है और खुनाक में

माउलसईर कि मसूर और खशखाश उसमें मिलाकर पकाया हुआ भोजन करे जो दो भाग खशखाश और मसूर बराबर हो।

शहतून का गर्वन।

खुनाक की सूजन, गले के शोथ, कव्वे, तालू और जिह्वा की सूजन को श्रेष्ठ है—खट्टे शहतून का रस निचोड़कर बराबर मिश्री में कवाम करे।

गरगरा अर्थात् कुल्ली।

जो गले की पीड़ा और सूजन को गुण करे—नींब की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में मिलाय औटाकर साफ करके कुछ गरम करके कुल्ली करे।

अन्य—खुनाक को गुणकारक—अमलतास, मसूर, मकोय की पत्तियां के रसमें औटाकर कुछ गरम ग़रग़रा करे।

अन्य—शहतूत का रस, धनियां, मसूर भिगोकर उसके पानी में मिलाकर ग़रग़रा करे।

अन्य—जौ अधकुचले भिगोकर उसका साफ पानी लेकर कुछ गरम ग़रग़रा करे ठण्डा और गरम शोथ और कंठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है इसी प्रकार कुछ गरम पानी से ग़रग़रा करना खुनाक को गुण करे।

अन्य—बबूल की पत्तियाँ औटाकर ग़रग़रा करे।

अन्य—खुनाक को गुण करे—अरहर की पत्तियों का रस निकालकर कुछ गरम करके ग़रग़रा करे—यदि अरहर की पत्तियां न मिलें अरहर की दाल पानी में भिगोकर कुछ गरम करके ग़रग़रा करे।

अन्य—तून की जड़ और पत्तियाँ और उसकी नरम डालियाँ पानी में औटाकर ग़रग़रा करे।

अन्य—धनियें का चावना गले की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—मकोय, कालीजीरी, कालीमिरच, खड़ियामिट्टी बराबर पानी में पीसकर लगावे गले के शोथ और खुनाक को दूर करे।

अन्य—जद्वार, रेवन्द्चीनी तीन तीन माशे, अफीम तीन रत्ती कुछ गरम पानी में मिलाकर लेप करे।

अन्य—सूखा करेला सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—गले की पीड़ा को गुण करे—हतीस की जड़ पानी में घिसकर कुछ गरम करके मले।

अन्य—नौसादर मलना खुनाक को नाश करे।

अन्य—मुरगी का विष्ठा सिरके में मिलाकर कण्ठ पर लगावे शोथ को गुण करता है।

अन्य—तोंबे के बीज, गेरू, लालचन्दन, कालाज़ीरा, सिरस की छाल, मसूर, कालीमिरच, कालीज़ीरी, सूखा करेला, सोये के बीज ये सब औषध बराबर पीसकर सिरके में मिलाकर गुनगुना मले।

अन्य—मोरया जो हिन्दी जड़ है मैला रंग पीसकर लगावे गले की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—रेवन्द्चीनी, गेरू, कालीज़ीरी, कालीहड़, हल्दी, आमला, मुल्तानीमिट्टी बराबर कूट छानकर कुछ गरम जल में मिलाकर मले।

अन्य—जो लड़कों का कव्वा लटक आवे उसको गुण करे—मुल्तानी मिट्टी सिरके में मिलाकर तालू पर रक्खे।

अन्य—माजू सिरके में घिसकर तर्जनी उँगली में लगाकर कव्वा लटकगया हो उससे उठावे।

अन्य—चूल्हे की लाल मिट्टी, एक कालीमिरच पीसकर मिलाकर कव्वा उससे उठावे।

अन्य—कपोल के शोथ को श्रेष्ठ है सेंभल की छाल जलाकर तिलों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य—मेथी जौ का आटा बराबर सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—खुनाक को श्रेष्ठ है और यह औषध उलब्रीख़ाँ की आज़माई हुई है कछुये को लेकर मुख उसका रोगी के मुखके

बराबर रक्खे जो कडुये के सुन्दकी श्वास रोगी के कंठ में भी प्रवेश करे और उनकी कुनाक गलकर नाशहो और गर्दन की पीठपर पछने लगाना खुनाक को नाश करता है ।

आवाज के पड़जाने का यत्न ।

जो नजला कण्ठ की ओर गिरे और उससे आवाज पड़ जावे थोड़ी अफीम खावे और खशखाश के पोस्ते और अज-वाइन को औटाकर गरगरा करे गुण देता है और जो कफ के कारण हो तो तीन वर्ष की पुरानी गोंदी की जड़को जो पृथ्वी के नीचे होती है थोड़ी थोड़ी मुख में रक्खे इस्पन्द से गरगरा करना आवाज को साफ करता है ।

अन्य—बन्द आवाज को खोले—अदरक लेकर उसे भीतर से खाली करके थोड़ी हींग और नमक पीसकर उसके छेद में रक्खे फिर अदरक को कपड़े में लपेटकर उसपर खमीर लगाकर भूभल में रक्खे जब अदरक पककर उसमें से गन्ध आने लगे आग से निकालकर छीलकर खावे—आवाज खुलजावे ।

अन्य—बन्द आवाज को गुण करे—मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि चावल गुड़ में पकाकर सोने के समय पेटभरकर खावे फिर एक घण्टे के उपरान्त दो चमचे गुनगुना पानी पिये तीन दिन में आवाज खुलजावे ।

अन्य—थोड़ी हींग गरम जल से कण्ठ के नीचे उतारे ।

अन्य—मूली के बीज कूटकर गरम पानी में मिलाकर खावे ।

अन्य—हड़ के बीज की मींगी, पीपल, लाहौरीनोन बराबर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक तोला दो सप्ताहपर्यन्त खावे ।

अन्य—बन्द आवाज को जो कफ से हो उत्तम है—मालकङ्गनी, बच, खुरासानी अजवाइन, कुलींजन, पीपल पीसकर शहद में मिलाकर एक दाम के अनुमान प्रभात और सन्ध्या में चाटे ।

अन्य—मुजर्रिबात अकबरी से लिखा गया कि—चिराग का

गुल पान में डालकर खावे उस बन्द आवाज को जो सेंदुर खाने से हो अधिक गुण करे।

अन्य–आवाज खोलता है–गन्ना भूभल में गुनगुना करके छील कर खावे।

अन्य–मुख में कबाबा रखना आवाज को खोलता है करंब की चटनी आवाज के खोलने को गुण करे और करंब की डालियाँ थोड़े पानी में पकाकर कपड़े में छानकर शहद में कवाम करके सेवन करे।

कंठमाला की औषधियों का यत्न।

कण्ठमाला शोथ है जो गले में पैदा होता है।

अन्य–मुंजिज के उपरान्त कफ का जुल्लाब दे।

अन्य–कण्ठमाला को उत्तम है–मूली के बीज, बकरीके दुग्ध में पोसकर लेप करे, प्रतिदिन लसोढ़े की पत्तियाँ गरम भूभल में गुनगुनी करके दश दिन तक कण्ठमाला पर बाँधे।

अन्य–थोड़ी कसौंधी की पत्तियाँ, चार कालीमिरचों में पीसकर मले।

अन्य–सरसों पीसकर लगाया करे।

अन्य–लिखा है कि जुल्लाब देने के उपरान्त जब तक रोग नाश न हो चार माशे जंगीहड़ कूटछानकर रात को सदा खाया करे–और यह मरहम लगावे–गूगुल एक तोला, काली मिरच तीन माशे सिरके में पीसकर मरहम बनावे।

अन्य–मसूर, धनियाँ सिरके में पकाकर पीसकर लगाया करे।

अन्य–सोंठ एक टंक, कुलथी के बीज तीन टंक गोमूत्र में पकाकर ठण्ढा करके लेप करे।

अन्य–यह औषधि कराबादीन शफाई से प्रति कीगई है कण्ठ-माले को श्रेष्ठ है–कतीरा पाँच भाग, नानख्वाह दो भाग कूट छान कर धनियें की पत्तियों का रस निचोड़ कर उसमें मिला कर मले।

अन्य–बकरी के कंधे की हड्डी लेकर जलाकर एक सप्ताह

पर्यन्त दो टंक खावे—सोंरिया की लकड़ी उसको मदनमस्त भी कहते हैं कूट छानकर गुनगुना करके लेप करे ऊपर से पुरानी मई गरम करके बाँधे।

अन्य—गौ का सींग और नख जलाकर तेल में मिलाकर कण्ठमाला के रोगी को लेप करे।

अन्य—पीलू की पत्तियाँ, ऊँट या गौ के मूत्र में पीसकर लगावे उसके ऊपर पान बाँधे।

अन्य—मुंडी के फूल दो तोले पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ करके पिये इसी प्रकार एक मास पर्यन्त सेवन करे।

अन्य—आजमाया हुआ है, कण्ठमाला के मल को उखाड़े और यह औषध मुजर्रिबात अकबरी की है—एक भाग सिरस के बीज कूट छानकर दो भाग शहद में मिलाकर हाँडी में रक्खे और उस पर सरपोश ढाँककर उसके किनारे उड़द का आटा लगावे और एक सप्ताह पर्यन्त धूप में रक्खे इसके उपरांत खोलकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे यद्यपि इस औषध में दुर्गन्धि है परन्तु कण्ठमाला के मल के दूर करने में अद्वितीय है।

अन्य—थूहर की जड़ बाँधना विशेष करके कण्ठमाला को श्रेष्ठ है।

अन्य—बकरी के सींग का बुरादा जंगली कण्डे की आग में जलावे जब जलकर सफेद हो जावे चूर्ण बनाकर प्रतिदिन सात माशे चौदह दिन तक फाँके भोजन खिचड़ी खावे।

अन्य—कण्ठमाला को दूर करे—जौ का आटा, अलसी कबूतर की बीट सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—धनियाँ और जौ का सत्तू सर्वदा कण्ठमाला पर लगाया करे।

अन्य—सिरस की छाल, तोंबा, कालीमिरच, कालीजीरी पीसकर बराबर लगाया करे।

अन्य-बरगद का दूध कण्ठमाला पर लगाना कण्ठमाला को पचाता है।

अन्य-सरेरू की फस्द खोलना और भोजन कम करना उत्तमोत्तम यत्न है।

कण्ठ में जोंक के लिपट रहने का यत्न।

नोन, नौसादर, सिरके में मिलाकर गरगरा करे और गन्धक का धुवां कण्ठ में पहुँचाना जोंक को कण्ठ से गिरा देता है और धुवां पहुँचाने की यह रीति है नरकुल लेकर एक ओर उसके गन्धक रक्खे उसपर आग रखकर दूसरी ओर से हुक्के की भांति खींचे जो जोंक कण्ठ से छूटकर कोष्ठ में गिरजावे शीघ्र ही वमन करे न निकले तो मुसिलले।

अन्य-कालीमिट्टी कपड़े में बाँधकर रोगी के मुख में रक्खे शीघ्र ही जोंक मिट्टी की सुगन्ध से निकल आवेगी।

अन्य-पिसी हुई राई दो भाग, सिरका आठ भाग दोनों मिलाकर गरगरा अर्थात् कुल्ली करे।

अन्य-राई, कलौंजी पीसकर कान में फूँके गुण करती है।

अन्य-मोठ हिंदी मुख में रक्खे जोंक उसकी प्रीति से निकल आवेगी।

हृदय रोगों का यत्न।

दमा अर्थात् श्वास बहुधा बुढ़ापे में कफ की अधिकता से होता है यह रोग बहुत दिन रहनेवाले रोगों में से है इसके उपाय से भूल न करे मुंजिज के उपरांत कभी कभी कफ का जुल्लाब मुसिल से करता रहे।

गोली-श्वासरोग को श्रेष्ठ है-करंजुवे की गूदी, पीपल पीसकर अदरक के रस में कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनाकर दो तीन गोलियाँ प्रभात को खाया करे।

अन्य गोली-हल्दी, राई, सज्जी चार-चार भाग, गुड़ अठारह भाग कूट छानकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बनाकर एक सुबह और एक शाम को इसी प्रकार चालीस दिन तक खावे।

अन्य—साँप जलाकर अदरक के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियाँ बनाकर खावे ।

अन्य—गोली जो श्वास रोग को गुण करे—मदार की कली जो खिली न हो दो भाग, पीपल एक भाग, लाहौरी नोन एक भाग महीन पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली प्रतिदिन खावे ।

गोली—एक मदार का पत्ता पच्चीस कालीमिरचें कूट छान-कर कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनावे जवान सात गोली और लड़के दो गोली खावें ।

अन्य—पीपल, कालीमिरच एक एक टंक, काकड़ासिंगी आधा टंक, सज्जी सफेद चौथाई टंक, अफीम चार रत्ती कूट छानकर अदरक के जल में जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली जो अदरक न मिले तो पाँच टंक सोंठ मिलाकर गोलियाँ बनावे ।

अन्य—एलुवा सफेद, सज्जी, कालीमिरच, हल्दी कूट छान-कर घीकुवार के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली गुनगुने जल से खावे ।

अन्य—नीलचोंका लकड़ी दो टंक, मालकाँगनी चौथाई टंक, कूट छानकर पानी में खरल करके चने की बराबर गोलियाँ बनावे प्रातःसंध्या एक गोली खाया करे खटाई से पथ्य करे चिकना भोजन खावे ।

अन्य गोली—साँक और कफ की खाँसी को श्रेष्ठ है—अकर-करा, कालीमिरच, अनार की छाल, अजमोद, बाँसे की पत्तियाँ, छोटी कटाई की जड़, बबूल की छाल, सफेद सज्जी, लाहौरी नोन, साँभर नोन एक एक माशा, अफीम दो माशे कूट छान-कर अदरक के रस में चने की बराबर गोलियाँ बनाकर मुख में रखकर उसकी राल निगल जावे ।

अन्य—दमे को श्रेष्ठ है—एलुवा, सुहागा, सुरमकी कूट छान-

कर चने की बराबर गोलियाँ बनावे दो प्रभात को दो सन्ध्या को खाया करे।

अन्य—पीपल एक तोला कपड़े को पानी में भिगोकर पीपल उसमें लपेटकर भूभल में रक्खे एक घण्टे के उपरान्त निकाल कर भुना सुहागा, कुलींजन, कालीमिरच एक एक मिस्काल, पीपल, अकरकरा, डेढ़ भाग, बारीक पीसकर घीकुवार के रस में खूब खरल करके चने की बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली रोज खावे।

अन्य—बाँसा, कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, काली-मिरच, कलौंजी, पीपल, भारंगी, कटाई के बीज बराबर लेकर अदरक के रस में गोलियाँ बनावे एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—कसौंधी का हरा फल भूनकर खावे।

अन्य—रीठे की गिरी खाना साँक को गुण करे।

अन्य—आश्चर्यदायक औषध है—रूसे के बीज, नक-छिकनी, पान, तीनों औषध भूनकर पीसकर चार रत्ती के बराबर पान में खावे।

अन्य—मदार के पत्ते, मुरमकी, कत्था सफेद पानी में पीसकर मले और मुरमकी घी के मिट्टी के बासन में रक्खे और बरतन का मुख बन्द करके जलते हुये चूल्हे या तन्दूर में रक्खे जब जलकर राख हो जावे पीसकर प्रतिदिन एक रत्ती पान में खाया करे।

√ अन्य—कासश्वास को नाश करे—मदार की पत्ती जो पीली होकर दरख्त से गिर पड़ी हों एक सेर, चूना, नोन दो दो टंक दोनों को जल में पीसकर मदार के पत्तों पर लगाकर सुखा-कर मिट्टी के बासन में रखकर जंगली कंडे की आग में एक पहर तक जलावे जब भस्म हो जावे एक रत्ती रोज खाया करे दूध दही और खटाई से पथ्य करना उत्तम है।

अन्य—मदार की कोंपल पान में रखकर सरदी में तीनदिन पर्यन्त प्रतिदिन एक कोंपल खावे चौथे रोज डेढ़ कोंपल पाँचवें

दिन दो कोंपल इसी प्रकार चालीस दिन पर्यंत आधी आधी कोंपल प्रतिदिन अधिक करके खावे ।

अन्य—मदार की कली जो खिली न हो जितनी चाहे लेकर हर फूल में एक काली मिरच रखकर मिट्टी की नई हाँडी में रक्खे उस पर खारीनोन बिछाकर हाँड़ी का मुख मूँदकर तन्दूर में रक्खे ठण्डे होने के उपरान्त निकालकर चार रत्ती उसमें से रोज खाया करे।

अन्य—कफ के दमे की नाशकारक—इलायची के दाने, मालकाँगनी दो माशे लेकर निगल जावे ।

अन्य—अदरक का रस, प्याज का रस, लहसुन का रस, घीकुवार का रस, शहद यह सब औषधि बराबर लेकर चीनी या शीशे के बासन में रखकर पृथ्वी में गाड़े तीन दिन के उपरान्त निकालकर एक कौड़ी के बराबर प्रतिदिन खाया करे ।

अन्य—बिसखपरे की थोड़ी सी जड़ प्रतिदिन पान में खावे।

अन्य—तम्बाकू का गुल आग में जलाकर सफेद करके पीस कर दो रत्ती पान में खाया करे बादी और खटाई से पथ्य करे।

अन्य—तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके आग में जलावे जब सफेद हो जावे उसको पानी में कजली करके एक रात दिन रहने दे और प्रतिदिन दो तीन बेर उसको हिलाते रहें फिर छानकर और उसका जल लेकर पतीली में औटावे जब नोन हो जावे उसमें से दो रत्ती लेकर पान में खाया करे ।

अन्य—थूहर की लकड़ी खोखली करके एक दाम फिटकरी उसमें रखकर कपड़मिट्टी करके कंडे की आग में जलावे जब ठंढा हो जावे फिटकरी निकालकर दो रत्ती के बराबर पान में खाया करे ।

अन्य—दमे को गुण करे—चाहे वह सरदी से हो या गरमी से ईसबगोल अंजुली भर बराबर तीन चार महीने सुबह और शाम फाँकने से शान्ति होती है कफ के श्वासरोग को शान्तिकारक है पान सरबर नाखून के बराबर पान में रखकर खाया करे ।

अन्य–समुद्रफल दो, पीपल चार दोनों को जलाकर पीसकर एक कौड़ी के बराबर पान में रोज खाया करे।

अन्य–मकड़ी का जाला साफ करके गुड़ में लपेटकर खावे चाहे गरमी बहुत करता है परन्तु गुणदायक है।

अन्य–रूसे के पत्तों का रस दमे को गुण करता है।

अन्य–चार तोले गेहूँ मदारके रसमें तीन दिन भिगोवे फिर मिट्टी के वर्तनमें रखकर उसका मुख बन्द करके जंगली कंडों में जलावे जब ठण्डा होजावे पीस छानकर चार तोले गुड़ मिलाकर दो दाम आलमगीरी के बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली प्रभात को खाया करे और खटाई और बादी से परहेज करे।

अन्य–चिड़चिड़े का नोन थोड़ा खाया करे हृदय को कफसे साफ करता है और श्वासरोग को दूर करता है और थूहर का नोन भी यही गुण रखता है और मदारका नोन खानाभी श्वासरोग को नाश करता है और उसके नोनके बनानेकी यह रीति है मदारके पत्ते सुखाकर जलाकर रात को वर्तनमें भिगोदे प्रभात को उसका साफ जल लेकर जलावे कि पानी जलकर खार हो जावे और नोन भी इसी रीति से बनाते हैं।

मुसिल–जो विशेष करके श्वासरोगों को नष्ट करता है जमालगोटा छीलकर चिराग में जलावे जब राख हो जावे पीसकर चार भाग करे प्रतिदिन एक भाग पानमें खावे।

अन्य–भुनी फिटकरी, मिश्री बराबर कूट छानकर फंकी बनावे खूराक एक माशे से छः माशे पर्यन्त।

अन्य–गेहूँ आवश्यकताके अनुकूल नये कुल्हड़ में जलाकर कोयला करके हल्दी जलेहुये गेहूँ के बराबर लेकर जलावे फिर दोनों महीन पीसकर मिलावे पहिले दिन साढ़े पाँचमाशे गरम या ठंढे पानी से खावे दूसरे दिन एक कौड़ी के बराबर अधिक करे इसी तरह एक माशा इक्कीस दिवस पर्यंत सेवन करे जो ईश्वर चाहे तो सात दिन के उपरान्त फर्क मालूम होगा।

अन्य–कलीमदार की जड़ डेढ़भाग, अजवाइन एकभाग

कूट छानकर गुड़ में मिलाकर गोलियाँ बनावे और एक तोला भर हर प्रभात को खावे।

अन्य-करील की लकड़ी जलाकर उसकी भस्म एक माशा भर खाया करे।

अन्य-आंवलासारगन्धक सात माशे, मिश्री चार टंक, शहद में मिलाकर दो माशे पानपर लगाकर मलकर खावे।

अन्य-पियाबांसा का छोटासा वृक्ष जड़ और पत्तों समेत छाया में सुखाकर कूट छानकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर प्रतिदिन खावे।

अन्य-बारहसिंगे का सींग जलाकर पहिले दिन एक माशे भर शहद में मिलाकर खावे फिर एक माशा रोज अधिक करके एक तोले पर्यन्त पहुँचावे जो इससे गरमी अधिक हो तो छोड़ दे।

अन्य-मदार की छाल, सहँजने की छाल तीन तीन टंक, जवाखार एक टंक, पीपल सात टंक, सब्ज तूतिया चौथाई टंक, भूनकर चूर्ण बनावे खूराक आधा टंक खाय।

अन्य-इन्द्रायनकी जड़, पीपल, सज्जी बराबर कूट छानकर रक्खे एक माशा सुबह और एक माशा शाम को खाया करे।

अन्य-लाहौरीनोन पहले दिन दो माशे पीसकर सोने के समय चाटे और हररोज आधा माशा अधिक करे कि छः माशे पर्यन्त पहुँच जावे इस पर जल न पिये जो प्यास बहुत मालूम हो तो गुनगुना पानी पिये।

अन्य-मदार की पत्ती अढ़ाई पाव, मंडवे की टहनियाँ टुकड़े टुकड़े करके सवासेर सादी अजवाइन, पन्द्रह दाम अध कुचली आंवलासार गन्धक, सांभरनोन, लाहौरीनोन, काला नोन, जवाखार, सज्जी तीन तीन दाम यह सम्पूर्ण औषधि हांडी में भरकर ढकना देकर उसका मुख मिट्टी से बन्द करदे ऊपर से कपरौटी करके बहुतसी लकड़ियों में रखकर जलावे जब भस्म होजावे पीसकर खायाकरे और थोड़ा थोड़ा बढ़ा-

कर एक अँगुली तक पहुँचावे परंतु इस औषधि से रुधिर आने का भय है अधिक न खावे।

फंकी–वैद्य इसका अवश्य सेवन कराते हैं–पुष्करमूल, भारंगी, कालीमिरच, पीपल, कटाई के बीज, काकड़ासिंगी, कालानोन, लाहौरी नोन, सज्जी, बिल्लौलोटन बराबर कूट छानकर फंकी बनावे एक माशा सुबह और एक माशा संध्या को खावे और भोजन में घृत अधिक खाय।

तम्बाकू का शरबत।

तम्बाकू के हरे पत्तों का रस और उसके बराबर गुड़ लेकर शरबत बनाकर साफ करके रक्खे खुराक एक दाम से दो दाम पर्यंत–निर्बल को कम दे कि उसको वमन और अतीसार का भय है और श्वासरोग को बहुत ही गुणदायक है पाँच दिन में बिलकुल आराम कर देता है।

चटनी–कासश्वास को जो कफ से हो उत्तम है–अलसी और इस्पन्द बराबर पीसकर दुगुने शहद में मिलाकर प्रतिदिन उसे एक तोला भर चाटे बाजों ने लिखा है कि भुनी अलसी तीस टंक, कालीमिरच दश टंक तिगुने शहद में मिलाकर चाटे और बाजे मिरच के बदले पोदीना मिलाते हैं और बाजे केवल तिगुनी अलसी में कवाम करते हैं।

अन्य–साँस आने को गुण करे–भुना सुहागा तीन तोले, शहद चार तोले मिलाकर रक्खे सोने के समय उसमें से तीन उँगली लेकर चाटे।

अन्य–कफ के दूर करने में अद्वितीय है-कायफल, सोंठ, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, भारंगी, पीपल बराबर कूटछानकर शहद में मिलाकर रोज एक दाम खाया करे।

अन्य–बावची, हल्दी, पीपल, आँबाहल्दी, कालीमिरच, कालानोन, कालाचीता, भुनासुहागा एक एक दाम, सज्जी आधा दाम कूट छानकर खूराक एक मिस्काल गरम जल से।

अन्य–काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, भारंगी, कायफल बराबर

कूट छानकर सोंठ भिगोकर उसके पानी में तर करके प्रभात और संध्या एक एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य–कासश्वास को गुण करे–हड़ बहेड़ा दोनों एक एक भाग कूट छान कर एक टंक प्रभात और एक टंक शाम को खावे और दो टंक सोंठ प्रतिदिन खाना दमे को गुण करता है।

अन्य–कड़वी कूट दुगुने शहद में मिलाकर चाटे कास-श्वास को गुण करे।

अन्य–अलसी, मेथी सात माशे, दाख मुनक्के एक तोला पानी में औटाकर साफ करके पिये।

अन्य–बड़ी कटाई की जड़ टुकड़े टुकड़े करके पात्र भर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे पिये।

अन्य–कफ की खाँसी को गुण करे–जंगली प्याज, शंतरा, सोंठ, भारंगी, कटाई जड़ और पत्तों समेत, रूसा, बबूलकी छाल दो दो दाम यह सम्पूर्ण औषधि जवकुट करके छः हिस्से करे एक भाग आधसेर जल में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये।

अन्य–दमे और खाँसी को गुण करे–छोटी कटाई की जड़, गिलोय, पुष्करमूल, भारंगी, काकड़ासिंगी नरकचूर तीन तीन माशे एक सेर जल में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये।

हलवा–सिल और रूखी खाँसी को गुण करे–मीठे कद्दू के बीजों की गिरी, खीरे ककड़ीकेबीजों की गिरी, खशखाश, निशास्ता बराबर शीरा निकालकर सफेद मिश्री या तुरंजबीन शीरखिस्त या बनफशे का शरबत पिये।

हलवा–हृद्रोग, सिल, खाँसी और दिक अर्थात् जीर्णज्वर और आँतों की गाँठ को श्रेष्ठ है और बलकारक और भेजे को तर करनेवाला है–निशास्ते को पानी में औटाकर शक्कर मिलाकर कवाम करे फिर खशखाश और कद्दू के बीजों की गिरी का शीरा मिलाकर हलवा बनावे।

सिल के रोग का यत्न।

सिल फेफड़े के घाव को बोलते हैं इस रोगवाले को ऐसा ज्वर

आवे जो कभी न उतरे कभी खाँसी से रुधिर भी निकलता है और रोगी दिन दिन क्षीण पड़ता जाता है यद्यपि यह रोग असाध्य है परन्तु इसलिये कि रोगी शीघ्र मर न जावे बासलीक की फस्द खोले फिर ज्वर और कास का यत्न करे।

गोली—जो सिलको गुण करे—संगजराहत, जहरमोहरा, सफेद कत्था, कतीरा, सम्मगअरबी, निशास्ता, सफेद खशखाश, खतमी के बीज, गेरू एक एक टङ्क, अफीम एकमाशा कूटछान-कर गोलियाँ बनावे और कभी ज्वरकी अधिकता में थोड़ा कपूर प्रकृति के अनुसार मिलाया जाता है।

टिकिया—सिल और दिक़को गुण करे—गेंगटा जलाकर दश टङ्क, निशास्ता सफेद, खशखाश, काली खशखाश दश दशटङ्क, साफ किये खुरफेके बीज, छिली हुई मुलहठी, छिलेहुये खतमीके बीज तीन तीन टङ्क, सम्मगअरबी कतीरा एक एक टङ्क, ईसब-गोलके लुआब में टिकिया बनावे खूराक दो टङ्क खाय।

अन्य—सिलके रोगके लिये इस्माईलखां का आजमाया हुआ है खशखाश सफेद अधकुचला दश टङ्क, ईसबगोल तीन टङ्क, आधसेर जल में औटावे जब आधापानी रहे आधसेर मिश्री में कवाम करे ऊपर से सफेद खशखाश, सम्मगअरबी दो दो टङ्क पीसकर मिलावे एक तोला खाय।

अन्य—सिल को गुण करे—मुल्तानी मिट्टी दो मिस्काल पीसकर पिये।

लड़कों की पसली के रोग का यत्न।

इस रोग में ज्वर और खाँसी होती है और पसली दब जाती है यह दो प्रकार का है एक वह कि उसका मल गरम हो उसमें ज्वर भी होता है इससे ऐसी चिंता नहीं इसमें सात दिन पर्यन्त तेज चीजें कि जिससे भीतर के जोड़ छिल जावें जैसे कि तूतिया और जमालगोटा और वैसी कोई औषधि न दे और उत्तम उपायों से तलीन करना चाहिये कि अमलतास, उन्नाव, मुनक्के, बनफ्शे शीघ्रही मल को निकाले दूसरा वह कि

कफ के दोष से हो इसमें ज्वर और ऊर्ध्वश्वास भी होता है पहिले से इसमें भय है।

जो लड़कों के डब्बे को दूर करे—कसीला, चूना, सब्ज तूतिया, पीलीहड़, बहेड़े की छाल, कत्था सफेद बराबर महीन पीसकर गोलियाँ बनावे समय पर थोड़े घृत में मिलाकर मले।

गोली—केंचुवा, पेठे के बीज, लौंग बराबर लेकर गोलियाँ बनावे। एक गोली प्रतिदिन दे दो तीन दिन में रोग दूर हो जावेगा।

गोली—करजुवे के बीज की गिरी एक, कच्ची सब्ज तूतिया एक रत्ती भर महीन पीसकर सरसों की बराबर गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे।

अन्य—एलुवा, जमालगोटा सब्जी दूर करके बराबर लेकर लोहे के बर्तन में उस गोमूत्र में जो जनी न हो लोहे के दस्ते से पीसकर मूँग के बराबर गोलियाँ बनावे आयु के अनुसार दाई के दूध में दे।

अन्य—लड़कों के डब्बे को श्रेष्ठ है और कीड़ों को निकालती है—कसीला ८ माशे, हींग १ माशे, कूटछान कर दही के पानी में कालीमिरच के बराबर गोली बनावे, दूध पीते हुये बालक को एक गोली गरम जल के साथ और बड़े लड़के के लिये आयु के प्रमाण दे।

अन्य—लड़के की पसली के रोग को शांत करे—चूका की लकड़ी, कालीमिरच, पीले हड़ों की छाल, तुरबुद की छाल बराबर पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनावे खुराक एक गोली खाय।

अन्य—सूखा केंचुवा पानी में पीसकर एक बूँद लड़के के कण्ठ में टपकावे बहुत गुण करे।

अन्य—बकायन की पत्ती कुछ गरम करके पहिले रेंडी का तेल पेट पर मले उस पर पत्ती बांधे।

अन्य काढ़ा—कुसुम के फूल एक माशा दो टंक लड़की के मूत्र में औटावे जब आधा या चतुर्थांश रह पिलावे।

अन्य—जवासे की जड़ दो माशे पानी में औटाकर लड़के को पिलावे।

अन्य—लड़के की पसली के रोग को दूर करे सम्मगअरबी एक तोला, एलुवा छः माशे कूटछानकर घीकुवार के रस में मिलाकर लगावे।

अन्य—यह औषधि बैद्यों के मत से निश्चय की गई है कि एक गोली घुड़चढ़ी है अर्थात् उसका गुड़ रोगी को रोग से छुड़ाने में उस मनुष्य के छूटने के अनुसार है कि घोड़ेपर सवार हो और यह नुस्खा योगियों का है इसको हुबमिसकीं निवाज भी बोलते हैं इसके नुस्खे बहुत हैं उसमें से एक सुगम नुस्खा लिखता हूँ बहुधा रोगियों के रोग की शांति करता है विशेष करके लड़के की पसली को जो ज्वर-बिना हो गुण करे।

घुड़चढ़ी की गोली।

गन्धक, पारा, हरताल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आंवला, सुहागा, तरबूज के बीजों की गिरी, नाजबो के पत्तों का रस बराबर लेकर पहिले पारे और गन्धक को खूब पीसकर शेष औषधि लोहे के बासन में डालकर लोहे के दस्ते से भंगरे के रस में तीन दिन पीसकर मूंग के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

दूसरा घुड़चढ़ी का नुस्खा।

पारा एक दाम, गन्धकसफेद, तुरबुद दो दो टंक, काली मिरच तीन टंक, सुहागा चार टंक, पीले हड़ों की छाल आठ टंक, रेंड़ी सात टंक, शोधा जमालगोटा आठ टंक, इलायची चतुर्थ टंक कूटछानकर गोलियां बनावे।

यह गोलियां श्वास रोग के लिये हड़, बहेड़े और आमले के साथ और जुकाम के लिये शक्कर के साथ और सूखी खांसी के लिये भंगरे के रस के साथ और विष के दूर करनेको ग्यारह गोलियां चिड़चिड़े के रस के साथ और वात के दूर करने को शहद के साथ और वातिक कोलंज अर्थात् वह पीड़ा जो

कूलों अन्तड़ी में पैदा होती है सौंफ के अरक के साथ खाना और लगाना।

बकरी के मूत्र में रगड़कर सफेद दागके लिये गुण करे और आंखके जाले के लिये स्त्री के दूध में रगडकर लगाना और नाऊन अर्थात् एक फोड़े को जो अंडकोष या कुचों या बगलके नीचे निकलता है नींबू के रसके साथ दूर करे और वातके लिये अदरक के रस से एक गोली निगल जाना श्रेष्ठ है।

पहलू की पीड़ा का यत्न।

जो पीड़ा के साथ ज्वर और खांसी भी हो बासलीक की फस्द खोले और शेष यत्न जो बड़ी पुस्तकों में लिखे हैं करे जो पहलू की पीड़ा वात और शीत से हो तो वह पीड़ा एकस्थान से दूसरे स्थानमें जावे उसमें ज्वर नहीं होता।

औषधि—पहलू की पीड़ाको जो वात और सरदी से हो गुण करे थोड़ी सोंठ और थोड़ी अरंडकी जड़ कुचलकर पानी में औटाकर पिये।

लेप—पहलू की पीड़ाको जो ज्वरके बिना हो गुण करे—मदार की जड़ लड़के के मूत्र में घिसकर पीड़ा की जगह पर लगाकर धूपमें बैठे और जंगली कंडों से सेंक करे।

अन्य—बारहसिंगे का सींग, कालीमरचें पांच पीसकर कुछ गरम करके लेप करे।

अन्य—हृदयरोग को गुण करे—देवदारु अढ़ाई माशे पीसकर पांच माशे गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर खावे बाजे उसके बराबर सोंठ भी अधिक करते हैं।

अन्य—छाती की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सहँजने की पत्तियां पकाकर खावे।

अन्य—मेथी शहद मिलाकर औटाकर पीवे पुराने हृद्रोग और श्वासरोग को गुण करे।

खांसी के रोग का यत्न।

जो खांसी कि पहलू की सूजन और फेफड़े की सूजन

जातुस्सद्र और कलेजे के शोथ और सिल आदि के कारण हो तो उन रोगों को शांत करे और खाँसी का विस्तृत वृत्तान्त यह है कि कभी सूखी होती है जो उसमें कोई वस्तु नहीं निकलती है और कभी तर होती है कि उसमें से कफ निकलता है और छाती में खरखराहट होती है जो यह रोग कफ से हो तो मुंजिज के उपरान्त कफ का जुलाब दे और सूखी खाँसी में तर औषधियों का सेवन करे।

गोली–उस खाँसी को दूर करे जो कफ से हो–काकड़ासिंगी कूट छानकर कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य–तर और खुश्क खाँसी को दूर करे। साफ की हुई मुलहठी, कतीरा, सम्मगअरबी, निशास्ता, मिश्री बराबर कूट छानकर चने की बराबर गोलियाँ बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य–जो आजमाया हुआ खाँसी को गुण करे–पिस्ते हूलके फूल, पीली हड़ दोनों बराबर लेकर अदरक के रस में मूँग की बराबर गोलियाँ बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य–कालीमिरच, सज्जी, चने भूनकर छील करके बराबर लेकर अदरक के रस में गोलियाँ बनावे।

अन्य–एक सप्ताह में खाँसी को दूर करे–हल्दी एक टंक, सज्जी सफेद चौथाई टंक, कूट छानकर खरल में पीसकर छोटे बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर प्रातः और संध्या एक गोली खाया करे।

अन्य–कालीमिरच, सुहागा, काकड़ासिंगी, लौंग, फिटकरी, भारंगी, हड़ की छाल, पीपल, लाहौरी नोन चने की बराबर लेकर सब औषधियों के बराबर सोंठ मिलाकर कूट छानकर नींबू के रस में खरल करके छोटे बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर सोने के समय एक या दो गोलियाँ खावे।

अन्य–लड़कों की खाँसी को जो कफ से हो गुण करे–सुहागा आधा कच्चा और आधा भूनकर उसके बराबर काली-

मिरच लेकर घिकुवार के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियाँ बनाकर सेवन करें।

अन्य—छोटी कटाई की जड़, मुलहटी, काकड़ासिंगी, कुलींजन, हड़की छाल पानी में औटाकर बबुल की छाल मिलाकर चने की बराबर गोलियाँ बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—श्वास खास को नाश करे—कालीमिरच, पीपल, करंजुवे के बीजों की गिरी, कटाई के बीज, भुना सुहागा, सफेद कत्था एक एक टंक, अफीम आधा टंक, कूट छानकर एक पहर अदरक के रस में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—हड़ की छाल, करंज के बीज की गिरी, काकड़ासिंगी, कालीमिरच, मुलहटी बराबर कूट छानकर चने की बराबर गोलियाँ बनाकर मुँह में रक्खे।

अन्य—थोड़ी खशखाश भूनकर पीसकर थोड़ा लाहोरी नोन और कालीमिरच मिलाकर एक माशे के बराबर प्रतिदिन दो तीन बेर खाया करे।

अन्य—शलगम पर कपरोटी करके तन्दूर में पकाय उसका कुछ गरम पानी निचोड़कर मिश्री मिलाकर पिये।

गोली—जो कफ की खाँसी को दूर करे—मुलहटी, कालीमिरच भूनकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर कूट छानकर चने के बराबर गोलियाँ बनावे रात्रि को दो गोलियाँ मुख में रख ले।

अन्य—हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, दारचीनी, फिटकरी, सुहागा, चीत, लौंग, लाहोरी नोन, सोंठ बराबर ले और सुहागे को भूनकर छोटे बेर की बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली प्रभात एक सन्ध्या खावे।

अन्य—जो कफ की खाँसी को गुण करे—पँवार के बीज पीसकर चार माशे की बराबर तीन सप्ताह पर्यंत खावे।

अन्य—थूहर का पत्ता जलाकर उसकी भस्म लेकर थोड़े नोन में मिलाकर प्रतिदिन कई बेर खाया करे।

अन्य—गुदा पर तेल लगाना विशेष करके कास रोग को शांत करता है।

अन्य—पुरानी खाँसी को गुण करे—पीपल चिलम पर रखकर तम्बाकू की तरह पिये।

अन्य—गले में लटकाना विशेष करके श्रेष्ठ है रियाज आलमगीरी में लिखा है कि कौवे की बीट थैली में बांधकर लड़के के गले में लटकाये खांसी दूर होगी।

अन्य—कफकी खाँसी को गुण करे—कुचला घी में जलाकर पीसकर रक्खे प्रभात को दो रत्ती उसमें से खावे।

हरीरा—खाँसी के लिये श्रेष्ठ है—गेहूँ की भूसी पानी में मलकर उसका रस निकालकर बादामकी गिरी का रस और निशास्ता और शक्कर मिलाकर हरीरा बनाकर कुछ पिये।

अन्य—लाहौरीनोन, साम्हरनोन, कालानोन, अजवाइन, नमक, नपनी, सुहागा सम्पूर्ण औषधि बराबर लेकर मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर ऊपर से कपरौटी करके आधगज का गहरा एक गढ़ा खोदे उसमें जंगली कंडे भरकर उसके बीच में कुल्हड़ रखकर जलावे जब ठंडा होजावे जलाकर पीसकर उसके बराबर सम्मगअरबी मिलाकर एक माशा प्रतिदिन खाया करे।

चूर्ण—खाँसी को गुण करे—त्रिफला, लाहौरीनोन, अनारकी छाल, कोंच के बीजों की गिरी, रूसे के पत्तों की राख, जवासे की राख एक एक भाग, पीपल, कालीमिरच आधा आधा भाग कूट छानकर एक माशा सुबह और शाम खाया करे तीन दिन में आराम होवे।

अन्य—अनार की छाल जो बिलायती हो तो अति उत्तम नहीं तो पीपल, काकड़ासिंगी छः छः माशे, लाहौरीनोन, कालानोन एक एक तोला, हड़की छाल दो तोले, कूटछानकर फंकी बनाकर प्रतिदिन कई बेर खाया करे।

अन्य—काकड़ासिंगी, छिली हुई मुलहठी, बबूरका गोंद, खश-

खाशका पोस्ता, पीपल, समंदरफल की गिरी बराबर कूटछान कर फंकी बनावे तीन मासे के अनुमान खावे।

जूफा का शरबत।

कफकी खांसी को गुणकारक—साफ कीहुई मुलहटी, सौंफ, खतमी के बीज, परसियावशान दो दो टंक, जूफा, मुलहटी एक एक टंक, लसोढ़ा तीस टंक, खशखाश के पोस्त बीजों समेत ग्यारह पाव भर शरबत बनावे।

अमलतास की गुलकन्द।

तबियत को मुलायम करती है कफ छातीसे साफ करती है खांसीको मुफीद है—अमलतास एकभाग, मिश्री दोभाग, यथाविधि गुलकन्द बनावे और एक तोला भर खावे।

अमलतास की चटनी।

जो प्रकृतिको नरम करनेवाली और कफको हृदय से दूर करती है और खाँसी को शांत करती है अमलतास जल में कजली करके तीन भाग शक्कर में कवाम करे और दो तोले सौंफ का अरक या उसके रसके साथ खावे।

हालिम की चटनी।

कफकी खाँसीको दूर करे और मलको हृदय पर गिरने से रोकती और पहलू की पीड़ाको दूर करती है—हालिम कूटकर शहद में मिलाकर चाटे।

अन्य—सरसों पीसकर शहद में मिलाकर चाटना तर खांसी को गुण करता है।

अन्य—खांसी और ऊर्ध्वश्वास और लड़कों के खरखर करने को गुण करे—बड़े मुनक्के दो दाम, उत्तम शहद तीनदाम कालीमिरच, पियाबांसा, भारंगी, नागरमोथा, काकड़ासिंगी छः छः मासे अतीस बच खुरासानी चार चार मासे कूट छानकर शहद में मिलाकर आयुप्रमाण दाई के दूध में मिलाकर दे।

खशखाश की चटनी।

उन खांसीको जो नजलेसे हो गुण करे—खशखाश के पोस्त

दानों समेत तीस, लसोढ़ा उसीके बराबर, सौंफ खतमी के बीज एक एक तोला आधसेर पानीमें औटावे जब आधा रहे साफ करके पावभर शक्कर में कवाम करे फिर साफ की हुई मुलहठी दो टंक, सम्मगअरबी एकटंक, कतीरा आधाटंक पीसकर मिलावे सोने के समय और प्रभात को एक तोला उसमें से चाटे।

गोंदी की चटनी।

खांसीको गुण करे–गोंदी लेकर उसका लुआब निकालकर बराबरकी शक्कर मिलाकर कवाम के अंत में थोड़ा बबूलका गोंद पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य–लड़कों की खांसी और बमन कोगुण करे–काकड़ासिंगी, अतीस, पीपल, मुलहठी, सम्मगअरबी बराबर कूटछानकर शहद में मिलाकर चाटे।

अन्य–खांसीको गुण करे–सम्मगअरबी डेढ़तोला, कतीरा, निशास्ता एक एक तोला, छिलीहुई मुलहठी आधातोला, सफेद मिश्री बारहदाम, आलमगीरी और कभी गरमी के समय तरबूजके बीजोंकी गिरी एकतोला अधिक करते हैं।

अन्य–लड़कोंके खरखर करके और कफकी खांसीको गुण करे–और उसका सदा खाना लड़कों की पुष्टता और बल को करता है–काकड़ासिंगी पीसकर शहद मिलाकर लड़के को चटावे–खूराक आयुके प्रमाण।

अन्य–खांसीकोगुणकरे–औरऔषधिसेबलमेंअधिकहैमुनक्के बड़े दाने निकालकर, काकड़ासिंगी, दारचीनी मिलाकर चटावे।

अन्य–नागरमोथा, मुलहठी कूट छानकर शहद में मिलाकर थोड़ा उससे दाई के दूध में मिलाकर लड़के को दे।

पुस्तक निर्मापक की बनाई हुई चटनी।

जो खांसीको गुण करे–छिली हुई मुलहठी, मुनक्के बड़े चार चार टंक, खशखाश के पोस्ते दानों समेत सात, लसोढ़े, अलसी दो टंक, सादी अंजीरें तीन, सौंफ की जड़, जूफा एकटंक सबको तीनपाव जलमें औटावे जब पावभर जलशेष रहे साफ करके

पावभर मिश्रीमें कवाम करे फिर बादामकी गिरी, निशास्ता, चिलगोजेकी गिरी चार टंक, काकड़ासिंगी दो टंक, रब्बिस्सूस, सम्मगअर्बी एक एक टंक, पीपल आधाटंक, मुनक्का एकमाशा पीसकर मिलावे एक मिस्कालसे दो मिस्काल पर्यंत खावे।

काढ़ा निमोपक का वर्णन।

जो खांसी को गुण करे—गावजवां एक मिस्काल, सौंफ एक टंक, मुलहटी चार टंक, एक खशखाश का पोस्ता, सम्मगअर्बी आधाटंक, लसोड़ेके सत्रहदाने, खतमी के बीज एक टंक बड़े मुनक्के ग्यारह दाने, मिश्री यथाविधि बनाकर सेवन करे।

अन्य—गेहूं चार टंक, पावभर पानी में औटावे और दोमाशेया एक माश लाहौरी नोन डाले जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये एक सप्ताह में खांसी दूर होगी।

अन्य—उस खांसी को जो नजले से हो शीघ्रही गुण करती है खशखाश के पोस्तों की डंडी तोड़ करके चार, लाहौरीनोन दो माशे, अढ़ाईमाशे जलमें औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके सोने के समय पिये।

रुधिर के थूकने का यत्न।

जो खँखार से रुधिर आवे तो हृदयकी गरमी से है और जो बिना खँखार के आवे भेजे से है और जो खांसी में आवे गले और मुँह कलेजे से है।

यत्न—जो भेजे से रुधिर आवे—सरेरू की फस्द खोले और जो हृदय से आवे तो बासलीक की फस्द और जो मुखके किसी जोड़ से आवे चारों रगोंकी फस्द खोले।

कहरवा की टिकिया।

मुँहसे लोहू आने और स्त्री के अधिक रजके गिरने और रुधिर के मूत्र को गुण करे—कहरवा दो टंक, खुरफे के बीज, घोंघा जलाया हुआ, भुना धोया हुआ धनियां, निशास्ता, गेरू अकाकिया, कतीरा एकएक दाम लेकर टिकिया बनावे दोटंक खावे।

गुलनार की टिकिया।

खून थूकने के लिये गुण करे—चार दाम चूके के बीज, धनिया दो टंक, कतीरा, सम्मगअरबी, सहँजना, माजू एक एक टंक टिकिया बनावे दो टंक खावे कदाचित् बद्धकोष्ठ अर्थात् कब्ज करने की आवश्यकता हो तो अढ़ाई रत्ती अफीम अधिक करे।

अन्य—सम्मगअरबी, मुलतानी मिट्टी, कतीरा फंकी बनाकर सात माशे खशखाश के और अदरक के रस में मिलाकर पिये।

अन्य—गेरू, कुन्दर, गुलनार, सम्मगअरबी बराबर पीस कर आमले के शरबत में मिलाकर खावे।

आश्चर्यदायक औषधि।

थूक में लहू आने और रुधिर के बमन करने के लिये—बबूल की कोंपल, अनार की पत्तियां, आमला, चार चार माशे धनिया दो माशे रात्रि को जल में भिगो कर सबको पीसकर साफ करके थोड़ी मिश्री या शक्कर मिलाकर पिये।

काढ़ा—लोहू थूकने को गुण करे—गिलोय, बाँसेकी पत्तियां एक एक तोला औटाकर साफ करके दो टंक सम्मगअरबी पीसकर मिलाकर पिये।

कल्क—गुलखैरू एक तोले भर रात्रि को पानी में भिगोकर प्रातःकाल मलकर साफ करके पिये।

हुब्बुल्लास का शरबत।

रुधिर के थूकने को जो खफकान अर्थात् उन्माद और इसहाल अर्थात् अतीसार के साथ हो गुण करे—हुब्बुल्लास चार टंक, चन्दनकूर, छिला हुआ आमला, गुलनार दो दो टंक पावभर शक्कर सफेद में कवाम करे और शीतल होने के उपरान्त भुनी सम्मगअरबी एक टंक पीस कर अधिक करे।

अन्य—लहू थूकने को गुण करे—बांसे की पत्तियां जो सूखी हों आधा तोला, जो गीली हों एक तोला, पीस कर शहद में मिलाकर खावे।

अन्य—दो टंक खुरफेका जल पीना लहू थूकने को दूर करता है।

अन्य—लहू थूकने और रुधिर के वमन को श्रेष्ठ है—गोभी पानी में पीसकर एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—खुरफे के बीज, छोटीमाईं कूट छानकर पानी में मिलाकर पिये।

अन्य—अफीम खाना लहू थूकने को गुण करता है जो तरकारियां कि लहू थूकने को श्रेष्ठ हैं यह हैं—तुरई, कद्दू, पालक का साग, खुरफा, लालसाग, छिले हुये मसूर।

अन्य—कचनाल और उसकी कोंपल का रस लहू थूकने को गुण करे।

मानसी रोगों का यत्न।

खफकान अर्थात् हौलदिल जिसको संस्कृत में उन्मादरोग बोलते हैं दो प्रकार का है एक वह कि उसका कारण मनमें हो दूसरे वह कि किसी दूसरे अंग के संयुक्त होने से होवे जैसे कि कोष्ट, कलेजा, भेजा, आंतों और गर्भाशय आदि से हो जो उन्माद किसी अंगके संयुक्त होने से हो उस अंग का यत्न करे और जो अंगके संयुक्त होने से न हो तो मलको निकाले और सादे खफकान में प्रकृति को सम करना काफी है।

चन्दन खमीरा।

जो पैत्तिक उन्माद के लिये श्रेष्ठ है—चन्दन का बूरा बीस मिस्काल रात को जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर साफ करके आधसेर शक्कर में कवाम करे जो कवाम पतला हो तो उसको चन्दन का शरबत बोलते हैं और जो खट्टा करना चाहे तो नींबू का रस मिलावे।

गावजवां का शरबत।

जो मनको बलकारक और उन्माद को उत्तम है—गावजवां पावभर मिश्री एक सेर यथाविधि शरबत बनावे।

रेशम का शरबत।

दिलको बलकारक है—कच्चा रेशम चालीस टंक तीन दिन जल में भिगोकर औटावे जब तृतीयांश शेष रहे खौलते में

साजिज, वालछड़ दो दो मिस्काल, चन्दनबूरा, इलायची के दाने चार चार मिस्काल एक थैली में बाँधकर डाले फिर शीघ्र ही मलकर साफ करके आधसेर क़न्द में क़वाम करे।

रुई के फूलों का शरबत।

मन को बल और हर्ष देता है और उन्माद, दाह और विक्षिप्तता को दूर करता है—रुई के फूल गुलाब में जो गुलाब न हो पानी में औटावे जब आधा शेष रहे दूने गुड़ में कवाम कर खूराक बीस टंक पर्यन्त।

रंगतरे का शरबत।

पैत्तिक उन्माद को बलकारक है पुस्तक निर्मापक ने बनाया रंगतरे का गूदा फाँकों से निकालकर बीज दूर करके निचोड़-कर उसका स्वच्छ रस लेकर बराबर मिश्री में कवाम करे और अन्त में थोड़ा गुलाब मिलावे।

अनन्नास का शरबत।

निर्मापक का बनाया हुआ—अनन्नास का रस एक भाग, मिश्री दो भाग, यथाविधि कवाम करे जो थोड़ा गुलाब और खुश्क अधिक करे तो उत्तम और बलकारक होगा।

ताम्बूल का शरबत।

शीत के उन्माद रोग को बल देता है और निसियान और कफ और मन्द अग्नि को दूर करता है ताम्बूल पक्के पीलेरंग के सौ कूटकर पानी में औटाकर साफ करके आधसेर शक्कर के साथ कवाम करे जो उसमें थोड़ा गुलाब मिलावे तो बलकारक है।

अन्य—जो पैत्तिक हौलदिल को गुण करे और मन को गुण-कारक है—जहरमोहरा घिसकर एक टंक गुलाब के फूल, सूखी धनियाँ, छिला हुआ खुरफा, चन्दन, गुलाब में पीसकर यह सम्पूर्ण औषध दो दो टंक, गावजवाँ, वंशलोचन एक टंक, मुश्क आधा टंक, दूनी सफेद शक्कर, शहद बराबर।

अन्य—शीत के उन्माद को श्रेष्ठ है—नरकचूर, वालछड़, अशना, सोंठ, पीपल एक एक टंक साजिज हिन्दी, बड़ी

इलायची के दाने दो दो टंक, लौंग, कस्तूरी आधा आधा टंक, शहद तिगुना।

अन्य–शीत के खफकान अर्थात् उन्माद को नाश करता है और जीव को रञ्जित रखता है और इन्द्री, कोष्ठ और तिल्ली को बल देता है और पसीने की दुर्गंधि को अच्छा करता है और वायु का पचानेवाला, आँतों को दुरुस्त करता और मुख की दुर्गंधि को दूर करता है और शिरपीड़ा और उत्पानकारक मल को नष्ट करता है और प्रसूति और इस्तस्का में गुण करता है साजिज हिन्दी पीसकर दश दाम, शक्कर सफेद पावभर यथा-विधि पाक बनावे चार टंक पर्यंत खावे।

जहरमोहरा।

जो अति सुगम औषधि मन को बलदायक है–जहरमोहरा घिसा हुआ, अकीक पत्थर, यशबपत्थर, बशद मूँगा दो दो भाग गुलाब में घिसकर नारियल दरियाई, जदवार, तबाशीर एक एक भाग गुलाब में घिसकर सम्पूर्ण औषधियों को इकट्ठा करके खरल करके गोलियाँ बनावे फिर चौड़े पत्थर से चिकना करके उस पर सोने के वर्क लगावे समय पर चार रत्ती के बराबर गुलाब में घिसकर पिये।

चाँदनी के फूलों का गुलकन्द।

पैत्तिक उन्माद रोग को गुण करे–चाँदनी के फूल सौ, सफेद मिश्री सौ टंक, गुलकन्द बनावे और थोड़ा गुलाब मिलाकर चालीस रात चाँदनी में रक्खे और एक तोला भर खावे।

सेवती का गुलकन्द।

हिन्दुस्तान के प्राचीन वैद्यों का सेवित है उन्माद रोग को गुण करे और प्रकृति को नरम करे–हरे सेवती के फूल की पँखुड़ी से जीरा निकालकर दुगुनी मिश्री में मिलाकर शीशे में भरकर चालीस रात चाँदनी में रक्खे और तीन हरे सेवती के फूलों का जीरा दूर करके चाबना और खाना उन्माद रोग को दूर करे।

गुड़हल का गुलकन्द।

मन, इन्द्री और धारणा बुद्धि को बल देता है, हर्ष अधिक

करता और विशेषकरके उन्मादरोग को दूर करता है गुड़हल के फूल सब्जी निकालकर दूनी मिश्री में मलकर रक्खे।

हरसिंहार का गुलकन्द।

जो मनको बलदायक और पैत्तिक उन्माद के लिये अद्वितीय औषधि है—हरसिंहार के फूलों की डंडी दूर करके सफेदी उसकी लेकर दूनी शक्कर में मलकर शीशेमें भरकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और प्रभात को एक तोला उनमें से खाया करे।

अन्य—पैत्तिक उन्माद रोग के लिये—रक्तचन्दन आधा तोला, आमला, धनियाँ पाँच-पाँच माशे आधपाव जल में भिगोकर प्रभात को उसका साफ जल लेकर दो दाम सफेद शक्कर मिलाकर खावे।

काढ़ा—शीत के हौलदिल के लिये—गावजबां दो टंक, लौंग ४ औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

माजून मन को बलदायक।

आमले का मुरब्बा, हड़ का मुरब्बा सब दो, गावजबां दो टङ्क, चन्दन घिसकर एक टङ्क, गुलाब के फूल दो टङ्क रामतुलसी, गावजबां के फूल एक दाम, चम्बेलीका गुलकन्द चार तोले, किसमिस साढ़ेचार माशे, मिश्री तिगुनी।

औषधि—चम्पे के फूल शहद में मिलाकर खावे पित्तके हौल को गुण करे—चार कंघीका रस पानी में मिलाकर मिश्री से मीठा करके पिये।

अन्य—पित्त के हौलदिल के लिये अद्वितीय है—नाजबो के बीज एक तोला रात्रिको जलमें भिगोकर वायु में रक्खे प्रभात को दो दाम शक्कर मिलाकर चमचे से निगल जावे।

अन्य—ईसबगोल एक तोला उसका लुआब निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—पित्त के खफकान और मनके नरम करने के लिये गुणदायक है—इमली जल में भिगोकर पानी उसका लेकर सफेद शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य-पानखाना टराडे हौलदिल को गुण करता है और अफीमखाना पैत्तिक उन्माद को श्रेष्ट है अतरजसादे की जठराग्नि पैत्तिक उन्माद को श्रेष्ट है और कोष्ट की बीमारी और कै और मतली को भी दूर करती है।

अन्य-चने की दाल चार टङ्क रात्रिको पांच या छः दाम जलमें भिगोकर प्रभातको खूब मलकर शक्कर मिलाकर खावे और खट्टी और बादी चीजों से पथ्य करे।

अन्य-रेवंद चीनी पानी में पीसकर दोनों कन्धों के बीच में लगावे।

अन्य-खुलासतुल्‌निजारब साहब ने अपनी मुजर्रिबात में लिखा है कि चुकन्दरको भूभलमें रक्खे थोड़ी देरके पीछे निकालकर छिलका दूर करके गरम गरम उसके वरक छीलकर मिश्री पीसकर सब वरकों पर छिड़के उसमें से पानी मीठा निकलेगा उसको पिये इसी प्रकार कई वेर सेवन करे।

खस का अरक।

खस का अरक निकालकर सेवन करे पैत्तिक उन्माद और बद्धकोष्ट को दूर करता है पुस्तक निर्मापक ने कई वेर अरक निकालकर सेवन किया है इस अरक में जो सफेद शक्कर मिलावे या खमीर बनावे और खस का इतर उसमें मिलाकर सेवन करे तो उन्माद को गुण करे और ज्वर की गरमी का नाशकारक है।

धनियें का अरक।

मन को बल देता है और उन्मादरोग को दूर करता है धनियां छिलके दूर करके गावजवां दो दो तोले, इलायची के दाने, चँबेली के फूल, गावजवाँ के फूल, गुलाब के फूल, चन्दन बूरा पांच-पांच तोले, ऊद एक तोला, कस्तूरी एक माशा, गाय का दूध पांच सेर, पानी में आवश्यकता के अनुकूल अरक खावे।

अब्बासी का खमीरा।

अब्बासी लालरंग का सेरभर लेकर अरक खींचे फिर गुलाब

मिलावे फिर शक्कर मिलाकर क्वाम करे थोड़ा जहरमोहरा और वंशलोचन पीसकर मिलाकर खँमीरा बनावे।

मूर्च्छा का यत्न।

मूर्च्छा संज्ञाके जाते रहनेको बोलते हैं मूर्च्छा बहुत प्रकारसे होती है जैसे मनकी निर्बलता और मनमें खराब बुखारों और दुर्गंधके पहुँचनेके कारण सो मूर्च्छा में ठण्ढा पानी मुखपर छिड़कै और सुगंधद्रव्य सुँघावे जो मूर्च्छा स्वभाव की गरमी से हो मिट्टी गुलाब या पानी से भिगोकर सुँघाना श्रेष्ठहै और जो शीत से हो कस्तूरी सुँघावे और लोबानका धुवां ले और पाँव मलना और वमन कराना मूर्च्छा को गुण करता है और जब मूर्च्छा न हो मूर्च्छा का कारण मालूम करके यत्न करे शेखुलरईसने लिखा है कि खीरा सुँघाना विशेष करके मूर्च्छा को दूर करता है।

लाभ—कभी सुपारी खाने से मूर्च्छा आजाती है।

यत्न—उसको शीघ्रही थोड़ा जल पिलावे और छींकें ले और ठण्ढे पानीसे दोनों हाथोंकी उंगलियों के शिर धोवे इसीलिये सुपारी की भूसी खानेसे कि वह हृदयको छीलती है निषेध किया है परन्तु जो सुपारी मुँह में रखकर उसका लुआब निगलजावे और भूसी दूर करे तो मनको बल करे।

कुचों के रोग का यत्न, लेप।

लटकेहुये कुचोंको कठोर करे—बड़ी कटाई और छोटी कटाई की जड़, अन्दार की छाल, कन्दौरीकी जड़, कच्ची मौल-सिरी बराबर महीन पीसकर लेप करे।

अन्य—जो छातियोंके बढ़नेके पहले सेवन करे तो छातियों को बढ़ने न दे कुँदुरू और कौड़ी जलाकर बराबर पीसकर प्रति-मास में तीनबेर लगाया करे।

अन्य—चमगादर का रुधिर कभी कभी लगाया करे।

अन्य—गिंजाई कि बरसात में पैदा होती है चालीस लेकर नोन में डाले जब मिलजावे मुलतानीमिट्टी मिलाकर लगावे कुचोंको कठोर करता है।

अन्य— बरगद का रेशा अर्थात् जटा जो पृथ्वीपर न लटकी हो उसकी कोमल पोली और लाल नोकें लेकर सुखाकर जलमें पीसकर लगावे।

अन्य—लजालू, असगन्धकी जड़ प्रतिदिन पीसकर लगावे।

अन्य—दूध को जो खुश्की और गरमीके कारण जमगया हो बहाता है मूंग, साठी के चावल दोनोंको पीसकर कुछ गरम जल में लगावे।

अन्य—कुचोंके शोथको गुण करे—मकोय, गुलखैरू, गोखुरू, निरबसी, अफीम, गेरू एक एक माशा पीसकर कुछ गरम करके लेप करे।

अन्य—अनार की छाल का तेल मलना कुचोंको कठोर और योनिको सङ्कीर्ण करता है—अनार की छाल पक्कासेरभर, छोटा माजूफल अधकुचला आधपाव चौगुने मीठे जल में औटावे जब एक सेर शेष रहे उसके बराबर तिल्ली का तेल मिलाकर फिर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे सेवन करे।

अन्य—जब अधकुचले करके अनार की छाल, झाऊ महीन पीसकर दूधमें मिलाकर रात दिनमें दोबेर बराबर लगावे।

अन्य—अरण्डके पत्ते सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य—शीशम की पत्तियां पानी में औटाकर सूजन उससे धोवे और पत्ती उसकी गरम करके बांधे।

अन्य—जो दूध अधिक करे—सौंफ, शनावरि बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे और चने भिगोकर उसके पानीके साथ यह चूर्ण फांके—कुछदिन में दूध अधिक होगा और बाजों ने लिखा है कि चनेको दूध में भिगोवे।

लेप—जो दूध की अधिकता को कम करे—काहू के बीज, मसूर, जीरा, सिरके में पीसकर लेप करे।

मेदे अर्थात् पकाशय का यत्न।

कोष्ठकी पीड़ा जो बोझ और भोजन के उत्पात से कि भोजन पचा न हो।

यत्न–गरम पानी में नोन मिलाकर वमन करे और जब तक भूख मालूम न हो भोजन न करे और भूख के समय नरम आहार जो शीघ्र पचे खावे और जो पीड़ा वायु से हो और बदलती रहे गेहूँ की भुसी नोन या बाजरा या कँगनी कपड़े में बाँधकर या गरम रेत से सेंके और सादी अजवायन के अरक का पीना गुण करता है–पीपल बात को दूर करे और भोजन को पचावे और कोष्ठ और वीर्य को बल दे और तरी को कोष्ठ से सुखावे–पाँच टंक पीपल को पीसकर पावभर शक्कर में कवाम करे।

सोंठ की जवारिश।

जो खराब बात और शीत के कोष्ठ की पीड़ा को दूर करे और भोजन की पचानेवाली और निसियान की दूर करनेवाली है और कोष्ठ और ठण्ढे कलेजे को गरम करती है सोंठ पीसकर पाँच मिस्काल पावभर शक्कर में कवाम करे और बाजे सोंठ को नींबू के रस में तीन दिन भिगोकर सुखाकर पीसकर शक्कर में कवाम करते हैं और बाजे बीस टंक अदरक पीसकर पाव भर शक्कर में कवाम करते हैं।

मीठे और खट्टे ऊद का पाक।

जो कोष्ठ को बल देता है और अग्नि को तीक्ष्ण करता है लोवान पीसकर दो टंक, सफेद शक्कर पावभर में कवाम करके जवारिश बनावे जो खट्टा करना चाहे तो नींबू का रस आवश्यकता के अनुकूल अधिक करे।

कुन्दर का पाक।

कफ के अतीसार को गुणकारक है और भोजन को पचाता और शीत के कोष्ठ को बल देता है–कुन्दर, बड़ी इलायची दो दो टंक सोंठ, कुलींजन, अजवायन बालछड़, कलौंजी छोटी इलायची के दाने, कालीमिरच यह सब एक एक टंक, शक्कर तिगुनी।

सादे आमले का पाक।

जो कोष्ठ को बल देता है–आँवलों का रस पच्चीस टंक जो

गुलाब हो तो उससे नहीं तो जल में निकालकर आधसेर शक्कर में कवाम करे और कवाम के अंतमें पाँच टंक मस्तगी मिलावे।

माजी अजवायन का पाक ।

भोजन का पाचक और भूख को अधिक करे और वात को दूर करे ।

औषधि—अजवायन नींबु के रस में दो वेर भिगोकर सुखाकर दश टंक पीसकर आधपाव शक्कर में कवाम करे ।

माजी कुलींजन का पाक ।

वात को दूर करे और भोजन को पचावे और कोष्ठ और कलेजे को गुण करे और मेदे की तरी और खट्टी डकार और शीत के पार्श्वशूल को दूर करे पाव भर शक्कर को कवाम में लाकर पाँच टंक कुलींजन पीसकर यथाविधि मिलावे ।.

कलौंजी का पाक ।

कफ को दूर करे और वात और कोष्ठ के अफरा को पचावे और जानवरों के विष और दीवाने कुत्ते के काटे को गुण करे और कोष्ठ के कीड़ों को मारे और स्त्री के ऋतु के रुधिर और मूत्र को खोले और गुरदे और मूत्र को गुणदायक और गर्भाशय और पार्श्वशूल को दूर करे और कफ के और सौदा अर्थात दूषित दोष के पुराने ज्वर को गुण करे पांचटङ्क कलौंजी एक रात सिरके में भिगोकर सुखाकर भूनकर आधसेर शक्कर में कवाम करे।

अन्य—कोष्ठपीड़ा को नाश करे—कालाजीरा बनाया हुआ पच्चीस टङ्क, बालछड़ दशटङ्क, कालीमिरच दशटङ्क, बूरअरमनी अढ़ाई टङ्क, शहद सम्पूर्ण औषधियों का तिगुना ।

अन्य—कोष्ठ की वात और स्वभाव की सरदी को गुण करे और कोष्ठको गुण करे और कोष्ठको बल दे और भोजन को शीघ्र पचावे—कालाजीरा बना हुआ तीस मिस्काल, सोंठ दश मिस्काल, अजवाइन, पीपल, बालछड़, तज, बूरअरमनी दो दो मिस्काल, शहद तिगुना ।

मस्तगी का पाक।

जो कोष्ठ की शीत को गुणदायक, बलदायक और पाचक है यह सेलानलुआब से लिखा गया।

वच का पाक।

यह औषध कुचों के रोग में बर्णन होचुकी।

पुदीने की माजून।

कोष्ठकी पीड़ा को गुण करे पुदीने की पत्तियाँ छः टङ्क, सोंठ, अजवायन, कालाजीरा तीन तीन टङ्क, बड़ी इलायची के दाने, सौंफ, कालीमिरच, दो दो टंक, मिश्री तिगुनी।

अनीसून का पाक।

जो कोष्ठको बलदायक और पाचक है और भूख और कफ के अतीसार को गुणकारक और कोष्ठ की पीड़ा और अफरा और गुदा की पवन को दूर करे—अनीसून सिरके में भिगोकर छाया में सुखावे फिर थोड़ी भूनकर दशटंक कूट छानकर आधसेर शहद में कवाम करे।

लोहे के मैल का पाक।

जो भूख लावे और कोष्ठ को गुणदायक और वीर्य को अधिक करे और रंग को अच्छा करे और ववासीर को गुणदायक है—काबिली हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, मुलहठी, सोंठ इलायची के दाने, बालछड़, गुलाब के फूल यह सब बराबर ले और सोवा, लोहे का मैल हड़ों को कूट छानकर घी में भिगोकर औषधियों के बराबर मिश्री या शहद में मिलावे और एक टंक से दो मिस्कालपर्यन्त खावे।

बड़ा इतरीफल।

जो कोष्ठको बल दे और अफरा को दूर करे और रंग को अच्छा करे—पीले हड़ों की छाल, काले हड़ों की छाल, क़ाबिली हड़ों की छाल, आमला कूट छानकर तेल में भूनकर, पीपल, कालीमिरच

छः छः टंक, शिनरज, इन्द्रयव मीठे, छिले हुये तिल, सफेद खशखाश, मिश्री दो दो टंक तिगुने शहद में मिलावे।

औषध—भोजन को पचावे और भूख लावे—गुलाब के फूल छः टंक, नागरमोथा पांचटंक, बड़ी इलायची के दाने चारटंक, बालछड़, असारों, कुलींजन साजिज तीन तीन टंक, तज जरनव मस्तगी, तुरंजकी छाल, नरकचूर दो दो टंक, आमले का रस आधसेर, मिश्री एक सेर, यथाविधि साजून बनावे।

नोन की गोली।

जो कोष्ठ के वात को गुण करे और कोष्ठ की पुष्टिकारक है और हिचकी को दूर करती है और पाचक है लाहोरीनोन कालानोन तीन तीन मिस्काल, पोदीना, नरकचूर पाँच पाँच मिस्काल पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला पीपल, कालीमिरच, सोंठ, वच, काला जीरा, सफेद जीरा, लाल नोन नव नव मिस्काल, धनियाँ आठ टंक, सौंफ, अजवायन वीस वीस टंक कूटछान कर नींबू के रस में खमीर करके सुखावे फिर सूखे या हरे आमले के पानी में मिलाकर सुखाकर कूट छानकर नींबू के रस में बेर के बराबर गोलियाँ बनावे।

अन्य—स्वभाव को नरम करती है और पाचक अग्नि को बढ़ाती है—पीले हड़ की छाल, सोंठ, पीपल, अनारदाना, सनाय, तुरबुद, खोखले मुनक्के दाने निकाल कर एक एक भाग कंद छः भाग गोलियाँ बनावे।

सनाय की गोली।

बद्धकोष्ठ, अफरा और अजीर्ण को दूर करती है—सनाय, पीले हड़ की छाल, कालीमिरच एकएक टंक, बड़े मुनक्के बारहटंक पानी में कूट छानकर गोलियाँ बनावे और नव माशे प्रभात के समय खावे कदाचित् अधिक आवश्यक हो तो दोनों समय खावे।

सुहागे की गोलियाँ।

भूख लाती और कोष्ठ की पीड़ा को दूर करती है—सुहागा

दो टंक, अजवायन साढ़े दश टंक, कालीमिरच बारह टंक, एलुवा सोलह टंक कूट छानकर घीकुवार के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियाँ बनावे—बातके लिये तीन गोलियां और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये दो गोली और पेट बढ़जाने के लिये आजमाई हुई है।

गोली पाचक—कालीजीरी, राई, गुड़, बराबर लेकर बेरकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पानी से निगल जावे।

अन्य—पीले हड़ों की छाल, सनाय चार चार टंक, सोंठ एक टंक, मुनक्के अढ़ाई टंक, शक्कर पांच टंक कूट छानकर जायफल के बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली सोने के समय।

अन्य—गोली जो पाचक है और बात और तिल्ली और कोष्ठ के अफरा को दूर करती है और भूखलाती है—सोंठ दो भाग, भुना सुहागा, पीले हड़की छाल, सेंधानोन, हींग एक एक भाग, सहँजने की जड़का रस या उसके पत्तों के रस में जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे।

अन्य—भूख लावे और वैद्य को प्रशंसित करे—पीलेहड़ की छाल, बहेड़ा, आमला, कालानोन, सनाय बराबर कूट छानकर नींबू के पानी में गोलियां बनावे एक तोला वा न्यूनाधिक स्व-भाव के अनुकूल गरम जल के साथ सोने के समय खावे।

गोली—बद्धकोष्ठ को दूर करे और उदर और पहलू की पीड़ा को श्रेष्ठ है—एलुवा, सातर दो दो टंक, कालीमिरच, हंकूत के फल की गिरी एक एक दाम कूट छानकर नींबू के रस में चने के बराबर गोलियां बनावे खूराक चार गोलियां गरम पानी से।

गोलियां कि भूख लाती हैं—पीले हड़कीछाल, सौंफ, पोदीना, लाहौरी नोन, खट्टी चूक एक एक तोला, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, चीत, अजवायन साढ़ेतीन तीनमाशे, दो नींबू के जल में पीसकर गोलियाँ बनावे।

पाचक गोलियां—कालानोन, खट्टी चूक दो दो तोले, अज-वायन दो माशे, लौंग, कालीमिरच एक-एक माशा यह सम्पूर्ण

औषध कूट छानकर थूक में मिलाकर गोलियां बनावे भोजन के उपरान्त एकमाशा खावे असलवंद हिन्दी दवा है भोजन को पचावे और भूख लावे और कोलंज * और इस्तस्का अर्थात् जलंधरको श्रेष्ठ है और बातको पचाता है पीपल, हड़ और नमकों आदि को नींबू के रस या तुरंजकी खटाई में खमीर करके एक खट्टे को अन्दर से खाली करे उसमें यह दवा भरदे और खट्टा दो प्रकार का है एक तेज खट्टा कि जो उसमें सुई रक्खे गल जावे और दूसरे में तेजी और खटाई कम होती है।

अन्य—जो बद्धकोष्ट कफ और बात और कोष्ट की सरदी को गुण करे विशेष करके दूध पीनेवाले लड़कों के लिए श्रेष्ट है—काली हड़ चारदाम, नरकचूर, सौंफ दो दो दाम, भुना सोहागाएक दाम कूटछानकर चने के समान गोलियां बनावे खूराक एक गोली।

नोन की गोली।

बात को खो देती है और भोजन को पचा देती है और हैजे को गुण करती है—लाहौरी नोन, इन्द्ररानी नोन, साँभरनोन, काला नोन, नमक नफ्ती, पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सौंफ, अजवाइन एक एक टंक, कालाजीरा, सफेद जीरा शैतरज, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, सुहागा, नौसादर, सनाय छः छः माशे, भुनीहींग एक माशा सम्पूर्ण ओषधियों को बराबर पीसकर चौबीस नींबू के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

अन्य—कोष्टके बातको दूर करती हैं—पीले हड़की छाल, सोंठ, कालानोन, वायविड़ंग, शैतरज, हींग बराबर कूट छानकर तिगुने पुराने गुड़में मिलाकर छः माशे के अनुमान गोलियां बनाकर गुनगुने पानी से सुबह के वक्त खावे।

चूर्ण—कालानोन भूख लाता है और पाचक है—अजवायन, शैतरज सात सात टंक, पीपल दो टंक, पीले हड़की छाल दो

* वह पीड़ा जो शूलो और अंतड़ी में उत्पन्न हो।

टंक सोंठ बारह टङ्क, कालानोन पचास टंक कूट छानकर नींबू के रस में तीन वेर पीसकर सुखावे दो टङ्क के अनुमान खावे।

हरीरा–कोष्ठकी पीड़ा को गुण करे–कुसुम के बीजों की गिरी एकतोला पानी में रस निकालकर दो तोले शक्कर मिलाकर हरीरा पकाकर गुनगुना पिये ।

अन्य–भूखके लिये अतिउत्तम है–लाल मिरच नींबू के रस में चालीस दिन खरल करके दो रत्ती की बराबर पान में खावे।

अन्य–सोंठ दो दाम, सौंफ एक दाम, हींग तीन दाम कूट छानकर नींबू के रस में टिकिया बनाकर तवा कोयलों की आगसे गरम करके टिकिया को उस पर रक्खे जब लाल हो जावे पीसकर आवश्यकता के अनुकूल खावे।

अन्य–कोष्ठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है सिरस की पत्तियां, काली मिरच बारह पीसकर पिये ।

अन्य–अजवायन, कालानोन, भँगरेके रसमें मिलाकर खावे।

अन्य–भूख के लिये बहुत गुण करे–रामपत्री जो सूरत और स्वादु में तरी के समान होती है एक तोला खरल में महीन पीसकर उसमें पारा मिलाकर फिर दो पहर पर्यंत खरल करे जब खूब मिल जावे प्रभात को दो चावल के बराबर पान में रखकर खाया करे और सरदी में चालीस दिन पर्यंत खावे कि गुण उसका प्रकट हो और जो पारा दवा में कच्चा है हानि भी नहीं करेगा।

अन्य–भूख के लिये श्रेष्ठ है–अजवायन, घीकुवार के पानी में पहिले भिगोकर सुखावे फिर नींबू के रस में सात बेर भिगो कर सुखाकर स्वभाव के अनुकूल खावे वातघ्न और पाचक है।

त्रिकटु–यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ तीन औषध के हैं–सोंठ, कालीमिरच, पीपल बराबर लेकर कूट छानकर खावे वातघ्न और पाचक है।

चातुर्जातक–यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ चार औषधि तज, तेजपात, नागकेसर, इलायची बराबर कूट छानकर

चूर्ण बनाकर उसको बराबर शक्कर मिलावे कोष्ठको गुण करे और वात को नाश करे ।

लालहरताल का रस ।

इसको नागकेसर बोलते हैं । भूख लाता है और वीर्य को पुष्ट करता है और कासश्वासको दूर करता है छः टंक शीशा गलाकर एकदाम लालहरतालकी उसको चुटकी दे अर्थात् गलनेमें पिसी हुई हरताल थोड़ी थोड़ी उसपर डालकर लोहेके दस्ते से चलावे फिर उतारकर ठंढा करे फिर गलाकर एक दाम हरतालकी चुटकी दे इसी प्रकार चारबेर करके चार दाम हरताल की चुटकी दे, इसके उपरांत दो दाम पारा और एक टंक शोधा तांबा कूटा हुआ चार पहर पर्यन्त तुलसी के पत्तों के रस में खूब पीसकर दो सकोरों में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट आग दे, जब ठण्ढा हो जावे निकालकर घीकुवार के रसमें चार पहर खरल करके यथाविधि आंच दे, फिर भँगरे के जलमें चार पहर खरल करके उसी प्रकार आंचदे, खूराक आधीरत्ती पान में खावे गजपुट आग उसे कहते हैं कि एक गढ़ा गोल एक गजका गहरा और उसका मुँह एक गजका हो खोदकर उसमें कण्डे भरकर दवा को उसके बीच में रखकर आंच दे ।

पंचकोल—पांच दवाके अर्थ हैं—पीपल, पीपलामूल, चाव, चीत, सोंठ कूट छानकर फंकी बनावे भूख पैदा करता है और वात और कफको दूर करता है ।

पेटअंजीर का तेल ।

उस कोष्ट की पीड़ा को जो वातसे हो गुणकारक है—अरण्ड के पत्तों का रस निकालकर बराबर तेल में जलावे जब पानी जल जावे पेट पर मले ।

सोंये का तेल ।

सीनकी पीड़ा को नाश करता है और वात को गुण करे—सोये के पत्तों का रस और आधा उसका तिलों का तेल लेकर उसमें जलावे वाजोंके विचारसे चौथाई तिलोंका तेल चाहिये ।

नकछिकनी का तेल।

भूख पैदा करे—नकछिकनी सूखी चारसेर पीस छानकर दश सेर अदरक के रस में खरल कर टिकियां बनाकर दश सेर घीमें भूने जब टिकियां जलजावें घी को छान रक्खे और दो माशे उसमें से खाया करे।

चूर्ण—उदर की पीड़ा को श्रेष्ठ है—त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, लाहौरी नोन, छिलाहुआ पीपलामूल, अकलीलुल्मलक, शैतरज, चाव बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक एक टंक से दो टंक पर्यन्त खावे।

शुंठ्यादिचूर्ण।

कोष्ठ की तरी को नष्ट करता है और क्षुधा लाता है—सोंठ दश टंक, सौंफ पांच टंक, मस्तगी तीन टंक, मिश्री बराबर मिलाकर फंकी बनावे।

सनाय का चूर्ण—उदर पीड़ा और कोलंज को गुण करे और पित्त, कफ और सौदर को निकालता है—सनाय, पीलेहड़ की छाल, कालानोन, बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे और दो तोले प्रतिदिन गरम पानी के साथ खावे।

अन्य—भूख के लिये—कालानोन, कालीमिरच, पीपल दो दो दाम, भुना सुहागा एकदाम बारह पहर नींबू के रस में खरल करे और चाररत्ती से एकमाशे पर्यन्त भोजन के उपरान्त खावे।

चूर्ण—आमला, काबिली हड़ सात सात टंक, पीपल, शैतरज, लाहौरीनोन बराबर कूट छानकर खूराक एक टंक।

अन्य—कालीमिरच, अजवायन, शैतरज, पीपल नौ टंक, हड़ की छाल दशटंक, काला नोन पचास टंक कूट छानकर तीन बेर नींबू के रस में पीसकर सुखावे एक टंक खावे।

अन्य—बद्धकोष्ठ दूर करे—पीली हड़की छाल तीन माशे, लाहौरीनोन दो माशे कूट छानकर चूर्ण बनावे और एक तोले मुनक्के के साथ मिलाकर खावे।

अन्य—लौंग, कालानोन, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, गुलाबके

फ़ल, सुना नौसादर बराबर कूट छानकर खूराक एकटंक खावे ।

अनारदाने का चूर्ण ।

जो भूख लाना, कोष्ठ को वल देना और अतीसार को गुण करता है—अनारदाना पावभर, सोंठ, सफेद जीरा एक एक दाम, लाहौरी नोन अढ़ाई दाम सबको कूट छानकर एक तोला वा न्यून अधिक खावे और चाहिये कि औषधियों को बहुत महीन पीसे ।

भोजन के पाचन का चूर्ण ।

जो प्रकृति को नरम करे—पीलीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सफेद जीरा, सौंफ, कालानोन, सनाय एक एक तोला, सोंठ छः माशे चूर्ण बनावे खूराक छः माशे सोने के समय खावे ।

चूर्ण—कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे—सुना नोन और उससे दूनी सौंफ, पुदीना, शातर और थोड़ी सोंठ और हींग और काली मिरच मिलावे ।

पान का अरक ।

कोष्ठ की पीड़ा को गुणकारक और पाचकाग्निको बलदे—दो सौ पान, साजिज आधपाव, बालछड़, अजवायन, सौंफ छटांक छटांक भर, छोटीइलायचीके दाने आधपाव, पुदीने की पत्तियां, कुलींजन, नरकचूर दो दो दाम, इलायची के दाने, कुलींजन और नरकचूर अधकुचला करके रात्रि को पांच सेर जल में सब औषधियों के साथ भिगो दे प्रभात को पान मिलाकर अरक खींचे ।

टिकिया—कोष्ठ को बलकारक—लोबान चार टंक, कुरंज की छाल तीन टंक, लौंग, मस्तगी, बालछड़, इलायची, जावित्री दो दो टंक कूट छानकर गुलाब से टिकिया बनावे खूराक दो टंक यद्यपि यह टिकिया गर्भवों के योग्य नहीं परन्तु पुस्तक निर्मापक ने एक मित्र के कोष्ठ के बल के लिये बनाई थी लाभ किया इसलिये लिखा है ।

वालछड़ का शरबत।

बालछड़ का शर्बत शीत कफ और कलेजे के रोग को गुण करे—बालछड़ बीसटंक डेढ़सेर जल में औटावे जब आधसेर शेष रहजाय सेरभर शहद में कवाम करे।

लेप—उदरपीड़ा और गर्भाशय की पीड़ा को श्रेष्ठ है—चूहेकी मेंगनियां जो पंसारी की दूकान से मिलें उत्तम नहीं तो जहाँसे मिलें उसके बराबर सौंफ पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—पेट के दर्द को गुण करे—निर्मली पानी में घिसकर गुनगुनी नाभि के गिर्द लगावे।

अन्य—कोष्ठकी पीड़ा को गुण करे—बालू सिरके में खमीर करके कपड़े में पोटली बांधकर गुनगुनी सेंक करे।

अन्य—कालेतिल, अजवायन, पीले हड़ की छाल, खारीनोन सिरके में मिलाकर टकोरकी भाँति सेंक करे।

चूर्ण—कोष्ठ की शीत और मंदाग्नि और कलेजे की निर्बलता को गुण करे।

नाजबो का शरबत।

अढ़ाईसेर शहद, आधसेर मिश्री, बालछड़ दो मिस्काल, लौंग दो मिस्काल, बड़ी इलायची, छोटी इलायची के दाने छः छः मिस्काल, लोबान तीन मिस्काल, दालचीनी तीन मिस्काल, सोंठ, कालीमिरच दो दो मिस्काल, केसर आधा मिस्काल, कस्तूरी चौथाई टंक, अम्बर पांच टंक यह सम्पूर्ण औषधि कुचलकर थैली में बांधकर नाजबो के शरबत के साथ चांदी या तांबे के कलईदार बर्तन में दो दिन भिगोकर शहद और शक्कर में मिलाकर औटाकर कवाम में लावे और थैलीको प्रति समय मलते जावे फिर कस्तूरी और केसर और अम्बर उसमें मिलावे और बाजे कालीमिरच के बदले पीपल मिलाते हैं।

गुलकन्दशर्करा—जो पक्काशय को बलकारक और पाचक और स्वभाव को नरम करनेवाली है—गुलाब के फूल एक भाग, शक्कर दो भाग खूब मिलाकर चालीस दिन धूप में रक्खे जो शक्कर के

बदले शहद मिलावे तो उसको गुलकन्द असली शहद की कहते हैं ।

विसूचिका अर्थात् हैजे का यत्न ।

जब भोजन कोष्ठ में उपद्रवकारक होजावे उसको कै और दस्तों से निकाले और जब तक वह उपद्रवकारक मल दूर न होले शीघ्रही बन्द न करे और जिस जगह प्यास की अधिकता या स्वभाव में गरमी या हरारत हो कभी भी गरम दवायें न दे पानी के बदले गुलाब या सौंफका अरक या मकोय का केवल अरक दे और इस रोग में उत्तमोत्तम उपाय सोना या भोजन न करना है।

गोली—हैजे की गुणकारक—मदार की जड़ बराबर अदरक के जलमें खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर एकगोली हैजे वाले रोगीको दे जो मरता भी हो तो गुणदायक हो।

काढ़ा—हैजे को गुण करे—सौंफ तीन टंक, पोदीना दो टंक, लौंग चार, गुलकन्द दो तोले ओटाकर पिये ।

औषधि—चोबहयात घिसकर पिये ।

अन्य—नरकचूर का काढ़ा पीना विसूचिका को गुण करता है।

अन्य—हैजे को गुण करे—सफेद छोटी इलायची की छाल एक तोला किन्तु दो तोले तक जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो आधसेर जल में ओटाकर जब आधा पानी शेष रहे तो पिये ।

अन्य—पेठे के फूल छः माशे पीसकर हैजे वाले को पिलावे शीघ्रही अच्छा हो जाय ।

अन्य—सरफोंके की जड़ दो माशे पानी में घिसकर पिये ।

अन्य—जो मुख्य करके विसूचिका को गुण करे—नीलाकपड़ा जलाकर मनुष्यके मूत्रमें मिलाकर पिये, कहा है कि जब मनुष्य को हैजेका असर मालूम होउसी समय अपना मूत्र पिये हैजेके अवगुण से बचना है और बहुधा मनुष्य यही सेवन करते हैं।

अन्य—हैजे को गुणकारक—पांच माशे खरैटी की जड़ पानी में घिसकर पिये चोबहयात के बदले है ।

अन्य–लाल मिरच का बीज एक मोम में गोली बनाकर खावे बहुतही गुणकारक है।

अन्य–तितिली वह वृक्ष है कि गेहूं के खेतों में पैदा होता है वह थोड़ेंजल में पांच कालीमिरचों के साथ पीसकर पिलावे जो कै होजावे फिर पिलावे।

हिचकी का यत्न।

जो भोजन के उपरान्त बराबर हिचकियां आवें वमन कराना चाहिये और हाथों पांवों का बांधना और क्रोध भय और हर्ष का अकस्मात् पैदा करना और अनजान में मुँहपर ठंढापानी छिड़कना और छींकलाना और हिलना और श्रम करना और श्वास रोकना और कोष्ठ और कन्धों पर पछने विना सींगी लगाना हिचकी को दूर करता है।

अन्य--हिचकी के लिये आजमाया हुआ है–कलौंजी तीन माशे पीसकर एक टंक मक्खन में मिलाकर खावे।

अन्य–काले उड़द तम्बाकू के बदले हुक्के में रखकर पिये।

अन्य–चने या अरहर का भूसा तम्बाकूके बदले हुक्के में पिये।

अन्य–खुलासतुल्तिजारब में लिखा है कि जो मूंज हाथसे मलकर हुक्के में पिये गुण करती है।

अन्य–नारियल के बाल जलाकर उसकी भस्म पानी में मिलावे जब राख पानी के नीचे बैठजावे साफ पानी उसका लेकर पिये।

अन्य–मोर के पर जलाकर तीनमाशे शहद मिलाकर खावे।

अन्य–झाड़ू का जीरा औटाकर पिये।

अन्य–छप्परकी पुरानी रस्सी हुक्केमें रखकर पिये।

अन्य–हिचकीकोठहरावे–बबूलके कांटे सूखे हों याहरेलेकर आधसेर पानी में औटावे जबआधपाव शेषरहेसाफकरके थोड़ा शहद मिलाकर पिये और शहदके बिना भी पीना गुणकरता है।

अन्य–टाट जलाकर उसकी चार माशे भस्म पानीमें मिला-

कर फिर उस जलको साफ करके पिये वात की हिचकी को गुण करे जमालगोटा हुक्के में पिये।

अन्य—हींग दो तीन माशे चार बादामों की गिरी मिलाकर पीसकर पिये।

अन्य—हींग सिरके में औटाकर पीना प्यास और हिचकी को दूर करता है।

अन्य—आंबके सूखे पत्ते चिलम में रखकर पिये।

अन्य—पुदीना शक्कर में मिलाकर चावे।

अन्य—उस हिचकी को गुण करे जो ज्वर से हो—सिकंजबीन पानी में घोलकर पिलावे मलके का दूर होगा या पचजावेगा।

अन्य—कमल के बीजपीसकर पीना हिचकी को दूरकरता है।

अन्य—कासनी के बीज, उड़दका आटा, बूदार चमड़ा मिलाकर तम्बाकू की रीति पर पिये।

कुन्दर की टिकिया।

जो हिचकी और वातकी पेचिश और भीतर के अंगों के अफराको गुण करे—कुन्दर दो टंक, तज, पोदीना, अजवाइन, नागरमोथा, छोटी इलायची के दाने सौंफ एक एक टंक लेकर पानीमें टिकिया बनावे।

अन्य—लड़कों की हिचकी को गुण करे—नारियल शक्कर में पीसकर दे और कहाहै कि जो दूध पिलानेवाले के कपड़े से एक टुकड़ा कपड़े का लेकर पानी में भिगोकर लड़के के माथे पर लगावे तो मुख्यकर हिचकी ठहर जाती है।

अन्य—रीठे को लड़के के गले में लटकावे।

प्यास की अधिकता का यत्न।

बहुधा प्यास गरमी से होती है उसका यत्न—खुरफे के बीजों का शीरा या सादी सिकंजबीन पिये या ईसबगोल का लुआब नीलोफर के शरबत में मिलाकर दे और नींबू का शरबत और उसका रस प्यास को दूर करता है।

औषध—जो प्यास और वमन को गुण करे—पीपल की

छाल जलाकर पानी में डाले जब वह नीचे बैठजावे उसका स्वच्छ रस लेकर पिये।

अन्य—लड़कों की प्यास के लिये जो कि गरमियों में होती है—कमलगट्टा जवकुटकर जिस बर्तन में कि लड़का पानी पीता है डाल दे और वही पानी लड़के को पिलावे और जो सब्जी कमलगट्टे के बीच में होती है पीसकर लड़के को पिलावे।

अन्य—प्यास की अधिकता को शुण करे—नींबकी पत्तियां पिंडोल मिट्टी में मिलाकर गोलियां बनाकर अग्नि में डाले जब खूब गरम होजावे पानी में ठण्ढा करे और वह पानी पिलावे और जो वह प्यास कि जिसको वैद्यक में तोंस कहते हैं हो तो जंगली कंडा जलाकर उसकी राख कांसी के बासन में डाले फिर उसमें जल मिलाकर उस बासन को प्यासे की नाभि पर रक्खे रखतेही जलन और गरमी और प्यास दूर होजावेगी।

अन्य—आंवला और सफेद कत्था मुखमें रखना प्यास को शान्त करता है।

पक्काशय में दूध और रुधिर के जमने का यत्न और लक्षण।

उदर का फूलना, मूर्च्छा और ठण्ढा पसीना है कभी कांपनी आजाती है कभी ज्वर होता है और रोग से पहिले खाना दूध का।

यत्न—अञ्जीर की लकड़ी को राख करके ताजे पानी में मिलावे जब राख नीचे बैठजावे उसका साफ पानी लेकर फिर उसमें राख मिलावे इसीप्रकार सात बेर करके उसका साफ पानी लेकर पिलावे इस जगह कै कराना अति उत्तम है।

औषध—उस रुधिरको जो कोष्ठ में जमगया हो पिलावे पोदीने का अरक शक्कर में मिलाकर या पोदीना सूखा पीसकर खावे।

अन्य—खुश्कदाना पानी में पीसकर खिलावे।

अन्य—कोष्ठ में रुधिर जमजाने के लिये—दो दाम राई पानी में पीसकर पिये।

अन्य—चने भूनकर खारीनोन मिलाकर सेवन करे गुण करे और कबूतर के बच्चे की हड्डी भूनकर चाबना उत्तम है ।

गर्भावस्था में कोइला और मिट्टी खाने की इच्छा करने का यत्न ।

कोष्ठ को साफ करे और एक दाम नानख्वाह हर सुबह को खाना इस रोगके लिये उत्तम है ।

जी के मचलाने और उबकाई आने का यत्न ।

जी का मचलाना कै का मुकद्दम है और वह इस तरह पर है कि वमन के वास्ते प्रेरणा हो वमन वह है कि मुँह में से कोष्ठ से कोई वस्तु निकले—जब कै बहुत हो और बन्द न हो उसके यत्न और कारण और हरएक के लक्षण बड़ी पुस्तकों में लिखे हैं सुगम रीति यह है कि—थोड़ा गेरू लेकर आग में गरम करके दो तीन बेर पानी में भिगोकर वह पानी पिलावे ।

गोली—जी मतली और कै को गुण करे—कपूरकचरी कूट छान कर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां खावे ।

अन्य—जी मतली को गुण करे-रीठे की गिरी तीन चार घड़ी पानी में भिगोदे जब नरम होजावे थोड़ा थोड़ा चाबे ।

अन्य—वमन की अधिकता को गुण करे—मिट्टी का पुराना चिराग आग में जलावे जब आग उसकी बुझ जावे पानी में ठण्ढा करके उस जल से थोड़ा पिये वमन और उबकाई के लिये गुणदायक है ।

अन्य—पुराने वमन को गुण करे—झड़बेरी के बीजों की गिरी, तुलसी की पत्तियां, मिश्री एक एक टंक, कालीमिरच आधाटंक कूट छानकर पानी में मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बना कर एक गोली खावे ।

अन्य—वमनाधिक्य के लिये उत्तम है—थोड़ी मक्खी की विष्टा गुड़में मिलाकर खावे कै बन्द होजावे ।

अन्य—उस कै के लिये गुण करे जो मद्य पीने से होती है—लाल चावल माठी के पानी में भिगोकर वह पानी लेकर पिये ।

अन्य—कै की गुणकारक शेखउलरईस ने कानून में लिखा है

कि-बादाम का रस पानी में निकाल कर पिये बमन के लिये बहुत बड़ा यत्न है।

अन्य-नींब की टहनियां जिसमें पत्तियां भी हों भूभल में रक्खे जब गरम होजावें पीसकर साफ करके पिये कै और मतली को गुण करे।

अन्य-टाट जलाकर उसकी राख पानी में डाले जब राख पानी में बैठजावे वह पानी साफ करके पिये।

अन्य-उस कै औरमतली को गुणकरे कि वह पित्तके कारण से हो इमली मुख में रक्खे।

अन्य-बड़े मुनक्के, खट्टा अनारदाना सात सात माशे, कालाजीरा एक माशे पीसकर थोड़ा थोड़ा दे।

अन्य-कै को बन्द करे-पीपल की लकड़ी या उसकी सूखी छाल जलाकर उसकी राख एक तोला भर लेकर मिट्टी के बासन में ताजे पानी में मिलावे जब मिलकर थिराजावे साफ पानी लेकर पिये।

अन्य-विशेषकर कफ कीकैको गुण करे-दोबताशों को घी में गरम करके उसमें डाले फिर निकाल कर ठंढाकरके एकएक बताशा एक घड़ी बाद खावे।

अन्य-बरगद की जटा जलाकर उसकी थोड़ी सी भस्मखावे कै बन्द होजावे।

इलायची की जवारिश-कै बन्द करती है और पाचक और पक्वाशयको बलदायक है ऊदगरकी इलायची जो छोटीहो तो उत्तम नहीं तो बड़ी बीस मिस्काल पीसकर पावभर शक्कर में कवाम करे जो सामर्थ्य हो तो पानीके बदले गुलाब मिलावे सादेतुरंजका शरबत बमन को शांतकर विशेषकरके पैत्तिकी बमन को तुरंजका पानी पचास मिस्काल एक सेर शक्कर में कवाम करे।

इमली का शरबत-पैत्तिक बमन को गुण करे और कोष्ठको बल दे और गरम पित्तों को नाश करे-इमलीके बीज निकाल-

कर उसकी आधी शक्कर लेकर पानी में भिगो दे फिर साफ पानी उसका लेकर दुगुनी शक्कर में कवाम करे।

अनार का शरबत—कै को बन्द करता है—मीठे अनार का रस बराबर की शक्कर में कवाम करे फालसे का शरबत पैत्तिकवमन और उबकाई को गुण करे और पक्वाशय का बलकारक है और अनार के शरबत के बदले भी दीजाती है गरम पित्तों और रुधिर के उपद्रवों को गु॰ करे और स्वादिष्ठ है भोजन के साथ भी खावै काले रंग के काले फालसे को पानी और गुलाब में मलकर साफ करके दूनी मिश्री में कवाम करे।

औषध—एक टंक, बालछड़ जल में पीसकर सेवन करना कफकी कै को गुणकरे।

अन्य—नागरमोथा कै को दूर करता है।

अन्य—मतली और उबकाई और हिचकीको गुणकरे—हरा पोदीना आधसेर, डेढ़सेर पानी में औटावे जब आधारहे एक सेर शक्कर में कवामकरे और एकटंक मस्तगी पीसकरमिलावे।

कालीमिरच की गोली।

जिसको मिरचा और गटका बोलते हैं कै और मतली को दूर करे और पाचक और भूख लाती है।

कालीमिरच तीन दाम, पीपल छः टंक, अनारदाना बारह टंक, जवाखार डेढ़ टंक कूटछान कर गुड़में गोलियां बनावे दो टंक खावे।

कलेजे के रोगों का वर्ण इस्तस्का अर्थात जलंधर

इसके आरम्भको सूउल्कनियां कहते हैं और उसका कारण यह है कि व्यर्थ दगदामल सम्पूर्ण जोड़ों में आ जाता है इसके तीन प्रकार हैं, लहमीज की तवलीलहमा में सम्पूर्ण अंगोंपर शोथ होना है उसका कारण कलेजे की निर्बलता है और जकी में पेट बढ़जाता है और त्वचा भारी होजाती है और जब मलें पेट मशक भरी हुई की भांति मालूम हो और तबली में पेट बढ़जाता है और नाभि निकल आती है और

जब पेट पर हाथ मारें उससे तबलेका अर्थात् ढोलका शब्द आता है लहमी बहुत होताहै और इस्तस्का के बुरे प्रकारों मेंसे है उसका यत्न यूनानी पुस्तकों में लिखा है कि जल न दे और पानी के बदले सौंफ का अरक और मकोय का अरक पिलावे और जो पानी की बहुत इच्छा हो तो जल को औटाकर ठण्ढा करके थोड़ा थोड़ा दे और भोजन शोरबा दे और मुंजिज और मुसिलों का सेवन करे और रोगी को गरम रेत में गरदन के नीचे तक गाड़ना गुण करता है और सूर्य की ओर पीठ करके धूप में बैठना रोग को शांत करे और जब तन्दूर ठंढा होने लगे रोगी को उसमें इतनी देर बैठावे कि पसीना निकल आवे हम्माम से उत्तम है और इतना परिश्रम करना कि अच्छी तरह पसीना बदन से निकले गुण करे।

रेवन्दकी टिकिया—तबली इस्तस्का को गुण करे—रेवन्द चार टंक, धुलीलाख, मँजीठ, सौंफ, कासनी के बीज, बालछड़ दो दो टंक लेकर टिकिया बनावे—खूराक दो टंक, सिकंजबीन और मकोय के अरक के साथ खाय।

रेवन्द का शरबत—इस्तस्का को गुण करे—रेवन्द पांच टंक, कासनी के बीज सात टंक, कासनी की जड़ दश टंक, सौंफ, धुलीलाख दो दो टंक, मिश्री पावभर लेकर शरबत बनावे खूराक दो टंक खावे।

औषध—इस्तस्का के लिये आजमाई हुई है—लोहे का मैल पक्के बारहदाम आगमें लाल करके तीनबेर उसको गौ के मूत्र में जो जनी न हो बुझावे और तीनबेर दही और तीनबेर कड़वे तेल में बुझाकर कूट छानकर दशसेर उस गौ के मूत्र में जिसने जुफ्ती न खाई हो मिलाकर लोहे की कड़ाही में डालकर चूल्हे पर रक्खे जब सब मूत्र सूख जावे नोन की रीति पर फंकी होगी आधा टंक उससे लेकर खाया करे।

काढ़ा—लहमी इस्तस्का को जो बिना ज्वरके हो गुण करता है—अजवायन, सौंफ औटाकर पिलावे।

अन्य-मृद्दक्कनियों को गुण करे-चने तीनदाम पावभर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ करके पिये।

गोली-इस्तस्का को गुण करे-मदार के हरे पत्ते पाव भर, हल्दी एक दाम दोनों को पीसकर उड़द के बराबर गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन चार गोली ताजे पानी से सेवन करे और एक गोली रोज अधिक करे कि सात गोली तक हो जावें और बाज पुस्तकों में मदार के पत्तों का सेवन इस भांति पर लिखा है कि बयालीस मदार के पत्ते, हल्दी दो माशे, बेरकी लकड़ी का कोयला पांच माशे, खूब महीन पीसकर घी खूब गरम करके उसमें मिलाकर उड़द की बराबर गोलियां बनावे सफेद दाग के लिये एक गोली सुबह और एक सन्ध्या को खावे और कफज्वर के लिये चार गोलियाँ और हड़फूटन के लिये एक गोली एक सप्ताह पर्यंत खावे और विसूचिका के लिये दो गोली स्वभाव के बदलने के दूर करने को और फालिज के लिये एक गोली सुबह को चार दिन तक दे और इस्तस्का के लिये चार गोली से सात गोली पर्यंत सेवन करे।

गुण-जो इस्तस्का के रोगी को स्नान करने की आवश्यकता हो चाहिये कि खारी नोन पीसकर पानी में मिलाकर कई दिन वह पानी धूपमें रखकर गरम करके उससे नहावे गुण करे और खारे पानी की नदी में नहाना गुण करे।

एलुवेकी गोली इस्तस्का को गुण करे-एलुवा चार टंक पीले हड़ की छाल, अजवायन, कालीमिरच, बिधारा एक एक टंक कूट छानकर चनेकी बराबर गोलियाँ बनावे खुराक तीन टंक।

औषध-सिरस की छाल औटाकर पिये अकबरनामे में लिखा है कि एक किले में समय के बीतने से अन्न वहाँ का पुराना होगया और उस अन्न को किलेवालों ने खाया उससे शोथ पैदा हुआ फिर जिस मनुष्यने सिरस की छालका सेवन किया आराम होगया अन्तको यह बात हुई कि उस वृक्ष की छाल सोने के मोल की होगई।

औषध–इस्तस्का को गुण करे–हुक्केका पानी जो बहुत गन्दा होगया हो पीना गुण करता है।

लेप–गौ का गोबर नोनमें मिलाकर लगाना इस्तस्का को गुण करता है।

अन्य–गोबर जलाकर उसकी राख साढ़े तीन मिस्काल प्रतिदिन खावे।

अन्य–इन्द्रायन की जड़ औटाकर पीना मल को दस्तों से दूर करता है।

औषध–ऊंटका मूत्र पीना गुण करता है और उसकी रीति यह है कि सुबह को चार पांच दाम मूत्र में पीले हड़की छाल तीन माशे मिलाकर पिये–और ऊंट का दूध भी बहुत गुण करता है भोजन और जलपान के बदले इसीपर रहे अपूर्व यत्न है।

अन्य–मूली के पत्तों का पानी गुण करता है।

अन्य–लामबरी का मूत्र छः तोले उसमें एकदाम बाल-छड़ मिलाकर पीना इस्तस्का को गुण करता है।

अन्य–सूउल्कनियां को गुण करे–हरे करेले से छः टंक पानी निचोड़ कर साफ करके पिये और जो चाहे थोड़ा शहद में मिलावे दो तीन दस्त लाकर मलको दूर करता है।

अन्य–कुकरौंधे का रस एक तोला प्रातःकाल पिये और प्रतिदिन अधिक करके दश तोले तक पहुँचावे।

जाफरान का पाक–सूउल्कनियां को गुण करता है और इस्तस्का और सख्ती और अंगों की पीड़ा को जसे कि कलेजा और तिल्ली को गुण करे।

केशर, तज, कठ, असारों, बालछड़, करफ्श के बीज, अनी-स्तन, गुलाब के फूल, कासनी के बीज दो दो भाग, सुरमक्की रेवन्द एक एक भाग, शहद तिगुना खूराक एक टंक से एक मिस्काल पर्यन्त सौंफ के अरक के साथ खाय।

गोली–वैद्यों की सेवन की हुई इस्तस्का को गुण करे–धुली गन्धक, पारा, हड़, बहेरा, आमला, सज्जी, जवाखार, कालानोन,

लाहोरीनोन, सोंठ, कालीमिरच, भुनासुहागा बराबर ले जमाल-गोटा दो भाग यह सम्पूर्ण औषध कूट छानकर इक्कीस बेर नीबू के रस में पीसकर सुखाकर कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली ऊँट के दूध में खाय ।

चूर्ण—लहमी और नवली के इस्तस्का के लिये गुणदायक—सोंठ, नागरमोथा, शैतरज, सफेद जीरा, कटाई, हल्दी, गज-पीपल, पीपलामूल बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे खूराक तीन टंक गरम पानी के साथ खाय ।

चूर्ण—इस्तस्का और सूउलकनियां को गुण करे—करफश के बीज, वायविड़ंग, शैतरज, कालीमिरच, पीपल, पीपलामूल, सौंफ, कालानोन एक एक टंक, पांच हड़की छाल, सोंठ दशटंक कूट छान कर खूराक दो टंक सौंफ के अरक के साथ खाय ।

अन्य—नवली इस्तस्का को गुण करे—करफश के बीज, राजियाना, अनीसून, असारों, कड़वीकुट, रेवन्दचीनी दो दो टंक, नागरमोथा, बालछड़ डेढ़ डेढ़ टंक, कालाजीरा तीन टंक कूट छानकर खूराक दो टंक खाय ।

अन्य—यह नुसखा मुजर्रिबात अकबरी से प्रति किया गया मराडवों का आटा कचनाल के पानी में खमीर करके रोटी पकाकर नोन के साथ खावे और पानी के बदले कचनाल की पत्तियां औटाकर पिये या उसका अरक निकालकर सेवन करे और सिवा कचनाल के पत्तों के काढ़े के और हाथ मुँह धोने और नहाने में दूसरा जल सेवन न करे जो ईश्वर चाहे तो एक सप्ताह में उसका गुण प्रकट होगा ।

चूर्ण कंघी का—पहिले दिन एक माशे भर खावे दूसरे दिन दो माशे तीसरे दिन तीन माशे फिर प्रतिदिन तीन माशे खाया करे—भोजन मूँग की खिचड़ी का करे ।

औषध—इस्तस्का को गुणदायक—सफेद जीरा अधकुचला तीन भाग कंघी अधकुचली नव भाग उसमें से एक तोला भर लेकर रात्रि को एक प्याले भर जल में भिगोदे प्रभात को

औटावे जब आधापानी शेष रहे साफ करके गुनगुना पिये।
अन्य-पेट वढ़जाने को गुण करे-दो दाम शहद, चार दाम पानी में मिलाकर पिये-और थोड़े दिन उसी भांति पिये और यह रोग वहुधा लड़कों को हो जाता है।
गुण-इस्तस्कावाले को गेहूं की रोटी से जौ की रोटी खाना उत्तम है और जो गेहूं की रोटी खाना चाहे तो जौके आटे में गेहूं का आटा मिलाकर रोटी पकाकर खावे।
गोली-उस स्त्री के लिये जिसका जनने के पीछे पेट बढ़ गयाहो मिरच, पीपल, पीपलामूल, चाव, शैतरज, अशनर, नागरमोथा, वायविड़ंग, देवदारु, त्रिफला, किस्तमुरमक्की, सौंफ, गजपीपल, इन्द्रजव एकएक टंक, तुरबुद तीन टंक कूटछानकर पुराना गुड़ औषधों की वरावर मिलाकर आधे टंक की बराबर गोलियां वनाकर प्रभात को एक गोली दो सप्ताह पर्यन्त खावे।
लेप-इन्द्रायन को पानी में पीसकर लगावे पेट का बढ़ जाना जो सन्तान उत्पन्न होने के उपरांत होता है दूर हो।
लक की माजून-जो इस्तस्का और कोष्ठ की सरदी और कलेजे को गुणदायक है-घुलीहुई लाख चारभाग, बालछड़ रेवन्द तीन तीन भाग, असारों, करफ्श के बीज दो दो भाग, कड़वीकुट, कड़वे बादाम की गिरी, मिरच, सोंठ, जीरा, साजिज, मस्तगी एक एक भाग, शहद तीन भाग।
औषध-जो इस्तस्का को गुण करे-बारह टीड़ी उनके हाथ पांव तोड़ करके एक दाम हब्बुल्लास के साथ पीसकर खावे।
अन्य-नील अर्थात् वस्मा, अमलतास कूट छानकर खूराक लड़कों के लिये एक किरात से पांच किरात पर्यंत और बड़े के लिये तीनटङ्क पर्यंत खाय।
लक की टिकिया-इस्तस्का के लिये गुणदायक है--लाख चारभाग, रेवन्द, कासनी के बीज, खरबूजे के बीज, खीरे ककड़ी के बीज तीन तीन भाग, मजीठ, सौंफ, मकोय, अजमोद, बालछड़, तज दो दो भाग, अजवायन, कत्था एक

एक भाग लेकर टिकिया बनावे खूराक एक टङ्क से दो टङ्क पर्यन्त शरबत बजूरी के साथ खाय ।

लेप—बकरी की मेंगनियां, गौ का गोबर, गोखुरू सिरके में मिलाकर लेप करे ।

अन्य—नोन, बालछड़, सिरके में मिलाकर लगावे ।

यरकां अर्थात् कमलबायुका यत्न ।

हिन्दी के यरकां को कमलबायु वा कामला बोलते हैं और वह सौदा या पित्त के दोषों के बिना दुर्गन्धजारी होनेसे त्वचाकी ओर होता है जो यह रोग पित्तसे हो उसको यरकां असफर बोलते हैं और जो सौदा अर्थात् किसी दोष के दग्ध होनेसे हो उसको यरकां असूद बोलते हैं और जिसमें दुर्गन्धि हो उसमें ज्वर हो सुगम यत्न यह है कि इमली का पानी और कासनीका रस, सादी सिकंजबीन सेवन करे सिरके की सिकंजबीन दो भाग मिश्री तीन भाग कवाम में लावे ।

अन्य—कामला को गुण करे—मलयागिरी चन्दन गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो पानी में पांच माशे आंबाहलदी के साथ घिसकर सात माशे शहद में खावे भोजन एकसप्ताह पर्यन्त दाल चावल करे ।

नाक में टपकाने की औषध ।

जो कामला को गुण करे—चन्दाल रातको पानी में भिगोकर प्रभात को उसका साफ पानी लेकर दो तीन बूँदें नाकमें टपकावे निबफरीदी में लिखा है कि बकरी की मेंगनियां बाजी औषधों के साथ खाना कामला का नाशक है ।

अन्य—कामला को दूर करे—लोंगसब्ज तीनपाव रात को पानी में भिगोकर रक्खे प्रभात को उसका स्वच्छ जल लेकर पिये—भोजन दालभात करे ।

अन्य—कमलबायु को गुण करे—बबूल की फली, संभालूली, आमला दो दो टंक कुचलकर एकसेर शक्कर में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे थोड़ी शक्कर मिलाकर साफ करके पिये ।

अन्य—कमलबायुको गुण करे—कड़वी तोंबड़ी पानी में पीसकर नाक में टपकावे ।

औषध—कंघी सात माशे पानी में पीसकर शहद में मिलाकर खावे भोजन दाल चावल करे ।

अन्य—बिनौले दो दाम रात्रि को जलमें भिगोकर प्रभात को पीसकर उसका साफ पानी लेकर लाहौरीनोन मिलाकर पिये और खटाई और बादी से पथ्य करे ।

अन्य—रीठा, गावजवां दो दाम पावभर पानी में भिगोकर प्रभात को उसका साफ पानी पिये जो ईश्वर चाहे एक सप्ताह में आराम हो ।

अन्य—दो तीन कसौंधी की पत्तियां दो तीन मिरच के साथ पिये ।

शरबत—निर्मापक का बनाया हुआ कलेजे की गरमी और कामला को दूर करे—चन्दन बूरा. बड़े मुनक्के दो तोले, जिरिश्क, कासनी के बीज, खीरे ककड़ी के बीज एक एक तोला, लाल नमक इलायची के दाने दो दो टंक, मिश्री पाव भर शरबत बनावे खूराक एक तोला उचित औषधों के रसों के साथ खाय ।

हिन्दी दवा—कामला को गुण करे—आजमाई हुई है चूना जवानके लिये तीन माशे तक पक्के केलेकी फली के टुकड़े में रखकर खिलावे ऊपर से बाकी फली खिलावे और जो लड़का हो एक माशा चूना चौथाई केलेकी फली काफी है ।

चूर्ण—बबूल के फूल मिश्री बराबर पीसकर प्रात को एक तोला भर खावे ।

चूर्ण—उस पीलाई के लिये कि कमलबायु के दूर होने के उपरान्त रहती है सातदाने कलौंजी स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकावे ।

अन्य—नींबू का पानी आंख में टपकावे ।

अन्य—मूली का अचार कि सिरके में बनाया हुआ हो खाना गुण करता है ।

अन्य—कहरवा लटकाना और पीले कपड़े पहिनना कामला रोग को मुख्य करके गुण करता है।

अन्य—कामला के लिये गुणदायक है। एकसप्ताह पर्यन्त सेवन करे मेहँदी की पत्तियां दो दाम कुचलकर रात्रि को जल में भिगोदे प्रभात को साफ जल उसका पिये।

अन्य—सनचुम्न का काढ़ा कमलवायु को गुण करे।

तिल्ली अर्थात् तिल्ली की सख्ती का यत्न।

तिल्ली की सख्ती का कारण बहुधा गहरे रुधिर सौदावी का है और तपों में रूखा बिना जल पीने से होती है यह रोग कठिनता से अच्छा होता है।

यत्न—असलीम रगकी फस्द का खोलना गुण करे।

गुण—जो तहाल के रोगी के दाहने हाथ की रग असलीम पर कपड़े की बत्ती जलाकर दाग दे और एक समय पर्यन्त उसको बहने दे बड़ा गुण देगा।

उपाय—तिल्ली की सख्ती दूर करने के लिये—चूने की कली थोड़े रीठे की गिरी के साथ कूट कर केले की पक्की फली के साथ रखकर दाहने पहुँचेके अंदर की तरफ जोड़ पर बीचकी उँगली के सामने मोटे कपड़े से एक पहर तक बँधा रक्खे जो चूने की तेजी से वहाँ फफोला पड़ जावे फिर खोल डाले गुण देगा।

अफतैमून की सिकंजबीन।

तिल्ली को कि गरमी के तप से हो गुण करती है—अफतैमून चार तोला, अंजीर सात, कनेर की जड़ की छाल, कासनी की जड़ दो दो तोले, सँभालू के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, परसियावसान, कासनी के बीज, झाऊ, कशूश के बीज, मुलहठी, गुलाब के फूल, असारों दो दो तोले, गुलकंद तिगुनी मिलाकर यथाविधि सिकंजबीन बनावे।

गोली—जो तिल्ली की सख्ती को दूर करे—पीली हड़ की छाल, सोंठ, शैतरज, भुनासुहागा, सज्जी सफेद, कलमीशोरा, बायबिड़ंग, सफेद जीरा, कालाजीरा, सेंधानोन बराबर ले

और दुगुना गुड़ मिलाकर दो गोलियां बनाकर दो माशे से चार माशे पर्यन्त गर्म पानी के साथ खावे।

गोली–एलवा, हींग, सुहागा, नौसादर, सफेद सज्जी बराबर लेकर घिकुवार के लुवाब में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली रोज खाया करे।

गोली–कालीमिरच, पीपल, भुनी फिटकरी, नौसादर, भुना सुहागा, अजवायन, कटाई, खारीनोन, लाहौरीनोन, आंबाहल्दी, जवाखार बराबर कूट छानकर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे।

तुरबुद की गोली।

पीले हड़की छाल, एलवा, सुहागा, कालीमिरच बराबर लेकर घिकुवार के रस में चार पहर खरल करके गोलियां बनावे खूराक एक टंक खाय।

सँभालू की टिकिया।

उस तिल्ली के लिये जो बहुतही गरमी से हो गुण करे–कासनी के बीज, कनेर के जड़की छाल, खीरे ककड़ी के बीजों की गिरी, कशूरूके बीज, गुलाब के फूल, माईं दो दो टंक, असारों आधा टंक, मकोय के अरक में टिकिया बनावे खूराक दो मिस्काल खाय।

गोली–तिल्ली के वास्ते आजमाई हुई है–कलमीशोरा, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी, सोंचर नमक, सेंधानोन, पीले हड़ की छाल, आंबाहल्दी, सादी अजवायन बराबर कूट छानकर तीन बेर नींबू के रस में तीन बेर अदरक के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे सुबह और शाम एक गोली खाया करे।

चमगादर की गोली।

गोली–तिल्ली के लिये शेखउलरईस की मुजर्रिब अर्थात आजमाई हुई औषधों की पुस्तक में है एक मोटा चमगादर काट के साफ करे फिर मिट्टी के बर्तन में रखकर उसपर तेज

सिरका भी डालकर कपरौटी करके तंदूर में रक्खे जब जल जावे उसकी राख सिरके में मिलाकर गोलियां बनाकर हर रोज दो टंक खाया करे बहुत गुण करे।

एलवे की गोली।

लौंग, हिन्दी नमक, रेवन्द, खताई, कलमीशोरा कूट छानकर एक माशे के बराबर गोलियां बनावे सुबह और शाम एक गोली मक्खन में मिलाकर निगल जावे।

अन्य—कनेर की जड़, नौसादर, मुरमकी बराबर घिकुवार के जल में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर प्रभात और संध्या एक गोली खावे।

अन्य—सोंठ, भुनासुहागा, सेंधानोन, हींग बराबर सहँजने के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर संध्या और सुबह एक गोली खाया करे।

अन्य—कोलंज और कोष्ट और तिल्ली की पीड़ा को दूर करती है और अफरा और बद्धकोष्ठ को गुण करे—एलवा चार टंक, पीले हड़ की छाल, अजवायन, विधारा, काली-मिरच दश दश टंक कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर सेवन करे।

गुण—तिल्लीवाले को उचित है कि लोहे का बुझा हुआ पानी सादे पानी के बदले पिया करे।

अन्य—झाऊ की लकड़ी से प्याले बनाकर उसमें पानी पीना मुख्य करके तिल्ली को गुण करना है।

अन्य—टीड़ी का अचार खाना तिल्ली को गुण करे।

अन्य—जो खांसी न हो आँब का अचार खाना तिल्ली को काटना है चाहिये कि उसको खाया करे।

अन्य—तिल्ली को गुण करे और बातको दूर करे—हालों एक भाग, कलोंजी आधा भाग शहद में मिलाकर प्रतिदिन सिकंजबीन के साथ खाया करे।

अन्य—तिल्ली को गुण करे—और क्षुधा बढ़ावे—पीले हड़

की छाल, अजवायन वीस वीस टङ्क, लोहे का मैल तीस दाम, गुड़ औषधियों की वरावर घिकुवार के पत्ते छिले हुए आधे दाम, मिश्री औषधियों को पानी में मिलाकर लोटे मे रखकर तीन सप्ताह पर्यंत घोड़े की लीद में गाड़े फिर निकालकर साफ करके दो दो दाम सुवह और शाम खावे।

अन्य—सँभालू की जड़, कवर के जड़ की छाल बराबर के तेज सिरके में भिगोदे और रोज नया सिरका एक सप्ताह पर्यंत वदलते रहे फिर छाया में सुखा कर दो दाम शहद की सिकंजवीन में मिलाकर खावे।

अन्य—वात को दूर करे—कलौंजी एक भाग, हालों दो भाग, शहद में मिलाकर प्रतिदिन दो टंक एक तोले सिकंजबीन के साथ खावे।

अन्य—सरसों का तेल गुनगुना तिल्ली पर मलना उसकी सख्ती को दूर करता है।

अन्य—अजवायन जितनी खा सके प्रभात और सन्ध्या खाया करे।

अन्य—भुना सुहागा एक भाग, राई तीन भाग दोनों को महीन करके एक माशा सुवह और शाम खाया करे।

अन्य—नींबू का रस एक दाम, प्याज का रस एक दाम आपस में मिलाकर चौदह दिन तक पिये और सिवाय नरम चीज जैसे कि खिचड़ी और दाल और चावल के और कुछ न खावे।

अन्य—नौसादर आधा दाम मूली के पानी में मिलाकर पिये और मूली और तिल वरावर पीसकर तिल्ली पर बांधे।

अन्य—चूने की कली महीन पीसकर शहद में मिलाकर तिल्ली पर मलकर अंजीर के पत्ते उस पर बांधे।

लेप—शैतरज सिरके में पीसकर लगावे तिल्ली के शोथ को गलाता है।

अन्य—मूली के वीज पीसकर सिरके या सिकंजबीन में मिलाकर खाना तिल्ली को दूर करता है।

अन्य—करील की सूखी कोंपल साढ़े तीन मिस्काल, कालीमिरच उससे आधी कूट छानकर हररोज सुबह को पानी के साथ पिये तिल्ली की सख्ती को दूर करता है।

अन्य—गेहूं की भूसी और छिला हुआ लहसुन जलाकर उसकी राख सिरके में मिलाकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—प्याज और कांदा तिल्लीवाले के गले में लटकाना मुख्य करके शीघ्र गुण करता है।

अन्य—जवारिश् बज तिल्ली के लिए गुण करे नुस्खा जिसका निनियान अर्थात् भूल की बीमारी के वर्णन में वर्णन हुआ गुणदायक है।

अन्य—जो तिल्ली वाला अपना या लड़के का मूत्र हर रोज सुबह को तीन चुल्लू भर लेकर पिये तो तिल्ली दूर हो।

अन्य—यदि मनुष्य युवा हो छः माशे सज्जी और जो लड़का हो दो माशे गुड़ में मिलाकर जो ज्वर न हो इक्कीस दिन खावे और खटाई और बादी पथ्य करे।

फंकी—तिल्ली और वायुशूल और स्वभाव के नरम करने को गुण करे—अजवायन आध सेर, हरे घिकुवार के पत्ते बीस, त्रिफला, त्रिकुटा, पांचोनोन, सज्जी, सफेद कटाई, तुरबुद, कालाजीरा, बच, सौंफ, अजमोद, विधारा एक एक टंक, घिकुवार के रस में भिगोकर छाया में सुखाकर कूट छानकर रक्खे खूराक तीन माशे तक ताजे पानी के साथ खाय।

अन्य—झाऊ की पत्तियाँ एक टंक सुखाकर कूट छानकर एक टंक शक्कर में मिलाकर खावे।

अन्य—झाऊ की पत्तियाँ कूटकर एक अदकिया भर पानी उसका निचोड़ कर दश टंक सिकंजबीन मिलाकर खावे।

अन्य—ऊंट का दूध और मूत्र तिल्ली को दूर करता है।

अन्य—झाऊ के पत्तों का अरक तिल्ली को गुण करता है।

अन्य—नमदे का टुकड़ा सिरके में भिगोकर तिल्ली पर बांधे।

माजून—तिल्ली के लिये आजमाई हुई है कबर की जड़की

छाल, अफतैमून बराबर शहद में मिलाकर माजून बनाकर प्रतिदिन पांच मिस्काल खावे।

अन्य—तिल्ली की कठोरता को दूर करती है—कबाबा, पुष्कर-मूल, जवाखार, पीलीहड़, हींग, लाहौरीनोन, सोंचरनोन, बाय-विड़ंग, शैतरज, समन्दरझाग, तुरबुद सफेद, अजवायन बराबर कूट छानकर खूराक एक तोला सुवह और शाम को खाय।

फराश के पत्तों का शर्बत।

फराश की पत्तियां पाव भर दो दिन दो सेर जल में औटावे जब तृतीयांश रहे साफ करके पाव भर शक्कर में कवाम करे खूराक दो तोले।

आंतों के रोग और अतीसार का यत्न।

अतीसार कई प्रकार का होता है। जो दस्त कोष्ठ अर्थात् मेदे के हों उसको खलफा अर्थात् संग्रहणी कहते हैं और जो कलेजे से हों जूसन्तारिया कहते हैं वह रुधिर का अतीसार है मांस की धोवन के सदृश दस्त आते हैं या कयाम कबदी हैं उसमें पीव निकलती है तो आंतों से हो उसको सहज और जलकुलअमआ और जहीर कहते हैं इनका विस्तार विस्तृत पुस्तकों में लिखा है इस जगह थोड़ी सुगम औषधि जो अतीसार को गुण करे—लिखी जाती है।

नरकचूर की जवारिश।

वात को दूर करे काट के अतीसार को गुण करतीहै—शक्कर सफेद पाव भर नरकचूर पीसकर पांच टंक, जवारिश अर्थात् पाक बनावे खूराक दो तोले और आमले सादे की जवारिश जो कोष्ठ के रोगों में वर्णन हुई गुण करती है।

आमले की गोली—दस्तों को रोकती है कोष्ठ के अतीसार और आंतों के अतीसार को गुण करे—एक तोला आमला थोड़ेसे जलमें भिगो दे जब नरम होजावें कजली करके कालानोन पीस कर मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुवह शाम खावे।

गोली–अतीसार को गुण करे–राल, पाषाणभेद, बेलगिरी, नरकचूर, आमला, भुनीसम्मगअरबी, भुनीहड़, माई, भुने मुनक्के, अजवायन, गेहूँ, गुलनार बराबर कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर प्रात और सन्ध्या खावे।

अनार की गोली–कच्चा अनार मिट्टी में लपेटकर भूभल में रक्खे जब पकजावे मिट्टी दूर करके अनार को कूट पीस कर आमला, भुनीसम्मगअरबी, बेलगिरी, अजवायन दो दो माशे, अफीम, नरकचूर एक एक माशा पीसकर उसमें मिलाकर मूँग की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम खाया करे।

अन्य–जो काबिज और कोष्ठ के अतीसार और सख्ती को गुण करे और पाचन शक्ति को बढ़ावे–बालछड़, अजवायन, सौंफ भूनकर, सोंठ भूनकर, नागरमोथा पांच पांच टंक, गुलनार, माई, बड़ी इलायची के दाने पांच पांच टंक, हुबुल्लास छः टंक शहद या शक्कर में कवाम करे।

शिगरफ की गोली–दस्तों को रोकती है–सुहागा एक माशा, शिंगरफ दो माशे, अफीम चार माशे कूट छानकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली खावे और लिखा है कि रात्रि को जो अधिक दस्त आवें यह गोली शहद में मिलाकर खावे और जो दिन को अतीसार जोर करे नींबू के रस में मिलाकर सेवन करे।

अन्य–शिंगरफ की गोली–शिंगरफ, लौंग, अफीम तीनों दवा बराबर ले मिश्री एक माशा कूट छानकर चार माशे की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली।

अन्य–जो कब्ज करनेवाली और रुधिर के अतीसार और पित्त के अतीसार को गुण करती है–समाक के दाने दो टंक, माजू, अनार की छाल आधा आधा टंक, हुबुल्लास दश टंक, मुनक्के के दाने तीन टंक, सम्मगअरबी पांच टंक कूट छानकर गोलियां बनावे खूराक दो गोली पर्यन्त खाय।

गोली—काबिज़ और कफ के अतीसार को दूर करती है और पाचक है कालीमिरच, पीपल, सोंठ, लौंग, अकरकरा एक एक टंक, अफीम दो टंक अदरक के पानी में पीसकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली खाया करे।

अन्य—गोली काबिज अतीसार को दूर करती है—रसौत, गेरू डेढ़ डेढ़ तोले, मुरदारसंग बराबर पीसकर चने की बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली सुबह और एक गोली संध्या को खाया करे।

अन्य—लड़कों के अतीसारको गुण करे जो ज्वर न हो तब भी गुण करती है—कत्था, गुलनार तीन तीन माशे, जहर-मोहरा पीसकर, आमला, सम्मगअरबी, भुनी बेलगिरी दो दो माशे, अफीम, माजू, भुनी सौंफ, सफेद जीरा एक एक माशे, कपूर एक रत्ती कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनाकर स्वभाव के अनुकूल दे और कभी जहरमोहरा के बदले वंश-लोचन मिलाते हैं और वंशलोचन अधिक भी करते हैं और जो कुछ खटका हो तो कपूर न दे।

अन्य—गोली जो बहुत ही काबिज है मुनक्के बीजों समेत सात दाने आंब की गुठली एक, अफीम आधा माशा कूट छानकर मिलाकर सात गोलियाँ बनाकर एक गोली रोज खावे।

माजू की गोली—शीघ्र ही गुणदायक है अतीसार को दूर करती है और आंतों के व्रण को गुण करती है माजू चार टंक, अफीम दो टंक, अजवायन एक मिस्काल चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय।

नकछिकनी की गोली—उस अतीसार को गुण करती है जो नाफके सरकजाने से हो नकछिकनी जलाकर अजवायन, सोंठ बराबर कूट छानकर एक माशा गुड़ मिलाकर गोलियाँ बनावे और घी के साथ खावे।

लेप—नाफ के सरकजाने के लिये—फिटकरी तीन टंक, माजू

तीन कूट छान कर सिरके में मिलाकर लगावे ऊपर से जोर से पट्टी बांधे।

गोली—अतीसार को गुण करती है—सोंठ भूनकर, माईं, लोध पठानी, सफेद राल, धवई के फूल, इन्द्रजो मीठी, बेल गिरी, मोचरस, आंबकी गुठली, भुना खुरमा, कालीमिरच कूट छानकर गोलियां बनावे।

अन्य—भुनी भंग, बेर की पत्तियां, नरकचूर बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय खावे।

गोली—आंतों के छिलजाने और रक्तातीसार जो सुद्दे बिना हो उत्तम है—गेरू, कत्था, राल, गोंद, कतीरा, छिले कौंच के बीज, बेलगिरी कूट छानकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे।

गोली—लड़कों के अतीसार को एक—गुलनार, इलायची, अफीम एक एक माशा, चाकसू, रसौत, नरकचूर, सफेदजीरा, हल्दी, नींब की छाल, बकायन की कोंपल, बबूल की कोंपल दो दो माशे कूट छानकर मूंगकी बराबर गोलियां बनावे दो गोली तक खावे।

अन्य—लड़कों के सब्ज रंग के दस्त आने को गुण करे—बबूल की पत्तियां, लौंग मुरदारसंग, गुलनार, केसर, नींब की कोंपल, सौंफ, कालाजीरा, सफेद जीरा, सोंचरनोन, तज, अजवायन, वायविडंग सात सात माशे महीन पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रभात एक संध्या को खावे और कभी मुरदारसंग के बदले जहरमोहरा या वंशलोचन और कभी तज के बदले बज मिलाते हैं।

इलायची का चूर्ण—काबिज और पाचक है—भुनी सोंठ, भुनी सौंफ, बड़ी इलायची की छाल बराबर पीसकर चूर्ण बनावे एक हथेली भर खावे।

बज का चूर्ण—अतीसार और संग्रहणी को गुण करे—बज मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर कपरौटी करके गरम तन्दूर में रक्खे

जब ठण्डा होजावे निकाल कर पीसकर एक टंक, लेकर दो टंक शहद और कुछ नोन मिलाकर खावे भोजन साठी के चावल दही के साथ खाय।

अन्य—अतीसार और खूनी बवासीर को बन्द करती है और पेचिश और रंग की जरदी को गुण करे—मस्तंगी, कालीमिरच, वंशलोचन, अनारदाना, आंब के बीज की गिरी पीस कर मुलहठी, माई, धवई के फूल, माजू बराबर ले और खशखाश के पोस्ते के पानी में गोलियां बनावे एक दाम खावे साठी के चावलों के पानी के साथ और मूँग और चावल भोजन करे।

कालीहड़ का चूर्ण—पक्कातीसार और जहीर को गुण करे—हड़ घी या बादाम के तेल में भूनकर दो तोले खशखाश का पोस्ता घी में भूनकर एक तोला कूट छानकर चूर्ण बनाकर उसके बराबर शक्कर मिलावे एक तोला प्रभात को और सात माशे शाम को खावे निर्मापक ने इस नुस्खे में सम्मगअरबी भुनी हुई मिलाई थी वहुत गुण किया।

तज का चूर्ण—अतीसार को गुण करे—तज, गुलनार, सुपारी के फूल बराबर चूर्ण करके स्वभाव के अनुकूल जल के साथ खावे।

सौंफ का चूर्ण—कफके अतीसार को गुण करे और कोष्ठ को बलकारक और गुदा की पवन को दूर करे सौंफ घृत में यहां तक भूने कि लाल होजावे फिर कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलावे और सात माशे ठण्ढे पानी से खावे।

अनार का चूर्ण—पैत्तिक अतीसार के लिये गुण करे—खट्टे अनार के दाने, भुना कालाजीरा पांच टंक, आमला एक मिस्काल, गूगल, धनियां पिसा हुआ चार टंक, गुलनार, सम्मगअरबी एक टंक, चूर्ण बनावे दो टंक पर्यन्त खावे।

धनियें का चूर्ण—रुधिर के अतीसार के दूर करने में जो सुद्दे विना हो आजमाया हुआ है जामुन की गुठली जली हुई, कुनार के बीज जले हुये, बारहसिंगे के सींग जले हुये,

भुनी हिल्तीत अर्थात हींग, भुनी खशखाश, भुने मुनक्के एक एक टंक, कालीहड़, सौंफ, अनारदाना, धनियां, चूका के बीज, सम्सगअग्बी, निशास्ता, कालाजीरा, सफेदजीरा, खुरफे के बीज, सोंठ, ईसबगोल, बारतंग, नाजबो के बीज हर एक टंक लेकर भूनकर खुरफे के बीज, ईसबगोल और बारतंग को साबुन रक्खे और धबई के फूल, अनीस, माई, आमला, बेलगिरी, राल, करथा सफेद, कतीरा, कोंच के बीज की गिरी, बड़ी इलायची की छाल, नरकचूर, गुलनार आधा आधा टंक कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक स्वभाव के अनुकूल दो मिस्काल पर्यन्त जल के साथ खाय।

चूर्ण—जो अतीसार को गुण करे—सोंठ, सौंफ, राल, भुना छुहारा, कालीहड़ तेल में भूनकर बेलगिरी बराबर लेकर चूर्ण बनावे।

चूर्ण—जो लड़कों के अतीसार को गुण करे—अनार की कली, बबूर की पत्तियां, भूनी सौंफ सब थोड़ी थोड़ी ले और खशखाश का पोस्ता जला हुआ सबके बराबर मिलावे और थोड़ा सा आयु के प्रमाण दे।

चूर्ण—धबई के फूल, आमला, बेलगिरी, इन्द्रजौ कड़वे बराबर कूट छान कर आयु और प्रकृति के अनुकूल शहद में मिलाकर चाटे।

चूर्ण—लड़कों के दस्त आने को जो दांत निकलने के समय ले आता बेलगिरी, करथा, आमले की छाल कूट छान कर चूर्ण बनावे अपने स्वभाव के अनुकूल खावे।

चूर्ण—जो अतीसार के सब प्रकारों को गुण करे—शतरंज, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धबई के फूल बराबर कूट छान कर चूर्ण बनावे एक टंक खावे।

चूर्ण—कफ के अतीसार को गुण करे—भुनीसोंठ, धबई के फूल, मोचरस, अजमोद बराबर लेकर चूर्ण बनावे एक तोला भर खावे।

अन्य-चूर्ण जो अतीसार को रोकता है और बैद्यों का सेवन किया हुआ है-चने भूनकर छीलकर चूहे की मेंगनियां एक एक टंक कूट छान कर चूर्ण बनावे जो बलवान् अतीसार हो छः माशे नहीं तो चार माशे सेवन करे।

अन्य-बेलगिरी, खशखाश, सोंठ, धनियां बराबर कूट छान कर साठीके चावल के पानी के साथ सेवन करे।

अन्य-लड़कों के अतीसार को गुण करे-अतीस एक माशा या कम या जियादह पानी में पीसकर दे और युवा मनुष्य को एक तोले तक प्रकृति के अनुकूल दे दस्तों को बन्द करता है और चाहिये कि थोड़ा गुलनार भी मिलावे।

अन्य-संग्रहणी के लिये आजमाया हुआ है-भुना ईसबगोल, बेलगिरी, राल, आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज की गिरी, नमक नफ्ती, नागरमोथा, खशखाश, सोंठ सिवाय ईसबगोल के सम्पूर्ण औषध कूट छान कर मिलाकर एक हथेली भर प्रभात को खावे।

अन्य-उस खूनी अतीसार के वास्ते जो सुद्दे के कारणसे न हो-आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज, कोंचके बीज प्रकृति के अनुकूल साठी के चावल के पानी के साथ खावे।

अन्य-बद्धकोष्ठ और उदरपीड़ा को गुणदायक है और भोजन को भी पचाता है-सौंफ दो टंक, कालाजीरा एक मिस्काल, सोंठ एक टंक तीनों औषध भूनकर अजमोद, अजवायन एक एक टंक, सूखा पोदीना, तज एक एक मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बनाकर दो टंक से दो मिस्काल पर्यन्त दे।

बेरों का चूर्ण।

अतीसार का नाशक बेर हांड़ी में भरकर मुख उसका बंद करके कपरौटी करे फिर आग में रखदे जब बेर जल जावें निकालकर एक हथेली भर हर प्रातःकाल को खावे भोजन दही चावल या मूंग की दाल।

अन्य—भूनी सौंफ, पुराने आंब की गुठली की गिरी बराबर ले और इनके बराबर पुरानी शक्कर मिलाकर आधा दाम खावे ।

आमले का शर्बत—अतीसार को दूर करता है और इसको इलायची के दाने के साथ सेवन करे तो मतली को गुण करे और खुरफे के बीजों के रस के साथ बुखार को गुण करता है—आमला चार दाम कुचला करके आधसेर पानी में भिगोकर औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके पावभर शक्कर मिलाकर कवाम में लावे ।

बेलगिरी का शर्बत—काबिज और कोष्ट को बलदेता है—बेलगिरी आधपाव आधसेर जल में भिगोकर औटावे जब आधा पानी रह जावे तो आधपाव कन्द में कवाम करे और अपने स्वभाव के अनुकूल खावे ।

आमले की माजून—कोष्ट को बल दे और अतीसार को रोके और नोशदारू के बदले भी सेवन की जाती है—आमले का रस छः टंक, इलायची, नागरमोथा दो दो टंक, नरकचूर, बालछड़, बच, सम्मगअरबी एक एक टंक, बेलगिरी तीन दाम कूट छान कर तिगुने कन्द में माजून बनावे ।

काढ़ा—अतीसार को गुणदायक है दो दाम नेत्रवाला तीन पाव पानी में औटावे जब आध पाव रहे साफ करके पिये और सन्ध्या को उसी काढ़ी हुई दवा को फिर डेढ़ पाव पानी में औटावे जब आधा रहे साफ करके पिये एक सप्ताह में संग्रहणी दूर होगी ।

बेलगिरी का अर्क—कोष्ट को बलदेता और अतीसार को गुण करे और जहीर और आँतों के दस्तों में वारतंग के बदले है बेलगिरी सूखी या हरी को पानी में भिगोदे प्रभात को अर्क खींचे ।

जामुन का शर्बत—कै और मतली को बन्द करता है और रक्तातीसार के प्रकारों और कोष्ट और पेचिश और बवासीर को नाश करता है पक्का जामुन निचोड़कर थोड़े गुलाब में जो हो तो उत्तम नहीं तो पानी में कवाम करे फिर चौथाई कन्द मिलाकर शर्बत बनावे और जो कवाम के अन्त में थाजी

कब्ज करनेवाली जैसे कि वंशलोचन और चन्दन गुलाब में घिस कर मिलावे तो बलकारक हो।

काढ़ा—आजमाया हुआ दस्तों को रोकता है—धनियां, नागरमोथा, खस, सोंठ, बेलगिरी पांच पांच माशे कुचल कर डेढ़पाव पानी में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये भोजन चावल मूंग या मसूर की दाल के साथ जो यह दवा दो तीन दिन में गुण न करे दो सप्ताह पर्यन्त दे जो स्वभाव में गरमी न हो सोंठ बढ़ावे।

काढ़ा—अतीसार और वह दस्त जो मेदे से आवे उसके लिये गुण करे—मसूर, गेहूँ एक एक तोला खशखाश का पोस्ता, बेलगिरी तीन तीन माशे आध सेर जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये।

काढ़ा—अतीसार के दूर करने को आजमाया हुआ है—सुगंधवाला में धवई के फूल, कनेर की छाल, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, लोधपठानी, गिलोय डेढ़ डेढ़ माशा लेकर एक सेर पानी में औटावे जब आध पाव रहे साफ करके पिये इसी तरह सात दिन सेवन करे।

अन्य—बरगद का दूध नाफ में भरदे और नाफ के चारों तरफ भी लगावे।

टिकिया—अतीसार के लिये गुण करे—जामुन की गिरी, आंब की गिरी, पीली हड़ घी में भूने जब फूल जावे बराबर पीसकर टिकिया बनावे एक मिस्काल खावे।

लेप—आंब की छाल दही के पानी में पीसकर नाभि के चारों ओर लगावे और बाजोंने सिरकेमें पीसकर लेप करना लिखा है।

लेप—अतीसार को गुणदायक—आमला घी में पीसकर नाभि के गिर्द दायरा बनावे और किनारा उस दायरे का ऊँचा रक्खे फिर उसमें अदरक का रस भर दे और इसी प्रकार थोड़ी देर रहने दे जो पानी के दस्त आते हों बन्द होजावें—मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि यह औषध सम्पूर्ण औषधों का राजा है।

औषध—कोष्ठ के अतीसार को गुण करे—हरी बेलगिरी भून कर थोड़ी शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे बहुत गुण करे।

लाभ—अतीसार में वमन करना दस्तों को बन्द करता है।

अन्य—पुराने अतीसार के लिये कैथे के बीज भून कर खाना अतीसार को दूर करता है।

अन्य—दस्त बन्द करे—मूली के बीज भून कर उसके बराबर नौ माशे शहद मिलाकर खावे।

अन्य—गूलर का कोंपल एक तोला भर पीसकर पिये।

अन्य—आमला घी में भून कर पानी में पीसकर नाभि के गिर्द लगावे और थोड़ी अफीम अदरक के रस में कजली करके दो तीन बूँद नाक में टपकावे।

अन्य—गूलर के वृक्ष का दूध एक माशा बराबर खावे।

अन्य—गेहूँ का सत्तू कब्ज और अतीसार को दूर करता है और कोष्ठ के और पित्त के अतीसार को गुण करता है।

अन्य—पित्त के अतीसार का गुणकारक—चावलों की पीच पिये।

अन्य—दूर्बा हरी पीस कर एक प्याला पिये।

अन्य—पुराना पनीर लेकर इतना धोवे कि उसमें नोन का कुछ भी गुण शेष न रहे फिर उसको भून कर खावे।

अन्य—छिले हुए मसूर भूनकर सेवन करना अतीसार को दूर करनेवाला है।

अन्य—जो जमालगोटे के खाने से अतीसार हो आधा टंक कतीरा पीसकर दही मिलाकर खावे।

जहीर का यत्न।

इसको लौकिक में पेचिश भी बोलते हैं वह दो प्रकार का है सादिक और काबिज, सादिक वह है कि नाज के बीज या ईसबगोल या उसके सदृश कोई वस्तु खावे वैसाही मल निकले इसमें कब्ज करनेवाली औषधों का सेवन करे और काबिज वह है कि दाने विष्ठा में न निकलें सो जहीर काबिज में जब

तक मुसिल न दे और सुद्दे दूर न होलें कब्ज करनेवाली औषधों का सेवन न करे क्योंकि पहिले कब्ज की औषधों का देना सुद्दे और पीड़ा और भय का कारण है।

काढ़ा–काबिज जहीर को गुण करे अमलतास पांच टंक, अधकुचली सौंफ दो टंक, खतमी के बीज, खतमी की जड़ डेढ़ डेढ़ टंक, लसोढ़े २५ यह सम्पूर्ण औषध औटाकर साफ करके अमलतास मिलाकर थोड़ा घी डालकर एक तोले भर गुलकन्द से मीठा करके पिये जो सामर्थ्य हो तो बनफ्शा, आलूबुखारा, मुनक्के बड़े भी मिलावे नहीं तो गरीबों को उतनाही बहुत है और दूसरे दिन नाजबो के बीज, ईसबगोल एक एक मिस्काल सेवन करे–फिर कोष्ठ के कब्ज करनेवाली चीजें और पौष्टिक द्रव्य दे।

औषध–अतीसार और पेचिश को गुण करे–आंब की छाल लेकर उसके ऊपर की काली छाल दूर करे और अन्दर की उसकी छाल जो पीली होती है लेकर पानी में घिसकर और थोड़ा पानी उसमें मिलाकर शीघ्रही पीले क्योंकि जो एक पल भर भी विलम्ब होगा तो जम जावेगा फिर पिया न जावेगा इस औषध के सेवन से तीन दिन में आराम होगा।

अन्य–उस पेचिश को गुण करे जो पित्त से हो–ईसबगोल भुना दो टंक, सम्मगअरबी, गेरू, एक एक टंक, अजवायन चौथाई टंक और जो गरमी न हो किन्तु अफरा हो भुना हालों दो टंक, भुनी अलसी, गेरू एक एक टंक, अबहल आधा टंक, अजवायन चौथाई टंक।

अन्य–जहीरसादिक के लिये नाजबो के बीज, सम्मगअरबी बराबर लेकर भूने और पीसकर नाजबो के बीज, साबित रख कर एक तोला सफेद जीरे के रस में मिलाकर पिये।

अन्य–जहीरसादिक को दूर करे–बेर की पत्तियाँ एक टंक, सफेदजीरा आधा टंक पीसकर पिये।

चूर्ण–रक्तातीसार और जहीरसादिक के लिये गुण करे–राल

कत्था, बेलगिरी, कोंच के बीज बराबर लेकर चूर्ण बनावे दो टंक पर्यन्त खावे।

अन्य–आंतों के व्रण और रक्तातीसार के लिये–कतीरा, बारासिंगे का सींग जलाकर बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक एक मिस्काल भर खाय।

अन्य–कफ के जहीर को गुण करे–सफेदजीरा चार माशे, अजवायन पांच माशे, अफीम दो रत्ती महीन कूट छान कर तीन खूराकें बनावे और साठी के चावल के साथ खावे और भोजन खिचड़ी खावे।

काढ़ा–जहीरसादिक के लिये श्रेष्ठ है–धवई के फूल, सेमल का गोंद बराबर पानी में औटाकर साफ करके पिये और गुनगुने मीठे तेल से अमल करने से पेचिश दूर होती है आजमाया हुआ है।

अन्य–पेचिश और रुधिर और कफातीसार को नाश करे–मरोड़फली एक दाम पानी में भिगोकर हाथ से मलकर साफ करके खावे भोजन खिचड़ी दे–और खटाई और सलोनी चीजों से पथ्य करे।

अन्य–पेचिश को दूर करे–सांकर की फली पकाकर पके चावल के साथ खावे।

अन्य–जहीरसादिक को गुण करे–राल सफेद शक्कर एक एक दाम, खशखाश का पोस्ता भुना एक कूट छानकर हथेली भर खावे।

चूर्ण–जहीरसादिक के लिए गुणदायक है–भुने नाजबो के बीज, गेरू दोनों साबित रखकर चोका के बीज दो दो टंक, गुलनार, सम्मगअरबी, निशास्ता एक एक टंक कूट छानकर चूर्ण बनावे।

हड़ का चूर्ण–काबिज और जहीर को गुण करे और कोष्ट-पीड़ा को लाभदायक है–कालीहड़ कड़वे तेल में भूनकर भुनी सम्मगअरबी, कालाजीरा भुना, सौंफ तेल में भूनकर एक

एक टंक, ईसबगोल साबित, हालिम की जड़ दो दो टंक कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक चार दाम खाय ।

चूर्ण—हालों का चूर्ण जहीर को गुण करे—हालों, नाजबो के बीज, ईसबगोल दो दो टंक तीनों बस्तुओं को साबित रक्खे और सम्मगअरबी, निशास्ता, खतमी के बीज एक एक टंक चूर्ण बनावे और जो जहीरसादिक हो चाहिये कि तीन प्रकार के बीजों को भूने और चार टंक पर्यन्त खावे ।

अन्य—पेचिश को गुण करे—फालसे की जड़ जवकुट करके रात्रि को पानी में भिगो दे उसका लुआब सुबह लेकर एक तोला ईसबगोल के साथ खावे ।

काढ़ा—पेचिश को बहुत पीड़ा के समय गुण करे—नाजबो के बीज एक तोला पाव भर गुलाब में जो सामर्थ्य हो नहीं तो आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे नाजबो के बीजों के साथ पिये ।

हालों का पाक—जहीर और मड़ोरा और बवासीर को गुण करे—कालाजीरा भुना एक भाग, मस्तगी तिहाई हिस्सा यथाविधि मिश्री में कवाम करे दो टंक खावे जो मस्तगी लेने की सामर्थ्य न हो कुन्दर मिलावे ।

चूर्ण—जहीर को गुण करे—खतमी के बीज भुने, भुनी हुब्बाजी पाँच पाँच टंक, भुना निशास्ता तीन मिस्काल, सम्मगअरबी, गेरू दो दो मिस्काल चूर्ण बनावे खूराक तीन टंक पर्यंत खाय।

अन्य—पेचिश को गुण करे—गेरू, सम्मगअरबी, ईसबगोल, नाजबो के बीज, निशास्ता बराबर चूर्ण बनावे तीन टंक के अनुमान खावे ।

अन्य—खून आने को गुण करे—राल, सोंठ, सौंफ, अनार की छाल, खशखाश आधा आधा टंक, शक्कर दो दाम कूटछान कर आधे दाम के बराबर ताजे पानी से हर सुबह और शाम खाया करे भोजन चावल और मसूर की दाल का करे ।

अन्य—बेलगिरी एक तोला, कुकुड़ा की छाल दो तोले, सौंफ,

जंगीहड़ एक एक तोला, ईसबगोल छह माशे, मिश्री तीनतोले, हड़ों को घी में भूनकर सिवाय ईसबगोल के कूट छान कर सब को मिलावे खूराक सात माशे से एक तोले पर्यन्त खाय ।

अन्य-जहीरसादिक के लिये-कालीहड़ भूनकर सोंठ, भुनी सौंफ एक तोला बराबर की शक्कर मिलाकर प्रकृति के अनुकूल खावे ।

अन्य-आँतों के छिलजाने को गुण करे-बेलगिरी, कत्था बराबर लेकर चूर्ण बनावे ।

अन्य-पित्त के और रक्त के अतीसार और, जहीर के लिये गुण करे-सम्मगअरबी हर रोज तीन मिस्काल तीन दिन या ग्यारह दिन तक खावे और जो अतीसार में अधिकता हो खशखाश का पोस्ना महीन पीसकर एक मिस्काल से दो मिस्काल पर्यन्त पीना आजमाया हुआ है और सम्मगअरबी मिलावे अधिक गुण करे ।

गोली-अतीसार और कफ के जहीर को गुण करे-सोंठ, सौंफ, खशखाश तीनों भूनकर दो टंक कूट छानकर गुड़ और घी में गोलियाँ बनाकर खावे ।

अन्य-जहीरसादिक के लिये-माई, कत्था, अफीम बराबर लेकर कालीमिर्च के बराबर गोलियाँ बनाकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवन करे ।

अन्य-अधिक अतीसार और जहीरसादिक को नाश करे-साफ अफीम, साफ चूना बराबर लेकर मोठ या मसूर की बराबर गोलियाँ बनाकर स्वभाव के अनुकूल एक सुबह और शाम को खावे ।

अन्य-आँतों के छिल जाने और जहीरसादिक के लिये गुण करे-माजू, माई दो दो टंक, सम्मगअरबी एक टंक, अफीम आधा दाम कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनावे खूराक जवान के लिये दो गोली और लड़के के लिये एक गोली दे ।

अन्य—माजू चार भाग, अफीम दो भाग, अजवायन एक भाग कूट छान कर चने या मूँग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह खाया करे।

अन्य—जहीरसादिक और अतीसार को दूर करे—नये महुये के वृक्ष की छाल लेकर रस उसका चार टंक के बराबर निकालकर वर्तन में रखकर आग पर रक्खे और तीन माशे सोंठ पीस कर उसमें मिलावे जब दो तीन उबाल खावे उतार कर गुनगुना पिये खटाई और बादी से पृथ्य करे।

अन्य—खुरमाहिन्दी अर्थात् खजूर एक टंक पीसकर थोड़े दही से मिलाकर खावे।

अन्य—अनार की पत्तियां एक प्याले भर पानी में पीस कर पिये।

अन्य—कतीरा रात को पानी में भिगोदे सुबह थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—लसोढ़े की कोंपल पीसकर गोलियां बनाकर खावे।

अन्य—सुपारी जलाकर दही में मिलाकर खावे।

अन्य—नाजवो के वीजों को मिट्टी के वर्तन में रखकर ऊपर से दो तीन बूँदें मीठे तेल की डालकर आग पर लाल करके खावे अतीसार की अधिकता को दूर करता है।

अन्य—मुलतानी मिट्टी पीस कर बिहीदाने और ईसबगोल के लुआब में मिलाकर दे।

अन्य—सफेद जीरा दही के साथ खावे।

अन्य—आंतोंकी छीलन के प्रारम्भको गुणकरे—सम्मगअरबी चार टंक सरद पानी में मिलाकर पिये छीलन को दूर करता है।

कूलंज का यत्न।

यह रोग सुद्दों के बढ़ जाने से अन्तड़ी कूलों में होजाता है इसमें गुदा की पवन और मल कठिनता से पीड़ा के साथ निकलता है।

यत्न—जो कूलंज वात से हो—सेंक करे जिस तरह कोष्ठ की

पीड़ा में उनका वर्णन हुआ है और जो बोझ या कफ से हो-नर्मान अर्थात् हलका जुलाब आदि देकर मुसिल पिलावे जो पेचिश में वर्णन हुआ है कूलंज के लिये गुण करे—रेंड़ी के तेल से जो कोष्ठ की पीड़ा में वर्णन हुई लेप करे।

गोली—कूलंज को दूर करती है और वैद्यक में लिखी गई है कि भुनी फिटकरी, अजवायन, पीपलामूल, कालीमिरच, करंजुवे की गिरी, वायविड़ंग बराबर कूट छान कर अदरक के पानी में चार माशे की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पीड़ा के समय खावे।

औषध—कूलंज के लिये गुण करे—रेंड़ी, सोये के बीज, मकोय, खतमी के बीज, बाबूना थोड़ा थोड़ा लेकर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ करके उसमें बैठे।

जवारिश—प्रकृति को नरम करती है और कफ के निकालनेवाली और कोष्ठकी बलदायक और कूलंज को दूर करती है—बड़े मुनक्के पावभर, सरनगी साढ़े छः टंक, तुरबुद सफेद दश टंक कूट छानकर मुनक्के के बीज निकालकर गुलाब में पीसकर औषधियों में मिलावे खूराक दो टंक और जो सदा सेवन करे तीन टंक तक है।

गोली—कूलंज को गुणदायक—हिन्द का सेवन है करंजुवे की गिरी, रेंड़ी की गिरी, नकछिकनी, हींग, सोंठ बराबर पीसकर बेर के बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली गुनगुने पानी से खावे।

गोली—पेट के बोझ के लिये एक गोली गरम पानी से दे और उदरपीड़ा और विसूचिका के लिये सोंफ के रस के साथ दो गोली और बद्धकोष्ठ के दूर करने को पांच गोली और दस्त लाने के लिये आठ गोलियां गरम पानी के साथ दे गुण करे कदाचित् गोलियों के सेवन से गरमी मालूम हो तो मिश्री गुलाब में पीस कर पिये।

अन्य—शोधा जमालगोटा एक टंक, रेंड़ी की गिरी दश टंक, पीले हड़ की छाल दो टंक, पारा, भुना सोहागा, जवा-

खार, हल्दी, कालीमिरच एक एक टंक कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनावे।

गोली—उदर पीड़ा को गुण करे—पीपल के पत्ते अढ़ाई पीस कर गुड़ में मिलाकर गोलियाँ बनाकर खावे।

अन्य—वायुगोला को गुण करे—समन्दरफल की गिरी, समन्दरझाग, लाहौरी नोन, कालानोन, सज्जी, सफेद तुरबुद, जवाखार, सुहागा, पीले हड़ की छाल, पीपल, सोंठ, हींग, वायविड़ंग ढाई ढाई टंक, अमलबेत दश टंक कूट छानकर गोलियाँ बनावे खूराक दश टंक।

अन्य—कूलंज और उसकी पीड़ा को गुणदायक—एलुवा, सुहागा, सेंधानोन, जवाखार, घिकुवार के रस में बेर की बराबर गोलियाँ बनावे। मुसिल की माजून—सनाय पक्की पच्चीस टंक, बनफसा, शीरखिस्त या तुरंजबीन, गुलाब के फूल, पीले हड़ की छाल, शाहतरा पाँच पाँच टंक, बड़े मुनक्के पावभर, नौशहद तिगुना खूराक तीन मिस्काल दे।

चूर्ण—जो दस्त लावे और भोजन का पाचक है—पीले हड़ की छाल, काली हड़, लाहौरीनोन, सनाय, मक्की बराबर पीसकर नौ माशे की बराबर गरम पानी से सोने के समय खावे।

शाफा—जो दस्त लाता है—गुड़ ताँबे के बर्तन में आग पर रक्खे कि घुल जावे फिर नोन पीसकर मिलावे जब खूब मिल जावे ठंडा करके शाफा बनाकर रोज सेवन करे और केवल नोन का भी शाफा खुलासा दस्त लाता है।

अन्य—कूलंज के खोलने के वास्ते—महुये के बीजों की गिरी पानी में पीसकर शाफा बनावे।

अन्य—मोम दो टंक उसमें आधा टंक नोन मिलाकर तेल में शाफा बनावे और शाफा जब निकल आवे फिर रख दे।

अन्य—मदार की जड़ खरल करके गुदा में रखना खुलासा दस्त लाता है और पानी में पीसकर पेट पर भी गुनगुना लेप करे।

अन्य—चूहे की मेंगनियाँ साँभरनोन बराबर शक्कर मिलाकर

कि मधुरी शाँच पर जमाकर छुहारे की गुठली के अनुसार बत्ती बनाकर तेल में भिगोकर गुदा में रक्खे।

अन्य शाफा—साबुन का टुकड़ा खुरमा की गुठली के सदृश बनाकर तेल में भूनकर रक्खे।

काढ़ा—कूलंज को गुण करे—सोये के बीज, मेथी दो दो तोले या कम या जियादह स्वभाव के अनुसार लेकर औटाकर दो तोले घी डालकर पिये।

अन्य—कूलंज और पेट की पीड़ा को गुण करे—सोंठ, अरंड की जड़ एक एक टंक, हींग, सोंचरनोन एक एक माशे, सोंठ और अरंड की जड़ को तीनपाव जल में औटावे जब आधपाव शेष रहे साफ करके पहिले हींग और नोन को महीन करके गोली बनाकर खा ले फिर काढ़ा पिये।

अन्य—अरंड की जड़ जलाकर उसकी राख हथेली भर खावे वात और पेट की पीड़ा दूर हो जाती है मुहम्मदज़करिया ने कहा है कि मैंने देखा बहुत मनुष्यों को कूलंज की बीमारी होती थी उन्होंने भेड़िये की खाल अपने सेवन में खब की यहाँ तक कि उसी पर बैठते थे और सोते थे और घोड़े पर डालकर सवार होते थे सो यह रोग होना बन्द हो गया।

अन्य—सुहाव का तेल अर्थात् तितली मलना कि उसका नुस्खा पीछे वर्णन हो चुका है कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

काढ़ा—उस कूलंज की पीड़ा और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये जो स्वभाव की सर्दी के साथ हो—अरण्ड की जड़ दो दाम जो हरी हो तो चार दाम लेकर आधसेर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके रेंड़ी का तेल दो तोले, हींग तीन माशे मिलाकर गुनगुना पिये।

अन्य—हालों के बीज पाँच टंक पानी में औटाकर शक्कर और थोड़ा तिलों का तेल मिलाकर पिये।

औषधि—मुख्य करके कूलंज को दूर करती है—मेहँदी के बीज आधे मिस्काल, सौंफ के अरक या उसके रस में मिलाकर खावे।

अन्य—रियाज में लिखा है कि जो मनुष्य बारासिंगे का सींग जलाकर एक चमचा माउल असल में मिलाकर खावे तो फिर कूलंज न होगा और पीड़ा दूर होगी।

अन्य—आधा टंक मीठा तेल शक्कर में मिलाकर पीना कूलंज को गुणदायक है।

अन्य—गुनगुना जल पीना उस कूलंज को जो निर्बलता से होवे नष्ट करता है।

अन्य—बकरी की मेगनियां लड़की के मूत्र में औटावे फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना मले।

अन्य—साखू के पत्तों का रस निचोड़कर उसमें पारा पीसकर नाक के चौगिर्द मले।

अन्य—चँबेली का तेल गरम करके रुई उसमें भिगोकर पेट पर रक्खे।

अन्य—साबुन गरम पानी में पीसकर पेट पर उसके चौगिर्द लगावे।

अन्य—हुक्का पीना कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

लेप—रेंड़ी की गिरी, एलुवा, महुये के बीजों की गिरी सब को कूटकर सिरके में पकाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—लहसुन का खाना और पीसकर लगाना कूलंज की पीड़ा के लिये आश्चर्यदायक गुण रखता है।

अन्य—बकरी का पित्ता गुनगुना नाभि के नीचे मलना दस्त लाता है और लड़कों के बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये मुख्य करके उत्तम है।

लेप—वैद्यों का सेवित है दस्त बराबर लाता है और लड़कों के डब्बे के लिये अति गुणदायक है—सुहागा तेलिया, तूतिया, जमालगोटे की गिरी एक एक टंक थूहड़ के दूध में पीसकर नाफ के गिर्द लेप करे।

टिकिया—कुन्दर आंतों की पीड़ा और पेचिश को गुण करे—कुन्दर, सोये के बीज, सौंफ पांच पांच टंक, करफ्शा के बीज

तीन टंक, अजवायन अढ़ाई टंक कूट छानकर पानी में टिकिया बनावे शरबत एक मिस्काल एक मनुष्य के मेदे में कीड़े पड़ गये थे उसको मैंने मुसिल दिया कीड़े दूर हो गये फिर मन्दाग्नि हुई और यह अफरा और भोजन के न पचने के कारण कभी कभी कीड़े पैदा होते थे यह माजून मैंने उसके लिये विचारी बहुत लाभ दिया—पोदीना, सौंफ, सातर, अनीसून, जीरा, तुरंज की छाल, दारचीनी एक एक टंक, अजवायन आधा टंक, इलायची, धनियां, चन्दन गुलाब में पीसकर दो दो टंक, चार आमलों का मुरब्बा बीज निकालकर तिगुने शहद में माजून बनावे ।

पेट के कीड़ों का यत्न ।

यह आंतों में पैदा होते हैं और उनके कई प्रकार हैं—एक लम्बे सांपों के सदृश होते हैं दूसरे चोड़े कि उनको हुब्बुलकरा और कद्दूदाना कहते हैं तीसरे छोटे कीड़े शिरके कीड़ों के सदृश स्थिर आंतों में होते हैं यह बहुधा मिथ्या आहार और गुदा के न धोने से लड़कों की आंतों में पैदा होते हैं ।

यत्न—एक दो दिन दूध पीकर यह गोली सेवन करे—सनायमक्की, गुलकन्द पांच पांच तोले, पीले हड़ की छाल, जंगीहड़ दो दो तोले, सोंठ, दाख, मुनक्का एक एक तोला शहद में गोलियां बनावे खूराक एक तोला धनियें की जवारिश खाना जिसका वर्णन कोष्ट के रोग में हुआ है गुण करे ।

इतरीफल—जो कीड़ों को निकालता है काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, वायविड़ंग दश टंक, तुरबुद खोखली करके हुब्बुल नील आधा आधा टंक, कमीला, कड़वी कूट, हिन्दीनोन तीन तीन टंक कूट छानकर तिगुने शहद में मिलावे खूराक चार टंक पर्यन्त खाय ।

चूर्ण—पेटके कीड़ोंको मारता है और दूर करता है और भोजन को पचाता है—अजमोद, वायविड़ंग, लाहौरीनोन, जवाखार, पीलेहड़ की छाल, पीपल, सोंठ यह सब औषधि बराबर ले हींग

भूनकर एक भाग की आधी कूट छानकर खूराक दो टंक निहार मुँह खाय।

कमीले की गोली—पेट के कीड़ों को दूर करने के लिये गरम करे—हींग, पोदीना, वायबिड़ंग, हिंदीनोन, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर गोलियाँ बनावे तीन गोलियाँ खावे कभी इसमें तुरबुद खोखली की हुई अधिक करते हैं।

अन्य—वायबिड़ंग हिन्दीनोन दो दो टंक बनी हुई तुरबुद आधी टंक, मिश्री बराबर लेकर गोलियाँ बनावे खूराक दो मिस्काल गरम पानी के साथ खाय।

चूर्ण—हर प्रकार के कीड़ों को गुण करे—वायबिड़ंग, लाहौरी नोन, कमीला, पीलीहड़ की छाल बराबर कूट छानकर आधा दाम गौ के दही के साथ खावे भोजन खिचड़ी खावे।

दूसरी गोली—दस्त लाती है और कीड़ों को दूर करती है—काला जीरा तीन माशे, वायबिड़ंग दरमना तुरकी दो दो माशे, खोखली की हुई तुरबुद, अफनैनी, सोंठ, कतीरा, एलुवा एक एक माशा कूट छानकर गोलियाँ बनाकर खावे खूराक एक गोली है।

काढ़ा—कीड़ों को गुण करे वैद्यक में लिखा है—खट्टे अनार की छाल, तूत की छाल दो दो तोले कुचलकर पानी में औटाकर साफ करके पिये बड़े कीड़ों और कद्दू दाने को गुण करे।

अन्य—बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावे जब एक सकोरा भर पानी रह जावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खाकर सो रहे इसी प्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली—कोष्ठ के कीड़ों को गुण करे—करंजुवे के बीज, पलाशपापड़ा, अजवायन, कमीला, वायबिड़ंग, गुड़, बराबर लेकर गोलियाँ बनावे खूराक आधा टंक।

अन्य—छोटे कीड़ों के लिये जो लड़कों की गुदा में पड़ जाते हैं गुण करे—रसौत, चाकसू छिली हुई, हींग दो दो माशे, एलुवा एकमाशा, कालीमिरच आधामाशा, नींब की पत्तियाँ

दो, कुकरौंधे के रस में महीन पीसकर ज्वार के बराबर गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली खाय ।

अन्य—मुर्लास, कत्था सफेद, अफीम, बर की पत्तियाँ, पुराना नारियल बराबर लेकर मूँग की बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली लड़के को खिलावे।

अन्य—कीड़ों को गुण करे—दाख मुनक्के में उसके बीज की बराबर वायविड़ंग भर दे जवान को बीस दाने और लड़के को पाँच दानों से दश दानों तक खिलावे और उत्तम यह है कि मुनक्के निगल ले ।

अन्य—बेल का सुम जलाकर उसकी राख शहद में या गुड़ में मिलाकर खाना हब्बुलकरा को गुण करता है ।

अन्य—बड़े कीड़ों को गुण करे जो लड़कोंकी गुदामें उत्पन्न होते हैं—शफतालू के पत्ते जलाकर कड़वे तेलमें मिलाकर गुदापर मले।

अन्य—काले धतूरा के पत्तों का रस, पान का रस निकाल कर प्रतिदिन दो बेर उँगली से लगाकर गुदा के अन्दर फेरे या कपड़े की बत्ती बनाकर औषधि से भरकर गुदा में फेरे सब कीड़े मर जावें ।

अन्य शाफा—नोन से शाफा करना लड़कों के कीड़ों को मारता है ।

अन्य—कद्दूदाने को दूर करे—पहिली रात दो मुट्ठी तिल थोड़े गुड़ में मिलाकर खावे उसके प्रभात को चार टंक कमीला एक टंक साबुन मिलाकर तीन गोलियाँ बनाकर गरम पानी से निगल जावे सब कद्दूदाने दस्त से निकल जावें ।

अन्य—दरमना तुर्की, अनार के दाने के साथ जवकुटकर प्रति प्रभात को बादाम के बराबर खावे खुलासतुल्तिजारब ने इस औषधि को परीक्षा किया हुआ लिखा है ।

अन्य—लड़कों के बड़े कीड़ों को गुण करे—बरगद के पत्तों का रस या भँगरे के पत्तों का रस या धतूरे की पत्तियों का रस प्रतिदिन दो तीन बेर गुदा में मले ।

कांच के निकल आने की औषध।

यह रोग बहुधा लड़कों को अतीसार के उपरान्त होजाता है।

औषध-कांच के निकलने को गुण करे-पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर इसकी राख गुदापर छिड़के।

अन्य-पहिले गुदापर तेल मले फिर लसोढ़ा जलाकर पीस कर उसपर छिड़के।

अन्य-लड़कों के कांच निकल आने को गुण करे-रोगी अपना मूत्र बासन में लेकर जब दिशा से हो आवे उस मूत्र से पहिले गुदा को धोवे फिर पानी से इस्तंजा करे तो तीन दिन में गुण करता है।

अन्य-बबूल की फली, पान, धवई के फूल औटाकर उसके काढ़े में बैठे या उसके पानी से इस्तंजा करे।

अन्य-आंब की पत्तियां, जामुन की पत्तियां और उसकी छाल दोनों जवकुट कर औटा कर उस जल से शौच करे।

अन्य-जब गुदा शोथ के कारण अन्दर न जावे कई बेर गरम पानी में बैठना और गुलरोगन उसपर मलना आराम देता है।

औषध-कांच निकलने को गुण करे-बकरी का सुम जलाकर माजू. अनार के फूल, अनार की छाल, भुनी फिटकरी बराबर कूट छानकर छिड़के।

लेप-अण्डे की सफेदी गुदापर बाहर और भीतर से लगाना पीड़ा और सूजन को गुण करता है और बासलीक की फस्द खोलना सूजन और पीड़ा को दूर करता है।

लेप-गुदा की सूजन को गुण करे-जौ का आटा, मसूर, अण्डे की सफेदी, रोगन गुल में मिलाकर लेप करे।

चूर्ण-कौंच के निकलने को और उसकी पीड़ा को गुण करता है-सोंठ, आमला एक एक टंक, धनियां, लाहौरीनोन, कालानोन दो दो टंक, कालीमिरच चार टंक, पीपलामूल बारह टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे खूराक दो टंक।

बवासीर का यत्न।

यह रोग दो प्रकार का है एक वह कि गुदा के किनारे मस्सों की अधिकता होवे और उससे रुधिर निकले उसको खूनी बवासीर बोलते हैं दूसरे वह कि गुदों में मस्से न हों और पेट में करा कर होवे और रुधिर न निकले इसको बादी बवासीर बोलते हैं।

यत्न—चूतड़ की हड्डी पर सींगी लगाना उत्तमोत्तम यत्न है और बवासीर के रुधिर को पहिले बन्द न करे परन्तु जब अधिक निकले और रोगी निर्बल होजावे बन्द करदे—हकीमों ने लिखा है कनिष्ठिका और अनामिका के बीच में दागदेना बवासीर को गुण करता है और हँसली पर दागदेना बवासीर के लिए गुण करे और दाग के उपरान्त रुई पानी में भिगोकर उसपर रक्खे कि जारी रहे हरासघार के बीजों की गोली बवासीर के लिये गुणकारक अद्वितीय है हरासघार के बीज छीलकर एक तोला भर कालीमिरच तीन माशे कूट छान कर गोलियां बनावे खूराक तीन माशे ठण्ढे जल के साथ खाय।

गोली—बादी बवासीर के लिये गुण करे और कब्ज नहीं करती और स्वभाव को नरमरखती है सौंफ, पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला दो दो टंक, गूगल, रसौत चार टंक, गुँदनी के बीज एक टंक, अंजीरें चार हड़ों को पहिले घी में भूनकर दो भाग किशमिश कूट कर उसमें मिलाकर गोलियां बनावे अनुमान से खावे।

औषध—गाय का दूध आध सेर पिये और जब दूध का प्याला मुँह से लगावे कागजी नींबू का रस उसमें डाल कर तुरंत पी ले तीन दिन में गुण प्रकट होगा।

कुकरौंधे की गोली—यह नुस्ख़ा वैद्यों का आजमाया हुआ है—एक सेर कुकरौंधे का रस मधुरी अग्नि पर औटावे जब गाढ़ा होजावे एक टंक कालीमिरच पीसकर मिलावे फिर खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक गोली शाम को खावे।

कंघी के पत्तों की गोली–खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–कंघी की पत्तियाँ २१ काली मिरचें २१ पानी में पीसकर सात गोलियाँ बनाकर एक सुबह एक शाम खावे ।

गोली–बवासीर के लिये गुण करे–कलमीशोरा, रसौत बराबर पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली प्रभात को खाया करे लेप के लिए भी यह गोली उत्त-मोत्तम औषध है ।

अन्य–खूनी और बादी बवासीर को नींब के बीजों की गिरी, बकायन के बीजों की गिरी, गूगल, रसौत, एलुवा, काली-मिरच, गेरू, मकोय की पत्ती के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली सुबह एक सन्ध्या को खावे ।

अन्य–बवासीर का रुधिर बन्द करे–रसौत सात माशे, बीजों समेत दाख मुनक्के चौदह माशे, कतीरा सात माशे, सबको कूट छानकर जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक हर सुबह को एक गोली उसके ऊपर ले दो ग्रास रोटी के घृत के साथ खावे ।

अन्य–खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–रसौत दो भाग, अनार की छाल चार भाग, गुड़ आठ भाग कूट छान कर गोलियां बनावे खूराक चार टंक ।

अन्य–बवासीर खूनी के लिये सफेदसज्जी, चूना सफेद, चने भूनकर आठ आठ टंक कूट छानकर बत्तीस टंक गुड़ में मिलाकर बत्तीसही गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली सुबह और शाम ।

अन्य–बादी बवासीर को गुण करे–हड़ एक टंक, काला-जीरा आधा टंक, दोनों भून-कूटकर गन्दने के जल में गोलियां बनावे खूराक एक गोली ।

गूगल की गोली–खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला दश दश टंक, सीप और बारहसिंगे का सींग जलाकर एक एक टंक अजवायन तीन

टंक, गूगल दुगुना औषधियों को लेकर पानी में गोलियाँ बनावे ।

अन्य—नई कालीहड़, बहेड़ा, आमला एक एक भाग, कन्द बराबर गुलाब या जल में पीसकर गोलियाँ बनावे खूराक दो टंक खाय ।

गोली—खूनी बवासीर को गुण करे—बकायन के पत्ते पावभर, खारीनोन एक दाम पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनावे ।

गोली—खूनी बवासीर के लिये अंडे का छिलका जलाकर सन्द रूश शेतरज हिंदी पांच पांच माशे लाल नौसादर कूट छानकर रीठे की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक छः गोली खाय ।

हलवा—बवासीर के रुधिर बहने को गुण करे—मुचुकुन्द के पुष्प महीन कूट छानकर शक्कर और घृत में हलवा बना कर एक तोला खावे ।

इतरीफल—बवासीर खूनी और बादी को गुण करे—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, धनियाँ एक एक भाग, गूगल गंदने के जल में कजली करके तीन भाग पर्यंत शहद में तैयार करे।

चूर्ण—बवासीर का रुधिर बन्द करे—एक नारियल के ऊपर की छाल लेकर जलावे और उसकी बराबर शक्कर मिलाकर तीन खूराक करे जारी खून बन्द हो जावे और एक वर्ष पर्यन्त मैथुन न करे ।

अन्य—बादी बवासीर को गुणदायक—बकायन के बीज की गिरी, सौंफ एक एक टंक कूट छानकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक आधा टंक खाय ।

अन्य—बवासीर का रुधिर बन्द करे—जली हुई इस्पन्द, जले हुये गेहूँ बराबर पीसकर खूराक तीन माशे पर्यन्त दो तोले घृत के साथ खाय ।

अन्य—कड़वे इन्द्रयव जो सब कामों में मीठों से अति बलवन्त हैं बवासीर और अतीसार के लिये आजमाये हैं प्रतिदिन छः माशे ठण्डे पानी के साथ सेवन करे ।

अन्य–हंकोल की जड़ कि जिसको अंकोल भी कहते हैं एक माशा कालीमिरच इसके बराबर लेकर चूर्ण बनाकर खावे और उसका बफारा देना भी बवासीर को गुण करता है।

अन्य–कुसुम के फूल खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–कुसुम के फूल तीन माशे पानीमें पीसकर दही में मिलाकर खावे।

अन्य–मूली के वरक छीलकर छाया में सुखावे फिर कूट-छानकर एक हथेली के बराबर बराबर की शक्कर मिलाकर चालीस दिन तक फाँके।

काली जीरी का चूर्ण।

खूनी और बादी बवासीर के लिये गुणदायक–कालीजीरी तीन टंक आधी कच्ची और आधी पक्की प्रतिदिन साठी के चावल के पानी के साथ एक टंक खावे।

अन्य–जंगी हड़ घी में भूनकर शक्कर मिलाकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे।

अखरोट का चूर्ण।

जो बवासीर के रुधिर को बन्द करता है–अखरोट की छाल जलाकर बद्धकोष्ठकारक द्रव्यों के साथ खावे।

हुलहुल का चूर्ण।

जो खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–हुलहुल के बीज एक भाग शक्कर दो भाग मिलाकर दो माशे खावे।

चूर्ण–बवासीर के रुधिर को बन्द करता है–निर्मली जलाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य–इमली के चिया की राख एक माशे से दो माशे पर्यन्त दही के साथ खावे।

अन्य–पाव भर कण्डे जलाकर उसकी भस्म घड़े में रखकर आधा घड़ा पानी उसमें डालकर आठ दिन रक्खे और प्रतिदिन घड़े को हिलाया करे आठवें दिन पानी को हिलाकर कपड़े से छानकर मिट्टी के तगार में रक्खे और फोग उसका दूर करके छाया में सुखावे फिर प्रतिदिन छः माशे

उसमें से लेकर उसी प्रकार सात दिन पर्यंत खावे और इस समय में मूँग की दाल चावल खिचड़ी भोजन करे और सात दिन के उपरान्त फिर खावे और पथ्य न करे चौदह दिन में बवासीर बिल्कुल दूर हो जावेगी सम्भोग न करे।

करंजुवे का चूर्ण।

करंजुवे की गिरी एक पीसकर एक तोला शक्कर मिलाकर खाया करे और इस औषध के सेवन में चिकना भोजन करे।

चूर्ण—जंगली कबूतर की बीट बबूल के फूल की जरदी बराबर लेकर महीन पीसकर एक माशा प्रभात को गुलाब मिलाकर खावे वादी और खटाई से पथ्य करे तीन दिन में आराम हो जावे।

अन्य—बवासीर को गुण करे—बबूल के फूल बराबर शक्कर लेकर प्रतिदिन एक हथेली भर खावे।

अन्य—अंबाहूली छाया में सुखाकर महीन पीसकर उससे आधी कालीमिरच पीसकर मिलाकर आधादाम ताजे पानी के साथ खावे।

चूर्ण—रुधिर को बन्द करता है—गेरू, खरिया मिट्टी बराबर आधादाम लेकर दही और चावल के साथ तीन दिन पर्यंत प्रभात को खावे।

अन्य—जमीकन्द टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे फिर छीलकर कूट छानकर प्रतिदिन एक दाम निहार खाना गुणदायक है।

अन्य—कुड़ा की छाल, गोपीचन्दन, नागकेशर, रसौत बराबर फंकी बनाकर प्रतिदिन दो टंक खावे।

अन्य—बवासीर की पीड़ा को शांत करता है पीले हड़ की छाल घृत में भूनकर सौंफ एक एक भाग कूटकर हालों के बीज साबित दो भाग मिलाकर प्रतिदिन नौ माशे एक चमचा शक्कर मिलाकर खावे।

काढ़ा—जो बवासीर को गुणदायक है—करील की जड़ छाया

में सुखाकर फिर जवकुटकर तीन सेर जल में औटावे जब आध सेर शेष रहे साफ करके पावभर इस जल में से प्रभात को और शेष सन्ध्या को पिये सात दिन हद्द दश दिन में रुधिर बन्द हो जावेगा और बवासीर गल जावेगी।

अन्य-रुधिरको बन्द करे-धवई के फूल एक दाम एक प्याले पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रभात को बिना मले के छान कर पिये ऊपर से एक दाम शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य-आमला, मेहँदी की पत्तियां दश दश दाम डेढ़पाव जल में रात्रि को भिगो दे प्रभात को साफ करके पिये।

औषध-बवासीरको गुण करे-रूसे की पत्तियां छायामें सुखा कर कूट छान कर रक्खे और चार पांच वेर प्रतिदिन गुदापर मले।

अन्य-बवासीर को गुण करे-भंग की पत्तियां, नींब की पत्तियां, बकायन की पत्तियां, इमली की पत्तियां, सँभालू की पत्तियां, नीलकी पत्तियां बराबरकूट छानकर औटाकर बफारा ले।

अन्य-चन्दाल औटाकर बफारा ले।

अन्य-हाथों पांवों के नाखून छीलकर जलाकर बफारा ले।

अन्य-अरहर की पत्तियां, सिरस की पत्तियां, धवई के फूल, भंग की पत्तियां, लोध बराबर एक दाम औटाकर बफारा ले।

अन्य-भंग की पत्तियां गौ के दूध में पकाकर पहिले उसे खावे फिर पीसकर गुदा के छिद्रपर बांधे।

अन्य-गैंड़े का सींग जलाकर बफारा ले।

अन्य-कुचला जलाकर उसका धुआं ले पीड़ा और रुधिर दूर हो।

अन्य-गिलहरी का मांस सुखाकर कूटकर सुबह और शाम थोड़ा जलाकर धुआं ले।

अन्य-अरण्ड के पत्ते जल में औटाकर बफारा ले।

अन्य-सन्दरूस का तेल मलना बवासीर को सुखाता है मुख्य करके गन्दने के बीज मिला कर मलना।

अन्य-जवासे के काढ़े में बैठना बवासीर को गुणदायक है।

अन्य–हुलहुल की पत्तियां औटाकर उससे शौच करे और हुलहुल का साग दही के साथ खाना बवासीर के रुधिर को बन्द करता है।

अन्य–अस्तंजा तेल बवासीर को गुणकारक है–संदुर चार माशे, घी एकदाम फूल के कटोरे में डालकर जैनवृक्ष की लकड़ी से कि उसके शिरपर एक दाम सीसा लगाया हो कजकी करे कि सीसे का असर भी उसमें आजावे और मरहम की रीतिपर होजावे तब बवासीर पर मले।

बरमे का तेल–हरेपत्ते नील के कूटकर रस निकालकर मीठे तेल में औटावे जब तेलमात्र शेष रहे बवासीर पर मले।

गन्दने का तेल–गन्दने का रस निचोड़कर उसको एकभाग लेकर अर्धभाग मीठे तेल में औटावे कि पानी जलकर तेल रहजावे थोड़ा यह तेल लेकर थोड़ा उसमें गूगल मिलाकर बवासीर पर लगावे।

अन्य–घी, आलू, जरदआलू के बीज की गिरी को कंद के मिलाने के बिना रोगन बादाम की सदृश तेल निकालकर बवासीर पर लगावे।

धतूरे का तेल--मीठेतेल में धतूरे का फल जलावे जब तेल शेष रहे उसमें रुई भिगोकर बवासीर पर बांधे।

बिच्छू का तेल–पथरी और पार्श्वशूल को दूर करता है। और बवासीर को गुण करता है–कई बिच्छू मीठे तेल में डालकर एक शीशी में भरकर चालीस दिवसपर्यन्त धूप में रक्खे वह तेल लेकर बवासीर पर लगावे।

अन्य–घीकुवरा बवासीर पर मलना पीड़ा को शांति देता है।

लेप–पांच छः तोले सीसे का एक दस्ता बनावे और एक दाम बिनौले की गिरी उससे पीसे जब एक दामके अनुमान दस्ता भी उनके साथ पीसकर औषध मरहम सदृश हो जावे लेप करे।

अन्य–कचनाल और जामुन और मौलसिरी की छाल को पानी में औट कर इस्तंजा करे बवासीर को दूर करता है।

तेल–तूतिया एक माशा, मुल्तानीमिट्टी पांच माशे, सेंदुर दो माशे, मीठा तेल दो तोले पीसकर तेल में मिलाकर दिशा के उपरान्त अंगुली से बवासीर पर खूब मले।

अन्य–बवासीर को गुणदायक–आध पाव फिटकरी भूनकर घी में खूब हल करे जब मरहम की भाँति हो जावे फिर सोये के बीज पानी में पकाकर पीसकर पहिले उसको गुदा पर बांधे फिर वह मरहम रुई में लगाकर गुदा पर रक्खे और प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त और सन्ध्या से प्रभात तक सात दिन बराबर लँगोट कसे रहे कि सब मस्से बैठ जावेंगे।

अन्य–बवासीर को गुण करे–नरमे के पत्ते दो दाम महीन पीसे और मेहँदी आधा दाम पीसकर उसमें मिलावे और घृत में गरम करके कपड़े पर रखकर गुदा पर बांधे बहुत गुण करे।

अन्य–बादी बवासीर को गुण करे–कुकरौंधा के पत्तों का रस बवासीर पर मले और उसके ऊपर उसके पत्ते बांधे।

अन्य–हरी कनेर की जड़ पानी में पीसकर थोड़ा मस्सों पर जो दिशा फिरते समय निकल आते हैं लगावे यद्यपि यह औषध बहुत पीड़ा करती है परन्तु अति गुणदायक है।

अन्य–खटमल बवासीर पर मलना बहुत गुण करता है।

अन्य–आबजन बवासीर और उसकी पीड़ा को गुण करे–जवासा औटाकर उसमें बैठे जो मूत्र बन्द हो गया हो उसको भी खोलता है।

अन्य–ऊँट के चमड़े पर बैठना मुख्य करके बवासीर को गुण करे।

अन्य–उस हुक्के के पानी से जो पीला हो और दुर्गंधित हो शौच करना गुण करे।

अन्य–मदार के पत्तों से मिट्टी के बदले गुदा को साफ किया करे।

औषधियों की गोली।

बवासीर को गुणदायक है व मस्सों को तीन दिन में दूर करती है-शोराकलमी, भुनी फिटकरी पीसकर साबुन के पानी में गोलियां बनावे और दिशा से निश्चिंत होकर प्रभात और सन्ध्या तीन दिन एक गोली गुदा में रक्खे परंतु इस औषध से कुछ दुःख होता है।

औषध-हरे अरंड के पत्ते पीसकर गुदा पर बांधे।

अन्य-बवासीर के खून को बन्द करे-जंगली गोभी का साग पकाकर खावे।

अन्य-बवासीर की जलन को गुण करे-काई गुदा पर मले।

अन्य-रुधिर बन्द करती है आंब की कोंपल पानी में पीस छान थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य-कसौंधी दो तोले के अनुमान आधपाव जल में पीस छानकर दो तीन माशे गेरू मिलाकर पिये जामुन की कोंपल दो दाम का शीरा निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य-गेंदे की पत्तियां छः माशे से एक तोलेपर्यन्त और कालीमिरच दो माशे से तीन माशेपर्यन्त पीसकर पिये।

अन्य-फराश एक वृक्ष है उसकी कोंपल एक टंक थोड़े जल में पीस छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य-बवासीर खूनी और बादी को गुण करे-आंब के पत्ते और जामुन के पत्ते एक एक दाम गाय का दूध पावभर पत्तों से पानी मिलाने विना रस निकाले जो न निकले थोड़ा दूध मिलाकर निकालकर उसमें थोड़ी शक्कर डालकर आठ दिन पर्यन्त इसी तरह पिये खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य-खूनी और बादी बवासीर को गुण करे-छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर उँगली से लेप करे।

अन्य-छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर डेढ़ टंक लाल शक्कर के साथ पिये।

अन्य–खूनी बवासीर को गुण करे–बन्दाल पुराने गुड़ में मिलाकर शाफा करे तीन दिन में गुण करे।

अन्य–हरे आँब के पत्ते मलकर तम्बाकू के बदले हुक्के में पिये।

अन्य–कलौंजी जलाकर पीसकर मलना गुण करता है और शहद में मिलाकर गुदा में रखना भी बवासीर को गुण करे।

अन्य–रेंड़ी का गूदा बवासीर की पीड़ा को जो वह दाह बिना हो ठहराता है।

अन्य–मेथी का काढ़ा बवासीर को गुण करे।

अन्य–सूखे या हरे गूलर पानी में पीसकर मिश्री में मिलाकर पीना खूनी कै और खूनी अतीसार और खूनी बवासीर और ऋतु के रुधिर को गुण करता है।

गुले शदवर्ग का अरक।

जो बवासीर को गुण करे–पावभर गेंदे की पखुड़ियाँ दो सेर केले की जड़ के रस में रात को भिगोकर सुबह अरक खींचे दो तोले सुबह और दो तोले शाम को पीना बवासीर रोग के दूर करने के लिये अति गुण करे।

अन्य–काँच निकलने को गुणदायक–सन के बीज जलाकर काँच पर छिड़के।

अन्य–काँच निकलने को गुणदायक–अलसी जलाकर गुदा के घाव पर छिड़के।

अन्य–बकरी का सुम या सींग या अंडे का छिलका या कागज जलाकर गुदा खुजलाकर छिड़कना घाव को गुण करे।

अन्य–लसोढ़ा जलाकर छिड़के।

अन्य–पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर छिड़के।

अन्य–माजू, अनार की छाल पीसकर छिड़के।

गुरदे और फुकनी के रोगों का यत्न।

पथरी और मसाने और मूत्र की फुकनी दोनों में की पीड़ा जगह से अन्तर में मालूम हो सक्ती है रेत और पथरी गुरदे में लाल रंग की होती है और फुकनी में श्वेत।

यत्न—गाढ़ी चीजों से पथ्य करना अवश्य है और प्रकृति को नरम करना इस रोग में उचित है।

अंगूर के पत्तों का शरबत।

गुर्दे की पथरी को गुण करे—मुनक्के पन्द्रह टंक, गोखुरू दश टंक, परशियावसान अर्थात् हंसराज सात टंक, अधकुचले खरबूजे के बीज पाँच टंक, सौंफ अधकुचली तीन टंक, अंगूर के नरम पत्ते चालीस टंक एक रात दिन जल में भिगोवे सुबह को जोश देकर तिगुनी शक्कर में शरबत का कवाम करे।

हजरूलयहूद की फंकी।

पथरी और फुकनी को गुण करे—हजरूलयहूद तीन टंक, खरबूजे की गिरी, खीरे ककड़ी के बीज, गोखुरू और कुलथी हर एक दो दो टंक, सौंफ, अजमोद, सम्सगअरबी एक एक टंक कूट छानकर फंकी बनावे खुराक दो दाम चने के काढ़े के साथ और जो इन औषधियों को तिगुने शहद के साथ कवाम करे उसको माजून हजरूलयहूद कहते हैं।

गुलदाउदी की फंकी।

फुकनी को गुण करे संगसाने को गुण करे—गुलदाउदी की पखुड़ियाँ साफ करके कूट छानकर शक्कर बराबर की मिलाकर खावे और औटाकर पीना भी गुण करता है।

अन्य—जवाखार, सुहागा दो दो माशे, गोखुरू के शीरे के साथ दिये।

अन्य—नींबू के पत्ते जलाकर उसका खार निकाल कर दो माशे खाया करे।

अन्य—अगूर की लकड़ी की राख छः माशे गोखुरू के शीरे के साथ खावे।

अन्य—करंजुवे की कोंपल सुखाकर जलाकर उसकी दो टंक भस्म दो तोले शहद मिलाकर खावे।

अन्य—तिल की लकड़ी जलाकर उसकी दो टंक भस्म एक दाम सिरके के साथ खावे।

अन्य-जंगली कबूतर की बीट दो टंक उसके बराबर शक्कर मिलाकर पानी के साथ फांके मुख्य उस कबूतर की बीट जिसको दाने के बदले अलसी खिलाई हो।

करंजुवे की गोली-फुकनी और पार्श्वशूल को गुण करे- करंजुवे की गिरी कूटछानकर एक माशेके अनुमान तीन माशे शहद के साथ प्रतिदिन खावे और एक माशा प्रतिदिन अधिक करते जावे ग्यारहवें दिन से एक माशा कम करना शुरू करे यहां तक कि तीन माशे पहुँच जावे पार्श्वशूल दूर हो जावेगा।

आवजन-इसके दो अर्थ हैं कि औषधि का पानी या गरम पानी सदा बड़े बर्तन जैसे कि डेग आदि में भरकर उसमें रोगी को बैठावे दूसरे तरेड़ा कि पानी को लोटे या मशक में भरकर दूर से रोगी के अङ्ग पर डाले आवजन पार्श्वशूल और फुकनी को गुण करे करम्ब के पत्ते, मूली के पत्ते, सलगम के पत्ते, तिलके पत्ते, खतमी के पत्ते, छः छः टंक पानी में औटावे जब अर्ध शेष रहे आवजन करे।

अन्य-कबूतर की बीट, सोये के बीज, करंजुवा, सौंफ की जड़, गोखुरू, खरबूजे की छाल, मेथी, खतमी के बीज, अश्नान अर्थात् छड़ीला हरएक थोड़ासा यथाविधि आवजन करे।

काढ़ा-कि संग गुरदे और मसाने को तोड़ता है-मुलहठी, कुलथी हरएक तीन टंक, सौंफ दश टंक चार प्याले पानी में जोश दे जब एक प्याला पानी रहे साफ करके तीन माशे लाहौरीनोन और थोड़ा घी मिलाकर पिये।

अन्य-मुहम्मदजकरियाने लिखा है कि जो अंगूर के वृक्ष की कोंपल जोश करे और थोड़ी शक्कर मिलाकर हर रोज पिये सब गुरदे की बीमारियां दूर होजावें।

अन्य--काहू चने के साथ जोश देकर उसका पानी पिये।

अन्य-जवारिश कलौंजी की जिसका नुस्खा मेदे के रोग में वर्णन हुआ संगगुरदा और दर्दगुरदा को दूर करता है।

अन्य-पत्थरफोड़ी एक वृक्ष है उसकी पत्ती एक दाम पीस

छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये संगगुरदे को दूर करने वाली है और सूखे पत्ते हरों मे कम गुण रखते हैं।

अन्य–संगगुरदे को दूर करे और मूत्र जारी करे–झाड़ू की सींक के फूल दो तोले लेकर दोपहर जल में भिगोकर उसका साफ पानी लेकर उसमें खीरे ककड़ी के बीज, गोखुरू जवासा छः छः माशे, भंग एक दो माशे पीस छानकर मिलावे और थोड़ी शक्कर डालकर पिये।

अन्य–मूली के पत्तों का रस चार दाम निचोड़ कर, अज-मोद तीन माशे फांक कर उसी रस से निगल जावे।

अन्य–संगगुरदे और मसाने को गुणदायक–पृये की पत्ती महीन पीसकर पिये।

अन्य–चौलाई का साग खाना पथरी को गुणकारक है।

अन्य–यदि दर्दगुरदा वायु से हो रेंड़ी की गिरी पीसकर गुनगुनी लगावे।

आवजन–पथरी को गुणदायक–तिल की पत्ती पानी में औटाकर रोगी को उसमें बैठावे।

औषध–उस दर्दगुरदे को गुण करे जो सरदीसे हो–पांच दाने इस्पन्द के निगलना शुरू करे और हर रोज पांच दाने बढ़ावे जब सौ दाने होजावें पांच पांच दाने प्रतिदिन कम करे पार्श्वशूल दूर हो जावेगा।

अन्य–यदि तिल के वृक्ष की कोंपल छाया में सुखाकर जलाकर दो तीन टंक खाया करे संगगुरदा दूर हो जावे।

अन्य–जवासे का अरक गुरदे की बीमारी को गुण करे ऋतु के रुधिर की रुकावट को भी दूर करता है।

अन्य–तिनली का तेल जो शीत की पथरी और मसाने और गुरदे की पीड़ा के लिये उसका मर्दन करना लाभदायक है उसका नुस्खा फालिज के रोग में वर्णन हुआ।

लाभ–जालीनूस ने कहा है कि लोहे की अँगूठी या छल्ला पहिनना मुख्य करके पथरी के रोग को गुण देता है।

उसमें ऐसी ठंढी औषधियों का सेवन करे कि मूत्र लावे और सब लुआब मूत्र की चिनग को गुण करती हैं।

बीजों की गोलियाँ–मूत्र की चिनग को गुण करती हैं–खुरफे के बीज, सफेद खशखाश के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, खरबूजे के बीज, तरबूज के बीजों की गिरी पाँच पाँच टंक, छोटा गोखुरू, सम्मगअरबी, कतीरा दो दो टंक, ईसबगोल के लुआब में गोलियाँ बनावे खूराक तीन माशे।

गोली–पेशाब की चिनग के लिये बहरोजे को गलाकर पानी में डाले और उसके बराबर कतीरा और भूने छिले चने पीसकर मिलावे और चने की बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली गोखुरू के शीरे के साथ खावे।

गोली–सूजाक को गुण करे–पियाबाँसा का छोटा वृक्ष जलाकर उसकी राख कतीरे के पानी में मिलाकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे हर सुबह एक गोली गुलखैरू के जल से जो रात को भिगोया हो पिये नये और पुराने सूजाक को गुण करती है।

चूर्ण–सूजाक को गुणकारक–संगजराहत, राल, मिश्री, दो दो तोले, तालमखाना, गोखुरू, सरयाली एक एक तोला कूट छानकर चौदह भाग करे प्रतिदिन एक भाग बकरी के दूध की लस्सी के साथ फाँके।

अन्य–सूजाक को गुण करे और पीप बंद करे–भुनी फिटकरी, गेरू एक एक टंक, शक्कर बराबर लेकर चूर्ण बनावे और प्रतिदिन सात माशे गाय के दूध के साथ खावे।

औषध आजमाई हुई–ठण्ढे स्वभाव के सूजाक को गुण करे–सहँजने का गोंद हर सुबह एक तोला पीसकर सात दिन दही के साथ खावे।

चूर्ण–सूजाक को नाश करे–तालमखाना, खुरफे के बीज, सरयाली, गोखुरू, काहू के बीज, संगजराहत बराबर लेकर

चूर्ण बनावे–खूराक एक एक तोले गाय के दूध के साथ खाय।

अन्य–सूजाक की पीप को बन्द करने के लिये–कतीरा, भंग के बीज, सरवाली, राल सफेद, कालीबीजबन्द, लालबीजबन्द बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक दो टंक।

अन्य–सूजाक को लाभ करे–हल्दी, आमला बराबर कूट छानकर उसकी बराबर शक्कर मिलावे खूराक एक तोला पानी के साथ नवीन सूजाक को एक सप्ताह में दूर करता है और जो रह जावे तो दो महीने तक सेवन करे।

अन्य–सूजाक की पीप को जो निनग के रह जाने के उपरांत बाकी रहे गुण करे–राल पीसकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर तीन टंक अठारह दिन तक रोज खावे।

अन्य–सूजाक को गुण करता है और पीप को नाश करता है–ढाक की कोंपल सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाल, ढाक के फूल कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो मिस्काल हर रोज दूध के साथ खावे आजमाया हुआ है।

अन्य–सूजाक के लिये आजमाया हुआ है–शोराकलमी, लाल इलायची एक एक दाम कूट छानकर छः भाग करे एक हिस्सा सुबह और एक शाम खाया करे और चौथे दिन से इसी तरह खावे कि दो तीन दाम साठी के चावल के जल में भिगोवे और सुबह को उसके पानी के साथ तीन दिन पर्यन्त खावे।

अन्य–नाजबकस एक वृक्ष है उसे हिन्दी में सुरग का केश कहते हैं उसके बीज एक तोला दो तोले कन्द में चूर्ण बनावे और हर सुबह बीस दिन पर्यन्त खावे।

अन्य–बरगद की कोंपल छाया में सुखाकर पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दूध की लस्सी के साथ सुबह को सात दिन तक खावे।

औषध–दो तोले निशास्ता एक प्याले पानी में रात को घोल दे सुबह निहार पिये।

औषध–मेहँदी के पत्ते, आमला, सफेद जीरा, धनियाँ,

गोखुरू एक एक तोला जवकुट करके रात्रि को भिगो दे सुबह साफ करके एक तोलाभर शक्कर मिलावे पहिले तीन माशे कतीरा कूट छान कर खावे उसके ऊपर यह कल्क पिये।

अन्य–छिले चने पावभर, टेसू के फूल, जीरा सफेद दो दो दाम सबको एक सेर जल में आठ पहर भिगोवे आधपाव उसका पानी सुबह को और उतना ही सन्ध्या को पिये जब पानी कम होवे और डालदे।

अन्य–फालसे की जड़ एक दाम जवकुट करके पानी में भिगो दे सुबह मलकर साफ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–अधकुचली आंब की छाल दो दाम रात को पाव-भर जल में भिगो दे सुबह को मलकर छानकर एक सप्ताह पर्यंत पिये।

अन्य–नये सूज़ाक को गुणकारक–फनीशफली दो तोले रात को पानी में भिगो दे सुबह छानकर थोड़ी शक्कर मिला कर पिये।

अन्य–नये सूज़ाक के लिये–सदासुहागन वृक्ष के पत्ते एक तोला रात्रि को जल में भिगो दे सुबह मलकर छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–कुड्डलतल्ख एक दाम जवकुट करके रात को जल में भिगो रक्खे सुबह को उसका स्वच्छ जल लेकर आठदाम मुरमक्की रात को पानी में भिगो रक्खे सुबह को उसका साफ पानी लेकर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य–रीठा एक तोले भर रात को भिगो रक्खे सुबह को उसका साफ पानी लेकर पिये।

काकुंज की कुरस अर्थात् टिकिया।

सूजाक गुरदे और मसाने के घाव को गुण देती है और मूत्र को जारी करती है–काकुंज चारटंक, खीरे ककड़ी के बीज, खुरफा, मुलहठी छिली हुई अधकुचली, खशखाश सफेद, हर एक तीन टंक, कतीरा, सम्मगअरबी, गेरू दो दो टंक,

अजमोद एक टंक, अफीम आधी टंक कूट छानकर ईसबगोल के लुआब मे टिकिया बनावे खूराक एक दाम की करे ।

काढ़ा—सूजाक को गुणदायक—सांबाहूली जोश देकर पिये ।

अन्य—सूजाक और मुश्किल से पेशाब उतरने को गुणकारक—कांदूर के बीज सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला शेष रहे साफ करके इसी तरह तीन दिन पिये ।

अन्य—सूजाक को लाभदायक—गुड़हल के फूल पहिले दिन एक बताशे के साथ खावे इसी प्रकार चार दिनपर्यंत एक एक अधिक करे पांचवें दिन से एक एक कम करे जब एकही रहे जो ईश्वर चाहे तो सूजाक दूर हो जावेगा ।

अन्य—सूजाक के लिये गुणकारक है—नींब के पत्ते, चँबेली के पत्ते औटाकर उस गुनगुने जल में लिंग को रक्खे और उसका बफारा ले आध घड़ी के उपरांत उसमें मूत्र करे इसी तरह हररोज तीन बेर करे ।

अन्य—सूजाक को गुणदायक—सदयारा अर्थात् तुख्म ताजखरूस जिसे हिंदी में कलगा कहते हैं तीन टंक महीन कूटकर आधसेर दूध में रात को चांदनी में रक्खे सुबह को पिये सूजाक और प्रमेह को गुण करे और वीर्य को पुष्ट करता है परंतु थोड़ी शक्कर मिलालेना उचित है कि शक्कर सदयारा की जुज है ।

अन्य—चिनग को गुण करे—केले के वृक्ष का रस निचोड़ कर पिये ।

अन्य—सूजाक को दूर करे—जोंक एक हिंदी वृक्ष है जो बहुधा बरसात में उगता है उसकी पत्तियां और फल एक तोला लेकर पानी में पीस छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य—सूजाक को गुण करे—दो बताशे लेकर उसमें बरगद का दूध भरकर तीनदिन प्रभात के समय खावे ।

अन्य—सात माशे जवाखार गाय के दही में पिये ।

अन्य—गंदाबिरोजा दो रत्ती थोड़े गुड़ में लपेटकर खावे और उसके ऊपर दही पानी में घोलकर पिये ।

अन्य–सूजाक को गुणकारक–सिरस वृक्ष के पत्ते पानी में पीसकर अपने स्वभाव के अनुकूल थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–बबूल की कोंपल एक तोला, गोखुरू एक तोला, दोनों का रस निकाल कर थोड़ी शक्कर के साथ पिये।

औषध–गौ का दूध थोड़ी शक्कर और कतीरे के साथ सदा पीना पुराने सूजाक को अच्छा करता है अमल स्त्री के सूजाक को दूर करता है स्त्री एक लत्ता अपनी भग के मल से भिगोकर बच्चेदार कुतिया को तीन दिन पर्यन्त खिलावे सूजाक को दूर करे।

पिचकारी–सूजाक के उस घाव को गुण करे कि लिंग के भीतर हो।

काढ़ा–तूतिया तीन माशे, फिटकरी छः माशे, आध सेर पानी में औटावे जब आधा रह जावे शीशे में रखकर पिचकारी ले यदि इस औषधि से रुधिर आने लगे तो कुछ चिन्ता नहीं जो पीड़ा अधिक हो जावे तो स्त्री के दूध की पिचकारी ले ले बाजे इस दवा में एक तोला सफेद कत्था भी अधिक करते हैं।

पिचकारी–मूत्र की चिनग को गुण करे–देकामाली एक तोला तीन तोले कडुवे तेल में पकावे जब खूब जल जावे साफ करके तेल से पिचकारी ले।

अन्य–सूजाक को गुण करे–कत्था, मुरदारसंग, रसौत आधा आधा दाम, भुनी तूतिया चार रत्ती यथाविधि पिचकारी ले।

अन्य–सूजाक को गुण करे–पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला एक एक टंक, सब्जतूतिया आधा दाम सबको कूट कर रात्रि को जल में भिगोकर सुबह पिचकारी दे।

शाफा–सूजाक को गुणकारक–कत्था सफेद, मुरदारसंग, राल, सम्मगअरबी, गेरू बराबर महीन करके शाफा बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे और कभी इसमें पीड़ा की अधिकता से अफीम अधिक करते हैं और दाह की अधिकता में कपूर बढ़ाया जाता है। लिंग के व्रण को गुणकारक–सम्मगअरबी,

निशास्ता स्त्री के दूध में घोलकर और ईसबगोल का लुआब यह सब लिंग के घाव को गुण करते हैं।

अन्य—तालाब की काई निचोड़ कर उसका थोड़ा जल लिंग के छिद्र में टपकावें।

मूत्र के अधिक आने का यत्न।

जो मसाने की सुस्ती और सरदी की अधिकता से हो गरमी और कब्ज करनेवाली औषध दे।

जवारिश—जो मूत्र को रोकनेवाली है पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल तेल में भूनकर गुलनार, नागरमोथा दो दो मिस्काल, कुंदर, अजवायन एक एक मिस्काल शहद में जवारिश बनायें।

जवारिश—सादको भी मूत्र की अधिकता और निर्बलता और मसाने की सरदी और गर्भाशय को गुण करे और कोष्ट और कलेजे को गरम और वात को दूर करती है—नागरमोथा पाँच मिस्काल पीसकर सिरके में मिलाकर तीन दिन शहद में भिगो दे और सुखा कर कूट छान कर पाव भर शक्कर में कवाम करे।

जवारिश—कुंदर मूत्र की अधिकता को गुण करे—कुंदर, गुलनार एक मिस्काल, मस्तगी एक टंक कूट छानकर शहद में मिलावे खूराक तीन मिस्काल।

कुलीजन की जवारिश—मूत्र की अधिकता को गुण करे इसका नुस्खा कोष्ट की बीमारियों में वर्णन हो चुका है।

फंकी मूत्र को रोकती है—कुन्दर, नागरमोथा, कालाकुलीजन, जीरा, बलूनहूबुल्लास, धनियाँ सिरके में भिगोकर सुखावें और पीसकर चूर्ण बनावे खूराक डेढ़ मिस्काल।

अन्य—तिल दो भाग अजवायन एक भाग लेकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर खावे या गुड़ में गोलियाँ बनावे खूराक आधा ड्राम।

औषध—मूत्र की अधिकता को गुण करे—लसोढ़े के नरम

पत्ते एक तोला भर लेकर उसका रस निकाल कर एक तोला भर शक्कर मिलाकर पिये।

तिला—अधिक मूत्र को नाश करे—इमली के बीज की गिरी सहँजने के पत्ते दोनों पीसकर प्रतिदिन नाभि के नीचे लगावे।

चूर्ण—अधिक मूत्र आने को गुण करे—सूखा सिंघाड़ा कूट छानकर शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे।

अन्य—बबूल की कच्ची फली छाया में सुखाकर कूट छान कर घी में भूने और शक्कर मिलाकर सुबह और शाम धेला भर खाया करे।

औषध—सोते में मूत्र हो जाने को गुण करे—माजूम एक तुख्मरैहाँ थोड़ी कूट छानकर खा ले।

अन्य—कुलींजन ठण्डे पानी के साथ खाना उत्तमोत्तम गुण रखता है।

अन्य—सोते में पेशाब हो जाने को गुण करे—कबूतर की बीट आटे में गूँधकर रोटी पकाकर खावे।

अन्य—नर बकरे का सींग जलाकर शहद में मिलाकर खाना अधिक मूत्र के दूर करने को उत्तम गुण रखता है खूराक दो दाम पर्यन्त।

मूत्र बन्द हो जाने का यत्न।

इस रोग के उत्पन्न होने के कारण बहुत हैं यदि मूत्र का बंद होना मसाने या गुरदे की सूजन से हो पहले बासलीक फस्द खोले उसके उपरांत वह औषध जिससे मूत्र जारी हो सेवन करे।

औषध—मूत्र बंद हो जाने को गुण करे—राई, कलमीशोरा एक एक माशे शक्कर बराबर मिलावे यह दो खूराक है सुबह को खावे पेशाब जारी हो जावे।

अन्य—गेंदे की पत्तियाँ दो तोले पानी में रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—चूहे की मेंगनी दो दाम पानी में पीसकर गुनगुनी नाभि के नीचे लगावे।

अन्य—थोड़ा कपूर जलाकर लिंग के छिद्र में रक्खे मूत्र खुल जावे।

अन्य—शोरा कलमी कपड़े में भिगोकर नाभि के नीचे रक्खे।

अन्य—मूत्र खोले—पारा दो माशे पिचकारी में रखकर छिद्र के अंदर पहुँचावे तुरंत मूत्र खुल जावे यदि पेशाब बंद हो जाने का कारण शोथ न हो थोड़ा शोरा लिंग के छिद्र में रक्खे मूत्र खुल जावे।

अन्य—पाँच रत्ती कंनूचा पीसकर पानी के साथ फाँके मूत्र खुल जावे।

अन्य—भैंस के कान का मैल रोगी की नाभि के नीचे मले।

अन्य—टेसू जोश देकर नाभि के नीचे तरेड़ा दे।

लेप—तिपतिया पेड़ू पर लेप करे।

औषध—पथरचटा अर्थात् विषखपरे के पत्तों का रस निचोड़ कर दूध में मिलाकर खावे।

अन्य—एक जूँ लिंग के छिद्र में छोड़े।

अन्य—खटमल पीसकर लिंग के छिद्र में छोड़े।

अन्य—रोगी को गरम पानी में बैठावे।

अन्य—गोखुरू, खीरे ककड़ी के बीज, सौंफ, खरबूजे के बीज पानी में पीसकर पिये।

अन्य—बकरी के गुनगुने दूध में लिंग को रक्खे।

अन्य—रेवन्द चीनी सौंफ के रस में पीसकर नाभि के चारों ओर लगावे।

अन्य—सीप पीसकर नाभि के नीचे लगावे।

अन्य—रियाजुल्अदविया में लिखा है कि अण्डे के छिलके को अंदर के परदे से साफ करके पीसकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—मूँग का दाना पानी में एक रत्ती रगड़ कर पिये।

अन्य—लाहौरी नोन गुदा में रखने से मूत्र खुलता है। और

स्वभाव नरम करता है पेठे के बीज पीस कर नाभि के ऊपर लगावे और कौड़ी भर कपूर खावे।

अन्य–शहतूत के रस में शोराकलमी पीसकर नाभि के नीचे लगावे।

अन्य–एक दाम इन्द्रायण की जड़ औटा कर पिये।

मूत्र के रुधिर के आने का यत्न।

फिटकरी को क़ुर्स अर्थात् टिकिया बनावे उसका नुस्खा यह है भुनी फिटकरी, बारासिंगे का सींग जलाया हुआ, कतीरा, गेरू, गुलनार, सम्मगअरबी एक एक टंक कूट छानकर टिकिया बनावे खूराक एक मिस्काल खुरफे के बीज के शीरे के साथ और यह टिकिया सूजाक को भी गुण करती है।

औषध–रुधिर के मूत्र के लिये आजमाई हुई है इक्कीस दाने चाकसू के महीन कूट कर खावे उसके ऊपर चन्दन बूरे का पानी कि उसमें भिगोया हो पिये।

अन्य–जवासा पीसकर पिये गुण करेगा आवजन रुधिर के मूत्रको गुणदायक है और मूत्र की अधिकता को बन्द करता है– अनार की छाल, छिले मसूर, बबूल की पक्की फली, अलसीस, बाजरा, चन्दन हरएक थोड़ा थोड़ा लेकर पानी में औटावे जब आधा रहे उसमें बैठे।

नपुंसकता का यत्न।

अर्थात् वीर्य का कम होजाना अधिक वीर्य आजाय रईसा अर्थात् मन ब्रह्माण्ड और कलेजे की आरोग्यता और कोष्ठ और गुरदे के बलसे होता है इस जगह कई सुगम औषध इस रोग की गुणदायक वर्णन की जाती हैं।

माजून–जो वैद्यों की बनाई हुई है वीर्य को बल देती और मनी को गाढ़ा करती है और वीर्य को गर्भ के लायक करती है और स्तम्भन करती है और हर्ष करती है निंबौले कड़की गिरी, खरबूजे के बीज, चिरौंजी तिल, खशखाश सफेद, सेमल का मूसला, मूसली सफेद, शतावर, असगंध, सिंघाड़े का आटा,

इमली के बीज छिले हुये, लसोढ़ा एक एक तोला, केवड़े के बीज, प्याज के बीज, शलगम के बीज, मूली के बीज, बहुफली, तालमखाना भुना हुआ, समुद्रशोष, मेदालकड़ी नौ नौ माशे, कुल्लींजन, चीनियां गोंद, नागरमोथा, तज, कौंच के बीज, छोटा गोखुरू, इन्द्रयव सोंठे, बबूल की फली, कँवल की गिरी, धवई के फूल, सेमल का गोंद, बीजबन्द, मोचरस छः छः माशे, भुनी इस्पंद गुजराती, उटंगन के बीज, अकरकरा, सोंठ, पीपल, खुरासानी अजवायनतीन-तीन माशे कूट छानकर तिगुने कन्द में कवाम करे और जो बादाम की गिरी, पिस्ता, चिलगोजा और अखरोट की गिरी तोला तोला भर, भंग दो तोले इस औषध में डाले तो उत्तम है नहीं तो गरीबों के वास्ते इतनाही बहुत है खुराक एक तोला उस दूध के साथ जिससे खुरमा जोश दी हो ।

किशमिश की माजून—वीर्य को बल देती और वीर्यको पैदा और गाढ़ा करती है—मोचरस, सालिस मिश्री, समुद्रशोष, काली मूसली, सफेदमूसली, बादाम की गिरी पांच पांच टंक, शतावर दशदाम, सोंठ, कुलींजन आधा आधा दाम, किशमिश आधसेर, कन्द एक सेर यथाविधि कवाम करे खूराक दो तोले से तीन तोले गौ के दूध के साथ जिसमें खुरमा जोश दिया हो खाय ।

मालकँगनी की माजून—वीर्य को बल देती है—मालकँगनी, अकरकरा, केवड़े के बीज, लौंग, केसर एक एक दाम, इस्पन्द सफेद आधा दाम, खशखाश सफेद पांच टंक, तिल चार दाम, मुर्ग के अण्डे की जर्दी पांच, शहद और चौगुने कन्द में यथाविधि माजून बनावे ।

दूसरा नुस्खा—मालकँगनी की माजून जो हिन्द की रीतिपर है—मालकँगनी भँगरे के रस में भिगोकर गाय के दूध और जल में औटावे जब दूध सूखजावे पीसकर बराबर शक्कर लेकर माजन बनावे आधा टंक पहिले दिन खावे और प्रतिदिन आधा टंक अधिक करके आठ टंक पर्यंत पहुँचावे और चालीस दिनपर्यंत खाया करे बूढ़े को जवान करती है ।

माजून जो बल करती है—अकरकरा, लौंग, सोंठ दो दो तोले, पच्चीस मुर्गों के अण्डे की जर्दी एक सौ बीस टंक शहद में कवाम करे खूराक चार दाम भोजन के पहिले खाय।

माजून—सफेद पियाज का रस एक सेर शहद एक सेर अग्नि पर रक्खे जब कवाम होजावे तो दरी सुर्ख और सफेद सालिम मिश्री, बहमन सुर्ख और सफेद, सोंठ, पियाज के बीज, मूली के बीज, गंदना, शलगम के बीज, तालमखाना, सफेद और काली मूसली, एक एक सेर शाही कूट छानकर यथाविधि माजून बनावे।

पेठे की माजून—तत्काल वीर्य गिरने के वास्ते अद्वितीय है और वीर्य को भी पुष्ट करती है—खरबूजे के बीज, सफेद मूसली, पेठे की मिठाई आध आध पाव, घीकुवार के पट्ठे दो, कबावचीनी छः माशे सबको महीन पीसकर आधसेर सफेद कन्द में कवाम करे खूराक एक तोला।

लहसुन की माजून—शीतल स्वभाववालोंके वीर्य को बल देती है और फालिज और लकवे को गुण करती है—लहसुन को दूध में ऐसा औटावे कि दूध सूख जावे फिर उसको घी में भूने और शहद के साथ माजून बनावे।

माजून—तत्काल वीर्य गिरने को गुण करती और पतले वीर्य को गाढ़ा करती है और पौष्टिक है—पीले हड़ की छाल, बहेड़ा, आमला, भुना खुरमा, सालिम मिश्री, मैदालकड़ी, गोखुरू, सफेद मूसली और काली मूसली, बालछड़, कौंच के बीज, सूखा सिंघाड़ा, कँवलगट्टे की गिरी, लसोढ़ा, मीठे इन्द्रयव, इमली के बीज की गिरी दो दो टंक गुलनार, शहदाना, काली अजवायन, बबुल्लास का जीरा, धनियाँ, बंशलोचन, बरगद की कोंपल, मस्तगी, शाहबलूत, बीजबन्द, सरयाली, लोध, इस्पन्द भुनी एक एक टंक, तज, असगन्ध, भुना तालमखाना, समुद्रशोष, चीनियांगोंद, नागरमोथा, धवई के फूल, मोचरस, शतांवर, बबूलकी फली, केवड़े के बीज एक एकमिस्काल, कन्द तिगुना।

कड़ का चूर्ण—वीर्य का पौष्टिक और गर्भ देनेवाला है—कड़

दोटंक, कालेतिल सात टंक, खशखाश सफेद पांच टंक, निंबोले की गिरी, तज, इन्द्रयव साढे चार चार दाम, मिश्री सम्पूर्ण औषधियों की बराबर खूराक एक तोला गौ के दूध में खाय।

पीपल का चूर्ण—जो वीर्य को बल देता है—एक सेर पीपल को दो सेर दूध में औटावे जब दूध सूख जावे पीपल को सुखा कर पीसकर प्रतिदिन एक दाम में छः दाम मिश्री मिलाकर दूध के साथ खावे।

चूर्ण—वीर्य को बल देता है और उसको पैदा करता है—सेमल का मूसला महीन पीसकर उसके बराबर शक्कर मिला कर प्रतिदिन एक तोले भर गौ के दुग्ध के साथ खावे।

अन्य—प्रमेह के लिए अद्भुत है—गोखुरू पांचटंक, सिंघाड़ा, साठी के चावल, कँवलगट्टे की गिरी हरएक तीन टंक, तालमखाना दो टंक, मोचरस, समुद्रशोष, सरयाली, बीजबन्द एक-एक टंक सम्पूर्ण औषधियों को बराबर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला।

अन्य—मनी को गाढ़ा करती है—कच्ची बबूल की फली, मौलसिरी की छाल, शतावर, मोचरस बराबर लेकर बराबर की शक्कर मिलाकर हथेली भर खावे।

अन्य—पतली मनी को जमाती है—बरगद की कोंपल, गूलर की छाल बराबर ले और सफेद शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूध के साथ खावे।

अन्य—वीर्य को पौष्टिक—पिस्ता दो तोले, मिश्री दो तोले, पिसी हुई सोंठ छः माशे सबको मिलाकर प्रतिदिन एक तोला भर शहद में मिलाकर एक रत्ती भंग महीन पीसकर उसपर छिड़क कर तीन दिन खावे।

अन्य—तत्काल वीर्य गिरनेको गुण करे—बबूल की कच्ची फली छायामें सुखाकर तालमखाना, चीनिया गोंद, छिलेहुए भुनेचने बराबर लेकर बराबर मिश्री मिलाकर हररोज एक हथेली भर खावे।

अन्य–मनी को गाढ़ा करे और शीघ्र वीर्यपात को गुण-दायक है–खिरनी के दरख्त की छाल, तज, मैदा लकड़ी, सबके बराबर शक्कर मिलाकर एक तोला भर गाय के दूध से खावे।

अन्य–चीनियाँ गोंद, बहुफली बराबर पीसकर एक तोला भर हर रोज दूध के साथ चालीस दिन तक खावे।

अन्य–वीर्य के शीघ्र गिरने को गुणकारक है–सिरस के बीज, पलास के बीज बराबर कूट छानकर बराबर की मिश्री मिलाकर एक तोला भर आध सेर गाय के दूध के साथ खावे अत्यन्त गुणदायक है।

अन्य–बन्दकुशाद को गुण करे और मनी को गाढ़ा करता है–तालमखाना, सरयारा, असबन्धगोरी समुद्रशोष, मोचरस, बराबर कूटछानकर बराबर की शक्कर मिलाकर एक हथेली भर खावे।

गोली–पतली मनी को गाढ़ी करे और शीघ्र वीर्यपातको गुण करे–इमली के बीज तीन चार दिन पानी में भिगोदे फिर उसकी काली छाल दूर करके पीसकर बराबर की सफेद शक्कर मिलाकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक दो गोली खाया करे।

चूर्ण–प्रमेह और शीघ्र वीर्यपात को गुणकारक–बबूल की छाल, बबूल की फली, बबूल का गोंद, बबूल की कोंपल बराबर कूट छानकर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला भर खाय।

दूसरा चूर्ण पतली मनी को गुणदायक–गूलर के उस वृक्ष की छाल कि जिसके रेशे पृथ्वी के अन्दर हों गोखुरू, तालमखाना, कमलगट्टे की गिरी हरएक पाँच तोले भर, बहुफली, मखाना, बीजबन्द, सरयाली, चीनियाँ गोंद हरएक तीन तीन तोले कूट छान कर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर गाय के दूध के साथ खावे।

अन्य–वीर्य के पतलेपन और जल्दी मनी गिरने को गुण-कारक–कच्चे कोंच के बीज छाया में सुखाकर महीन पीसकर तीन टंक पावभर गाय के दूध के साथ औटाकर खावे।

अन्य-लिंग के छिद्र को गुण करे-समुद्रशोष अजवायन पाँच पाँच दाम जलानेवाली इस्पन्द तीन दाम कूट छानकर सुबह और शाम एक दाम भर पानी के साथ फाँके खटाई और वादी से पथ्य करे।

अन्य-प्रमेह को गुणदायक है-हुलहुल के बीज तीन दाम, बीजबन्द तीन दाम, तालमखाना, इन्द्रयव मीठे, छोटा गोखुरू हरएक छः दाम, लसोढ़ा चौबीस दाम, शक्कर औषधियों की बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे।

अन्य-स्तंभन के वास्ते गेंदे के बीज एक दाम उसके बराबर शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य-पतली मनी को गुणदायक है-समुद्रशोष, तालमखाना, तुख्मरेहाँ हरएक पाँच टंक कूट छानकर चूर्ण बनाकर आधादाम निहार खाया करे। खटाई और वादी से पथ्य करे।

अन्य-वीर्य के शीघ्र गिरने को आँब का गोंद दो दाम, काली मूसली और सफेद मूसली, मोचरस हरएक आधादाम, कोकिनार एक भग दो माशे खूराक एक तोलाभर गायके दूध के साथ खाय।

अन्य-मनी को गाढ़ा करती है और मनी के बहाव और प्रमेह को गुण करे-सूखा सिंघाड़ा, चीनियाँ गोंद, समुद्रशोष हरएक दो दो भाग बीजबंद, मोचरस, तालमखाना, गोखुरू, कौंच के बीज, धनिया, मैदालकड़ी एक भाग, काहू के बीज आधा भाग, बराबर शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे।

अन्य-शीघ्र वीर्यपात को गुणदायक-बरगद की कोंपल, चीनियाँ गोंद, खिरनी की जड़ की छाल, लसोढ़ा, बहुफली, शतावर बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला भर गाय के दूध के साथ खाय।

दूसरा चूर्ण-प्रमेह और मनी के बहाव को गुणदायक है-बबूल की कच्ची फली ३दाम, छोटीदुद्धी जड़ और पत्तोंसमेत छाया में सुखाकर पीसकर उसकी बराबर कंद मिलाकर चूर्ण बनावे।

अन्य-पतली मनी को गुणदायक और वीर्य को बल दे-ढाक

के दरख्त की छाल और गोंद, गूलर के वृक्ष की छाल और गोंद सेंभल के वृक्ष का मूसला और गोंद, मौलसिरी की छाल, भुने चने, बबूल का गोंद बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक चार टंक।

अन्य—प्रमेह को गुणकारक और वीर्य को पुष्ट करे—काली और सफेद मूसली, तालमखाना, कौंच के बीज, उटंगन के बीज, मोचरस, ऊंटकटारू के जड़ की छाल, लाल और काला बीजबंद, बहुफली, कमरकस, साठी के चावल, शतावर, समुद्र-शोष, मीठे इन्द्रयव एक एक टंक, सिंघाड़ा डेढ़ टंक सफेद शक्कर बराबर लेकर दो टंक गाय के दूध के साथ खावे।

हलवा—पतली मनी को गाढ़ा करे—आमलेके बीज छिले हुये, ढाक का गोंद, निशास्ता एक एक तोलाभर, लालशक्कर तीन तोलेभर, घी चार तोला गरम करके निशास्ता भूनकर इमली के बीज और गोंद पीसकर मिलाकर हलवा बनावे खूराक एक तोला से दो तोलेपर्यंत खाय।

चूर्ण—मनी के बहने को गुणदायक—तालाबकी काई फिट-करी पर रखकर आग पर चढ़ाकर जलावे और उसकी राख में बराबर शक्कर मिलाकर चार माशे हररोज खाया करे।

अन्य—बरगद का फल सुखाकर गाय के दूध के साथ खावे पतली मनी गाढ़ी होती है।

गोली—वीर्य के स्तम्भन के वास्ते खशखाश, भुनी इस्पंद, शिंगरफ, गोखुरू, कुचला जलाकर बराबर कूट छानकर उस पानी से जिसमें खशखाश का पोस्ता भिगोया हो गोलियां बनावे और चार घड़ी भोग के पहिले एक गोली खावे और ऊपर से एक प्याला भर दूध पिये।

गोली—अजवायन पांच माशे, कद्दू के बीजों की गिरी छः माशे, इस्पंद नौ माशे, भंग के बीज आठ माशे, भुने चने सात माशे, अफीम तीन माशे, केसर चार रत्ती, इलायची के दाने एक माशा, खशखाशके पोस्ते दो यह सब औषध कूट छानकर उस पानी में जिसमें पोस्ते भिगोये हों गूँदकर जंगलीबेर की

बराबर गोलियाँ बनावे समय पर एक गोली खावे जो अधिक गरमी करे कद्दू के बीजों और तरबूजों और खुरफेके बीजों का रस पिये।

गोली–स्तम्भन की हकीम उलवीखां का नुस्खा–इसमें यह उत्तमता है कि अफीम नहीं है अकरकरहा एक दाम, रेहां के बीज आठ दिरम, सफेद कंद नौ दिरम कूट छानकर गोलियां बनाकर एक दिरम खावे लिखा है कि जब तक नींबू का पानी न पिये वीर्यपात न होगा।

गोली–वीर्य को रोकती है–भुनी इस्पंद, कपूर, खुरासानी अजवायन बराबर कूट छानकर अदरक के जल में चने की बराबर गोलियाँ बनाकर मैथुन से पहिले एक गोली गाय के दूध के साथ खावे।

गोली–जो रेजे की बराबर बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे स्तम्भन करे–खूबकलाँ सफेद, साफ की हुई मिश्री, कपूर, कालीमिरच और मेंडक के शिर को खूब निचोड़े जो कुछ निकले सीप से खुरचकर उठाले।

गोली–वैद्यक की आजमाई हुई है वीर्य को बलदेती है और भोग करने के उपरान्त थकान नहीं लाती और वीर्य को रोकती है जलाने का इस्पन्द पांच टंक आधा कच्चा आधा पक्का, पोस्ता, कालेतिल दो दो दिरम, गुड़ २० दिरम तीनों औषधि कूट छानकर पुराने गुड़ के साथ कूटे जब मिल जावे सात भाग करके हर भाग की एक गोली बनाकर रक्खे और सम्भोग के समय एक गोली खावे।

गोली–वीर्य के शीघ्र गिरने और प्रमेह को गुणकारी है छिले इमली के बीज, छिले बबूल के बीज, तालमखाना, सेमल की गोंड़ी, छिले सिरस के बीज, उटंगन, भंग के बीज बराबर लेकर भँगरे के रस में खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे खूराक छः माशे दूध के साथ खाय।

गोली–प्रमेह को गुण करती है–धतूरे के बीज छः माशे, कालीमिरच छःमाशे कूटछानकर कालीमिरचकी बराबर गोलियां

बनाकर हर सुबह एक गोली एक तोले भर सौंफ के रस के साथ खावे जो बीमारी पुरानी हो एक दिन में आराम होता है।

गोली–वीर्य को बल करे–ताजा केंचुवा साफ और सुखाकर छः दाम, अजवायन दो दाम कूट छानकर चार दाम गुड़ मिलाकर एक एक तोले की बराबर गोलियां बनाकर इक्कीस दिन खावे खूराक एक गोली।

गोली–पौष्टिक–कसौंधी की छाल महीन पीसकर शहद में मिलाकर गोलियां बनावे और दो दाम खाकर ऊपर से एक प्याला भर दूध पिये।

गोली–वीर्य को बल करे–काले धतूर के फूल सुखाकर चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली।

गोली–मनी को गाढ़ा करती है और वीर्य को बल देती है–छोटी दुद्धी छाया में सुखाकर पीसकर जंगलीबेर के बराबर गोलियां बनावे और सुबह को एक गोली गाय के दूध में खावे।

गोली पौष्टिक–नकछिकनी, कालीमूसली, शतावर, कौंच के बीज, उटंगन के बीज, ऊँटकटारे की जड़, मालकांगनी, गुड़ बराबर कूट छानकर अदरक के रस में जंगलीबेर की बराबर गोलियां बनाकर हर रोज एक गोली गाय के दूध के साथ खावे।

गोली–सुगम उपाय–वीर्य को बल दे–गुड़, कालेतिल दो दाम, असगन्ध नागौरी चार दाम, दो दाम कच्चे दो दाम भुने कूट छानकर चौदह गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खावे।

चूर्ण–जो प्रमेह को गुणदायक है–त्रिफला, बबूल के फूल हल्दी बराबर लेकर मिश्री सबसे आधी संयुक्त करके कूट छानकर चूर्ण बनावे तीन दिरम गाय के दूध में खावे।

चूर्ण–वीर्य को बलदे–अजवायन की भूसी आध सेर, मूली के बीज, भुने चने, जरदक के बीज, कालेतिल पाव पाव भर कूट छानकर चूर्ण बनावे और हर रोज एक तोला भर खावे।

औषध–नकछिकनी, काली मूसली, सफेद मूसली, सोंठ

बराबर लेकर चूर्ण बनाकर हर दिन आधा दिरम गाय के दूध के साथ खावे।

अण्डे का हलवा—वीर्य को ताकत दे—मुरगी का अण्डा बताशा और दो दिरम घी लेकर खूबतल करके कोयलों की आग पर रक्खे और चमचे से हिलाते रहे जब पक जावे ठण्डा करके खावे।

शकरकंद का हलवा—मनी को पैदा और गाढ़ा करता है—हरी शकरकंद खुश्क करके कूट छानकर घी और शक्कर मिलाकर हलवा बनावे बाजे भुनी शकरकंद को घी में मिलाकर हलवा बनाते हैं।

सिंघाड़े का हलवा—मनी को गाढ़ा और पैदा करता है—सूखा सिंघाड़ा पीसकर शक्कर और घी में बनावे।

औषध—लिंगछिद्र के तंग होने के वास्ते ढाक के वृक्ष की कोंपल जो खुली न हो वह पतझाड़ के पीछे मिलती है जितनी नरम हो कूटकर छः वर्ष के पुराने गुड़ में या जितना पुराना हो उत्तम है पीसकर अखरोट के बराबर चार दिन खावे।

अन्य—वीर्य को पौष्टिक—भुने चने की दाल उसके बराबर छिले बादाम लेकर हर सुबह और शाम खाना अति पौष्टिक है।

अन्य—जो ठण्डे मिजाजवाला शीतऋतु में इसको खावे वीर्य में बल और आरोग्यता की रक्षा और पाचन को हर प्रकार से गुणदायक है—पारा हर दिन एक कौड़ी भर खाना शुरू करके एक दांग तक पहुँचावे और निगलकर ऊपर से यखनी पिये।

अन्य—वीर्य को बलकारक—चिलगोजे की गिरी मीठे मुनक्के उत्तमोत्तम औषधि है इन दोनों को जल में एक रात-दिन भिगोकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—अधिक पौष्टिक है—ऊँटकटारे के जड़ की छाल एक दाम के बराबर लेकर कुचलकर पोटली बांधकर आधसेर दूध और आधपाव पानी में उबाले जब पानी सूखकर दूध रह जावे साफ करके मिठाई मिलाकर पिये और जो उसमें दो तीन छुहारे डाले तो अधिक बलकारक हो जावे।

अन्य–शहद उबाले और कफ उसका निकालकर मूली के बीज पीसकर उसमें मिलाकर सुबह और सोते वक्त खाया करे।

अन्य–वीर्य को बल करे ढाक की जड़ एक पाव लेकर दो तीन सेर पानी में उबाले जब आधा पानी जलकर शेष गाढ़ा हो जावे उसमें से थोड़ा लेकर पान के साथ खाया करे।

अन्य–कफ की प्रकृतिवालों के वीर्य को बल दे–शहद, भिलावाँ, गाय का घी बराबर कवाम करके खूराक प्रकृति के अनुकूल दे।

अन्य–वीर्य की पुष्टि के लिये जो छः महीने खावे सब तरह से प्रभाव करे–जंगली सहँजने का वृक्ष जो नर्म और छोटा हो उसकी जड़ लेकर टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे और अजवायन की भूसी और छिले उर्द तीनों को बराबर लेकर उसके बराबर गुड़ मिलावे और अखरोट के बराबर गोलियाँ बनाकर हर सुबह एक गोली खावे।

अन्य–गुड़हल के फूल सुखाकर कूटकर कन्द में मीठा करके चालीस दिवस पर्यन्त दो मिस्काल रोज खाया करे।

अन्य–चार दाम असगन्ध कूट छानकर एक सेर दूध में औटावे और दश दिरम मिश्री मिलाकर दोनों समय खावे बदन का रंग लाल हो जावे और तैयारी और वीर्य अधिक हो।

अन्य–जो मैथुन के उपरान्त खाय कम ताकती न होवे–खैरुलतिजारब में लिखा है कि जो मैथुन के अनन्तर चार दाम गुड़ खावे–निबलता न होवे।

अन्य–वीर्य को बल करे–सिंघाड़ा हर दिन गायके दूधमेंखावे।

अन्य–वीर्य को पुष्ट करे–अरण्ड की कोंपल आधपाव, मांस आधसेर दो प्याला पकाकर तीन दिन तक खावे।

अन्य–खशखाश दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ आधा दिरम कूट छानकर मिलाकर चालीस दिन खावे।

अन्य–गोखरू, शक्कर, गाय का घृत सबको कूटकर मिला कर खाय और उसके ऊपर गाय का दूध पिये।

अन्य-भग्न और वीर्य को वल दे-आमलासार गन्धक लेकर विसखपरे के रस में इतना खरल करे कि गाढ़ा हो जावे सो हर दिन एक चावल के बराबर पन्द्रह दिवस पर्यन्त खावे।

अन्य-दूध चाँवल खाना वीर्य को पैदा करता है और चने का होला खाना उसको पुष्ट करता है।

अन्य-मनी और अधिक खुले छिद्र को गुणदायक-एक बताशा में थोड़ी बूँदें बरगद का दूध डालकर खाया करे।

अन्य-दो तोले चिनौले आधसेर गाय के दूध में पका कर खावे।

अन्य-बेर की गुठली की गिरी पुराने गुड़ में मिलाकर पीसकर खावे।

अन्य-सर्व प्रकार के प्रमेह को गुणदायक-ईंट पुरानी कच्ची कूट छानकर एक भाग शक्कर दो भाग चूर्ण करके हर रोज एक दिरम खावे।

अन्य-मनी के बहने को गुणदायक और शीघ्र वीर्यपात को लाभ दे यदि स्त्री को खिलावे योनि संकीर्ण हो जावे-अंडे का छिलका जितना चाहे जल में डालकर इसके अंदर के महीन परदे को दूर करके छिलकों को वर्तन में रखकर उसमें नींबू का रस इतना डाले कि एक उंगल छिलकों के ऊपर आजावे फिर उस पर कुछ कुछ छिपाकर रख दे यहाँ तक कि रस छिलकों में पच जावे तीन वेर इसी तरह करे फिर उसके छिलकों को मट्टी की कुल्हिया में रखकर कपड़मिट्टी करके जंगली कण्डे की गजपुट अग्नि दे जब ठण्ढा हो जावे फिर उतनी ही आग में रक्खे इस तरह तीन वेर आग देने में छिलके जलकर सफेद हो जावेंगे सो निकाल कर दो रत्ती शहद में मिलाकर खावे खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य-दूब का बोंड़ा हर सुबह को बासी जल में पीस छान कर एक सप्ताह पिये।

चूर्ण-लिंग के छिद्र के बढ़ जाने को गुण करे-खिरनी की

छाल, गोंदी की छाल, लसोढ़े की छाल, आंब की छाल हर एक बराबर लेकर शक्कर बराबर मिलाकर निहार एक वहलोली पर्यंत पानी के साथ खाय।

अन्य-वीर्य को रोके-आक के फूल, धतूरे के फूल, काली मूसली, इस्पंद् पांच पांच टंक पीसकर घी में भूनकर पंद्रह टंक शहद् में मिलाकर बराबर एक टंक के शहद् में मिलाकर खावे और उसके ऊपर दूध पिये।

अन्य-वीर्य को पुष्ट करे-सोंठ, पीपल, जरदक के बीज बराबर लेकर अण्डे की जरदी के साथ खावे।

अन्य-अजवायन, काले तिल एक एक भाग, खशखाश आधा भाग, गुड़ में मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला।

अन्य-खिरनी के बीजकी गिरी सुखाकर तीसरा हिस्सा उसका शक्कर मिलाकर गायके दूधके साथ खावे बीर्य को बल देता है।

अन्य-चाहिये कि हर सुबह को मीठा आंब खावे ऊपर से गौका दूध जिसमें दो तीन खुरमे और कुछ सोंठ में जोश दिया हो पिये वीर्य को अधिक और शरीर को पुष्ट करता है और दिमाग को बल देता है और पका हुआ शरीफा खाना मनी को पैदा करता है और कटहल भी बीर्यको बल देता है इसी तरह कटहल के बीज भूनकर खाना गुण करता है।

आंबों का हलवा-जो वीय को बलकारक और मनी को पैदा करता है-मीठे आंबों का रस तीन सेर, शक्कर सफेद् एक सेर, गौ का घी आध सेर, शहद् पाव भर, सोंठ एक तोला, पीपल छः माशे, शतावर एक तोला, सालिबमिसरी, बादाम की गिरी चार चार तोले, कुलींजन छः माशे, लाल बहमन और सफेद् बहमन एक एक तोला, सेमर का मूसला एक तोला, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, सुरमे की तरह कूट कर चार तोले पहिले आंब का रस और शहद मिलाकर दूध डाल कर शरबत बनावे फिर गिरियां पीसकर घी में भूनकर शरबत में मिलावे और औषधियां बनाकर हलवा बनावे।

लहसुन का तेल ।

लिंग की सुस्ती को गुण करे—लहसुन को अलसी के तेल में औटाकर साफ करके राई, अकरकरा, नींबू के बीज, माल-कंगनी हरएक थोड़ा कूट छानकर तेल में जलाकर उस तेल से कई दिन मर्दन करे सुस्ती दूर हो जावे ।

गुलशब्बो का तेल—वीर्य को बल देता है—गुलशब्बो लेकर तेल में मिलावे जब फूल कर कुम्हिला जावे और बदल दे इसी प्रकार तीन बेर बदले फिर साफ करके थोड़ा अकरकरा पीस कर मिला कर लगावे और उस पर पान बांधे ।

तेल—वीर्य को बल दे—भटकटैये की पत्तियां, कड़ुवा तेल चार चार दाम, बड़ा काला बिच्छू जो मिल जावे तो अच्छा नहीं तो जिस तरह का हो पहिले तेल को गरम करके पत्तियों की टिकियां बनाकर बिच्छू और टिकिया को उसमें डालकर जलावे जब खूब जल जावे कपड़े से छानकर रक्खे और एक रत्ती भर पान में लगाकर लिंग पर बांधे ।

अन्य तेल—कहरा जो कि एक जीव टीड़ी के सदृश है और उसके पर नहीं होते उसको दबान और रसूल भी बोलते हैं और उससे बुलबुल को पकड़ते हैं पांच छः लेकर चार पांच दाम गाय का घी और एक दाम केसर मिला कर बर्तन में रख कर जलावे फिर हल करके लिंग पर मले ।

ऊंटकटारे का तेल—लिंग की सुस्ती को गुण करे—ऊंट-कटारे का वृक्ष जड़ टहनी और पत्तों समेत बकरी के दूध में भिगो कर पातालयन्त्र से तेल खींच कर लिंग पर मले ।

चींटियों का तेल—सौ बड़ी चींटियाँ जो बड़ी कबरों और आंब के दरख्तों पर होती हैं लेकर चमेली के तेल में डाल कर शीशे में भर कर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर तेल लेकर मर्दन करे ।

चमेली की पत्तियों का तेल ।

स्तम्भन करनेवाला और वीर्य को बल देता है—सफेद चमेली की पत्तियां पीस कर उसका रस निकालकर मीठे तेल

में जलावे जब पानी जल जावे तेल लेकर शीशे में रक्खे भोग के दो घड़ी पहिले लिंग पर मल कर पान बांधे—तेल जो हथरस वाले को गुण करे और वीर्य को बलदे—कपड़े को मदार के दूध में एक दिन रात भिगो रक्खे फिर निकालकर सुखाकर उस में घी लगाकर दो बत्तियां बनाकर जलावे और उसके नीचे कांसे की थाली रक्खे जो तेल बत्ती से थाली में टपके लिंग का शिर छोड़कर मले ऊपर से पान या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य—चमेली की पत्तियां एक पाव, मीठा तेल एक पाव, दोनों को कड़ाही में डालकर औटावे जब पत्तियां जलकर तेलमात्र रह जावे कड़वी कूठ, कच्चा सुहागा, आधी आधी बहलोली थोड़े तेल में डाले जब मिलाकर ओषधियों का रंग लाल हो जावे उसी समय कड़ाही उतार कर जहरतेलिया आधी बहलोली मिलाकर तेल को फूल के बर्तन में डालकर नींब की लकड़ी दो पहर हल करके शीशे में रक्खे और एक माशा लेकर लिंग का शिर छोड़कर लेप करे और उसके ऊपर पान बांधे इसी प्रकार एक सप्ताहपर्यंत एक दिन बीच देकर लगावे इस अवसर में मैथुन न करे।

चमेली का तेल—वीर्य को बल देता है—चमेली की पत्तियों का रस, धतूरे की पत्तियों का रस, हरएक दो दाम, मीठातेलिया, कड़वीकूठ एक दाम, मैनसिल आधा दाम, सुहागा एक दाम, तिलों का तेल सात दाम, ओषधियां पीस कर टिकिया बनाकर तेल में पानी मिलाकर उसमें जलावे जब पानी जल जावे दवायें पीसकर रक्खे और एक सप्ताहपर्यन्त मर्दन करे।

जोंक का तेल—वीर्य को बल दे सात बड़ी जोंकें आधपाव मीठे तेल में जलाकर साफ करके लिंग पर मले।

तैल—जो वीर्य को बल दे—मालकांगनी और कुचले का बुरादा, पलाश के बीज, जंगली कबूतर की बीट, चार चार दाम, सफेद कौड़ी दो टंक, रात को बकरी के दूध में भिगोकर सुबह आतशी शीशे में तेल निकालकर मर्दन करे और दूसरे

नुस्खे में सफेद कौड़ी के बराबर अकरकरा भी लिखा है।

अन्य–एक बालिश्त कपड़ा महीन लेकर आधसेर धतूरे के रस में इक्कीस दिन तक रक्खे कि रस कपड़े में सूख जावे फिर पांच टंक तिलों के तेल में मधुरी आंच पर पकावे उसके उपरान्त निकाल कर कपड़े को लोहे की सींक में लटका कर उसके नीचे थाली रक्खे और एक ओर से कपड़े में आग लगा दे जो कपड़े से तेल उस थाली में टपके उसको लेकर रक्खे और दो बूँदें प्रतिदिन चार दिनपर्यन्त मले।

अन्य–सुगम वीर्य का बलकारक और हथरस लगानेवाले को गुण करे–मीठा तेलिया दो दाम, मूली के बीज आध दाम, जमालगोटे की गिरी सम्पूर्ण औषध महीन पीस कर आधपाव तिलों के तेल में खरलकरके उसमें से थोड़ासा लेकर सेवन करे।

अन्य–सुगम और बलकारक–छः टंक मीठा तेल मधुरी आंच पर जोशदे और आधा टंक लाल हरताल पीस कर उसमें मिलावे उसके उपरान्त सुहागा फिर कड़वीकूट एक एक टंक उसमें मिलावे फिर चमेली की पत्तियों का रस डाल कर अग्नि पर रक्खे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे लिंग पर मले और ऊपर से पान बांधे।

अन्य–वीर्य को बल देता है और लिंग की सुस्ती को दूर करता है–लोध, फिटकरी, अरण्ड के जड़ की छाल, नख, असगंध एक एक टंक दो टंक कूट कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्रबढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक यहसम्पूर्ण औषध पीसकर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और लिंग के छिद्र में टपकावे जो छिद्र बहुत तंग हो नींब का तेल टपकावे और बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य—मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ोंको मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है।

लाभ—वन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और वह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीजें वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती हैं।

तैल—वीर्य का बलदायक—लाल और सफेद घुंघची की दाल, हरताल एक एक दाम बकरी के दूध में खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी—वीर्य को बल करे—महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगो कर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगो कर सुखावे फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगो दे फिर लिंग का शिर छोड़ कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को प्रति समय अलसी के तेल में भिगो रक्खे।

पट्टी—कपड़ा आंबा हल्दी में रँग कर सुखावे फिर धतूरे के रस में तीन बेर फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे फिर भैंस के घृत में मधुरी आँचपर भूनकर आवश्यकता पर पट्टी पर शहद लगा कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीस कर उस पर छिड़क कर तीन दिन बांधे।

अन्य—वीर्य का बलकारक—मदार का दूध आधपाव साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बँध जावे और कड़ाही लसके कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे फिर चार माशे अफीम डाल कर हल करे जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंगको शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेट कर गजी की पट्टी से लपेट

कर एक पहर बैठे रहे फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवसपर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता का गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है—मदार का दूध उसकी बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेलमात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसकको गुण करे—काले जवान मुर्गको जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसकी बराबर जवान गधेका रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कमहोगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोगकी इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है—मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एक एक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंगके टेढ़ेपने को दूर करना है और वीर्य को पुष्ट करना है। एक मारू बैंगन जो दरख्तमें पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचवे तेल में मिलावे जब केंचवे जल जावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन

पर्यन्त हर रोज एक माशा भर लिंग पर मलकर बरगद या लसोढ़े के पत्ते उस पर बाँधे जो ईश्वर चाहे तो आराम होगा।

अन्य-वीर्य का बलदायक-सफेद घुँघची, अकरकरा, बीरबहूटी सवा तीन २ माशे, संखिया एक माशे, दो आतशी शराब में तीन दिन खरल करके रात्रि को लिंग पर लगाकर उस पर पान कच्चे तागे से बाँधकर सो रहे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यंत बाँधे इस अवसर में सम्भोग न करे।

अन्य-वीर्य को बल करे-मनुष्य के कान का मैल, सुवर की चरबी मिलाकर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करे।

अन्य-वीर्य को बल दे-सफेद कनेर के जड़ की छाल बराबर गधे के मूत्र में पीसकर लिंग पर मले और बाजे इसमें थोड़ा शिंगरफ भी डालते हैं उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बाँधे कि सूख जावे।

लेप-वीर्य को बल दे-जहर तेलिया, आँबाहल्दी, मैदा लकड़ी आधा आधा दाम अलग अलग कूट छानकर तीन पुड़िया बनाकर एक पुड़िया ताजे पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़कर लिंग पर लगावे ऊपर से पान लपेटकर सारे दिन बाँधा रक्खे दूसरे और तीसरे दिन भी इसी तरह करे चौथे दिन घी धोकर लिंग पर लेप करे।

अन्य-एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर पहिले घृत को लोहे के बर्तन में गरम करके जीती जोंक उसमें डाल दे जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुँचे उतार कर सँभल का गोंद एक टंक मैदे की सदृश महीन पीसकर उसमें मिलावे और नींब की लकड़ी से चार पहर रगड़कर लिंग पर लगावे और जो बड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावे।

अन्य-वीर्य को बल दे-कनेर की जड़ धतूरे के जड़की छाल धतूरे की जड़, भंग के जड़ की छाल, मदार की छाल बराबर लेकर छाया में सुखाकर कूट कर धतूरे के पत्ते के रस में बेर

की बराबर गोलियाँ बनावे और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीसकर लिंग पर लगा कर सुखाकर भोग करे।

अन्य—सफेद सरसों, कड़वी कूट, बड़ी कटाई का फल, असगंध की जड़ बराबर ले और कूट छानकर पानी में मिलाकर लिंग पर मले जब सूखने लगे छुड़ा डाले तीन चार दिन इसी तरह करे लिंग बढ़ जावे जो सरसों सफेद न मिले तो पीले काफी हैं।

अन्य—केंचुवा एक तोला, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर पर्यन्त खरल करके थोड़ा लेकर मले उसके ऊपर कनेर के पत्ते या अरण्ड के पत्ते बाँधे।

अन्य—इस्पन्द, रेंड़ी की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूट छानकर चमेली के तेल में खरल करके दोनों समय इस तरह पर लिंग पर मले कि सुबह को धूप में और शाम को निर्वातबन्द मकान में बैठकर लगावे जो जाड़ों के दिन हों तो अँगीठी जला कर आगे रखले और हरबेर अँगीठी से हाथ सेंक कर नाभि के नीचे से रान तक मर्दन करे मर्दन का कम से कम अवसर पाँच घड़ी है यह रीति साहब जादुलगरीब की आजमाई हुई पुस्तक से है।

लेप—जो कि बहुत मजा देता है—ताजी बीरबहूटी उसकी बराबर भिड़का छत्ता लेकर तिल्लों के तेल में कजली करके लेप करे।

अन्य—पारा तीन दाम, गाय के बारह पित्ते आधसेर भँगरे के रसमें लोहेकी कड़ाही में लोहे के दस्तेसे एक पैसा उसपर लगाकर छःदिवस पर्यन्त कजली करे जबगाढ़ा होजावे जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोलकर लगावे।

लेप—स्तम्भन करता है—खुश्की में रहनेवाले मेंढक को साये में सुखाकर उसके शिर और पाँव काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियाँ बनावे समय पर लिंग पर सुपारी छोड़कर लेप करे।

अन्य—जो लिंग की सुस्ती को दूर करे—असगंध गजपीपल कड़वी कूट महीन पीसकर गौ के मक्खनमें मिलाकर पन्द्रहदिन पर्यन्त हर रोज दो बेर मले और गरम पानी से धोवे और दूसरे नुस्खे

में गजपीपल के बदले दालचीनी लिखा है और एक पुस्तक में लिखा है कि एक बड़ा मेढक जो कुयें में रहता हो लेकर उसकी गुदा सी दे और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खे जब सूख जावे मेढक का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बँध जावेगी निकाल ले और मैथुन के समय मुख में रक्खे वीर्यपात न होगा।

अन्य–गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम पानी से धोवे पन्द्रह दिवस इसी प्रकार सेवन करे।

अन्य–मजा देता है–जंगली कबूतर की बीट और उसकी चरबी और लाहौरी नोन और शहद यह चारों वस्तु बराबर लेकर पीसकर लिंग पर मले और भोग करे बड़ा मजा पावेंगे।

लेप–बहुत मजादे–मारू बैंगन मिट्टी में लपेटकर भूभल में रक्खे फिर मिट्टी दूर करके बैंगन का पानी निचोड़ कर छान कर कई पीपलें तीन दिन पर्यन्त उसी पानी में भिगोवे चौथे दिन निकाल कर सुखाकर महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करके मैथुन करे। Ram is a good boy

अन्य–वीर्य को बलदायक–कनेर की जड़ की छाल महीन पीसकर भटकटैये के रस में खरल करके कई दिन लेप करे।

अन्य–टेढ़े लिंग के वास्ते जो हथरस लगाने से होवे गुण करे–पहिले तिलों का तेल लिंग में मले फिर हालो पीसकर गुनगुना लेप करे फिर ऊपर पान या अरण्ड का पत्ता लपेट कर उसके गिर्द गिर्द खपाचे रखकर पट्टी से दृढ़ बाँधे और एक पहर के पीछे खोलकर गुनगुने पानी से धोवे सात दिन के सेवन से टेढ़ापन दूर हो जावेगा।

अन्य–लिंग के स्थूल होने के वास्ते हर रात को ताजे दूध से लिंग को मलकर सूखे केंचुवे पीसकर उस पर मला करे।

अन्य–कायफल भैंस के दूध में पीसकर लेप करके सारी रात बाँध रक्खे सुबह गरम जल से धोवे कई दिन यही किया करे।

अन्य–रीठे की छाल अकरकरा बराबर तेज शराब में खरल

करके सिवाय लिंग के शिरके मले और उसके ऊपर पान लपेटे इस प्रकार कई दिन सेवन करने से गुण मालूम होगा।

अन्य–वीर्य का बलकारक–कमलगट्टे का जीरा, उत्तम शहद खूब महीन पीसकर मिलाकर सुपारे के सिवाय लिंग पर मले ऊपर से कपड़ा लपेटे और दोपहर के पीछे दूर करके गरम पानी से धोवे और फिर इसी तरह करे।

अन्य–लिंग को बड़ा करता है–दो टंक इन्द्रजव भैंस के ताजे दूध में भिगोकर चार पहर उसको पीसकर गुनगुना लिंग पर मले ऊपर से कपड़ा लपेटकर सो रहे सुबह गरम पानी से धोवे कई दिन बराबर यही किया करे।

अन्य–लिंग को सख्त करे–उटंगन के बीज कूटछानकर लिंग पर हर रोज दो बेर लेप करे कई बेर यही सेवन करे।

लेप–स्तम्भन और लिंग के सख्त होने को गुण करे–असगन्ध की जड़ जवकुट कर काले धतूरे के रस में बीसबेर भिगोकर सुखावे फिर पीसकर रक्खे समय पर थूक में हल करके लिंग पर मले और एक पहर के पीछे मैथुन करे और भोग के उपरांत गौ का घी लिंग पर मले।

अन्य–चमेली के तेल में राई पीसकर लिंग पर लगावे।

अन्य–अकरकरा दो भाग जंगली प्याज का रस दशभाग पीसकर लिंग पर लगावे।

अन्य–गाँजा रेंडी के तेल में खरल करके फिर लत्ते पर लपेटकर बाँधे थोड़ा छीलता है परन्तु वीर्य को बल देता है और हथरसवाले को गुण करता है।

अन्य–हलहल के बीज दो भाग उसकी छाल एक भाग महीन कूट छानकर मीठे तेल में चार पहर खरल करके लगावे।

अन्य–लौंग, समन्दरफल की गिरी एक एक शहद में पीसकर लगावे।

रेंडी का तेल–हथरस वाले के वास्ते मीठा तेल, रेंडी की

गिरी, पाव भर दोनोंको औटाकर हल करके शीशे में रक्खे और रोज मला करे हथरसवाले को बहुत गुण करे।

अन्य—जंगली कबूतर की बीट की सफेदी, चम्बेली के तेल में पीसकर लेप करे।

अन्य—लिंगके खड़े होने और सख्ती होने के लिये गुण करे—इस्पन्द चम्बेली के तेलमें पीसकर लगावे।

अन्य—चमगादड़का लहू लिंगपर मले बीर्य में अधिक बल होवे।

अन्य—सूसमार अर्थात् गोहका गूह लगाना बीर्य को बल देता है।

अन्य—सर्पकी चरबी और मछली और जंगली सुवर की चरबी बकरी के मूत्र में तीन दिन खरल करके लेप करे।

अन्य—रोहू मछलीकी चरबी मलना गुण करता है।

अन्य—चूहे की मेंगनियां शहदमें मिलाकर लिंगपर लगाना बीर्य को बल देता है।

अन्य—छोटी कटाईका फल बीज दूर करके पीस कर लिंगपर लगावे और उसपर अरंड के पत्ते बांधे।

अन्य—पारा एक दाम शहद दो दाम दोनों को लोहेके पात्र में लोहे के दस्ते से हल करे जब एक जात हो जावे कपड़े पर लपेट कर लिंगपर लपेटे जब खड़ा हो जावे दवा को दूर करके सम्भोग करे और एक रोहू का मगज इसमें डाले उत्तम है और लेप करने के उपरांत बँगला पान गरम करके कच्चे तागे से उस पर लपेटे इसका सात दिन सेवन करना उचित है।

अन्य—असारों, बकरी के ताजे दूध में पीसकर सदा लिंग पर लगाना बीर्य को बल देता है।

अन्य—लिंगकी सख्ती के वास्ते मूली के बीज दशटंक मीठे-तेलमें औटाकर दोनों समय लिंग पर मले सुस्ती दूर करता है।

अन्य—मुरदारसंग, मुरगा के पित्ते में पीसकर लिंगपर लगा-कर स्त्री के पास जावे परंतु बीर्यपात न हो स्त्री बँधजावेगी।

अन्य–हींग गौके पित्तमें हलकरके गोली बनाकर आतशी शीशेमें तेल निकाले वह तेल मले।

अन्य–मजेके वास्ते स्त्रीके शिरके केश जलाकर उसकी राख अरण्डीके तेलमें मिलाकर लिंगपर लगावे और मैथुन करे और जो कबूतर की बीट की सफेदी भी मिलावे बहुत गुण करेगा।

अन्य–वीर्य के स्तम्भन के वास्ते गुण करे–थूहरका दूध गौ का दूध दोनों बराबर लेकर सारेदिन धूप में रक्खे रात को तेल में मले जब सूखजावे दो घड़ी के पीछे मैथुन करे।

अन्य–काले धतूरे की पत्तियों का रस निकालकर दोनों टखनों पर लगावे जब सूखजावे भोग करे।

अन्य स्तम्भन–कपूर, कटाई के जीरे के साथ शहद में पीसकर छोटेजीरे की बराबर शाफा बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे एकसाइत के पीछे मैथुन करे स्तम्भन करता है और लिंग के छिद्र बढ़जाने को गुण करता है।

अन्य–हींग खाली शहद में पीसकर जीरे के सदृश बत्तियां बनाकर एक बत्ती लिंगके छिद्रमें रक्खे एक घंटे के पीछे मैथुन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में देखा है कि कौंच की जड़ उँगली के शिर पोर के बराबर भोग के समय मुख में रक्खे जब तक मुख में रहेगी वीर्यपात न होगा।

अन्य–स्तम्भन को गुण करे–ऊँट के बाल की रस्सी बनाकर रान पर बाँधे।

अन्य–लिखा है कि फिटकरी कमर में बांधना स्तम्भन को गुण करता है।

अन्य–लिखा है कि इतवारको घोड़े और खच्चरकी पूंछका एक एकबाल लेकर पीलीकौड़ी में छिद्र करके इनदोनों बालों में पिरोवे और दहनेबाजू पर बाँधकर सम्भोग करे वीर्यपात न होगा।

अन्य–लिखा है कि छछूंदर का खुसिया चमड़े में रखकर यन्त्रबनाकर कमर में बांधे जबतक कमर में रहेगा वीर्यपात न होगा जब उसको पेटकी तरफ लावेंगे वीर्य गिर जावेगा।

अन्य–कुचला दो आतशी शराबमें पीसे और नखपर गाढ़ा गाढ़ा लेपकरे सूखजाने के उपरांत भोग करे स्तम्भन करता है।

अन्य–करंजुवे की पत्तियों का रस निकालकर हथेलियों और तलवों में मलकर चार घड़ी के पीछे भोग करे एक पुस्तक में लिखा है कि स्तम्भन करता है।

यन्त्र–मुख्य करके वीर्य को रोकता है कुत्ता जिस मादा से जुफ्ती करे और कुकुरघराट हो जावे नर कुत्ते की दुम काटकर चालीसदिन जमीन में गाड़दे जब दुम गलकर हड्डियां शेष रहें उसको तागेमें पिरोकर अपने बालों में बाँधकर भोग करे।

लाभ–भोग करने में चाहिये कि मजेकी तरफ मन न लगावे किंतु और बातों का विचार रक्खे जब जाने कि वीर्यपात हुआ चाहता है ठहरजावे एक पलके पीछे फिर आरंभ करे इसीतरह वीर्यपातके समय क्रिया करताजावे और उत्तम यह है कि एक नियत संख्यासे जैसे पांच या सात से प्रारंभ करके हरदफा एक विषमसंख्या बढ़ता जावे दूसरी बात यह कि जाने कि मनी निकलती है छिगुनियां और बीच की उँगली से वह रग कि अंडकोष के नीचे और गुदाके बीच में है जोरसे पकड़ले मनी फिर जावेगी इसी तरह हर बेर करे और उत्तम यह है कि जब भोग करने बैठे एड़ी से वह रग दबाये रक्खे।

स्तम्भन की गोली–शिंगरफ, मोचरस, अफाम चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली भोग के पहिले खावे।

यन्त्र–लिखा है कि ऊंटकी हड्डीमें छिद्र करके जिसके शिरहाने रखदे वीर्यपात न हो।

अण्डवृद्धि का यत्न–जो दहिने अंडमें शोथ हो बायें हाथकी रग असलीम को दागे और जो बायें अंड में शोथ हो दहने हाथकी रग असलीम को दागदे अंडकोष की सूजन और पीड़ा दूर होगी असलीम एक रग है छिगुनियां और उसके पासकी उंगली के बीच में उसको रेशमी कपड़ा जलाकर

दागे और दागनेकी रीति बहुधा लोग जानते हैं कि अपने हाथ पाँव दागा करते हैं।

औषध—वैद्यक की—अंडों के बढ़ जाने को गुणदायक—ढाक के जड़की छाल छाया में सुखाकर महीन पीस छानकर सात माशे ताजे पानी से फांके नाभिकी पीड़ा को भी गुण करे।

चूर्ण अंडके लिये—कुन्दर, बायविडंग, पुरानी ईंट बराबर कूटछानकर दो दाम घीके साथ खावे जो पहिले दिन के होजावें अंडे अपनी दशा पर आजावेंगे।

काढ़ा—अंडवृद्धि का गुणकारक—पांचटंक हबुलास, तीस टंक जलमें औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके दशटंक घृत मिलाकर गुनगुना खड़े होकर पिये।

औषध—अंडवृद्धिको गुणकारक—भुना सुहागा छः रत्ती पीसकर पुरानेगुड़ में मिलाकर तीन गोलियां बनावे एक गोली हर सुबह खावे उसके ऊपर थोड़ा घृत पिये, भोजन मलीदा बेनमक।

लेप—अंडके शोथ को गुणकारक—ऊंटकी मेंगनी और थोड़ी हल्दी औटावे जबगाढ़ी होजावे पीसकर गुनगुना पोते पर लगावे।

अन्य—ठण्डे पोते की सूजन को गुणदायक—खुरमे की गुठली का आटा खतमी के बीज सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—पोते की सूजन और उसकी खुजली को गुण करे—आधपाव भंग, आधपाव जलमें औटावे जब आधा शेष रहे उस जलमें पोतेको धोवे और उसकी वस्तु का लेप करे।

अन्य—बकरी की मेंगनी जलाकर अजवाइन खुरासानी उसकी बराबर लेकर पानी में पीसकर गुनगुना लगावे।

लेप—मैनफल के बीज, नाजबो के पत्ते के रस में पीसकर लेप करे।

अन्य—अरंडकी जड़ सिरके में पीसकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—कोयल्ट के वृक्ष कूटछानकर गुनगुने लगावे।

अन्य—सूजन और पोते की पीड़ा को गुण करे—भँगरा,

चूहे की मेंगनी, नकछिकनी बराबर ले और खासन के बीज दुगुने ले अरंड के पत्ते के रस में पीसकर लेप करे।

अन्य—लड़कों के पोते बढ़ने के लिये गुण करे—अरहर पानी में पीसकर गुनगुना लगावे।

औषध—गरम पोते की सूजन को गुणदायक—भंग को पानी में भिगोकर पोतों को जब तक हो सके उसमें रक्खे दो बेर इसी तरह करे और उसकी वस्तु पोते पर बाँधे।

लेप—पोते की गरम सूजन को गुण करे—छिले मसूर, अनार की छाल बराबर पानी में पकावे जब गल जावे पीस-कर लेप करे।

अन्य—पोते की ठण्ढी सूजन को गुण करता है—रेंड़ी का गूदा पीसकर गरम करके रोज दो तीन बेर लगावे पोते का बड़ा होना दूर हो जावेगा।

लेप—माजूफल, असगंध पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—नरकचूर पीसकर गुनगुना लेप करके उसके ऊपर पान के पत्ते बांधे।

औषध—पोते की ठण्ढी सूजन को गुण करे—मरवा वृक्ष के पत्ते और टहनी को कूटकर रोटी बनाकर पोते पर बांधे सूजन दूर हो जावेगी और पीड़ा को भी गुण करे।

लाभ—पोते की गरम सूजन का यत्न साफन की फस्द है और खुरासानी अजवाइन और जव का आटा और कद्दू की लकड़ी और धनिये की पत्तियों का रस और काई और लाल चंदन का लेप करना और जो शीत से सूजन हो मेथी, अलसी के बीज शहद में लेप करे।

तरेड़ा—गरम और पोते की पीड़ा को गुण करे—टेसू के फूल औटाकर उसके पानी से तरेड़ा करे और उसका फोग गुनगुना बांधे।

लेप—पोते की चोट को गुण करे—थोड़ी हल्दी पीसकर अण्डे की जरदी में मिलाकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—पोते की सख्ती को गुण करे—सफेद जीरा, काली-मिरच पानी में पीसकर पकावे और लेप करे।

अन्य—पोते की सख्ती को गुण करे—पित्ता, जीरा, शहद में मिलाकर लगावे।

लेप—पोते की खुजली को गुण करे—सिरस वृक्ष की छाल पीसकर लेप करे।

अन्य—पोते की सूजन को गुणदायक—नाजबो जल में पीसकर लेप करे।

अन्य—पोते और लिंग के व्रणको गुण करे—जलाया हुआ गेंगटा, अंगूर की लकड़ी की राख, व्रण को थूक से भिगोकर उस पर छिड़के।

अन्य—पोते के घावको गुण करे—कीकर की छाल जवकुटकर पानी में औटाकर व्रण को उससे धोया करे।

अन्य—लिंग के व्रण को गुण करे—कमीला तिलों के तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य—चाकसू महीन पीसकर व्रणों पर छिड़के।

लेप—नाभि के ऊँचे होने के लिये—जो नाभि ऊँची हो जावे इस औषधि से मुख्य दशा पर आजावे और वह ऊँचान कृत्रिम होती है जाती रहती है—अजवाइन कूटछानकर मुरगे के अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करे और उसके ऊपर शीशे का टुकड़ा बांधे।

उन रोगों का यत्न जो मुख्य स्त्रियों के होते हैं सो के बांझ न होने का यत्न।

जिस स्त्री को यह रोग हो उसको अरबी में अकीया और उर्दू में बांझ कहते हैं और बांझ होना उन्हीं कारणों से होता है कि गर्भ को दूर करते हैं इस प्रकार के बांझ होने को मजाजी अर्थात् कृत्रिम बोलते हैं यह साध्य है और कभी यह रोग किसी कारण बिना होता है बाज दरख्तों के सदृश कि वे नहीं फलते यह मुख्य बांझपन है इसका यत्न नहीं और बांझपन के कारण कभी मर्दों से होते हैं और कभी स्त्रियों में इसकी

परीक्षा की रीति यों लिखी है कि बाकले या गेहूं या जौ के सात दाने अलग अलग मिट्टी के नये बर्तन में रक्खे एक बर्तन में मर्द दूसरे में स्त्री सात दिन पर्यंत मूत्र करे जिसके मूत्रसे वह दाने उगें वह बांझ होनेका कारण नहीं है और जिसके मूत्र से दाने न उगें उसीमें बांझ होने का बिकार मौजूद है या स्त्री पुरुष अलग अलग प्याले में पानी भरकर अपना अपना वीर्य उसमें डालें जिसका बीर्य पानीमें बैठजावे उसकी ओर बांझपना नहीं है या स्त्री पुरुष अलग अलग काहू या कद्दू की जड़ में मूत्र करें सो जिसके मूत्र में वृक्ष सूखजावे बांझपन उसीकी ओर होगा अब थोड़ी औषधि बांझपने की लिखी जाती हैं।

चूर्ण—गर्भ होनेके वास्ते गुण करे—हाथीदांत का बुरादा कूट छानकर मिश्री बराबर मिलाकर रक्खे जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो नौ माशे सात दिन पर्यन्त खावे सात दिवसके उपरांत पुरुष से मैथुन करे तीन दिन में गर्भ स्थिर होजावे।

अन्य—गर्भ के लिये कायफल कूटछान कर बराबर शक्कर मिलाकर ऋतु के उपरांत तीनदिन पर्यंत एक हथेली भर खावे भोजन दूध चावल फिर मैथुन करावे।

अन्य—असगंध कूट छानकर ऋतु के प्रारम्भ के पहिले एक टंक से दो टंक पर्यंत खावे भोजन दूध चावल और निश्चिन्त होने के उपरांत भोग करावे।

गोली—गर्भ को गुण करे—मुरमक्की, नौसादर बराबर पीसकर चार-चार तोलोंके अनुमान गोलियां बनावे स्त्री ऋतु में एक गोली रोज खावे निश्चिन्त होने के उपरांत भोग करे।

औषध—गर्भ पर नियत है—हाथी का मूत्र भोग के पहिले या भोग के समय स्त्री को पिलावे बांझपने को गुण करे।

अन्य—पियाबांसे की जड़ आधाटंक पानी में पीसकर थोड़ा गाय के दूध के साथ पुरुष खावे और स्त्री को तीन दिन पर्यन्त खिलावे उसके पीछे भोग करे—बांझपने को गुण करे।

अन्य–काले धतूरे के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर खिलावे।

अन्य–एक समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगल ले मुख्य गुण करता है।

अन्य–करंजुवे की गिरी स्त्री के दूधमें पीसकर बत्ती रक्खे।

शाफा–थोड़े सरसों पीसकर तीन दिन पीछे ऋतु के शाफा करे गर्भवती हो जावे।

अन्य–राजवायन एक हथेली भर कई दिन पर्यन्त खावे।

अन्य–गर्भ रहने को सहायता देता है–बाजकी बीट कपड़े में लगाकर बत्ती करके जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो भग में रक्खे और लिखा है कि थोड़ा शहद मिलाकर खिलावे मुख्य करके गर्भ स्थित करे।

अन्य–कबूतर की बीट ऋतु के उपरांत भग में रक्खे।

गर्भवती के यत्न का वर्णन।

गर्भवती स्त्री को फस्द और मुसिल से मुख्य चौथे महीने के पहिले और सातवें महीने के पीछे पथ्य करना उचित है और पछने और ऋतुके रुधिर निकलवाने और भयकी बातों और भयानक शब्दसे प्रति समय पथ्यकरना चाहिये और दो महीनेके पीछे भोग न करना चाहिये और उचित है कि भोजन बहुत न करे और अजीर्णसे डरा करे और गर्भवती अति प्रसन्न चित्तहो और उसकी क्षुधा शुद्ध हो और उसको कोई रोग दौरान और शिरपीड़ा और मतली के सदृश न हो और उसको दाहने तरफ बोझ मालूम हो और दाहिनीछातीबड़ीहो और कुचोंपर सुर्खी मालूम हो अवश्य करके लड़का जनेगी और जिस स्त्रीको बेटीका गर्भहोगा उसमें उसके विपरीत चिह्न पाये जावेंगे और उसका शिर भारी और मुखका पीलारंग और तेजरहित मुख होगा और भूख कम और आलस्य अधिक और कुच पतले और दूध भी पतला होगा और निद्रा बहुत आवेगी और चलनेमें पहिले दाहिनापांव उठावेगी और खड़े होनेके समय दाहिनाहाथ टेककर उठेगी औरहकीमों

ने यह भी लिखा है कि गर्भवती हाथपर जूं रखकर उसपर अपना दूध दुहे जो जूं उसदूध में हिले उदर में लड़का होनेका चिह्न है और जो न हिले और मरजावे लड़की होनेकी निशानी है और यह भी लिखा है कि चुकंदर के पत्ते सुखाकर गर्भवती स्त्रीकी नाक में फूंके जो छींक आवे तो लड़की जो न आवे तो लड़का जनेगी।

वह औषधियां जो गर्भ को गिरने न दें।

बाजी स्त्रियोंकी आदत है कि उनका गर्भ शुरूमें गिर पड़ता है लाल कपड़े में लाल तागे से जो कुसुम में रँगा हो एक करंजुवा बांधकर नौ महीने पर्यंत कमरपर बाँधे रक्खे और कहरबाशमई और दरूनज अकरबी भी कमर पर बांधना गुण करता है।

अन्य—वह सूत कि कुंवारी लड़कीने काता हो स्त्री के शिर से पांव के नख पर्यंत नापकर उसको इक्कीस तारका बनावे और काले धतूरे की जड़ लेकर इसको सात टुकड़े करके उस तागे में जुदा जुदा बांधकर स्त्री की कमर में बांधे।

अन्य—जमुर्रद की अंगूठी बायें हाथ में पहिनना गर्भवती के ऋतु के रुधिर के बहने को बन्द करता है।

लेप—गर्भवती स्त्री के भगकी खुजली और दाह के लिये खतमी के बीज, मुल्तानी मिट्टी, मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अन्य—भीमसेनी कपूर, गुलाब में पीसकर भगमें मले।

लाभ—कहरबा कमरपर बांधना गर्भ के गिरने की रक्षा करता है और मेदे पर लटकाना तुखमें को गुण करे और गर्दन पर कमलबायु को गुण करता है और छाती पर रखना मन को गुण करता है और ताऊन * को दूर करता है यह सब गुण इन और औषधियों में मुख्य करके हैं।

औषधि—गर्भवती स्त्रियों को क्षुधा के उपद्रव के दूरकरने को गुण करे—बड़ी इलायची दश टंक छः मिस्काल कन्द के साथ पीसकर तीन माशे रोज खिलावे।

---

* वह फोड़ा है जो अंडों या छातियों या बगल के नीचे निकला करता है।

कठिनता से प्रसूति होने का यत्न।

गर्भवती स्त्री के निकट जनने के समय सुगन्धित वस्तु न जाने दे और चार मिस्काल अमलतासके छिलके पानीमें औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना कठिनता से प्रसूति को आश्चर्यदायक गुण रखता है और घोड़े के सुमकी धूनी गुणकरे बाजे हकीमों ने लिखा है कि थोड़ी घोड़े की लीद कबूतरकी बीट के साथ पानी में घोलकर स्त्री को खिलाना प्रसूति की कठिनताको गुण करता है।

सपकी केंचुलका वफारा मुर्दा लड़के को तुरन्त निकालता है।

गाजर के बीजों का वफारा भी सुगमता से प्रसूति करता है।

वाबूने के पुष्प नौ माशे थोड़े पानी में औटाकर शहद आवश्यकता के अनुकूल मिलाकर पिलावे गुण करे।

ओषधि—यदि गर्भ की दशा में रुधिर ऋतु का जारी होजावे गूलर की जड़ जवकुटकर औटाकर पिलावे।

चूर्ण—प्रसूति के लिये गुण करे—नीलोफर, मुलहठी, रगड़ा हुआ चन्दन, घिसी हुई मिश्री बराबर चूर्ण बनावे और साठी के चावल भिगोकर उसके जल से एक हथेली भर खावे।

क्रिया—मुख्य करके प्रसूति को गुण करे—मकनातीस पत्थर बायें हाथमें लेना आजमाया हुआ है।

अन्य—सुगमतासे प्रसूति के लिये—करंजुवा चमड़े में रखकर बाईं पिंडली पर बांधे, थोड़ी हींग खाना प्रसूति को गुण करता है और प्रसूति की पीड़ा के समय मनुष्य के शिर के बालों की धूनी लेना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

मनुष्य के केश जलाकर उसकी राख गुलाब में मिलाकर स्त्री के शिर पर मलना मुख्य करके प्रसूतिको गुण करे।

लाल कपड़े में नोन बांधकर स्त्री की बाईं ओर लटकावे मुख्य करके प्रसूतिकी कठिनता को दूर करे।

सर्पकी केंचुल स्त्रीके चूतड़ पर बांधना और उसकी धूनी देना प्रसूतिकी सुगमता को गुण देता है।

चकमाक का पत्थर लत्तेमें लपेट कर स्त्री के रानपर बांधना

मुख्य करके प्रसूतिकी कठिनता को गुण करे और इसी प्रकार बारहसिंगे का सींग बांधना सुगमता से प्रसूति करता है।

गिद्ध का पर स्त्री के पांव के नीचे रखना प्रसूतिको गुणकरे।

और ज़ोसरफोंका की जड़स्त्रीकीकमरमेंबांधेशीघ्रहीनिकालदे।

जीते सर्प के दांत स्त्री के गले में लटकाना प्रसूति की सुगमता को गुण करता है।

अन्य–प्रसूति की सुगमता को गुणदायक–इन्द्रायणकी जड़ पीसकर गौ के घी में मिलाकर भग में दे।

औषध–उस सुरुल को ठहराती है कि प्रसूति के उपरान्त गर्भाशय में ठहराती है जो प्रसूति के उपरान्त गर्भाशय में होता है दो दाम खरबूजे की छाल सुखाकर सौंफ के अरक में पीसकर पिये।

अन्य–पुराना खापरा खाना गुणकारी है।

अन्य–सातर औटाकर पिये।

अन्य–माजून वरशाशा एक हिबा भर मीठे जल में पीना गुण करता है।

अन्य–असूल का शरबत गुण करता है।

अन्य–बच का काढ़ा गुणदायक है।

अन्य–खशखाश का पोस्ता पिलाना गुण करता है।

उन औषधियों का वर्णन कि स्त्री को बांझ करें।

हाथी का ताजा लेंड़ निचोड़कर एक तोला शहद में मिलाकर तीन दिन पर्यंत ऋतु के होने के पीछे पिये और हाथी के लेंड़ से वत्ती को भिगोकर भग में रखना स्त्री को बांझ करता है।

औषध–स्त्री को बांझ करे–नौसादर फिटकरी पानी में पीसकर ऋतु के पीछे भग में रखले।

अन्य–यदि प्रतिदिन सुबह को एक लौंग निगले गर्भ न रहे।

अन्य–इसपंदनागौरी जलाकर ऋतु के दिनों केउपरान्त खावे।

अन्य–यदि लिंग के शिर में मीठा तेल और नोन मलकर सम्भोग करे वीर्य को गर्भाशय न लेगा।

अन्य–शाफा जो स्त्री को बांझ करदे–बावची मीठे तेल में पीसकर ऋतु के पीछे शाफा करे।

औषध–हल्दी पीसकर ऋतु के समय खावे। और ऋतु के दिन हो चुके पर तीन दिवस पर्यंत खावे गर्भ न रहेगा।

अन्य–स्त्री को बांझ करदे–चँवेली की जड़ और गुले-चीनियाँ का जीरा बराबर पीसकर छाया में सुखाकर ऋतु के प्रारम्भ में तीन दिन तक खावे और उसके ऊपर एक घूँट जल पिये।

काढ़ा–जो गर्भ को न रहने दे–फराश वृक्ष की छाल और गुड़ औटाकर पिये।

अन्य–कालीमिरच सम्भोग के उपरांत भग में रखना गर्भ न रहने दे।

औषध–जो एक मिस्काल नील स्त्री खावे तो गर्भ न रहेगा।

अन्य–कालीजीरी, काबिली हड़के बीज, नागकेसर, नरकचूर, कलौंजी, कायफल हरएक पांच टंक कूटछानकर गोलियाँ बनावे ऋतु के समय से स्त्री सात दिन पर्यंत एक एक गोली खावे।

अन्य–लिखा है कि चँवेली की एक कली जो स्त्री निगले एक वर्ष पर्यंत गर्भ न रहे।

अन्य–रेंड़ी की एक गूदी निगल जावे एक वर्ष पर्यन्त गर्भ न रहे और दो निगले तो दो वर्ष पर्यन्त न रहे।

अन्य–खाने का नोन भग में रखना गर्भ न रहने दे।

अन्य–चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर भग में रखना गर्भ को न रहने दे।

दूसरा उपाय जो गर्भ न रहने दे–स्त्री अपनी रान सम्भोग के समय ऊँची न करे और पुरुष वीर्यपात होनेके समय अपना लिंग बाहर निकाल ले और इस बात का ध्यान रक्खे कि अपने वीर्यपात होने के साथ स्त्री की रज न छूटे और स्त्री वीर्यपात होने के पीछे शीघ्र उठ खड़ी होकर छींके।

अन्य–मुख्य करके गर्भ न रहने दे–लड़के का जो दांत

पहिले गिरे और जमीन पर न गिरने पावे उसको लेकर इत-
वार के दिन चाँदी से मढ़कर स्त्री भुजा पर बांधे।

अन्य-चूके के बीज बाईं भुजापर बांधे गर्भ न रहने दे।

अन्य-जो मेंढककी हड्डी स्त्री अपने निकट रक्खे गर्भ न रहे।

अन्य-जो स्त्री सर्पका दांत अपने पास रक्खे गर्भ न रहे।

अन्य-काकुञ्ज के सात दाने ऋतु के दिनों के पीछे स्त्री
निगल ले।

अन्य-थूहर की लकड़ी छाया में सुखाकर जलाकर उसकी
एक माशा भर राख लेकर बराबर की शक्कर मिलाकर इक्कीस
दिन तक हर रोज खावे।

अन्य-मनुष्य के कान का मैल एक दाना बाकले का लेकर
बराबर काले रंग के पशमीने में बांधकर स्त्री की गर्दन में
लटकावे जब तक गले में रहे गर्भ न रहने दे।

शाफा-सहँजने के बीज महीन पीसकर गौ के घी और
शहद में मिलाकर ऋतु के उपरांत शाफा करे।

लाभ-लिखा है कि स्त्री अपने पुत्र के मूत्र पर मूत्र करे
कभी गर्भ न रहे मुख्य गुण रखता है।

औषध-यदि स्त्री हर महीने में थोड़ा खच्चर का मूत्र पिये
कभी गर्भ न रहे।

अन्य-गर्भ न रहने दे और गर्भाशय की पीड़ाको जो भोग के
उपरान्त रहे दूर करे-माजू महीन पीसकर उसमें रुई भिगोकर
गोला बनाकर भोग से पहिले गर्भाशय के मुख पर्यंत पहुँचावे।

गर्भ गिराने की औषधि।

इन्द्रायण निचोड़कर उसमें रुई डुबोकर भग में रक्खे।

शाफा-जो गर्भ को गिरावे कड़ुई तोरई बीजों समेत पीस
कर शाफा करे।

शाफा-साबुन शाफे के सदृश बनाकर गर्भाशय के मुख में
रक्खे या उसको कड़ुवे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर
गर्भाशय के मुख में रक्खे।

अन्य—मुरमक्की गुड़ में लपेटकर खावे और पटोल पीसकर शाफा करे।

काढ़ा—जो पेट में लड़का निकालने के वास्ते अद्भुत औषध है—बथुवे के बीज डेढ़ तोला आधसेर जल में औटावे जब आधा पानी शेष रहे छानकर पिये।

चूर्ण—जो गर्भ को गिरावे—अशनान एक टंक चूर्ण करके फांके।

शाफा—जो गर्भ को गिरावे और ऋतु के रुधिर को जारी करे—एलुवा, वन्दाल मुर बराबर लेकर तेज शराब में खरल करके शाफा करे।

काढ़ा—जो लड़के का नाल, झिल्ली गर्भाशय से निकालता है—सहँजने के वृक्ष की छाल गुड़ के साथ औटाकर पिये।

अन्य—गर्भ को गिराता है—जंगली कबूतर की बीट और गाजर के बीज बराबर लेकर बफारा दे।

दूसरा शाफा—गर्भ को गिरावे—मुनमुन कि गेहूँ में होना है और एलुवा बराबर लेकर शाफा करे।

लेप—गर्भ गिराने में सहायता करता है—ऊँटकटारे की जड़ पानी में पीसकर स्त्री के उदर पर लेप करे।

अन्य—गुड़हल का फूल पानी में पीसकर नाभि पर उसके चहुँओर लगावे।

अन्य—बफारा जो गर्भ को गिराता है—गन्धक, मुरमक्की, हींग, गूगल पीसकर बफारा ले जो इसमें गायका पित्ता भी मिलावे अधिक बलवान हो जावे।

बफारा—जीते और मुर्दे लड़के को उदरसे निकाले और गर्भ को गिरावे—घोड़की लीद स्त्री अपने आगे जलाये और बफाराले।

अन्य—अनार की छाल का बफाराभी गुण करता है।

औषध—जो लड़का गिरावे—बिसखपरे की जड़ छः उंगल काटकर उसको एक तरफ महीन बनावे और एलुवा गाय के पित्ते में पीसकर इसको महीन तरफ में खूब लगाकर सुखाकर

गर्भके मुख पर्यंत पहुँचावे और उसकी दूसरी ओर एक तागे से दृढ़ बांध दे इसी तरह दो चार दिन रक्खे कि बच्चा गिरजावे।

ओषधि—शोरा आधादाम निहार मुँह खावे गर्भ गिरजावे।

शाफा—अरण्ड की नरम टहनी रेंडी के तेल में भिगोकर शाफा करे।

बफारा—गधे के सुम और गूह का बफारा ले।

ओषधि—गर्भ को गिरावे—मेथी, हल्दी, फिटकरी एक एक दाम, तूतिया, भड़भूंजे के छप्परका धुवां आधा आधा दाम कूट छान कर पानी में मिलाकर शाफा बनाकर सुखावे पहिले चिकनी और नरम करनेवाली चीजें जैसे कि घी और पुदीने की पट्टी गर्भाशयमें लगावे फिर सुबह और शाम वही शाफा रक्खे और गर्भ के गिरने के उपरांत घीमें एक लत्ता भिगोकर भगमें रखना उचित है कि पीड़ा दूर होजावे और गर्भ के गिरजाने के उपरांत भी गोखुरू छःमाशे, खरबूजेके बीज, सौंफ एक एक तोला औटा कर छानकर मिश्री मिलाकर पिये और भोजन कुछ न करे और पानी के बदले कपास की हरी कलियां और बांस की हरी गांठें चार चार दाम पानी में औटाकर पिलाया करे।

अन्य काढ़ा—गाजरके बीज, सोयेके बीज, मेथी छः छः टंक दो सेर जल में औटावे जब एक सेर शेष रहै मलकर छानकर दो सप्ताह पर्यंत इसी प्रकार पिये गर्भ गिरजावे।

अन्य—आजयाया हुआ—एलुवा, बिसखपरे की जड़, तूतिया, खिरनी के बीज, महुवेके बीज बराबर कूटछानकर वत्ती करके रक्खे।

शाफा—गर्भके गिरने को आजमाया हुआ है—अरण्ड की कली एक दाम, एलुवा चारमाशे, खिरनी के बीज की गिरी चार माशे महीन पीसकर शाफा बनाकर सुबह और शाम गर्भाशय के मुख में रक्खा करे।

अन्य—गर्भ गिराने के वास्ते—चूके की लकड़ी कि मशहूर लकड़ी है उसे बहुधा ऊंटों की खारिश के वास्ते लगाते हैं एक

भाग उसमें से लेकर पानीमें घिसे और तीन भाग रसौत मिला कर छुहारे की गुठली के बराबर शाफा बनावे और शाफा करके गर्भाशय के मुख में रक्खे दो या तीनदिन में गर्भगिर जावेगा और जो गर्भाशयके मुखके गिर्दागिर्द दाने पड़जावें उसमें घृतलगावे।

काढ़ा—अखरोट की छाल, बिनौला, मूलीके बीज, गाजर के बीज, सोये के बीज, कलौंजी बराबर लेकर जवकुटकर दुगुना गुड़ मिलाकर स्वभावके अनुसार लेकर जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे पिलावे।

भगके संकीर्ण करने का यत्न ।

बेंगन सुखाकर पीसकर भग में रक्खे।

चूर्ण—भग की तंगी के लिये—ढाक की कलियां छाया में सुखाकर बराबर की शक्कर मिलाकर तीन टंक रोज खायाकरे चौदह दिनमें तंग होजावेगी।

शाफा—मदार की जड़ स्त्री अपने मूत्र में पीसकर शाफा करे चार घड़ीके पीछे पुरुषके पास जावे पुरुष उस पर मोहित होजावे।

अन्य—केंचुवे सुखाकर स्त्री अपनी भगमें मले कोई मनुष्य उससे जीत न पावे।

अन्य—तंगी के लिये—बबूल की छाल, झड़बेरी की छाल, मौलसिरी की छाल, कचनार की छाल, अनार की छाल बराबर लेकर थोड़े जल में औटाकर उस जल से शौच करे और औटाते समय एक सफेद कपड़ा उसमें डालदे जब रंगीन होजावे थोड़ा कपड़ा भग में रक्खे।

चूर्ण—ढाक की कोंपल छाया में सुखावे और कूटछानकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर आधे टंक से दो टंक पर्यन्त खावे सात दिन में तंगी का गुण प्रकट होगा।

अन्य—सूखी बीरबहूटी घी में पीसकर मले।

अन्य—भग को तंग करे—बेंदे की छाल जलाकर उसकी राख मले।

अन्य–जाहीजूही के फूल कूटछानकर भग में रक्खे ।

अन्य–बकायन के वृक्ष की छाल सुखाकर पीस छानकर भग में रक्खे बहुत गुण करे ।

अन्य–खट्टी पालक के बीज कूट छानकर भग में रक्खे ।

चूर्ण–उस तरी को दूर करे जो गर्भाशय से बहती है– मौलसिरी की छाल सुखाकर कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर हरसुबह एक हथेली भर ताजे पानी से फांके ।

अन्य–इमली के बीज की गिरी कूट छानकर सुबह और शाम भग में मला करे ।

अन्य–समंदरझाग, हड़ के बीज की गिरी बराबर लेकर पीसकर भग में रक्खे तंग हो जावे ।

अन्य–भग के संकीर्ण होने के वास्ते आजमाई हुई है और इससे उत्तम कोई औषध नहीं है–चीनियां गोंद छः माशे महीन पीसे और दो तोले फिटकरी भूने और भूनते वक्त पानी में वही चीनियांगोंद मिलाकर उसपर छिड़के ठण्ढा होने के पीछे पीसे फिर थोड़ा गुलधावा मिलाकर दूसरी बेर पीसकर भग में रक्खे–आश्चर्यदायक लाभ देवे ।

अन्य–तंगीके वास्ते गुण करे–कचनाल की कली एकदाम, अनारकीछाल, मोचरस पांचपांचमाशे, बबूलकीफली कच्चीसुखाकर चार, माजू एक महीन पीसकर कपड़े में छानकर सेवन करे ।

सुहाग सोंठ ।

यह वैद्यों का नुस्खा है स्त्रियों की कमर की ताकत के वास्ते–सोंठ आधपाव, घी तीनपाव, गौके दूध में औटावे जब गाढ़ाहोजावे तब खरबूजे के बीजकी गिरी, चिरौंजी, निशास्ता, सिंघाड़ा दो दो तोले, असगंध, सफेद मूसली, मोचरस, गोंद नागौरी, इलायची के दाने, शतावर दो दो तोले, तेजपात, चन्दन पीसकर तज, गुलधावा नौ नौ माशे, गोखुरू, पीपल, कालीमिरच, बालछड़, नागरमोथा, कौंचके बीजों की गिरी, चीनियांगोंद छः छः माशे कूट छानकर शक्कर में माजून बनावे ।

स्त्री के ऋतु के रुधिर के अधिक बहने का यत्न।

यदि नियत दिवसों में न हो उसको इस्तखासा बोलते हैं इस रोग में छातियों के नीचे सिंगी लगाना बहुत गुणदायक है।

औषध—जो ऋतु के रुधिर को बंद करदे—बकायन की कोंपल एक तोला भङ्ग की तरह घोटकर रस निकालकर पिवे।

अन्य—जो रुधिर को बंद करदे—कपास के फूल जलाकर उसकी राख एक एक हथेली भर पानी के साथ फांके।

अन्य—सरयाला जलाकर उसकीराख एक हथेलीभर फांके।

अन्य—कुड़ाकी छाल सात माशे कूट छानकर थोड़ी शक्कर के साथ पानी से फांके।

चूर्ण—ऋतु के अधिक रुधिर को बंद करता है—मसूर, अरहर, उड़द दो तोले, साठी के चावल एक तोला सबको जलाकर महीन पीसकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर खावे।

चूर्ण—जो रुधिरको बंदकरे—चने जलाये हुये, तज, लोध बराबर पीसकर बराबर शक्कर मिलाकर एक हथेली भर फांके।

अन्य—ऋतु के रुधिर के बन्द करने के लिये—मालती के फूल, शक्करतरी छः छः माशे मिलाकर खावे।

अन्य—राल पीसकर शक्कर के साथ चूर्ण बनाकर खावे।

अन्य—संगजराहत, गेरू बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक छः माशे सुबह को ठण्डे जल से फांके।

अन्य—छोटी दुद्धी छाया में सुखाकर कूट छानकर हर सुबह एक हथेली भर खावे।

अन्य—इस्तखासा दूर करने के लिये—लाख के दाने शक्कर बराबर पीसकर एक हथेली भर जल से खावे।

अन्य—असगन्ध कूट छानकर मिश्री बराबर मिलाकर एक तोला भर पानी से फांके।

अन्य—बबूल का गोंद भूनकर गेरू बराबर पीसकर हर सुबह दो मिस्काल खावे।

अन्य—ऋतु के रुधिर की अधिकता को गुणदायक—हरसिंघार की कोंपलें सात पानी में पीस छालकर पिये।

अन्य—मुलतानी मिट्टी पानीमें भिगोकर उसकासाफजलपिये।

काढ़ा—जो ऋतु के अधिक रुधिर को गुण करे—सूखी धनियां एक हथेली भर औटाकर छानकर कई दिन खावे।

अन्य—कचनाल की कलियां, हरा गूलर, खुरफे का साग, मसूर की दाल और पटसन के फूल पकाकर लाल चावल के भात के साथ खाना ऋतु के रुधिर को रोकता है।

सुपारी पाक।

जो ऋतुके रुधिर और भगकी तरी के दूर करने के वास्ते गुण करे—गौ का दूध पांचसेर सुपारी चिकनी पावभर कूट-छान कर दूधमें मधुरी अग्नि पर औटावे जब पकजावें तब आधासेर शक्कर डालकर कवाम करे फिर छोटी बड़ी माई पक्के अढ़ाई अढ़ाई दाम, पक्की सुपारी के फूल, धवई के फूल, पक्के पांच पांच दाम, ढाक का गोंद आध पाव सबको सुरमे की भाँति महीन कूट छानकर जब कवाम ठण्ढा होने लगे औषध उसमें मिलावे और साफ बर्तन में रखकर आवश्यकता के अनुकूल एक दाम से तीन दाम पर्यन्त खावे।

टिकिया—जो रुधिर की अधिकता को बन्द करदे—रसौत, बबूल का गोंद, राल एक एक माशा, सुपारी अढ़ाई माशे पीस छानकर पानी में एक माशे की बराबर टिकिया बनावे दो तीन टिकिया खावे।

अन्य—जो रुधिर को बन्द करे—गधे की लीद सुखाकर पोटली में बांधकर भग में रक्खे।

अन्य—बकरी की मेंगनी सूखी पीसकर पोटली बनाकर गर्भाशय के मुख के निकट रक्खे जो उसमें थोड़ा कुन्दर मिलावे अधिक गुण करेगा।

अन्य—रुधिर को रोके—अनार की छाल औटाकर एक तोला भर पिये।

अन्य—ऋतु के अधिक रुधिर आने के लिये आजमाया हुआ है—जीरा भुना और कच्चा लाल चावलों की पीच में पीसकर भग में रक्खे।

ऋतु के रुधिर के बन्द हो जाने का यत्न।

यदि शरीर में रुधिर के कम होने के कारण हो जावे कोई हानि नहीं और जो किसी और कारण से बन्द हो तो यत्न करना चाहिए—साफन की फस्द ऋतु के दिनों के पहिले खोलना रुधिर को खोलता है।

काढ़ा—जो रुधिर को जारी करे—तोंबा सुर्ख, मंजीठ, मेथी, गाजर के बीज, सोये के बीज, मूली के बीज, अजवाइन, सौंफ, तितली की पत्तियाँ, गुड़ बराबर मिलाकर औटाकर पिये।

अन्य—रुधिर को खोलने के वास्ते नरमें अर्थात् कपास के पत्ते और फूल आधपाव सेरभर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके चार दाम गुड़ मिलाकर पिये।

काढ़ा—जो गर्भ को गिरादे और रुधिर जारी करे—अखरोट की छाल, मूली के बीज, अमलतास की छाल, परसियावसान, वायविड़ंग, जवकुटकर हरएक नौ माशे ले और गुड़ औषधियों से दुगुना ले सबको मिलाकर औटाकर पिये और वाजे कलौंजी और नरमें की छाल भी अधिक करते हैं।

काढ़ा—रुधिर जारी करने के वास्ते—अधकुचली नींब की छाल दो तोले, अधकुचली सोंठ चार माशे, गुड़ दो तोले, डेढ़ पाव जल में औटावे जब आधपाव जल शेष रहे छानकर पिये।

काढ़ा—कमर की पीड़ा के लिये जो ऋतु में स्त्री को होती है गुण करे—सोंठ, वायविड़ंग आधादाम, गुड़ दो दाम औटाकर पिये।

कल्क—जो रुधिर को जारी करे—काले तिल, गोखुरू एक एक तोला रात को जल में भिगोदे सुबह को रस निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

चूर्ण—रुधिर जारी करे मूली के बीज, गाजर के बीज, मेथी कूट छानकर एक हथेली भर गुनगुने पानी से फांके।

अन्य—मजीठ पीसकर एक हथेली भर फांके।

अन्य—कलौंजी की जवारिश स्त्री के ऋतु का रुधिर और मूत्र लाती है और गर्भाशय की पीड़ा को दूर करती है।

बत्ती—ऋतु के रुधिर को आराम से जारी करे—गुड़ थोड़े घृत में मिलाकर किसी बर्तन में आग पर रक्खे जब बत्ती बनाने के योग्य होजावे थोड़ा बिरोजा सूखा पीस मिलाकर बत्ती बनाकर गर्भाशय के मुख में पहुंचावे।

अन्य—जो नख का धुवां स्त्री कई बेर ले रुधिर जारी होजावे।

अन्य—गंदेबिरोजे का धुवां भी रुधिर जारी करता है।

लेप—गर्भवती स्त्रियों के नले की पीड़ा को गुण करे—कालीजीरी दो दाम, रेंड़ी का गूदा आधपाव, सोंठ एक दाम सबको औटाकर पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—गर्भाशय को तरी से साफ करे—मुरमकी, लौंग बराबर कूट छानकर लत्ते में बांधकर सुबह और शाम गर्भाशय के मुख में पहुँचावे तीन दिन में साफ करे।

अन्य—गर्भाशय की तरी को सुखावे—अजमोद, बायबिड़ंग, सूखा गंदाबिरोजा एक एक भाग, सोये के बीज, लाहौरीनोन आधा आधा हिस्सा, शहद मिलाकर उसमें रुई भिगोकर गर्भाशय पर्यंत पहुंचावे।

अन्य—बायबिड़ंग, समुद्रझाग एक एक भाग, गंदाबिरोजा सूखा, लाहौरीनोन दो दो भाग, कूट छानकर कपड़े में बांधकर भग में रक्खे।

अन्य—उस गर्भाशय की पीड़ा को जो शीत से हो गुण करे—तिल मीठे तेल में पीसकर गुनगुना नाभि के नीचे लेप करे।

अन्य—गंदाबिरोजा, लौंग, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, नरकचूर थोड़ा थोड़ा लेकर मीठे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर रक्खे गर्भाशय को तरी से साफ करता है।

अन्य–गर्भाशय के व्रण को गुण करे–पहिले शहद से शाफा करे कि पीव और मैल दूर होजावे फिर माजू जल में औटाकर उस जल से भिगोकर शाफा करे कि सूखजावे और कुछ भी तरी भग में न रहे।

अन्य–हल्दी महीन पीसकर घृत में मिलाकर उसमें रुई भिगोकर शाफा बनावे और गर्भाशय पर्यन्त पहुंचावे गर्भाशय के शोथ को बिल्कुल नष्ट करे और बहुत गुण करे।

केसर का तेल–गर्भाशय की सख्ती को गलावे–पचास मिस्काल केसर साढ़े तीन रत्ती ले मीठे तेल में डालकर पांच दिवस पर्यन्त रहने दे और हर रोज हिलाया मिलाया करे फिर सेवन करे।

शूलरोग का यत्न।

वजे मुफासिल जोड़ों की पीड़ा को कहते हैं और नकरस पांव की उँगलियों की पीड़ा का नाम है और वजे उज्जहर पीठ और कमर के दर्द को कहते हैं और अरकुन्निसा को हिन्दी में रांघन कहते हैं और वह पीड़ा है कि चूतड़ से शुरू होती है और पांव की उँगलियों पर्यन्त पहुँचती है यद्यपि यह सब रोग बराबर मुंजिज और मुसिल के बिना नहीं जाते हैं परन्तु थोड़ी औषध सुगम कि जो गुणदायक है गरीबों के वास्ते लिखी जाती है–फस्द जो सब रोगों को नाश करे इन रोगों में बहुत गुण करे फस्द के पीछे जो दवा सेवन करे शीघ्र गुण करेगी काढ़ा मुंजिज वजह वजे मुफासिल को गुण करे–सौंफ, कासनी के बीज, मकोय, परसियावसान दो दो टंक, सौंफ की जड़, कासनी की जड़, मुलहटी, कबर की जड़ दो दो मिस्काल, बाबूने के फूल, गुलकन्द तीन तोले औटाकर पिये।

चूर्ण–सोरंजान का चूर्ण जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और दोषों को निकाले मलके पकाने के उपरांत पांच दिन पर्यन्त सेवन करे–मीठा सोरंजान दश टंक, सनाय सात टंक, पीले हड़ की छाल चार टंक, तुरबुद सफेद खोखली की हुई तीन

टंक, बादाम की गिरी तीन टंक, मेंहदी के पत्ते दो टंक, केसर एक दाम कूट छान कर चूर्ण बनावे कंद ओषधियों के तोल से आधी ले खूराक पांच टंक पर्यंत।

चीते की गोली—जो मुसिल है और जोड़ोंकी पीड़ा को गुण करे—एलुवा दश टंक, पीले हड़ की छाल पांच टंक, बनाई हुई तुरबुद, सोरंजान, गूगल दो दो टंक, सोंठ, चीत, राई, हिन्दी-नोन, इन्द्रायन का परदा, मँजीठ एक एक दाम, अजवाइन, पीपल, कालीमिरच हरएक आधा टंक, कंद तीन टंक कूट छान कर गोलियां बनावे खूराक तीन टंक स्वभाव के अनुकूल यह गोलियां ठण्ढे स्वभाववालों के योग्य हैं।

गूगल की गोली—जो जोड़ों के दर्द और घुटने और पीठ की पीड़ा को गुण करे—गूगल एक भाग, गुड़ दो भाग, बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली थोड़े घृत के साथ निगल लिया करे इसका सेवन मुसिल लेने के पीछे चाहिये।

गोली—मुसिल के उपरांत सेवन की जाती है जोड़ों की पीड़ा और कमर के दर्द और पीठ को गुण करे—काली और सफेद मूसली, पीपल, अजवाइन, पीपलामूल एक एक दाम, शतावर, विधारा, सोंठ, असगंध दो दो टंक कूट छानकर गुड़में मिलाकर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनावे खूराक स्वभाव के अनुकूल।

१✓ गोली—सम्पूर्ण शरीर की पीड़ाको जिसको हड़फूटन बोलते हैं गुणकरे—पीले हड़की छाल, कालीहड़, सौंफ, कालीमिरच, पीपल, करंजुवेकी गिरी, कालीज़ीरी एक एक भाग, दाख मुनक्के पांच भाग, कूट छानकर गोलियां बनावे खूराक दो टंक।

शिंगरफ की गोली—जोड़ों की पीड़ा और आतशक को गुण करे—शिंगरफ, हलदी, अजमोद, अकरकरा, नींब के पत्ते, अजवाइन, सम्भालू के पत्ते, इन्द्रायन की जड़, सरफोंका, असगंध, पाढ़ी, कालीमिरच, वकायन की जड़, मदार की जड़, भिलावाँ बराबर कूट छानकर बराबर गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे खूराक एक टंक।

अन्य–शिंगरफ, पारा, अफीम दो दो दांग, अजवाइन पांच दांग, भिलावें की टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़ पांच दांग, पारा और शिंगरफ मिलाकर पीसकर औषधियों को कूट छानकर अदरक के रस में खरल करके गोलियां बनावे और एक गोली खावे इस बात का विचार रखना चाहिये कि शिंगरफ की गोली और पारे की गोली और सम्मुलफार के खाने के दिनों में खटाई, वादी, मांस और नोन से पथ्य करे और चावल दूध या चटनी या गेहूँ की रोटी बिना नोन के बहुत घी डालकर या चावल और दही खाया करे।

काढ़ा–वैद्य की रीति से कमर की पीड़ा को गुण करे–अंजीर की जड़ की छाल, सोंठ, धनियां बराबर लेकर जवकुट कर दशदाम लेकर एक रत्ती ले जल में रात को भिगोकर सुबह को औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर पिये।

हलुवा–कमर की पीड़ा को गुण करे–सोंठ, रेंड़ी की गिरी छः छः दाम। घी और शक्कर बारह बारह दाम। गाय का दूध आधसेर पहिले रेंड़ी की गिरी पीसकर घी में भूने फिर दूधमें मिलाकर औटावे जब गाढ़ा हो जावे शक्कर डालकर हलुवा बनावे खूराक स्वभाव के अनुकूल खावे। चारदाना–जोड़ों की पीड़ा और कफ बात के रोगों को गुण करे–हालों, अजवाइन, कलौंजी, मेथी बराबर लेकर सुबह को एक चुटकी भर अर्थात् तीन उँगलियों से जितनी उठे फांककर पानी के घूँट से निगल जावे इस नुस्खे को हानिमवदन कहते हैं।

माजून–जोड़ोंकी पीड़ाको सोरंजान दशटंक, सना पांच टंक, सोंठ, असारों, सफेद जीरा दो दो टंक, शहद सबके बराबर लेकर माजून बनावे खूराक दो मिस्काल गरम जल से खाय।

औषध–कमर और जोड़ों की पीड़ा को जो गरमी से हो गुणकरे–धनियां एक टंक, कन्द तीन टंक मिलाकर खावे और तीन टंक खशखाश, तीन टंक कन्द के साथ भी गुण करे।

चारदाना–जो ठंढी बीमारियों में सेवन करते हैं–मालकंगनी,

पँवार के बीज, बाबची, हालों बराबर मिलाकर रक्खे तीन माशे सुबह को पानी के साथ निगल जावे यह औषध सफेद दाग को भी गुण करती है।

औषध-जोड़ों की पीड़ा और बाई की पीड़ा को गुण करे और कफ की निवृत्तिकारक और आरोग्यता की देनेवाली है-मालकंगनी लेकर पहिले दिन एक दाना निगले और हररोज एक दाना बढ़ाया करे जब सौ दाने तक पहुँचे एकएक कमकरे इस अवसर कमी और जियादती में यह रोग नाश हो जावेगा और क्षुधा अधिक होगी जो जियादा करनेके दिनोंमें गरमीमालूम हो अधिक न करे किन्तु उसी समय से एक एक कम करे।

अन्य-कमर की पीड़ा को गुण करे-करील की लकड़ी जलाकर दो माशे थोड़े घृत के साथ खावे।

अन्य-हाथ पांव के रहजानेको गुण करे और सदाके कब्ज को दूर करता है और जिस मनुष्य को कौलंजी हो उसको बहुत गुण करे-रेंड़ी छीलकर निगल जावे पहिले दिन एकदाना दूसरे दिन दो दाने इसी तरह एक एक अधिक करते रहें जब सात दाने तक पहुँचे एक एक दाना हररोज कम करें।

अन्य-वाई की पीड़ा को गुण करे-हररोज एक माशा भर खासन के बीज खावे।

अन्य-जोड़ों की पीड़ा को गुण करे-खशखाश का पोस्ता अपने स्वभाव और बल के बराबर पानी में भिगोदे और इतना पिये कि नशा न हो।

अन्य-कलमीशोरा दो माशे, कतीरा छः रत्ती, एक दाम शहद में मिलाकर तीन दिन खावे और दो माशे मीठे तेल में मिलाकर कमर पर लगावे।

अन्य-शक्कर और खोपरा खाना कमर की पीड़ा को गुणदायक है।

अन्य-महुवे के बीजका तेल जो कोल्हू में निकालते हैं और घी की तरह पीला निकलता है जोड़ों पर मलना बाई की पीड़ा

और जोड़ों की पीड़ा आदि को और शीत के रोगों को गुण करे।

अन्य—कमर की पीड़ा को गुण करे—रेंड़ी, लाहौरीनोन, मैदा लकड़ी एक एक तोला, हींग छः माशे, गेहूँ का आटा आधपाव सबको साथ पीसकर रोटी पकावे जब एक तरफ रोटी पकजावे पीड़ा की जगह पर बांधे।

फलवे का तेल—कन्द के वृक्ष के सदृश जरदी माइल होता है जो पहाड़ से लाते हैं उसको मुसिल के उपरान्त मलना जोड़ों की पीड़ा और बादी और कफ और शीतकी पीड़ाको गुण करता है।

सम्भालू का तेल—उसका मलना जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—सम्भालू कूटकर उसका रस निचोड़कर उसकी बराबर मीठातेल मिलाकर औटावे जब पानी जल जावे और तेलमात्र रहे छानकर गुनगुना पीड़ा पर मले और सम्भालू के पत्ते गरम करके उस पर बांधे।

वेदअंजीर का तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—अरण्डकी जड़ दो सेर आठसेर जलमें औटावे जब दो सेर रहे रेंड़ी के तेल में डालकर इतना औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहे मर्दन करे।

अन्य—जोड़ों की पीड़ा को गुणदायक—अलसी का तेल, सरसों का तेल, तिलों का तेल आध आध पाव धतूरे के वृक्षका रस कि पत्ती फल और जड़ समेत निकाला हो इन सब तेलोंमें डालकर मधुरी अग्निपर जोश दे जब रस जलकर तेल शेष रहे छानकर पीड़ापर मले उसपर अरण्ड या मदार के पत्ते बांधे।

मदार का तेल—वातको पचाता है और उसका मर्दन जोड़ोंकी पीड़ाको गुण करे—अधकुचली मदारकी जड़कड़ुवे तेल में जलावे जब जलकर नीचे बैठजावे तेल छानकर मले। केवल मदार के पत्ते गरम करके घुटनोंकी पीड़ापर बांधना भी गुण करता है।

ⅽ तेल—जोड़ोंकी पीड़ा और फालिजको जिसे वाई ने पकड़ा हो गुणदायक है—मीठातेल पावभर, लहसुन आधपाव भिलावें, चार, लहसुन छिला हुआ और भिलावां मीठेतेल में जलावे जब राख हो जावे फिर छानकर सेवन करे और हवा से पथ्य करे।

इस्पंद का तेल–कमर और पिंडली और पहलू की पीड़ा और रांघन को गुण करे–इस्पंद मीठे तेल में जलावे और छान कर सेवन करे और बाजों के विचार में इस्पंद के तेल की यह रीति है–इस्पंद आठ दाम, सोंठ दो दाम रात को पानी में भिगोदे सुबह को आधसेर तिलों के तेल में औटावे जब पानी इस्पंद और सोंठ जलकर तेलमात्र रहे छानकर मर्दन करे और बाजे इसमें कड़वी कूठ मिलाकर मलते हैं और बावची के तेल का मर्दन जो फालिज में वर्णन हुआ रांघन को गुण करे।

गोली–जोड़ों और पांव की उँगलियों की और रांघन की अधिक पीड़ा को गुण करे–चीत, अफीम दो दो टंक, काहूके बीज, अजवाइन दश दश टंक कूट छानकर चिलगोजे की गिरी के बराबर गोलियां बनावे और एक गोली खावे।

अजवाइन का तेल–जो गठिया को गुण करता है–अजवाइन पीसकर मीठे तेल में मिलाकर मले।

तम्बाकू का तेल–जोड़ों के दर्द के वास्ते–तम्बाकू आधसेर, तिलों का तेल पाव भर, तम्बाकू तोड़कर आध सेर पानी में रात को भिगोवे सुबह तम्बाकू का पानी तिलों के तेल में मिलाकर मधुरी अग्नि पर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे साफ करके मले।

नाजबो का तेल–घुटने की पीड़ा को गुण करे–नाजबो की पत्तियों का पानी दो भाग, मीठा तेल एक भाग लेकर औटावे जब तेल रह जावे एक तोला भर चने का पानी उसमें जीरा पकाया हो मिलाकर पिये और जोड़ पर भी मले।

चोबचीनी का तेल–जोड़ों की पीड़ा और पीठ की पीड़ा और उस पीड़ा को जो आतशक से पैदा हो गुण करे–अधकुचली चोबचीनी, मीठा तेल दश दश मिस्काल पांच सेर जल में औटावे जब पानी जल जावे साफ करके सेवन करे।

चमगादर का तेल–जोड़ों की पीड़ा और बदन की ऐंठन और फालिज और कांपनी को गुण करे–चमगादर बड़ा मोटा

मीठे तेल में औटावे जब चमगादड़ गल जावे साफ करके सेवन करे और इस तेल को लिंग के छिद्र में टपकाना मूत्र को भी जारी करता है।

मेहँदी का तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—मेहँदी की पत्तियाँ चारदांग पानी में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके आधसेर मेहँदी के तेल के साथ जलाकर सेवन करे।

तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—निर्मापक का बनाया हुआ है मेहँदी के पत्ते, सम्हालू, नाजवो के पत्ते, धतूरेके पत्ते, मदार के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, मकोय के पत्ते, बराबर लेकर उनका रस निकालकर और पत्तों की बराबर तिलों का तेल डालकर औटावे और इस्पन्द एक तोला, सोये के बीज एक तोला, अजवाइन छः माशे मिलावे जब यह औषध जलकर तेलमात्र रहे साफ करके पहिले अफीम दो माशे तेल में मिलावे फिर सोरंजान कड़वी एक तोला भर मिलाकर सेवन करे।

सोंठ का तेल—जोड़ों की पीड़ाको गुणकरे और हवाको पचावे अदरक का पानी चार भाग, मीठा तेल आधा भाग मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेलरहे साफ करके गुनगुना मर्दन करे।

केवड़े का तेल—पीठ और जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और ढीले जोड़ को सख्त करे—केवड़े का फूल मीठे तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रखकर मर्दन करे।

तिनिन्नीकातेल—मलनापीठ और जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे।

वफारा—कंधे की पीड़ा के वास्ते—करंजुवा औटाकर वफारा ले और पत्ते बांधे और हवा से बचा रहे जिसको सर्दी पकड़ले यह वफारा गुण करता है सिरसके पत्ते सम्हालूके पत्ते, सहँजने के पत्ते पानी में औटाकर वफारा ले और औषधियों को पानी से निकालकर जोड़ पर बांधे और हवा से बचा रहे।

वफारा—जोड़ों में गांठ पड़जाने में और हरजोड़ की पीड़ाको गुण करे—सम्हालू की पत्तियां, सोये के बीज, इस्पन्द औटाकर वफारा ले।

औषध–जोड़ोंकीपीड़ाकोगुणकरे-धतूरेकेपत्तेगरमकरके बांधे।

लेप–पीठ और घुटने की पीड़ा को गुण करे–मैदा लकड़ी पीस कर गुनगुनी बांधे।

अन्य–घुटनेकी पीड़ा के वास्ते नींबकी कोंपल और उसके अन्दरकी छाल पीसकर उसका गहरा पानी लेकर गुनगुना लेप करे।

लेप–जोड़ों की पीड़ा और घुटने की पीड़ाऔर पांवकी उँगलियों की पीड़ाको गुणकरे–नरमें की पत्तियांमीठे तेल में पीसकरलगावे।

अन्य–घुटने और जोड़ और कमर की पीड़ा को गुणकरे–विनौला कूटकर थोड़े पानी में औटावे जब गलजावे पीसकर टिकिया बनाकर एक दिन में दो वेर जोड़पर गुनगुना बांधे कई दिनमें पीड़ा दूर हो जावे।

लेप–जोड़ की पीड़ा को गुण करे–गाय का ताजा गोवर सिरके में पकाकर पीड़ा की जगह और सूजन पर बांधे।

लेप–घुटने की पीड़ा को गुण करे–कनेर की पत्तियां औटाकर कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य–वकरीकी मेंगनियां दो भाग, जौ का आटा एक भाग, सिरके और अरण्ड के तेल में मिलाकर लेप करे।

लेप–पांव की उँगलियों की गरम पीड़ा को गुणदायक–वजरकुतूना सिरकेमें पकाकर लेपकरे।

अन्य–गरम पांवकी उँगलियों को गुणदायक है–काई लगावे और इसीप्रकार जौ का आटा और खतमी कूटछान-कर लेप करना और शहद में मिलाकर लगाना ठंढे पांव की उँगलियों की पीड़ा को लाभ देता है।

अन्य–घुटने की पीड़ा को गुण करता है–सहँजने के बीज पीसकर गुनगुने लेपकरे जो पुरानी घुटनेकी पीड़ा हो दूर होजावे।

अन्य–कांटेदार थूहर को फाड़कर पीड़ा की जगह पर एकरात दिन बांधे रक्खे और कई दिन इसीप्रकार सेवन करे।

लेप–जोड़ों की पीड़ा के लिये छिले तिल, बाबूना एक एक तोला, रेंड़ीकी गिरी छः माशे पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–सरकण्डेकी जड़, सोंठ पीसकर मीठेतेल में मिलाकर गुनगुना मले और जो सरकण्डे की जड़ न हो तो नरकुल की जड़ काफी है।

लेप–पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुणकारक–अरण्ड के पत्ते औटाकर पीसकर लेप करे।

अन्य–शिरपीड़ा को ठहरावे–अजवान पीसकर लगाकर सेंक करे पीड़ा दूर होजावे।

लेप–घुटनेकी पीड़ा और रांघनको गुणदायक–साबुन मेहँदी में मिलाकर पानी में पीसकर लेप करे और बाजोंने इन्द्रायण मिलाना भी लिखा है।

लेप–घुटने की पीड़ाको गुणकरे–मेहँदी की पत्तियां अरण्ड की पत्ती पीसकर गुनगुने घुटने पर बांधे।

औषध–जो कमर और पीठकी पीड़ा को गुणकरे–हुलहुल की छाल उसके ऊपरकी स्याही दूर करके अन्दर की छाल लेकर छाया में सुखाकर कूटकर पकावे और उसकी बराबर शक्कर मिला कर निहार पांचटंक सौंफ के रस के साथ खावे।

अन्य–पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुण करे–बकरी की मेंगनियां शहद में हिलाकर लगावे।

औषध–रांघन को गुण करे–सोंठ पावभर महीन कूट छान कर एक तोला पारा खूब उसमें दोनों मिलाकर उसमें थोड़ा लेकर मर्दन करे।

लेप–बाई की पीड़ा को गुण करे–सहँजने की पत्तियां पानी में पीसकर गुनगुनी लेप करे।

औषध–जोड़ की पीड़ा को जो शीत से होवे गुण करे–सोंठ, कायफल, असगन्ध बराबर पीसकर मर्दन करे।

अन्य–उस कमर की पीड़ा को गुण करे जो कफ और वात से हो–रेंड़ी, लाहौरीनोन, मैदा लकड़ी एक एक तोला, हींग छः माशे, गेहूं का आटा आध पाव सबको कूट छान,

मिलाकर रोटी बनावे एक तरफ रोटी को तवे पर सेंककर गुनगुनी पीड़ा की जगह पर बांधे।

लेप—पीड़ा और सूजन को गुण करे—अजवाइन कूट छान शहद में मिलाकर लेप करे।

लेप—एँड़ी और तलुवे की पीड़ा को गुण करे—मसूर सिरके में पकाकर गुनगुना लेप करे।

शरीर के प्रकट रोगों का वर्णन और आतशक का यत्न।

यह रोग जले हुये मलसे पैदा होता है चाहिये कि मुंजिज के उपरांत शरीर को कई बेर जले हुये दोषों से साफ करे और इस रोग का बहुधा यत्न बिषैली वस्तु हैं ठंढाई बहुत हानि करती है उससे गठिया हो जाती है और इलाज की रीति से रोगी मर जाता है चाहिये कि पहिले मुसिल ले फिर और औषध का सेवन करे।

मुसिल—जो विना खेद के मल को निकाले और आतशक को गुण करे—पारा, गन्धक आमलासार एक एक माशे, गेरू आधा माशा, जमालगोटे की गिरी सब्जी निकालकर तीन माशे पहिले पारे और गन्धक को मिलाकर खरल करे फिर सम्पूर्ण औषध डाल कर पानी में खरल करके टिकिया बनाकर बर्तन में रखकर उसमें जल भरकर अग्नि पर रख दे जब सूखजावे निकालकर तीन रत्ती भर आध सेर दूध के साथ खावे।

दूसरामुसिल—कफ और पित्तके मलको अच्छी तरह निकाले—पारा, आमलासार, गन्धक एक एक टंक, सुहागा, चीत, काली मिरच, सोंठ तीन तीन टंक, जमालगोटे की गिरी सब्जी दूर करके ग्यारह टंक, बासी पानी में एक पहर खरल करे खूराक एक रत्ती से दो रत्तीपर्यन्त मिश्री के शरबत के साथ खाय।

गोली—मुसिल आतशक के लिये बनी हुई—जमालगोटा एक टंक, आमला चार टंक कूट छानकर नींबू के पानी में सात पहर खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक कौड़ी से तीन कौड़ीपर्यन्त रोगी के स्वभावानुकूल और बाजे नुस्खों

में बना जमालगोटा और कालीहड़ एक एक भाग, आटा दो भाग, नींबू के पानी में खरल करके बंदूक की गोली के बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय।

अन्य–शोधीगंधक, शोधापारा, सुहागा, सोंठ, कालीमिरच, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर कूट छानकर गाय के दूध में पीसकर दो रत्ती की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली जल के साथ और गोली खाकर जितना जल पिये उतना ही मल गिरे भोजन दही चावल या दूध चावल का करे।

इन्द्रायण का शरबत।

जो सौदावी मलको निकाले और आतशकवालों को गुणकारक है–इन्द्रायण की छाल टुकड़े टुकड़े करके दो भाग दशहिस्से जलमें औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके औषध की तोलके बराबर शक्कर मिलाकर कवाम करे खूराक बारह टंक से बीस टंकपर्यन्त करे।

औषध–आतशक के लिये चाहिये कि पहिले तीनदिन मुंजिज पिलाकर मुसिल दे शहतरेके पत्तोंका शीरा दो टंक, सौंफ डेढ़टंक, गुलकंद दो तोले मिलाकर पिये चौथे दिन हब्बुलनील भूनकर कूट छानकर बराबरकी शक्कर मिलाकर तीन दिन खावे फिर यह हुक्का पिलावे आधा दाम शिंगरफ महीन पीसकर एक दाम अफीम में मिलाकर नौ टिकियां बनावे और तीन दिन एक टिकिया सुबह एक दोपहर एक शामको तम्बाकूकी रीति पर बेर के कोयलों से मिट्टी के हुक्के में नरकुल के नेचे से पिये जब टिकिया खूब जलजावे उसको कोयले सहित उसी हुक्केके अन्दर डालदे और तीन दिन हुक्के से न निकाले और उसी हुक्के में पिया करे भोजन केवल भुनेचने या चनेकी अलोनी रोटी तीन दिन तक फिर चौथे दिन नरम खिचड़ी एक दो दिन खावे उसके पीछे इख्तियार है कदाचित् मुँह आवे कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करे।

तेल–आतशक के वास्ते इन्द्रायनकी जड़ आधपाव कूट-

कर दो सेर जल में औटावे जब आध सेर शेष रहे मलकर साफ करके आध सेर रेंड़ी के तेल में मिलाकर मधुरी अग्नि में औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे शीशे में रक्खे और प्रभातको एक दामके बराबर लेकर गौके दूध में मिलाकर पिये भोजन मूँग की खिचड़ी दो तीन दिन में रोग दूर होजावे और यह दवा अतीसार के मलको निकालती है।

कल्क—आतशक को गुण करे—बन्दाल के फल दो आधपाव जल में भिगोदे सुबह उसका साफ पानी पिये।

औषध—आतशक को गुणकारक—दश टंक कोंच की पत्ती, पचास टंक जल में पीसकर निहार सात दिन पर्यन्त खावे।

चूर्ण—आतशक के वास्ते आजमाया हुआ है—कटीला कूट छानकर पहिले दिन एक माशा दूसरे दिन दो माशे इसी प्रकार हररोज एक माशा अधिक करके सात दिन पर्यंत खावे फिर छोड़दे इसके असर से एक बेर कै और दस्त आवेंगे और सिवाय खटाई के और कुछ इसमें पथ्य नहीं है।

अन्य—आतशक को गुण करे—मदार की लकड़ी का कोयला पीसकर साफ करके उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो दाम घृत में मिलाकर सात दिन खावे भोजन कलिया।

अन्य—आतशक को गुणदायक—अब्बासी के बीज जिसका पुष्प लाल हो जितना चाहे भूनकर उसकी छाल दूर करके उसकी गिरी कूट छानकर बराबर की शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे और हररोज एक दाम ठण्डे जल से खावे।

अन्य—रसकपूर नौ माशे, इक्कीस कालीमिरचें कूट छानकर चूर्ण बनाकरसात भाग करे एक भाग निकालकर छः भाग एक सुबह एक शाम बकरी या गाय के दूध के साथ खावे भोजन सात दिनपर्यंत दूध चावल फीके फिर कचनालकी छाल, माजू, चमेली की पत्तियाँ, इस्पन्द के काढ़े से गरगरा अर्थात् कुल्ली करे फिर बकरे का शिर और पांव औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पीले हड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, काबिली

हड़, लाल मिरच दो दो मिस्काल, पारा सात मिस्काल, शक्कर सोलह मिस्काल कूट छानकर खूराक बनाकर सेवन करे।

अन्य–आतशक दूर करे–पीले हड़ की छाल, कालीहड़की छाल, सुनातूतिया, जली पीली कौड़ी बराबर लेकर नींबू के रस के साथ लोहके बर्तन में सोलहपहर खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर हररोज एक गोलीपान में पंद्रह दिवस पर्यन्त खावे और थोड़ी गोली को पीसकर कागज पर रख घाव पर लगावे जो मुँह आवे कचनाल की छाल औटाकर कुल्ली करे।

गोली–आतशक को नाश करे–हरी तुलसी की पत्तियां चार टंक, सब्ज तूतिया एक दाम पीसकर बेर की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली सुबह को गरम पानी के साथ भोजन बे घी की खिचड़ी खाय।

संखिये की गोली–आतशक के लिये–कत्था, संखिया, इलायची के दाने, खड़ियामिट्टी बराबर ले जो हो सके तो गुलाब नहीं तो पानी में खूब पीसकर ज्वार के बराबर गोलियाँ बनाकर बारह दिन तक रोज एक गोली खावे जो निर्बलता सूचित हो एक दिन बीच देकर खावे भोजन गहरी चीज और बादी और चौपायों के मांस और खटाई से बिल्कुल पथ्य रक्खे और नोन भी कम खावे और गेहूँ की रोटी और गाय का घी और मूँग की दाल खावे।

गोली–आतशक की नाशकारक–मदार की जड़ पांच टंक, कालीमिरच अढ़ाई दाम कूट छानकर गुड़ में मिलाकर जुवार की बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावे खटाई और बादी से पथ्य करे।

दूसरी गोली–कालीहड़ चार दाम, कालीमिरच एक दाम, सब्ज तूतिया चौथाई दाम, कागजी नींबू के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम कागजी नींबू के रस के साथ चालीस दिन निगल जाया करे भोजन मूँग की दाल और जो गोली खाने के समय

कण्ठ में जलन मालूम हो थोड़ा दही खाले और बाजे नुस्खों में जंगी हड़ बीस तोला, तूतिया एक तोला भर लिखा है और कालीमिरच नहीं है।

संखिये की गोली—संखिया एक टंक, कत्था पांचटंक भँगरेके पानी में चनेकी बराबर गोलियां बनाकर पहिले दिन एक गोली सुबह और एक शाम खावे और जो हवा ठण्ढी और रोगी बलवन्तहो तीसरे दिन दो गोली सुबह और दो शाम चौदह दिन पर्यन्त इसी तरह खावे और यदि सम्भव हो इक्कीस दिन पर्यन्त सेवन करे और जो रोगी निर्बल और बायु गरम हो तो एक गोली सुबह और एक शाम खावे और जो गोलियों के खाने से मतली औरकै होवे पान बहुत खावे और खूब परहेज करे।

पारे की गोली—गुदा के व्रण और आतशक को गुण करे—पारा अढ़ाई टंक, मस्तगी, लाल शक्कर तीन तीन टंक, कुन्दर पांच टंक, शिंगरफ दो टंक, पहिले पारे को थूक में मिलाकर उँगलीसे खूब साने कि टुकड़े उसके अलग होजावें फिर आधी शक्कर उसमें डालकर मले जब पारा शक्कर में मिलकर खूब मिलजावे थोड़ा थूक और बाकी शक्कर डालकर खूब मले इसी तरह से हर दवा अलग कूट छानकर गुड़ ओषधियों की बराबर लेकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक टंक हर रोज एक सप्ताहपर्यन्त खावे।

दूसरी गोली—पारेकी, आतशक के वास्ते—पारा, कत्था, बायबिड़ंग, अजवाइन, कालीमिरच, महुवेके फूल एक एक भाग कूट छानकर ओषधियों की बराबर लेकर जंगला बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक शाम को जलके साथ खावे भोजन गेहूं की रोटी।

अन्य—पारा, अकरकरा, अजवाइन, मोचरस छः छः माशे मिलावे सात माशे गुड़, ओषधियोंकी बराबर तिल मिलावे कि तौलकेबराबर कूटछानकर गुड़में मिलाकर चौदह गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक गोली शाम दही के साथ खावे।

अन्य–जोड़ों की पीड़ा के वास्ते जो आतशकके कारण होवे गुणदायक और आतशक को भी गुण करे–पारा, खुरासानी अजवाइन, भिलावाँकी टोपी दूर करके, अजमोद, इस्पंद तीन तीन माशे, गुड़ दो दाम कूट छानकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर हररोज एक सुबह एक शाम कंठ में रखकर पानीसे इस तरहसे निगल जावे कि दांतों पर न पहुँचे भोजन खिचड़ी और दाल पके चावल और गेहूँ की रोटी खटाई और वादीसे पथ्य करे पांच दिन में रोग दूर हो जावे और मुँह आवे कुल्ली करे मुसिल के पीछे खाना अधिक गुण करे।

अन्य–आतशकको गुण करे–हरे रूरेकी जड़की छाल पीस कर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर घृतके साथ खावे।

अन्य–आतशक दूर करे–अजवाइन की भूसी, सरसों, कालीमिरच एक एक दाम कूट छानकर गोलियां बनाकर खावे इस औषध में कुछ पथ्य नहीं है।

गोली–आतशक को गुण करे–सादी अजवाइन खुरासानी भिलावां बराबर एक दाम लेकर भँगरेके रस में कजली करके सुखावे और उसके बराबर गुड़ मिलाकर एक दामकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज एक सप्ताह बहुत दो सप्ताह तक खावे और जो मुँह आवे कचनारकी छालसे कुल्ली करे।

शिंगरफ की गोली–आतशक और जोड़ों की पीड़ा को जो आतशक के कारण हो गुण करे–शिंगरफ, अफीम, पारा दो दो दांग, अजवाइन पांच दांग, भिलावां टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़ पाच दांग, पारा और शिंगरफ मिलाकर सम्पूर्ण औषध कूट छानकरमिलावेऔर सम्पूर्ण औषधियोंको अदरक के रसमें खरलकरके सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावे।

पारे की गोली–आतशक को गुणकारक–पापड़िया कत्था एक एक बहलोली भर, पारा चारमाशे, तीन बरसका पुराना गुड़ तीन बहलोली, तीनों औषध पीस मिलाकर सात गोलियां बनाकर सेवन करे।

अन्य–आतशक को गुण करे और बीर्यकी बलकारक भी है–पारा, गन्धक, हरताल, सुहागा एक एक टंक, कालीमिरच दो टंक, कूट छान कर नींबू के रस में मिलाकर गोलियां बनावे खूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय ।

अन्य–आतशक को गुण करे–पारा, अजवाइन, काली मूसली दो दो टंक, भिलावां एक टंक, गुड़ सोलह टंक, ग्यारह गोलियां बनाकर हररोज एक गोली दही के साथ खावे ।

काढ़ा–आतशकके वास्ते आजमाया हुआ है मुँह नहीं लाता और परहेज भी इसमें नहीं है जो परहेज करे तो कलिया भात खावे शीघ्रही आतशक को खोदेता है–कचनार की छाल, इन्द्रायनकी जड़, बबूल की फली, छोटी कटाई जड़ और पत्तों-समेत, पुराना गुड़ आध आध पाव, तीन सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहे साफ करके शीशे में रक्खे और सात खुराक करे ईश्वर चाहे शीघ्रही रोग नाश होजावेगा ।

अन्य–सिरसकी छाल, बबूलकी छाल, नींबकी छाल सवा सेर सबको सात लोटे जल में औटावे जब लोटाभर शेष रहे साफ करके शीशे में रक्खे और हररोज आध पाव पिये और एक सप्ताहपर्यन्त चने की रोटी भोजन करे ।

औषध–आतशक को गुणदायक–बरगद के पत्ते जलाकर उसकी राख दो कौड़ी के बराबर पान में खावे आतशक जो शेष रही हो दूर हो जावे ।

अन्य–हुलहुलकी पत्तियां पीसकर भंगकी तरह पिये और उसका फोग व्रणपर बांधे ।

अन्य–आतशक को गुण करे–बरगद की छाल, हरफा-रेवड़ी की छाल पांच टंक, कालीमिरच तीन टंक, पचास दाम पानी में पीसकर चौदह दिनतक खावे ।

अन्य–हंस जो एक घास है पत्ते, बीज, डाली और जड़ समेत जलाकर उसकी छः माशे भर राख हररोज एक तोला भर शहद या गुड़ मिलाकर सात दिन पर्यन्त खावे ।

अन्य—आतशक को गुणदायक—कसौंधी की पत्तियां पांच टंक, कालीमिरच एक टंक दोनों को पीसकर पिये और बिना नोन भोजन करे।

अन्य—आनशक को गुणदायक—रोग के प्रारम्भ में बड़ी कंघी के वृक्षकी पत्तियां एक दाम लेकर पानी में भिगोकर उसका जल बीस दिन पर्यन्त पिये।

बफारा—आतशक को गुण करे—खुरासानी अजवाइन अढ़ाई माशे, शिंगरफ पांच माशे, तूतिया दो रत्ती, अकरकरा पांच माशे, मदारकी छाल दश माशे कूट छानकर बेर की लकड़ी की आग पर रखकर उसका धुवां ले।

बफारा—आतशक—खुरासानी अजवाइन, भूंभर की फली, अकरकरा, मुरदारसंग एक माशा पीसकर बेर की लकड़ी से जलाकर धुवां ले।

हुक्का—आतशक दूर करे—शिंगरफ, सब्जतूतिया अढ़ाई अढ़ाई दाम, वायविड़ंग पांच माशे, मदार की जड़की छाल दश माशे, जो स्वभाव बलवान् हो बीस माशे कूट पीसकर छः टिकियां बनावे और पानी बिना हुक्के में बेर की लकड़ी की आगसे तम्बाकूकी सदृश पिये और उसका धुवां व्रणपर ले और उसका गुल कि राख के सदृश हो जावे थूक में मिलाकर तीन दिन सुबह शाम घाव पर मले भोजन रोटी घृत शक्कर के साथ चाहिये कि इस औषध के सेवन के पहिले जुलाब ले।

अन्य—शिंगरफ, अकरकरा, नींब का गोंद, माजू, सुहागा एक एक दाम सम्पूर्ण औषध जवकुटकर सात पुड़ियां बनाकर एक पुड़िया चिलम में रखकर बेरकी अग्निसे पिये जब उसका एक तरफ जलजावे दूसरी तरफ उसको जलाकर पिये यदि इस अवसर में कै आवे कुछ हानि नहीं इस तरह एक दिन में दो तीन पुड़ियां सुबह, दोपहर, शाम को सेवन करे और उसकी राख घाव पर छिड़के भोजन मोहनभोग करे शक्करतरी के

साथ तीन रोज यह क्रिया करे बहुत है जो मुँह आये चमेली की पत्तियाँ औटाकर कुल्ली करे।

औषध–आतशक को गुणकारक–करंजुवे की हरी पत्तियां, नींव की पत्तियां पन्द्रह पन्द्रह माशे, कालीमिरचें साढ़े सात माशे, पत्तियों का रस निकालकर चोवचीनी चार माशे पीसकर छिड़के इसी तरह सात दिन पिये भोजन में नोन न खावे।

अन्य–गरमी को गुण करे–शिंगरफ, फिटकरी, इस्पन्द, अजवाइन एक एक टंक सबको पीसकर आधा आधा टंक दोनों समय चिलम में रखकर तम्बाकू की सदृश बेर की अग्नि से पिये और बन्द मकान में जहाँ बदन को हवा न पहुँचे रहे तेल और नोन से पथ्य करे और सूखी रोटी खावे।

अन्य–आतशक को दूर करे–स्त्री की ऋतु के रुधिर का कपड़ा जलाकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर बेर की बराबर गोलियां बनावे हररोज सुबह को एक गोली खावे भोजन चावल या रोटी–नोन खटाई से पथ्य करे।

अन्य–आतशक के लिये–रसकपूर, शिंगरफ छः छः माशे, सब्ज तूतिया साढ़े तीन माशे, सफेद मोम दो दाम, गाय का घी चार दाम, कपड़ा चार गिरह, नींब की पत्तियों की टिकिया पहिले टिकिया को तेल में पकाकर दूर करे फिर मोम डाले जब वह गलजावे बर्तन को नीचे उतारकर रसकपूर डालकर हल करे फिर शिंगरफ पीसकर मिलावे फिर तूतिया डालकर मोमजामा करके छः बत्तियाँ बनावे और अपने को चादर से छिपाकर एक बत्ती लेकर बेर की लकड़ी की आग से धुवाँ ले भोजन तीन दिवस पर्यन्त दूध चावल खावे।

मरहम–आतशक को गुण करे–रसकपूर काशगरी सफेदा हर एक सात माशे, छोटी इलायची के दाने साढ़े तीन माशे घृत में हल करके मरहम बनावे।

मरहम–कत्था दो माशे, संग जराहत एक माशा, तूतियाएक चने के बराबर, जली छालिया एक, घी आवश्यकता के अनुकूल

लेकर एकसौ एक बेर धोवे फिर ओषधियों में मिलाकर मरहम बनाकर घाव में रक्खे जो पीली कौड़ी जलाकर मिलावे उत्तम है।

अन्य—इक्कीस मदार के पत्ते, सरसों का तेल आधपाव, सात सात पत्ते तीन बेर तेल में जलाकर राख करे फिर मोम छः टंक मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य—आतशक को गुणकारक—कौसुरुन जलाकर, तूतिया, पीली कौड़ी जलाकर, बराबर कूट छानकर छिड़के।

अन्य—कत्था सफेद, पुरानी सुपारी अढ़ाई अढ़ाई दाम, जंगार एक दाम सम्पूर्ण ओषधियों को एक दाम जल में पीस कर कागज़ पर लगाकर जलावे और उसकी राख लेकर घाव पर छिड़के।

अन्य—पुराने जूते का चमड़ा, मसूर, चने जलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य—पीलीहड़, सुहागा, आमला सबको जलाकर पीसकर घाव पर बांधे।

कोढ़ का यत्न।

यह रोग सौदावी है जब दृढ़ होजाता है आराम नहीं होता आरम्भ में फस्द और मुसिल लेना उचित है चाहिये कि हर महीने में मुसिल ले और खेद चिन्ता और जागने से पथ्य करे और जो खुश्की अधिक हो तो चीजें कि असली रतूबत को पचाती हैं उनसे पथ्य करे और कोढ़ी के लिये उत्तमोत्तम भोजन बकरी का दूध है बच्छनाग की माजून यह नुस्खा कोढ़ी के लिये वैद्यों का जारी किया हुआ है—कालीहड़, चीता दश दश टंक, कालीमिरच पांच टंक, बच्छनाग अढ़ाई टंक कूट छानकर गाय के घी में भूनकर दुगुना शहद मिलाकर माजून बनावे खूराक एक मिस्काल है दो टंक पर्यन्त या एक मिस्काल खाय।

लाभ—हिन्दुओं का आज़माया हुआ है जो हरताल का कुश्ता चालीस दिन खाना कोढ़ को गुण करता है—हरताल

के मारने की यह रीति है—हरताल एक दाम, करंजुवा, फिटकरी दो दो दाम पहिले आधे करंजुवे की गिरी अधकुचली करके सकोरे में रक्खे उस पर आधी फिटकरी कूटकर बिछावे फिर उस पर हरताल डाले बाकी आधी करंजुवे की गिरी और फिटकरी कूटकर हरताल पर बिछा दे और कपरौटी करके सात सेर जंगली कण्डे में रखकर आग दे जब ठण्ढा हो जावे निकालकर आधी रत्ती हररोज पान में खाय पचास दिन में रोग नाश हो जावे।

दूसरी रीति—एक दाम हरताल अंडे की सफेदी में मिलाकर गोली बनाकर सकोरे में रक्खे ऊपर से एक सकोरा ढांप कर कपरौटी करके सुखावे और चार पहर आग में रक्खे कुश्ता हो जावेगा।

नींब का चूर्ण—कोढ़ को गुण करे—पुरानी नींब के फूल, पत्तियाँ, फल, छाल, जड़ आध आध सेर, कालीमिरच, पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बावची पाव पाव भर कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक दो टंक से चार टंक पर्यन्त मंजीठ के काढ़े के साथ चार महीने पर्यन्त सेवन करे मांस, नोन और गरम चीजों से पथ्य करे।

पारे की गोली—कोढ़ को गुणकारक और आजमाई हुई है—पारा दो टंक, संखिया एक टंक, कुन्दर छः टंक, रेवन्द-चीनी तीन टंक, बबूल का गोंद दो टंक पारे को कुश्ता करके सम्पूर्ण औषधियों को नींबू के रस में खरल करे फिर कुश्ता और सात बहेड़े के पत्ते उसमें मिलाकर कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे खटाई से पथ्य करे।

काढ़ा—कोढ़ को गुणदायक—शहतरा, असगन्ध, ब्रह्मदण्डी, पीलीहड़ की छाल बराबर लेकर दो तोले के बराबर रात को पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ करके पिये।

चूर्ण—कोढ़ और रुधिर के बेग को गुण करे—हिंगोट की

छाल कूट छानकर हर सुबह एक तोला पानी के साथ खावे खटाई बादी और नोन से पथ्य करे दो सप्ताह में अच्छी तरह गुण करेगा ।

काढ़ा—कोढ़ को गुण करे—चने की भूसी आध पाव सेर भर जल में भिगोकर सुबह मलकर छानकर इसी रीति से एक महीना उन्नीस दिन पर्यन्त पिये चावल दूध दही और जो चीज सफेद हो और खटाई से भी पथ्य करे मांस और गुड़ और शक्कर जो इनमें से मिल जावे खावे जो कुछ रोग बाकी रह जावे और थोड़े दिन पिये ।

औषध—कोढ़ को गुण करे—पानी कि मस्ती के वक्त नींव के वृक्ष से टपकता है लेकर शरीर में मले ।

अन्य—सरफोंके के अरक का सेवन करना कोढ़को गुणकरे ।

अन्य—नींबू के फूलों का अरक कोढ़ को गुण करे ।

अन्य—कोढ़ को गुण करे—विजयसारकी लकड़ी एक दाम कूटकर पानी में भिगोकर हररोज इसी तरह से ४० दिन पिये ।

अन्य—मेहँदी की पत्तियाँ तीन मिस्काल रात को पानी में भिगोदे सुबह मलकर थोड़ी शक्कर मिला ४० दिन पिये ।

औषध—कोढ़ को गुण करे—सिरस की पत्तियाँ पक्की एक दाम, कालीमिरचें दो माशे हररोज पानी में पीसकर ४० दिन पिये ।

अन्य—कोढ़ को गुण करे—बबूल की छाल दो दाम अधकुचली करके पानी में भिगोदे सुबह मलकर साफ करके हर रोज इसी तरह से पिये ।

शीशम का शरबत ।

रुधिर के उपद्रव के सम्पूर्ण रोगों कोढ़ और गरमी को गुण करे—शीशम का बुरादा पावभर नदी के तीन सेर जल में आठ पहर भिगोकर सुबह औटावे जब आधा शेषरहे तीनपाव शक्कर में क्वाम करे खुराक छः तोले हर सुबह और शाम इस रीति से कि शीशम की लाल लकड़ी का बुरादा आधा दाम लेकर आध पाव जल में औटावे जब आधा शेषरहे साफ करके

वही शरबत मिलाकर पिलावे चालीस दिन इसी प्रकार सेवन करे खटाई दूध दही और तरकारी आदि से पथ्य करे।

औषध—कोढ़ को गुणकरे—समन्दरफल दरख्तकी छाल कूट छानकर हर सुबह एक तोला भर पानीके साथ तीन दिन खावे और तीन दिन नागा करे इसीप्रकार इक्कीस दिवस पर्यन्त खावे और इसअवसर में मूँग की दाल और खिचड़ी भोजनकरे पहिले दिनों में कै होगी कई दिनों के पीछे कै आना बन्द हो जावेगा।

औषध—नींबकी पत्तियों का नोन कोढ़ खुजली और दाद को गुणकरे।

लाभ—बहुत कोढ़वालोंको देखा है कि रोग के शुरूमें उन्होंने अफीम और पोस्ता खाने की आदत डाली रोग शान्त होगया।

शरबत—झाऊ की जड़ का काढ़ा इस रोगके दूर करने में लाल गंधक का काम करता है और साहब तजकिरै दाऊदी ने आजमा कर लिखा है कि यह औषध कोढ़ और सफेद दाग को गुणकरे—नींबकी पत्तियां और उसके बराबर काले तिल, लाहौरी नोन लेकर पुराना गुड़ सब औषधियों की बराबर मिला कर हररोज पांच टंक खावे।

शिर के गंज का यत्न।

वह शिर का व्रण है जो पीब और खुरंट के साथ होता है इस रोगकी उत्पत्ति सौदा से है लड़कपन में जो तरी अधिक होती है जवानी के शुरू पर्यंत अपना बल करती है।

यत्न—जोंकें लगाना गुणकारी है।

औषध आजमाई हुई—आमला जलाकर पावभर, खशखाश का पोस्ता जलाहुआ आधपाव, मेहँदी, कमीला चार चार दाम, तूतिया, भुनासुहागा, भुजवे के छप्पर का धुवां, भट्ठी की राख एक एक दाम कूट छानकर सरसों के तेलमें मिलाकर लेपकरे—पत्तों का तेल, गंजको गुणदायक—बिसखपरे के पत्ते, फराश के पत्ते, नींबके पत्ते, चमेली के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, बकायन के पत्ते और फल दो दो तोले पीसकर टिकिया

बनाकर पावभर मीठे तेल में जलावे फिर एक माशा तूतिया, मेहँदीकी पत्तियां, मुरदारसंग, भुनासुहागा, जली हल्दी, कत्था, बावची, आमला जला हुआ, कालीमिरच छः माशे पीसकर तेल में जलाकर नीम की लकड़ी से हल करके सेवन करे।

गधे की लीद का तेल।

शिर के गंजको गुण करे—गधेकी लीद आधीसूखी गढ़े में रख कर थोड़े थोड़े कोयले डालकर जलावे और उसके ऊपर कांसे की ऐसी थाली जिसके कि किनारे उलटे हुये हों इस तरह इस गढ़े पर रक्खे कि किनारे उसके दो उंगल उठे रहैं कि लीद का बुखार उस थाली में जमाहो उसको लेकर मले।

अन्य—गंज को गुण करे—सररानी आधीभुनी आधी कच्ची पीसकर कड़वे तेल मे मिलाकर लगावे।

औषध—शिर के गंज को गुण करे—मेहँदी की पत्तियां चार तोला, बावची, मुरदारसंग, कसीला, कत्था, सुहागा दो दो तोले, तूतिया तीन माशे कूट छानकर कड़वे तेल में मिलाकर मले।

लेप—शिर के गंज को गुण करे—हल्दी छः दाम, तूतियासब्ज तीन दाम, आधपाव मीठे तेल में जलाकर पीसकर लेपकरे।

लेप—काबिली हड़ की छाल, कत्था, जीरा, कायफल, एक एक टंक, तूतिया सब्ज आधा टंक कूट छान कर लेप करे।

औषध—लड़कों के शिर के गंज और उन फोड़े और फुन्सियों को जो लड़कों के शिर पर पैदा होते हैं गुण करे—कसीला, कत्था, गेरू, शोरा, तूतिया एक एक भाग, मुरदारसंग, कालीमिरच दो भाग, मेहँदी की पत्तियां चार भाग, सरसों के तेल को गरम करके उसमें मिलाकर सेवन करे।

लेप—शिर के गंज को गुण करे—अरण्ड की कोंपल कूटकर थोड़ा नोन मिलाकर लेप करे।

औषध—शिर के गंज को गुण करे—पुराने जूते का तला जला कर कड़वा तेल मिलाकर सेवन करे।

अन्य—तम्बाकू का गुल पीसकर कड़वे तेल में मिलाकर लगावे।

आंब के अचार का तेल।

जो एक वर्ष भर का हो लेकर शिर के गंज पर लगावे।

अन्य—घोड़े का सुम जलाकर मीठे तेल में मिलाकर शिर पर मले।

बकायन के फल का तेल।

बकायन के फल की गिरी जवकुट कर कड़वे तेल में जला कर साफ करके शिर के गंज पर सेवन करे।

फर्राश का तेल।

शिर के गंज को गुण करे—फर्राश के पत्ते पीसकर टिकिया करके कड़वे तेल में जलाकर साफ करके मले।

लेप—धनियां सिरके में पीसकर लगाना शिर के गंज को गुण करता है।

अन्य—चुकन्दर के पत्ते पीसकर लगाना गुण करे।

अन्य—बकरी की मेंगनियां लगाना शिर के गंज फैलने-वाले और पीववाले घाव को गुण करे।

बरस व वहकअबैस अर्थात् सफेद दाग का यत्न।

इन दोनों में अन्तर यह है कि बरस उन सफेद दागों को कहते हैं जो प्रकट में त्वचा में पैदा होते हैं और मांस और त्वचा के भीतर घुसे होते हैं और वहकअबैस सफेदी पतली गोल है—बरस से आरोग्यता नहीं होती है और बहक में जो शुरू में यत्न किया जावे नष्ट होजाता है।

यत्न—मुंजिज के उपरान्त कफ के मलका जुलाब दे और दूध इत्यादि और ठण्ढी चीजों से परहेज करना चाहिये।

गोली—जंगली अंजीर की छाल तेंतीस टंक, चीत सोलह टंक, गन्धक पन्द्रह टंक, कालीहड़, धनियां छः टंक, कूट छान कर गाय के बच्चे के मूत्र में मिलाकर औटावे जब गाढ़ा हो जावे पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक महीना बीस दिन तक हर रोज एक सुबह एक शाम खावे।

गोली—सफेद दाग को गुणदायक और बालोंको सफेद नहीं

होनेदेती है—छिली वावचीवनाई हुई, कटूमर की जड़ की छाल, नींवकी जड़की छाल, नींवकी डाली की छाल बराबर लेकर कूट छानकर रक्खे और कत्थे की लकड़ी के टुकड़े टुकड़े करके एक हिस्सा अष्टगुण जलमें औटावे जब आधा शेषरहे साफकरकेउक्त औषध उसमें खमीर करे और गोलियां बनाकर एक टंक से डेढ़ टंक पर्यन्तखावे बावचीके बनानेकी यह रीतिहै—कि बावचीको लालरंग गाय के मूत्र में जो जनी न हो इकीस दिन भिगो रक्खे फिर निकाल कर उसकी छाल दूर करके छाया में सुखावे।

गोली—सफेद दागको गुणकरे—बनीहुई बावची, कालेतिल बराबर लेकर शहदमें मिलावे और तीन तीन माशे की गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खायाकरे।

गोली—सफेद दागको गुणकरे—अजमोद, बावची, पवाँड़के बीज, कमलगट्टा बराबर लेकर शहद या गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे खूराक दो टंक ।

गोली—सफेद दागको गुणदायक—गेरू, गंधक, बावची बराबर महीन पीसकर अदरक के रस में रीठे के बराबर गोलियां बनावे और एक गोली जवकुट कर आधपाव जल में रात्रि को भिगो दे सुबह को उसका साफ पानी पिये और फोग उसका शरीर पर मलकर धूप में बैठे खटाई और वादीसे पथ्य करे और इसी प्रकार सदा सेवन करते रहे।

औषध—बरस और वहक को गुण करे—काले धतूरे के बीज दो टंक आधे कच्चे आधे पके भुने, चीता दो टंक, कालीमिरच दो टंक कूट छानकर हररोज दो रत्ती भर खावे भोजन एक समय दूध चावल का करे।

बूंस का तेल ।

बरस को गुणकरे—एक बूंस पकड़कर पेट चीरकर उसका मैल दूर करे और सौ वहल्लोली मीठे तेल में औटावे जब तृतीयांश रहे उसमें लत्ता भिगोकर रात्रि को दागकी जगह

पर रखकर बांध दे और सुबह को धो डाले इसी प्रकार पचास दिन पर्यन्त सेवन करे लाभ होगा।

गोली—कसीस काली पांचटंक, तेल पन्द्रह टंक, बावची तीनसेर, नींबकी सूखी पत्तियाँ आधसेर, कुन्दुर काली डेढ़सेर कूट छानकर गोलियाँ बनाकर हररोज एक गोली खावे।

नींब का चूर्ण—बरस को गुण करे—नींब के फल, फूल और पत्तियाँ बराबर पीसकर दो माशे खाना शुरू करके छः माशे तक पहुँचाकर चालीस दिन सेवन करे।

अन्य—बरस को गुण करे—मुंडी एक भाग, समुद्रशोष आधा भाग कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक एक माशे से नौ माशे पर्यन्त खाय।

अन्य—सफेद दाग को गुणदायक—बावची आधसेर, नोन तीन पाव कूट छानकर एक हथेली भर खावे भोजन सिवा चने की रोटी के और कुछ न खावे।

अन्य—सफेद दाग को गुण करे—सफेद गूलर की छाल, लाला के बीज दोनों बराबर कूट छानकर पानी से चालीस दिन पर्यन्त फाँके।

औषध—बरस को गुणकरे—अजमोद पहिले दिन चार माशे फिर एक एक माशा रोज अधिक करके सुबह को ठण्ढे पानी से फाँके यहाँ तक कि आठ माशे तक पहुँचे जो दो महीने में गुण न मालूम हो तीसरे महीने वायबिड़ंग एक माशा भर मिलाकर खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे लिखा है कि चने की रोटी या चने भूनकर खाना आजमाया हुआ है सिवा इसके और कुछ न खावे।

अन्य—अजमोद दो भाग, गेरू एक भाग कूट छानकर दो माशे भर खावे भोजन बेनमक और घी के रोटी खावे।

लेप—बरस को गुण करे—बावची, पँवार, गेरू, बराबर लेकर कूट छानकर अदरक के रस में गोलियाँ बनाकर दो सप्ताह पर्यन्त मलकर धूप में बैठा करे।

अन्य—पलाश पापड़ा तीन टंक, कच्चा तूतिया तीन माशे, कत्था सफेद एक तोला महीन कूट छानकर नींबू के रस में खरल करके गोलियाँ बनाकर लगाया करे और यह गोली दाद को भी गुणदायक है।

लेप—कलोंजी सिरके में पीसकर लगाना बहक और बरस को गुण करे—तरातेज के बीज सिरके में पीसकर लेप करना बहक और बरस को गुण करे।

अन्य—कुन्दश शहद में मिलाकर लगाना बहक, बरस और दाद को गुण करना है।

अन्य—मालकंगनी गौ के मूत्र में इक्कीस दिन भिगोकर उसका तेल निकालकर बरस पर लगावे।

अन्य—नौसादर शहद में मिलाकर बरस और बहक पर मलना गुणकारी है।

अन्य—बरस को गुण करे—कलौंजी नौ टंक, बावची तीन टंक, धतूरे के बीज डेढ़ टङ्क मदार के पत्ते आठ पीसकर सफेद दाग पर लगावे।

अन्य—बहक को गुण करे—कुन्दश, मूली के बीज सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—बकरी के गुरदे को टुकड़े टुकड़े करके उस पर गंधक छिड़क कर कबाबकरे जो पानी उसमें टपके उसको बहक सफेद और बरस पर मले।

बरस को गुण करे—इमली के बीज छिले हुए, बावची दोनों बराबर खूब पीसकर आठ दिन तक लकड़ी से दाग की जगह पर मले।

अन्य—जंगली अंजीर की जड़, बावची, सुहागा इमली ताजे पानी में पीसकर चालीस दिन तक लेप करे।

लेप—हरताल, सज्जी आधा आधा दाम कूट छानकर मूत्र में मिलाकर दाग पर लगावे।

अन्य—सफेदबहक कोगुणकरे—हल्दी, आंबाहल्दी, आमला

लाख, गंधक आमलासार, पवाँर के बीज बराबर गंधक छान कूट छानकर निर्मल पानी में मिलाकर बहक पर लगावे।

अन्य—सफेद दाग को गुण करे—मँजीठ, चीत, तेल, गेरू बराबर कूट छानकर सिरके में मिलाकर लगावे।

लेप—मूली के बीज दश भाग, कुन्दश कठ दो दो भाग पुराने सिरके में मिलाकर लेप करे।

लेप—बरस को गुण करे—मूली के बीज, चीत, कुलींजन, आमला बराबर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—बरस को गुण करे—यह नुस्खा किताब गंजआबाद-आवर्द से नकल कियागया है—सज्जी, चूने की कली बराबर पीस कर जिस जगह कि सफेद दाग हो लेपकरे जब सूखजावे सख्त कपड़े से छीलकर दूरकरे और फिरलगावे इस तरह थोड़े दिनोंके सेवनमें उस जगहकी खाल दूर होकर एक दाग पड़ जावेगा फिर उस जगह पर मीठा तेल मले कि उसका असली रंग हो जावे।

लेप—बरसकोगुणकरे—बावची दहीमें तीन दिन पर्यंत भिगोदे फिर सुखाकर आतशी शीशे में तेल निकाले और थोड़ा नौसा-दर पीसकर तेल में मिलाकर दाग को छीलकर उस पर मले।

अन्य—कंचुवा एक बर्तन में बन्द करके एक महीने तक रक्खे इस अवसर में राख होजावेगा उसको लेकर बरस पर लगावे।

अन्य—बरस को गुण करे—काला बिच्छू मारकर सुखाकर सिरके में पीसकर बरस पर लगावे।

अन्य—होठों की सफेदी को गुण करे—अंधाहूली की जड़ पानी में घिसकर लेप करे।

अन्य—तम्बाकू के बीजों का कोल्हू में तेल निकालकर मर्दन करे थोड़े दिनों में दाग असली रंग पर आजावे।

अन्य—बरस को गुण करे—केले के पीले पत्ते कड़वे तेल में जलाकर मुरदारसंग मिलाकर मले।

अन्य—सिरस के बीजों का तेल निकालकर बरस पर मले।

अन्य—बैंगन सादे का तेल बरस को गुण करे—बैंगन पानी में

पकाकर जब गल जावे उसका साफ पानी लेकर मीठे तेल में मिलाकर फिर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहे सेवन करे।

अन्य-छुहारे का तेल बरस को गुण करे-एक छुहारा सरसों के तेल में जलाकर हल करके रक्खे रात को दाग पर मल कर कोयलों की आग से सेंके जब गरम हो जावे इसी तरह से थोड़े दिन सेवन करे बाजी पुस्तकों में लिखा है कि खुरमें की गुठली निकालकर साफ करके तेल में जलाकर थोड़ा शिंगरफ मिलावे इस तेलको छाजन की जगह और नासूरपर भी मलना गुणकरे।

नारू का यत्न।

वह एक दाना है जब फूट जावे तो उसके अन्दर से तागा निकलता है।

अन्य-मल को शरीर से साफ करे और नारू के गिर्द जोंकें लगावे और गरम पानी में तेल डालकर जोश किया हो तरेड़ा करे कि तागा सुगमता से निकले और रक्षा करे कि टूट न जावे।

औषध-नारू को गुण करे-पहिले नारू और सूजन को गुनगुना तेल मलकर मदार के पत्तों से सेंक करे और वही गुनगुने पत्ते सूजन पर बांधे।

औषध-नारू के लिये गुणदायक है-सफेद बिसखपरे की जड़ उसके पत्तों के रस में पीसकर नारू पर बांधे बाजे और थोड़ी सोंठ भी अधिक करते हैं।

लेप-नारू को गुण करे-जमालगोटा पीसकर लेप करे या कलौंजी दही में पकाकर लेप करे।

औषध-जो केंचुवा सूखा नारू वाले को खिलावे शीघ्र ही सुखाता है।

अन्य-आधा दाम सुहागा गुलरोगन में हल करके तीन दिन खावे और इस अवसर में चिकना भोजन खावे।

अन्य-नारू को गुण करे-प्याज एक गिरह, लहसुन एक गिरह, थोड़ा साबुन, भिलावां एक, राई आधा दाम, कूट

छान कर टिकिया बनाकर नारू पर एक दिन रात बाँधे तीन दिन में तागा बिल्कुल निकल आवेगा।

औषध—नारू को गुण करे—राल एक दाम, साबुन दो दाम, अफीम दश माशे कूट पीसकर आठ दाम तिलों के तेल में पका कर मरहम की सदृश करके पान पर लगाकर बाँधे और सुबह और शाम मरहम बदल दिया करे तीन दिन में आराम होजावे।

लेप—नारू को गुण करे—मोठ का आटा चार दाम थोड़ी हींग मिलाकर पीसकर खमीर करके नारू पर बाँधे।

अन्य—चौलाई की जड़ पीसकर नारू पर बाँधे।

गोली—नारू के लिये गुण करे—जंगली कबूतर की बीट दो दाम, गुड़ दो दाम, कूट पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर रक्खे रोज एक गोली खावे।

औषध—नारू को गुण करती है—कबूतर का पर दो चावल के बराबर गुड़ में मिलाकर खावे।

अन्य—सात दाने बकायन के हररोज निगल जावे।

अन्य—एलुवा पहिले दिन आधादाम, दूसरे दिन एक दाम, तीसरे दिन एक मिस्काल भर खावे और ऊपर से भी लगावे।

औषध—पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सोंठ, केला बराबर हररोज दो टंक, छः टंक शहद मिलाकर खावे और दूध भी बहुत खाना गुण करता है।

रक्तपित्त का यत्न उसको सुर्खबादा भी बोलते हैं।

यह रोग बहुधा लड़कों को होता है इसका कारण बहुत गर्मी और रुधिर का जोश है।

यत्न—धायकोसाफ करनेवाली और रक्तशोधक औषध पिलावे।

गोली—लड़कों के रक्तपित्त को गुण करे—धमासा, रक्तचन्दन, ब्रह्मदण्डी, नीलकण्ठीतीन तीन माशे, बकायनकी पत्तियाँ, नीब की पत्तियाँ पाँचपाँचमेंहँदी की पत्तियाँ पाँचमाशे, धनियाँ तीन माशे, कालीमिरच, मुल्तानी मिट्टी एक एक माशा, मेहँदी की पत्तियाँ और धनियाँ पानी में भिगोकर सुबह उसके पानी में सब

औषध पीसकर चने की बराबर गोलियाँ बनावे भोजन मूँग की दाल और चावल व नोन खावे खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य–लड़कों के रक्तपित्त को गुणकरे–रसौत, कालीमिरच, अफीम, नींब की पत्तियाँ, चाकसू की गिरी, पेठे के बीज बराबर कूट छानकर बाजरे के बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली लड़के को उनकी धाय के दूध में मिलाकर दे ।

औषध–लड़कों के रक्तपित्त को गुण करे–मिकन कि एक बूटी है दो दाम लेकर पानी में पीसकर पावभर आटे में मिलाकर रोटी पकावे फिर उसमें घी मलकर दूध पिलानेवाली को खिलावे आश्चर्यदायक गुण करे ।

अन्य–सरफोंका औटाकर लड़के को पिलावे ।

अन्य–रसौत एक चने की बराबर लड़के को खिलावे ।

काढ़ा–लड़कों के खून के उपद्रव और रक्तपित्तको गुणकरे–रक्तचन्दन, मेहँदी, धनियाँ चार चार टंक, गुलमोसफर दो टंक जवकुटकर सात खूराककरे और खूराक आधपाव जलमेंभिगोकर सुबह जोश देकर पिये और एक फोग उसका रातको औटाकर पिये और उसका फोग शरीर में मलकर गरम पानी से धो डाले सात दिन इसी तरह सेवन करे भोजन गेहूँ की रोटी और घी नमक न खावे ।

दाद का इलाज ।

यह रोग सौदावी रोग है त्वचापर फैलता है रुधिर से भी उत्पन्न होता है प्रारम्भ में उसका यत्न कि जब तक मांस के अन्दर न घुसे सुगम है और जब मांस में घुस जावे तो जब तक जोंक और पछने और तेज औषधियों का सेवन न करे दूर नहीं होता है ।

औषध–राल, गन्धक, सुहागा, खुरासानी अजवाइन कूट छानकर पानी से गोलियाँ बनाकर दाद को खुजलाकर उस पर लगावे ।

लेप–दाद को गुण करे–मुरदारसंग, गन्धक, नौसादर,

सुहागा, माजू, कालीमिरच, सफेद कत्था, अफीम, चीनियाँ-गोंद कूट छानकर गोलियाँ बनावे और नींबू के रस में पीस-कर लेप करे।

अन्य–माजू एक भाग, चूना डेढ़ भाग, माजू महीन चूने में हल करके थोड़े पानी में मिलावे जब थिरा जावे पानी लेकर दाद को खुजलाकर उस पर मले।

लेप–दाद को खुजलाकर उसपर घी मलकर चूना उस पर लगावे।

औषध–दाद को गुणदायक–मदार के फूल, पँवार के बीज कूट छानकर खट्टे दही में मिलाकर मर्दन करे और जो खट्टा दही न मिले पानी काफी है।

लेप–इमली के बीज नींबू के रस में पीसकर मले।

अन्य–सूखा सिंघाड़ा नींबू के रस में पीसकर लगावे।

अन्य–हरसिंघार की पत्तियाँ पीसकर लगावे।

अन्य–अब्बासी की पत्तियाँ नोन के साथ पीसकर मले।

अन्य–हल्दी जलाकर पीसकर चूने और पान में मिलावे फिर पानी में हलकरके दाद को खुजलाकर लगावे।

अन्य–नींबू का रस हररोज दोबेर दाद को खुजला करके मले।

अन्य–पालक जूही की जड़ नींबू के रस में घिसकर मले और उसकी पत्ती भी मलना गुण करे।

अन्य–कलौंजी सिरके में पीसकर मले।

लेप–पलासपापड़ा, कत्था पीसकर लगावे।

अन्य–कसौंधी की जड़ नींबू के रस में घिसकर लेप करे।

अन्य–गेहूँ का चोया गुनगुना मले और चोये के निकालने की यह रीति है कि गेहूँ धोकर रात्रि को हवा में रक्खे सुबह गेहूँ को साफ पत्थर पर रखकर एक लोहे का टुकड़ा आग में लाल करके गेहूँ के ऊपर रखकर दबावे जो कुछ उसमें काला रंग निकले उसको गरम लेकर दाद पर मले।

अन्य–आजमाई हुई है दाद को गुण करे–आमला, लाल

चन्दन, चीनियाँगोंद, राल, सुहागा, करथा बराबर पानी में पीसकर दाद को खुजला कर मले ।

अन्य-दाद और खुश्क खुजली और तर खुजली को गुण करे-पवाँर के बीज पानी में भिगो दे जब सड़जावें पीसकर मले और फिर गरम पानी से नहावे ।

लेप-दाद को गुण करे रियह को कपड़े में छानकर पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य-असलतास की पत्तियाँ दाद पर मले या उसकी कच्ची फली की गिरी निकालकर पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य-दाद को गुणदायक-मूली के बीज नींबू के रस में खरल करके गोलियाँ बनाकर लगाया करे ।

अन्य-मूली के बीज शरीफे की पत्तियों के रस में पीसकर गोलियाँ बनाकर लगावे ।

लेप-कुचला सिरके में पीसकर लगावे ।

लेप-दाद और खुजली को गुण करे-सज्जी एक दाम कूट छानकर दो दाम गाय का घी सौ बेर धोकर उसमें मिलाकर लेप करे ।

औषध-दाद और खुजली को गुण करे-हरासमग्ज़ मले ।

अन्य-दाद को गुण करे-अंजीर का दूध मले ।

लेप-दाद को गुण करे-चन्दन, सुहागा, अफीम तीनों औषध बराबर लेकर नींबू के रस में पीसकर दाद को किसी खरखरी चीज से खुजलाकर मले ।

अन्य-मैनसिल पानी में पीसकर लगावे ।

लेप-सरेश मले लिखा है कि जबतक दाद अच्छा नहीं हो सरेश नहीं छूटता है ।

अन्य-पारा सिरके में पीसकर लगावे ।

अन्य-मेहँदी सिरके में पीसकर लगावे ।

अन्य-मुरमक्की सिरके में पीसकर लेप करे ।

लेप-नींब की पत्तियाँ दही में पीसकर लगावे ।

लेप–पवाँर के बीज एक भाग, सज्जी दो भाग, जवाखार चार भाग, कांजीके पानी में पीसकर अरना भैंसेके गोबर के उपले से दाद को खुजलाकर उस पर इतनी देर लगाये रहे कि सूखजावे दो तीन दिन में दूर होवे।

अन्य–सिंदूर, गन्धक, हल्दी, कालीमिरच, सुहागा बराबर लेकर घृत में मिलाकर हररोज चार पांचबेर लेप करे।

अन्य–पवाँर के बीज, आमला, कत्था, दहीके पानी में पीस कर दाद को खुजलाकर लेप करे।

अन्य–पारा, गन्धक आमलासार, तूतिया, सुहागा, नींबू के रस में हल करके दादको खुजला कर लगावे।

तर और खुश्क खुजली का यत्न।

जोकि यह रोग प्रकट त्वचा पर उत्पन्न होता है त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मल बहुधा कफकारी है और सूखी खुजली में सौदा की अधिकता है।

यत्न–हफ्तअन्दाम की फस्द ले और भोग और गरम चीजें जैसे कि बैंगन और मिरच और कड़वे तेल और नोनवालीचीजों आदि से पथ्य करे और हररोज शाहतरा का इतरीफल खावे।

औषध–पीलीहड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, जंगीहड़, सरफोंके की पत्तियाँ, अफीम दो दो टंक, शाहतरे के पत्ते दश टंक कूट छानकर गाय के घी में भूनकर तिगुनी शक्कर मिलावे खूराक दो तोले।

अन्य–खारिश को गुण करे–नींब की कोंपल दो तोले भर लेकर पानी में पीसकर पन्द्रह दिन पर्यंत पिये इसी प्रकार सरफोंका का पानी गुण रखता है।

अन्य–तर खुजली को गुण करे–कड़वा चिरायता, शाहतरा, जंगीहड़ तीनों औषध तोला भर लेकर रात को पानी में भिगोदे सुबह को पीसकर साफ करके पिये।

अन्य–खुजली को गुण करे–गन्धक, आंबाहल्दी, बावची हरएक आधा दाम शाहतरा एक दाम सबको तीन भाग

करके एक भाग उसमें ले रात को पानी में भिगोवे सुबह उसका साफ पानी पिये और उसका फोग कड़वे तेल में मिलाकर बदन पर मलकर गरम पानी से धोवे।

अन्य—इमली को भिगोकर कई दिन सेवन करना तर खुजली और खुश्क खुजली को गुण करे उसका नुस्खा मतली के रोग में वर्णन हो चुका।

अन्य—खारिश को गुण करे—अधकुचली कालीहड़ बीस टंक, अफतेमून पांच टंक आधसेर गरम जल में भिगोदे सुबह साफ करके दश टंक शक्कर मिलाकर दो वेर करके पिये।

अन्य—मोजिज में खुश्क खुजली के लिये लिखा है कि हररोज एक सौ तीन टंक दूध और आधी उसकी सिकंजबीन मिलाकर पीना गुण करे और यह औषध शेखुलरईस के विचार में भी आजमाई हुई है परन्तु इतनी औषध देहातियों के योग्य है और लोगों के लिए इतनी खूराक बहुत भूख लानेवाली और अग्नि मन्दकारक है।

गंधक का तेल—तर और खुश्क खुजली और दाद को गुण करे—गन्धक मदार के दूध में दो दिन खरल करके टिकिया बनाकर छाया में सुखावे फिर बर्तन में डालकर पानी भरकर चार पहर मधुरी आंचपर जोश दे जितना तेल पानी पर आवे उसको लेकर सेवन करे और बाजे गन्धक को पीलीटंग के मदार के दूध में पकाकर दो दिन खरल करते हैं।

औषध—खुजली को गुण करे—सब्ज तूतिया, तम्बाकू सूखी एक एक टंक, कमीला दो टंक, सफेद चीनी चार टंक, कड़वे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे।

मुरमकी की गोली—तर खुजली को गुण करे—और कफ और पित्त को निकालतीहै पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, वायविड़ंग छिलाहुआ एक एक भाग, तुरबुद, सोखली दो भाग, कूट छानकर पानी में मिलाकर गोलियाँ बनावे खूराकतीन टंक और कदाचित् अधिक दस्त चलाने स्वीकार हों दश टंक खावे

तेल—तर खुजली को गुण करे—तीन तोले मैनसिल महीन पीसकर एक सेर गाय के घी में मिलाकर औटावे जब धुवां बंद होजावे एक तगार में जल भरकर औषधों को तेल समेत उसमें डाले जब ठण्ढा होजावे पानी के ऊपर से तेल लेकर मले।

औषध—खुजली को गुण करे—पावभर कड़वे तेल को खूब जोश करे और मदार के हरे पत्ते इक्कीस लेकर एक एक पत्ता उसमें डाले जब सब पत्ते जलकर राख होजावें उतार कर थोड़ा मैनशिल पीसकर उसमें मिलावे और शीशे में रखकर खुजली पर मले दो तीन दिन में दूर होजावे खुजलीको गुण करे—कटहल का मूसला, जौ पुराना जो कीड़ों का खाया हुआ न हो, कोयलों की आग पर जलाकर महीन पीसे फिर कड़वे तेल में मिलाकर मले और तीन चार घड़ी के पीछे ठण्ढे पानी से धोवे और जाड़ों में यह दवा लगाकर गुनगुने पानी से नहावे।

औषध—खारिश को गुणदायक—तूतिया, पारा, कालीमिरच तीन तीन माशे, बन्दूक की बारूद एक दाम, चार दाम घी में मिलाकर मले और एकपहर के पीछे गरम पानी और बेसन से धोवे।

औषधि—खुजली को गुण करे—मदार का दूध जमाकर सुखावे फिर जलाकर कड़वा तेल मिलाकर शरीर पर मले और चार घड़ी के पीछे नहावे।

औषधि—खुजली को गुणकरे—सहँजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर साफ करके बदन पर मले—पीली हरताल का तेल दाद और खुजली को गुणकरे—पीली हरताल एक भाग, मीठा तेल दो भाग पहिले तेल को औटावे जब लाल होजावे हरताल पीसकर थोड़ा थोड़ा उसमें डालकर लकड़ी के चिमटे से हिलावे और आग नरम करे जब तेल की रंगत मोर के सदृश होजावे और तेलमें आग लगलग जावे उससमय डेगचीको बन्द करदे कि शोला तेल से बुझ जावे इसी तरह से डेगचीको पाँच बेर खोले बन्द करदे फिर ठण्ढा करके शीशे में रक्खे और आवश्यकता पर मलकर धूप में बैठे और गरम पानी से नहावे।

तेल–खुजली के लिये–पवांर के बीज एक सेर, गन्धक एक दाम, एक सेर गाय का दूध और पावभर घी मिलाकर औटावे जब दूध जलकर तेलमात्र आय रहे साफ करके मले।

कालीदवा–दानों के लिये–घुंघुची, आमला, कालीमिरच एक तोला, तूतिया एक भाग, कड़वा तेल आवश्यकता के अनुकूल पहिले घुंघुची को तेल में जलावे फिर हड़, आमला, तूतिया जुदा जुदा जलाकर कालीमिरच को कूट छानकर तेल में मिलाकर दानों पर मले।

ओषधि–तर और खुश्क खुजली को गुण करे–कनेर की बीस पत्तियाँ पावभर तिलों के तेल में जलाकर मले।

पवांर का तेल–खुजली को गुण करे–पवांर के बीज एक सेर, गन्धपक्की एक दाम, जवकुट कर दो सेर गाय के दूध और पाव भर घी में पकावे जब दूध जलकर तेल रह जावे साफकरके मले।

ओषधि–खुजली को गुण करे–पालक के बीज, खशखाश के बीज बराबर लेकर पानी में पीसकर बदन पर मले फिर गरम पानी से नहावे दो तीन दिन में आराम हो जावे।

ओषधि–खुजली को गुणकरे–बन्दूककी बारूद कड़वे तेल में मिलाकर बदन में मलकर धूप में बैठे फिर नहावे।

अन्य–बरगद के पत्ते और थूहर की लकड़ी सूखी जो जमीन में पड़ी हो और खशखाश का पोस्ता बराबर लेकर जलाकर उसकी राख कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम पानी से नहावे।

अन्य–शोराकलमी कड़वे तेल में मिलाकर मले।

अन्य–मेहँदी और गुलरोगन सिरकेमें मिलाकर बदनपरमले।

अन्य–साबुन पानी में पीसकर लगावे फिर नहावे।

अन्य–तर खुजली और खुश्क को गुण करे–सुहागा, चम्बेली का तेल, गुलाब और नींबू के रस में मिलाकर मले और बाजे इसमें थोड़ा कपूर भी डालते हैं।

अन्य–गन्धक दो टंक, पारा, भुना तूतिया आधा आधा

टंक, गौ के घी में जो इक्कीस बेर धोया गया हो मिलाकर मले और दो घड़ी के पीछे ठण्ढे पानी से नहावे।

अन्य—अफीम तिलों के तेल में जलाकर मले।

अन्य—सेंदुर, आमलासार गन्धक, मुरदारसंग, तूतिया, एक एक दाम सबको महीन पीसकर चार तोले गाय के घी में मिला के मले।

अन्य—गुनगुने पानी से रोज नहाना तर और खुश्क खारिश को नाश करे।

अन्य—खुजली को गुण करे—सब्ज तूतिया, आमलासार गन्धक, कपूर एक एक दाम, गाय का घी धोकर तीन तोले ओषधि महीन कूटकर हररोज मलकर दो घड़ी धूप में बैठे फिर नहावे।

बगल की दुर्गन्धि का यत्न।

शरीर को मल से शुद्ध करे।

ओषधि—बगलकीवास दूरकरे—चूना पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—जामुन की छाल और पत्ती पानी में औटाकर उससे बगल को धोवे।

अन्य—झाड़ू की पत्ती पीसकर मले फिर गरम पानी से धोवे।

अन्य—मुरदारसंग पीसकर मले गुण करे।

हाथ पाँव में अधिक पसीना निकलने का यत्न जिसको शीत बोलते हैं।

यत्न—मूंग जलाकर पीसकर मले।

ओषधि—बैंगन, खशखाश का पोस्ता अधकुचला पानी में औटाकर उससे हाथ पाँव धोवे।

अन्य—शीत को गुण करे—कुलथी, पीली कौड़ी जलाकर जुदा जुदा महीन पीसकर मले।

अन्य—काले धतूरे के बीज जलाकर महीन पीसकर एक माशा भर हररोज एक सप्ताह पर्यन्त खावे।

अन्य—बेर की पत्तियाँ पीसकर मले।

अन्य—बबूल की सूखी पत्तियाँ पीसकर हाथ पाँव पर मले।

अन्य—नीम की छाल पानी में औटाकर उसका बुखार लेकर उसके गुनगुने पानी मे धोवे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त सेवन करे।

अन्य—बालछड़ लगाना शीत को गुण करे।

अन्य—ऊँटकटारे की जड़ सुखाकर पीसकर एक तोला भर शहद मिलाकर सात दिन खावे।

अन्य—फिटकरी पानी में हल करके मले।

अन्य—पुष्करमूल पीसकर हथेली और तलवे पर मले।

गोली शीतको गुण करे—शिंगरफ, पेठे के बीजों की गिरी एक एक टंक, पीली कौड़ी जली हुई तीन टंक, काली-मिरच पाँच टंक, कूट छानकर दो टंक खट्टा चूक मिलाकर कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय।

उँगलियों के फूलने और उनकी खुजली का यत्न।

यह रोग हवा की सरदी से हो जाता है।

यदा—गेहूँ की भूसी और नोन औटाकर धोवे।

अन्य—शलगम या चुकन्दर के काढ़े या उस जल से जिसमें मसूर और मटर औटाया हो धोवे।

व्रणका यत्न—जिस जखम में पीब निकले उसको व्रण बोलते हैं और जिस व्रणपर चालीस दिन बीत जावें वह नासूर कहलाता है।

औषधि—घावको सुखावे पैरा कि एक घास है नदी के किनारे उगती है उसमे चटाई बनाते हैं उसको जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के जो सिरके में भिगोकर नासूर पर रक्खे गुण करती है।

अन्य—पीब के घाव को सुखावे—कनेर की पत्तियाँ सूखी पीस कर छिड़के या संगजराहत पीसकर छिड़के—स्त्री के ऋतु का कपड़ा जलाकर घावपर छिड़के।

अन्य—गधे का मांस खाल सहित जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के दो दिन में मांस भर आवे।

अन्य—सिरस की छाल सूखी पीसकर छिड़के।

अन्य–मुरगी का पर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–घाव को गुण करे–कछुवे का शिर जलाकर उसकी राख लेकर पहिले घाव में मीठातेल लगावे फिर वह राख छिड़के तीन दिन में आराम होवे।

औषधि–घाव को साफ करे–साबुन पानी में पीसकर थोड़ा गेरू मिलाकर मरहम की रीति पर बनाकर सेवन करे कभी गेरू के बदले चावल मिलाते हैं।

अन्य–घावसे भरा हुआ मांस दूर करे और खेद न दे–भुनी फिटकरी महीन पीसकर छिड़के।

औषधि–घाव को भर दे–असगन्ध नागौरी महीन पीसकर घाव पर छिड़के–घाव को गुणकारक–घिया तोरई की पत्ती घाव पर बांधना लाभ करे।

अन्य–कंघी की पत्ती पीसकर घाव पर बांधना शीघ्र गुण करे परन्तु साबत बांधना बहुत गुणदायक है।

अन्य–सरू की पत्तियां जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–हल्दी महीन पीसकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य–माजू जलाकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य–कुन्दर पीसकर छिड़कना बुरे घावको दूर करता है।

अन्य–फैलनेवाले घावको गुणकारक–कमल और बरगद के पत्तेबराबर जलाकर उसकी राख तेलमें मिलाकर घाव पर टपकावे।

अन्य–फफोले और घाव के सुखाने में अद्वितीय है–कपूर चौथाई भाग, भुने रैहां अर्थात् नाजबो के बीज आधा भाग, प्याज का छिलका जलाकर एक भाग, बाल जलाकर दो भाग सबको पीसकर छिड़के गोली और गजेबी घाव को जिसमें छिद्र होते हैं गुण करे–बेलगिरी, करथा, सब्ज तूतिया बराबर लेकर गोलियाँ बनाकर लगावे।

औषधि–गुड़ घावपर बांधना शीघ्र पीव को साफ करता है।

अन्य–मसूर जलाकर भैंस के दूध में मिलाकर सुबह और शाम लगावे।

तेलों के नुसखे—तेल घाव के भर लाने के लिये आश्चर्य-दायक प्रभाव रखता है—सँभालू के पत्ते, फराश के पत्ते, चम्बेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते एक-एक टंक, मीठा तेल आधसेर, पत्तों को पीसकर तेल में मिलाकर जलावे और चिमटे से खूब हल करके आग से उतारकर फिर चिमटे से हिलावे जब थिराजावे साफ तेल लेकर सेवन करे।

अन्य—घाव के भरने के लिये करंजुवे के पत्ते, नींब के पत्ते एक एक दाम, टिकिया बनाकर मीठे तेल में भूने जब काली होजावे तूतिया एक माशा भर पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य—घावको शीघ्र भरकर अच्छा करे—गूलर एक दाम, हल्दी एक गांठ, सिन्दूर चार माशे, पहिले तेल में नींब की पत्तियों की टिकिया बनाकर जलावे फिर हल्दी जलावे फिर गूगल, सिन्दूर मिलाकर सेवन करे।

पत्तों का तेल—हरप्रकार के घाव को गुणदायक—मीठा तेल एक सेर कड़ाही में डालकर जोश दे फिर नींब की पत्तियों की टिकिया आधपाव, कनेर की पत्तियों की टिकिया पाव-भर मोम आठ दाम, बकायन की पत्तियों की टिकिया पांच टंक, तेल में डालकर जलावे जब जलकर काली होजावे तेल को साफ करके घाव पर टपकावे।

नींब का तेल—घाव को गुण करे—नींब की पत्तियाँ पीसकर टिकिया बनाकर तेलमें जलावे जब काली होजावे साफ करके रक्खे और यह तेल सादा है कानकी पीड़ाको भी गुण करता है और जो घाव पर टपकावे कसीला, कत्था एक एक तोला महीन पीसकर मिलावे कि घावको भरे और पीब निकालने की इच्छा हो तो थोड़ा तूतिया डाले कमीले का तेल घाव भरने में अद्वितीय है थोड़े दिनों में अच्छा करता है कमीला दश टंक तीनबेर महीन खरल करके दश टंक कड़वे तेल में मिलाकर कपड़े में छानकर आवश्यकता पर उसमें रुई भिगोके घाव पर रक्खे और कई बूंदें टपकावे।

भिलावें का तेल—बहुत घावों को गुण करे—यहाँ तक कि चौपायों के जखमों को भी गुण करे—सात भिलावें आधपाव तिलों के तेल में जलाकर—साफ करके दो टंक संगजराहत पीसकर मिलाकर मुरगी के पर से लेकर जखम पर लगावे— कौंचके बीजों का तेल घाव और नासूर को गुणदायक है छिले हुये कौंच के बीज दो दाम महीन पीसकर टिकिया करके आध पाव मीठे तेल में जलाकर साफ करके घाव पर टपकावे और बाजोंने लिखा है कि मीठे तेल के बदले कड़वा तेल मिलावे।

कुचले का तेल—नासूर को भरता है और घाव को गुण करता है—कालीमिरच साढ़े तीन माशे, तूतिया एक चने के बराबर, पांच कुचले, कड़वा तेल पांच टंक पक्का—थोड़ी नींब की पत्तियां, अजवाइन एक दाम, कमीला दो दाम पहिले तेल को कड़ाही में औटावे और नींब की पत्तियों की टिकिया बनाकर उसमें जलावे जब काली हो जावे निकालकर साफ करके सम्पूर्ण ओषधि जुदा जुदा पीस छान तोलकर तेल में जलावे फिर छानकर चीनी या शीशे के बर्तन में रक्खे और रुई उसमें भरकर घाव या नासूर पर रक्खे जब सूख जावे फिर भिगोदे।

तेल—घाव के भरने के वास्ते—मुलहठी छीलकर पानी और तेल में औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रह जावे साफ करे और हूहजूह के साथ लाल करके सेवन करे।

अन्य—सब घावों को गुण करे—यहाँ तक कि चौपाये के घावको भी गुणकरे—मीठा तेल पावभर, नींब की कोंपल, अरण्डकी कोंपल दो दो दाम, पत्तों को तेल में जलाकर साफ करके राल दो दाम, कमीला एक दाम महीन पीस मिलाकर घाव पर टपकावे कदाचित् मरा हुआ मांस अधिक होवे एक माशा भर तूतिया मिलावे।

अन्य—घाव के भरने के लिये अद्वितीय है और आतशक के घावको दूर करे—भिलावां, कौंचके बीज एक एक दाम, खुरासानी अजवाइन मुरदारसंग तीन तीन माशे, तूतिया दोमाशे, तिलों

का तेल आधपाव, पहिले तेलको आगपर रक्खे जब औटे उसमें भिलावां डालकर जलावे फिर कौंचके बीज और अजवाइन एक एक बेर करके डाले फिर तूतियाफिर मुरदारसंग पीसकर मिलावे और आग से उतार खूब हल करे जब दूध के सदृश होजावे जो घाव नाजुक जगह में हो तेल छानकर टपकावे नहीं तो वे छाने सेवन करे और यह तेल नासूर को भी गुण करता है।

कुचले का तेल—उकौता और शिरके गंज आदि को लाभदे—आठ कुचले मीठे तेल में जलाकर सेवन करे।

हर प्रकार के व्रणों के मरहमों का वर्णन ।

मरहम—प्याज, साबुन, सफेद कत्था चार चार दाम, नींब की पत्तियां ग्यारह, मीठा तेल चारदाम, पहिले प्याज और साबुन को टुकड़े टुकड़े करके तेल में जलावे फिर नींबकी पत्तियां जलाकर मिलावे फिर कत्था पीसकर डाले और थोड़ा कपड़ा जलाकर मिलावे फिर खरल करके सेवन करे।

कौंच का मरहम—यह वैद्यों का नुस्खा है जो घाव को जल्दी भरता है—मीठा तेल पाव भर लोहे के बर्तन में गरम करके उतारले फिर कौंच की गिरी पीसकर मिलावे और नींब के पत्ते और नरमें के पत्तों की टिकिया बनाकर चार दाम सोम गरम करके तेल में मिलाकर सेवन करे—मरहम जो पानी से बनता है और चिकनाई उसमें नहीं है और जल का संसर्ग मरहम के सेवन के समय कुछ खराबी नहीं लाता और सब प्रकार के पीब के व्रणों को गुण करे यहाँ तक कि नासूर को अच्छा करे—गूगल, पारा एक एक टंक, रसौत दो टंक, पहिले गूगल और रसौत को पानी में हल करे फिर पारा मिलाकर पीसकर सेवन करे।

दूसरा मरहम—जो पानी से तैयार होता है जखमों और नासूर को गुण करे—राल, घी आध आध पाव, कत्था, फिटकरी, सब्ज तूतिया छः छः मिस्काल, राल और तेल को थोड़े

पानी से दो घड़ी हाथों से मलकर ओषधि कूट छानकर मिलावे।

अमरती की गोली—मुरदारसंग, अमरत एक एक दाम, कत्था, राल, मोम सात सात माशे, घी आध पाव, घी को खूब दाग करके मुरदारसंग पीसकर उसमें डाले जब जलजावे उतारकर राल और मोम मिलावे फिर अमरत और कत्था पीस मिलाकर सेवन करे सब जखमों और फोड़ों को गुणकरे।

अमरत की गोली—संगमरमर की गर्द, तूतिया, कत्था सफेद, पीली कौड़ी कूट छानकर घृत में मिलावे और सुरखी के लिये थोड़ा महावर मिलाकर गोलियां बनावे।

मरहम—सब प्रकार के घावों को गुण करे और घाव को जल्दी भरलाता है राल साढ़े तीन माशे, शिंगरफ एक माशे, मुरदारसंग एक माशे, छिले कोंच साढ़े तीन माशे, सरसों का तेल दो दाम, पहिले कोंच को तेल में जलावे फिर नींब की पत्तियों की टिकिया उसमें जलाकर साफ करके दवायें हल करे।

मरहम—बिवाई को गुण करे—राल एक दाम, घी एक दाम, मोम पाव दाम, घी दाग करके मोम उसमें मिलावे फिर राल डाल पाँवों को खूब धोकर मरहम घाव में भर दे और दो चार बेर सेवन करे।

अन्य—सब प्रकार के घाव को गुण करे—कीमुख्त जला हुआ, सुपारी जली हुई, हड़ के बीज जले हुये, मदार की कोंपल जली हुई, मुरदारसंग, कत्था आधा आधा दाम, घी गरम करके दवायें मिलाकर मरहम बनावे।

मरहम—सब प्रकार के जखमों को गुण करे—जाड़ों के मौसम में घी दो दाम गरमियों में एक दाम लेकर तूतिया एक माशे, मोम सफेद एक दाम, सिंदूर पाव दाम मिलाकर यथाविधि मरहम बनावे।

मरहम—आतशक, नासूर और घाव को गुण करे—सरसों

का तेल एक दाम, जंगार चार माशे, संगजराहत एक दाम, मोम एक दाम लेकर मरहम बनावे।

मरहम-सब जखमों को गुणकारक और आजमाया हुआ है-राल, हिरमिजी मिट्टी छः छः माशे, तूतिया सब्ज दो रत्ती, मीठे तेल में खरल करके मरहम तय्यार करे।

मरहम-सब जखमों और आतशक के घाव को गुणदायक है-मोम, राल, कत्था एक तोला, मोम को थोड़े तेल में पिघलाकर पहिले राल को पीसकर मिलावे और तीन जोश देकर कत्था डालकर हल करके चार माशे कपूर पीसकर मिलावे फिर औटाकर उतार ले और जो पुराने पीववाले घाव पर सेवन करे थोड़ी सुपारी जलाकर मिलावे।

मरहम-राल एक भाग, मोम आधा भाग, तेल चार भाग, औषधि लेकर यथाविधि मरहम बनावे।

मरहम-हड्डी के टूट जाने के लिये-पक्की ईंट महीन पीसकर थोड़े दूध में मिलावे और चावलों को उसमें पकाकर तीन सप्ताह पर्यन्त खावे हड्डी उसी तरह दुरुस्त हो जावे।

मरहम-बहुत से जखमों को गुण करे-जंगी हड़, कमीला एक एक मिस्काल, सब्ज तूतिया आधा मिस्काल कूट छानकर थोड़े तेल में पीसकर मरहम बनावे।

मरहम-घाव को गुण करे, यह नुस्खा अंगरेजों का है-मोम एक दाम, भुनी फिटकरी दो माशे, सिंदूर दो माशे, मुरदारसंग चार माशे, तूतिया दो रत्ती, घी दो दाम, तेल और मोम को दाग करके आग से उतार कर औषधि उसमें हल करे।

तेल-घाव के भरने को गुण करे-रेंडी का तेल पावभर, अरण्ड की कोंपल का रस पावभर दोनों को औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे एक दाम पत्थर का चूना मिलाकर घाव में लगावे और चूना चार प्रकार का होता है एक पत्थर का, दूसरा घोंघे का, तीसरा सीप का, चौथा कंकर का।

मरहम-घावके भरने के वास्ते अतिश्रेष्ठ है-पुरानी रुई जला

कर उसकी राख छः बहलोली भर लेकर तीन बहलोली मोम और उसको बराबर बच खुरासानी और गाय का घी पाँच बहलोली, तूतिया दो रत्ती पहिले घी और मोम को एक बर्तन में गरम करे और उसमें रुई की राख डाले फिर बच मिलावे फिर तूतिया भूनकर पीसकर मिलावे और मरहम बनाकर सेवन करे।

मरहम—जखम के भरने के लिये—कत्था सफेद, मुरदारसंग, संगजराहत एक एक दाम, राल छः दाम, कम्मल का टुकड़ा चौथाई गज जलाकर, घी सात दाम यह सम्पूर्ण औषधि महीन करके घी में मिलाकर मरहम बनावे।

मरहम—भगंदर को गुण करे अर्थात् वह फोड़ा जो फोते और गुदा के बीच में हो—जला हुआ कीमुख्त, पपड़िया कत्था, संगजराहत, मोम हर एक एक दाम भर गौ का घी कि सौ बेर पानी से धोया हुआ हो, मोम घी में पिघलाकर ठण्ढा करके औषधियों को मिलावे।

मरहम—फोड़े के जखम को गुण करे—तूतिया एक माशा, मुरदारसंग दो माशे, कत्था सफेद चार माशे, राल आठ माशे, कमीला सोलह माशे, मोम काफूरी ग्यारह माशे, गाय का घी बत्तीस माशे पहिले घी धोकर हाथ से मले फिर औषधियां मिलाकर हाथ से मलकर मरहम बनावे।

मरहम सफेद—घाव सुखाने के वास्ते—कपूर साढ़े तीन माशे, सफेद मोम एक दाम, मीठा तेल एक दाम, सफेदा दो दाम पहिले तेल को गरम करके मोम डाले और साफ करके मधुरी अग्नि पर रक्खे फिर उतारकर ठण्ढा करके सेवन करे।

उन दानों का यत्न जो बरसात में पैदा होते हैं।

मसूर के छिलके और आमला जलाकर उसके बराबर मेहँदी, कमीला, थोड़ा तूतिया भूना थोड़े तेल में मिलाकर पीसकर दानों पर मले।

अन्य—आतशक के चटके पीबवाले घाव के लिये—फिटकरी,

तूतिया, मुरदारसंग, सुहागा एक एक माशे, कमीला, बावची, पँवाड़ के बीज, पारा, गेरू हरएक आधा माशा, जली कालीमिरच तीन माशे, पाँच जले हुये कुचले सम्पूर्ण औषधि महीन कूट छानकर आधपाव घृत में खरल करके सेवन करे।

औषधि–उकौते के वास्ते–जली कौड़ी, जला हुआ तूतिया, जली हुई हल्दी, बराबर नींबू के रस में खरल करके लेप करे।

औषधि–उकौते को गुणदायक–जली हुई सुपारी, जली हुई हल्दी, जलीहुई बावची एकएक दाम, मेहँदी, कत्था, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी हर एक आधा दाम, मसूर की दाल जली हुई, खशखाश का पोस्ता जला हुआ तीन तीन दाम, कालीमिरच चौथाई दाम सब महीन कूट छानकर सरसों के तेल में मिलावे और पहिले तीन दिन बराबर ढाक के पत्ते गरम करके उकौते पर बाँधे तीन दिन के पश्चात् यह तेल लगावे गुणकारक और आजमाया हुआ है।

औषधि–उकौते को गुण करे–बावची कूट छान कर पहिले उकौते में सरसों का तेल मले उस पर यह औषधि उकौते को गुणदायक–घास दूब, चिरौंजी महीन पीसकर उकौते पर लगावे।

औषधि–उकौते को गुणदायक–कटहल की पत्ती घी में भिगोकर उकौते को पीठ की तरफ से बाँधे।

अन्य–महुवे के पत्ते मीठे तेल में भिगोकर गुनगुने उकौते पर बाँधे और चार घड़ी के उपरान्त खोलकर दूसरे पत्ते बाँधे।

अन्य–गेरू, भुना सुहागा बराबर चँबेली के तेल में हल करके चार चार बेर लेप करे।

अन्य–करील की लकड़ी का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर मले।

अन्य–भिलावां मीठे तेलमें मिलाकर खूब हल करे और थोड़ा तूतिया भूनकर महीन पीसकर उसमें मिलाकर लेप करे।

अन्य–उकौते के लिये–तूतिया, कालीमिरच, चूने की बरी, सुहागा एक एक दाम मेहँदी की पत्तियाँ दो दाम, कड़वा तेल

चार दाम ओषधि महीन पीसकर तेल में औटाकर मिलाकर कई दिन लेप करे।

अन्य—सिंदूर, कालीमिरच, सुपारी, तूतिया, सफेद कत्था, सफेद कौड़ी जलाकर कुचला बराबर लेकर दुगुने तेल में मिलाकर सेवन करे।

अन्य—साबुन, चूना इकट्ठा पीसकर लगावे।

अन्य—उकौते के लिये सिंदूर महीन पीसकर रात को नींबू के रस में भिंगोदे सुबह मलकर उकौते को कंडे से छीलकर उस पर लगावे।

अन्य—उकौते को गुण करे—कुचला साढ़े सात दाम, फिटकरी साढ़े तीन दाम घृत में हल करके लेप करे।

अन्य—उस उकौते के घाव को गुण करे जो पांव में होता है—अलसी की खली, तालाव की मिट्टी दोनों बराबर पानी में पीस कर लेप करे जब सूखने लगे कमीला तेल में हल करके मले।

अन्य—खली और नदी की रेत बरावर लेकर पानी में मिलावे और उससे एक टुकड़ा मोटा बनाकर सुबह से शाम तक बांधे तीन चार दिन में आराम हो जावे।

नासूर का यत्न।

प्योटन की जड़ पानी में घिसकर नासूर पर रक्खे या उससे बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे कई दिन में अच्छा होजावे।

औषध—नासूर के लिये—पुराना कम्मल जलाकर सब्ज तूतिया कूट छानकर बराबर नासूर पर छिड़के।

अन्य—नासूर को गुण करे—कनखजूरा जलाकर उसकी राख नासूर पर रक्खे।

औषध—पुराने नासूर को गुण करे—सर्प की कैंचुल जलाकर उसकी राख बरगद के दूध में मिलाकर उससे रुई भिगोकर नासूर पर रक्खे दश दिन के पीछे उठाले।

औषध—नासूर को गुण करे—गाय के सुम की राख, जूती

के तले की राख बराबर लेकर एक छिपकली सरसों के तेलमें जलाकर उसमें राख हल करके कई बूंद नासूर पर टपकावे।

औषध—नासूर को गुण करे—इमली के बीज पानी में भिगो कर छील डाले फिर उसको पानी में पीसकर उससे बत्ती भरके नासूर पर रक्खे चाहे इससे पीड़ा होती है परन्तु जल्दी अच्छा होजाता है और बाज़े कौड़ी भी जलाकर पीसकर मिलाते हैं।

औषध—नासूर और भगन्दरकोगुण करे—गूलर के दूध से फाया भिगोकर घावपर रक्खे और एक समय तक यही क्रिया करे।

अन्य—नासूर को गुणदायक है—समुद्रशोष जलाकर उसकी राख नासूर में भरे।

अन्य—नासूर की पीड़ा को दूर करता है रुई मदार के दूध में भिगोकर छाया में सुखावे फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलावे और उससे काजल पारकर नासूर पर लगावे।

अन्य—अरण्ड की कोंपल जो कच्ची और नरम हो पानी में हल करके मेंहदी के सदृश मले।

अन्य—चिड़िया की बीट महीन पीसकर नासूर पर लेपकरे।

अन्य—नासूर को गुण करे—कराडे की राख महीन पीस छानकर हथेली पर रखकर नासूर पर बांधे।

अन्य—मकड़ी का जाला कपड़े में साफ करके शराब में भिगोकर नासूर पर रक्खे।

अन्य—नासूर को गुण करे—गिलोय, हल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जल जावे पीसकर लेप करे।

अन्य—नासूर को लाभ करे—करील की कोंपल एक माशे मुरदासंग एक रत्ती, बरगद का दूध एक बूँद पानी के साथ पत्थर पर पीसकर लेप करके ऊपर से एक बूँद बरगद के दूध को टपकावे।

औषध—नासूर के लिये छोटी कटाई का फल कूट छानकर पानी में मिलाकर उससे फाया भिगोकर नासूर पर बांधे।

अन्य—नासूर और अकला को गुण करे—घोड़े का सुम

जलाकर अरसी के तेल में मिलाकर नासूर में लगावे कदाचित् नासूर अंग के भीतर होवे दही में मिलाकर नासूर के भीतर रक्खे।

अन्य–जिस हुक्के में सुलफा पीते हैं उसका पानी तीन दिन न बदले जब पानी पर जाला पड़ जावे उस जाले को लेकर नासूर पर लगावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–विषखपड़े की जड़, मेहँदी के पत्ते, फराश के पत्ते, नरमे के पत्ते, नींन के पत्ते, जैत के पत्ते, वेर के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, राल दो दो दाम मीठा तेल एकसेर पहिले विषखपड़े की जड़ टुकड़े करके तेल में जलावे फिर पत्तों की टिकिया बनाकर तेलमें जलावे और छानके मिलाकर हल करे।

अन्य–नासूर के वास्ते–सफेद मोम, वच खुरासानी एक एक दाम, मीठा तेल पावभर पहिले तेल को गरम करके उसमें वच जलावे और साफ करके मोम मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–चरचटे की पत्तियाँ पीसकर उसमें कपड़ा भिगोकर वत्ती बनाकर नासूर में रक्खे और उसका थोड़ा सा रस नासूर में टपकावे शीघ्र गुण करे।

अन्य–अखरोट की गिरी, मोम, मीठा तेल बरावर लेकर मरहम बनावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–गूगल भैंस या गाय के मूत्र में हल करके वत्ती बनाकर नासूर में रक्खे।

उन औषधियों का वर्णन जो रुधिर को बन्द करती है।

वलगार का कपड़ा जला हुआ, दराई जली हुई, भूना हुआ सुहागा, हल्दी महीन पीसकर कण्डे की राख इन ओषधियों से एक जिस जगह कि रुधिर जारी हो बाँधे रुधिर बन्द करे।

अन्य–घोड़े की लीद बाँधे। अंडे का छिलका लेकर अंदर का परदा उसका निकालकर सुखाकर महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–संगमरमर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य—फेफड़ा जिस जानवर का चाहे सुखाकर जलाकर उसकी राख घाव पर बाँधे।

अन्य—भुना तूतिया महीन पीसकर घाव में भर दे।

अन्य—माजू जलाकर घाव पर छिड़के।

अन्य—मूँगा महीन पीसकर छिड़के।

अन्य—ताजी काई का लेप करे।

अन्य—कुंदर पीसकर छिड़के।

अन्य—रुई जलाकर छिड़के।

आग से जल जाने का यत्न।

इमली की छाल पीसकर गाय के घृत में मिलाकर मले।

अन्य—बरगद की कोंपल गाय के दही में पीसकर मले।

अन्य—अरण्ड के पत्तों का रस मले।

अन्य—धवई के फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य—अण्डे की सफेदी मीठे तेल में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य—दवात की सियाही लगावे।

अन्य—अनार की पत्तियाँ पीसकर लगावे।

अन्य—सीप घिसकर अण्डे की सफेदी में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य—जो शरीर जलकर सफेद हो गया हो, हड़, बहेड़ा, आमला पानी में पीसकर लगाना असली रंग पर लाता है।

पुरानेछप्परकी घास पीसकर सरसोंके तेलमें मिलाकर लगावे।

अन्य—गेहूँ या जौ का आटा पानी में हल करके लगावे।

अन्य—जल जाने के पीछे जब दाग रहजावे जामुन की पत्ती पीसकर लेप करे।

अन्य—बेरकी कोंपल दहीमें मिलाकर कई बेर मले गुण दे।

अन्य—हींग पानी में हल करके लगाना मुख्य करके गुण-दायक है।

अन्य—झड़बेरी की पत्तियाँ मीठे तेल में लगाकर मले।

अन्य—माजू जले हुये को गुण करे—जो सब चमड़ा जलकर गिरपड़ा हो उसी समय आराम देता है—राल महीन पीस कर मीठे गरम तेल में डाले जब पिघलजावे मिलाकर लेप करे।

अन्य—मेहँदी की पत्तियाँ पानी में पीसकर लेप करे और मक्खन के साथ लगाना दूसरा गुण रखता है।

लेप करने की दवाइयाँ।

जब कोई वस्तु किसी अंग पर गिर पड़े उसको जरबा बोलते हैं और सकता वह है कि आप ही अंग किसी वस्तु पर गिरे—कदाचित् उसके कारण शोथ या ज्वर हो पहिले शोथ या ज्वरका यत्न फस्द, पछने और नरम करनेवाली वस्तुओं से करे।

गोली—चोट को गुण करती है—पीपल की पत्तियाँ इक्कीस पीसकर गुड़ में मिलावे और गोलियाँ बनाकर सात दिन खावे।

औषध—चोट को गुण करे—बारहसिंगे का सींग पानी में घिसकर पिये।

अन्य—कच्चा बैंगन शक्कर के साथ खावे और थोड़ी सौंफ की जड़ पीसकर पिये।

अन्य—खरिया मिट्टी एक टंक आधपाव पानीमें हलकरे जब मिट्टी बैठ जावे पानी साफ करके पिये।

चूर्ण—चोट को बहुत गुण करे और पीड़ा बिल्कुल खो दे—नोन छः माशे, शक्कर सफेद छः माशे चूर्ण बनाकर खावे।

औषध—हजरतयहूद आधे माशे से एक माशे पर्यन्त खाना मोमियाई के बराबर प्रभाव रखता है।

गोली—चोट के वास्ते बहुत गुण करे—यहाँ तक कि चौपाये की चोट को गुण करे—गेहूँ जलाकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर खूब पीसकर थोड़ा थोड़ा घी में मिलावे खूराक डेढ़ तोले तक तीन दिन खाने से चोट और पीडा बिल्कुल नष्ट हो और इस औषध को मोमियाई हिन्दी बोलते हैं।

दवा—चोट और शरीर में रुधिर जम जाने को गुण करे—एक

माशा फिटकरी पीसकर चार तोले घी में भूने जब फिटकरी घी में जरा जावे ऊपरके घी को लेकर उसमें शक्कर और मैदा मिलाकर हलवा बनाकर खावे और उसी हलवेकी एक गोली बनाकर वह फिटकरी उसमें रखकर तीन दिन लगावे मोसियाई से उत्तम है।

लेप—बचियार की लकड़ी पानी में घिसकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—चोट और गोच को गुण करे—सहँजन की पत्तियाँ बराबर मीठे तेल में पीसकर लेप करके धूप में बैठे।

औषध—मांदगी को गुण करे—जिस तेल को चाहे गुनगुना करके नाखूनों पर मले।

अन्य—चोट को गुणदायक और टूटे हुये जोड़ को असली हालत पर लाता है—रेंड़ी की गिरी, काले तिल जुदा जुदा कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लेप करे।

औषध—चोट और मोच को गुण करे—तिल की खली कूटकर गरम पानी में डाले जब घुल जावे महीन कपड़े में लेप करके जोड़ पर रक्खे।

अन्य—मांदगी को गुणदायक मीठा तेल गरम तलुओं पर मले और जंगली कण्डों की आग से सेंक करे और पाँव ऊँचे रक्खे।

औषध—चोट को गुण करे—साबुन पानी में पीसकर गरम करके मले और जिस जोड़ में हवा लगी हो उसको भी गुण-दायक है और जो साबुन में हल्दी मिलाकर लेप करे गुण करे।

औषध—चोट और उस गाँठको जो चोट के कारण पड़ गई हो गुण करे—पुराने नारियल की गिरी जो कड़वी न हो कूटकर चार भाग हल्दी महीन करके मिलावे और थोड़ा पोटली बाँध कर गरम करके दो तीन घड़ी सेंक करे फिर चोट और वरम की जगह पर बाँध दे दो तीन दिन में आराम हो जावे।

औषध—चोट को गुण करे—हल्दी, मैदा लकड़ी, गेहूँ का मैदा आध आध पाव, सज्जी लोटन एक दाम, मीठा तेल पाव भर पहिले तेल को गरम करे और मैदा उनमें भूने फिर औषध

जुदी जुदी महीन करके पहिले सज्जी फिर मैदालकड़ी फिर हल्दी मिलाकर थोड़ा पानी डालकर पकावे जब पानी जल जावे गरम गरम लेकर सैंक करे इसको लिपड़ी बोलते हैं।

औषध–चोट और मोचको चाहे ताजी हो या पुरानी अद्वितीय गुणदायक है–अशना दो दाम, सोंठ और कुचला टुकड़े टुकड़े करके हांडी में एक सेर पानी के साथ डालकर सरपोश बन्द करके औटावे जब तृतीयांश जल शेष रहे पहिले बफारा ले फिर जोड़ को इस पानी से धोकर दवा का फोग पीसकर गुनगुना बांधे तीन दिन में बिल्कुल आराम हो जावे।

औषध–मोच को जल्दी आराम देती है–पहिले जोड़ को गुनगुने पानी से धोवे फिर अंडे की जरदी और थोड़ा गेरू मिलाकर गुनगुना लेप करे–और जोड़को आगसे सेंके कि दवा सूख जावे।

बहुत मोटाई का इलाज।

यह रोग कई कारणों से पैदा होता है, स्त्रियों के स्वभाव में अधिक है और मर्दों के स्वभाव में कम है।

यत्न–शरीर में रुधिर की अधिकता हो तो फस्द ले नहीं तो कफ के मुसिल दे और वह औषधियां जो शरीर को सुखाती और दुबला करती हैं सेवन करे।

चूर्ण–शरीर को दुबला करने के लिये घुली हुई लाख दो टंक, कालाजीरा, अजवाइन हर एक चार टंक, खूराक एक टंक दो तोले सिकंजबीन सादी के साथ।

अन्य–चन्द्रस एक माशा, दो तोले सिकंजबीन और पानी के साथ मिलाकर पिये भोजन में सिरका और मसूर और जौ की रोटी खावे शरीर को दुबला करदे और बबूल की छाया में बैठना मुख्य करके शरीर को दुबला करता है। रांगे की अंगूठी पहिनना मुख्य करके शरीर को क्षीण करता है और चीजें कड़वी और खट्टी और दवायें गरम और खुश्क खाना और भूखा रहना और मोटे कपड़े पहिनना और पृथ्वी पर सोना और सरदी में नंगा होना शरीर को दुबला करता है।

शरीर के अधिक क्षीण होने का यत्न।

जोकि अधिक दुबला होना भी एक रोग है इस वास्ते थोड़ी सुगम ओषधियें मोटा करने के लिए लिखी जाती हैं।

औषध जो मुख्य करके स्त्री के शरीर को मोटा करे—असगन्ध, कालीमूसली, सफेद मूसली बराबर लेकर गोदुग्ध में पकावे जब दूध सूख जावे सुखाकर पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर हररोज सात टंक गाय के दूध के साथ खावे।

अन्य—रोटी दूध के साथ खाना बदन को मोटा करता है।

औषध—बदन को मोटा करने के लिए मीठे बादाम की गिरी, निशास्ता, कतीरा, शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले दूध के साथ खावे।

जवारिश—बदन की तय्यारी के वास्ते यह सुगम औषध हरवी सगीरसे प्राप्त कीगई है—कालीमिरच, सोंठ हरएक दश टंक, पीपल तीस टंक, छिले तिल, अखरोट की गिरी हरएक पचास टंक, शक्कर दो सेर, शहद आवश्यकता के अनुसार यथाविधि माजून बनावे खूराक एक मिस्कालकी करे।

मुहासों का यत्न।

यदि बहुत निकलें और मुंह को दुःखदें सरेरू की फस्द खोले और जुलाब के उपरांत ठंढी ओषधियों के लेपको सेवन करे।

यत्न—अमलतास के वृक्षकी छाल, अनार, लोध, आंबाहल्दी, नागरमोथा बराबर पीसकर उबटनके सदृश मुंह पर मले और सूखने के पीछे धो डाले।

औषध—मुहासे को गुणकारक—बेर की गुठली की गिरी, मुलहटी, कूठ बराबर पानी में पीसकर मुंह पर मले।

अन्य—जवासा पानी में औटाकर उससे मुंह धोवे।

अन्य—खुरफे के बीज पीसकर गाय के दूध में उबटना बनाकर सेवन करे।

अन्य—नरकचूर, समुद्रझाग पानी में पीसकर उबटना बनावे।

अन्य-सफेद घुंघची की गिरी, लाहौरी नोन पीसकर कुचला भिगोकर उसके जल में मिलाकर लेप करे।

अन्य-नरकचूर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य-पीली कौड़ी पीसकर नींबू के रस में भिगोदे जब रस सूख जावे और डाले जब वह भी सूख जावे पीसकर सुबह और शाम मले मुख को साफ करता है।

मुख का रंग बराबर होजाने का यत्न।

जो कलेजे और तिल्ली और कोष्ठ के उपद्रव से हो उन अंगों का यत्न न करे और जो चीजें रंग को खराब करती हैं जैसे कि बैंगन और जीरा और सिरका न खावे और अधिक भोग, चिन्ता, खेद, गरम हवा और धूप से पथ्य करे।

औषध-चेहरे को चमकावे और झाईं दूर करे-हरे कलमली के बीज दूध में पीसकर उबटने की तरह मले।

अन्य-चिड़िया की बिष्ठा सुखाकर पीसकर मुख पर मले।

अन्य-मुहासे को गुण करे-सिरस की छाल, काले तिल बराबर सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य-कलौंजी सिरके में पीसकर रात को लेप करे सुबह धो डाले मुहासे और मस्से दूर हो जावें इसी प्रकार अजवाइन का लगाना गुण करता है।

लेप-मुहासे को गुणकारक-झरबेरी के बेर जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर लेप करे।

अन्य-मुंह चमकावे-पीली सरसों आधपाव दूध में औटावे जब दूध सूखजावे सरसों सुखाकर पीसकर उबटना बनाकर मले।

अन्य-मुहासे को गुणकारक-मँजीठ, रक्तचन्दन, मसूर, लोध, लहसुन की कोंपल कूट छानकर महीन करके रात को मुहासे पर लगाकर सुबह धो डाले।

अन्य-मुख को चमकावे और साफ करे-चावल, जौ, चने, मसूर और मटर का आटा हरएक इनमें से मुंह को साफ कर देता है उबटना बनाकर सेवन करे।

औषध—स्त्री के रंग की सफाई के लिये उत्तमोत्तम है और मुख्य खाने में गुण करती है—खोपड़े की वटी लेकर उसमें छिद्र करके एक दाम केशर, एक दाम जवासा पानी में पीसकर उसमें डालकर उसके टुकड़े से छिद्र बन्द करके आठसेर गाय के दूध में मधुरी अग्नि पर औटावे जब सब दूध सूख जावे औषध को खोपड़े से निकाल पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनावे सुबह के वक्त एक गोलीपानमें खावे एकमित्रने इसे बहुत आजमाई हुई कहा है।

औषध—अगर समगअरबी, कतीरा, निशास्ता, ईसबगोल के लुआब या खुरफे के पानी में मिलाकर सफर में मुंह पर मले तो धूप से रंग काला न हो।

काले दाग का यत्न।

अर्थात् वह काला दाग जो मुंह पर होजावे उसे झाइं कहते हैं।

औषध—झाईं को गुणकारक—तरबूज में छिद्र करके उसमें चावल भरकर सात दिन रक्खे फिर चावल निकालकर सुखाकर उबटना बनावे।

अन्य—आंब की बिजली, जामुन की गुठली पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—झाईं को गुणदायक है—नाजबो की पत्तियां, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुँह पर मले।

अन्य—कुलींजन पानी में पीसकर कइ दिन लगाना त्वचा के भीतरमे स्याही सुखाकर दूर करता है चाहिये कि थोड़े दिन लगाकर फिर चावल पीसकर लेप करे कि त्वचा का रंग बराबर हो जावे।

झाईं को गुणकरे—चौलाई की जड़ और डाल जलाकर पानी में पीसकर झाईं पर मले और एक घड़ी धूपमें बठे सूखने के पीछे गरम पानी से धोवे और लाहौरीनोन पीसकर मुँह पर मले।

अन्य—झाईं को गुण करे—तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर मुँह पर मले।

अन्य—कलमीशोरा, हरताल एक एक टंक तीन भाग करके एक भाग पानी में मिलाकर मुँह पर मलकर एक घड़ी

धूप में बैठे और गरम पानी से धोवे तीन दिन में दूर होवे।

अन्य–कागजी नींबू काटकर हल्दी टुकड़े टुकड़े करके उसमें फिर नींबू के दोनों टुकड़े एक सप्ताह पर्यन्त रक्खे फिर निकालकर नरकुल की पुरानी जड़ के साथ पीसकर रात को लगाकर सुबह गरम पानी से धो डाले।

अन्य–झाईं को गुण करे–करंजुवे की गिरी गाय के दूध में पीसकर लेप करे–चेहरे को बुर्राक और प्रकाशवान् करता है।

अन्य–झाईं को गुणकारक–शहद, सिरके और नोन में मिलाकर मला करे।

अन्य–झाईं को गुण करे–नींबके बीज सिरके में पीसकर मले।

अन्य–झाईं को गुणकारक–अंजरूत दो भाग, कत्था एक भाग कूट छानकर गाय के ताजे दूध में मिलाकर हररोज कई बेर मुख पर मले शीघ्र आराम हो जावे।

अन्य–झाईं को गुणदायक–कबूतर की बीट पानी में पीसकर हर रोज कई बेर लगावे।

अन्य–झाईं को गुणदायक–मसूर नींबू के रस में पीस-कर लगावे।

अन्य–भुनी फिटकरी, हराममगज एक एक दाम, चूना आधादाम कर यह सम्पूर्ण औषध नींबू के रस में खूब पीसकर मरहम के सदृश करके झाईं पर मले दो एक सप्ताह में दूर हो जावे और जब नींबू का रस सूख जावे और डाल दे।

छीप की दवायें।

छीप को गुणदायक–हल्दी, काले तिल भैंस के दूध में पीसकर लेप करे।

अन्य–चीनियां के फूल, छाल और उसकी पत्तियाँ पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–चीनियां के फूल नींबू के रस में पीसकर लगावे छीप और झाईं दूर होवे।

अन्य–छीप को गुणदायक–चौलाई की जड़ और डालें

जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर छीप पर लगावे और एक घड़ी धूप में बैठकर गरम पानी से धो डाले।

अन्य—छीप को गुणदायक—पवाँर के बीज अधकुचले दही के तोड़ में मिलाकर दो तीन दिन रक्खे फिर बदन में मलकर नहा डाले।

अन्य—छीप को गुणदायक—सुहागा, चन्दन पानी में पीसकर लगावे।

मस्से और तिल की दवायें।

मस्सों को गुणदायक—मोर की बीट सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—चूना, सज्जी पानी में घोलकर मस्से को जंगली कंडे से खुजलाकर मले दो तीन दिन में आराम हो जावे।

अन्य—धनियाँ पीसकर लगाना मस्सों और तिल को दूर करता है।

अन्य—चुकन्दर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करना मस्सों को दूर करता है।

अन्य—खुरफे की पत्ती मस्सों पर मलना गुणदायक है।

अन्य—सीप जलाकर सिरके में मिलाकर लेप करना मस्सों को गुणकारक है।

अन्य—पीली हरताल, चूने की कली, मांस कूटने की बटी से कूटकर लेप करे।

अन्य—तोहफतुलमोमनीन पुस्तक के निर्मापक ने लिखा है कि जो सूखे चने चाँद की पहिली तारीख से मस्सों की संख्या से एक एक चना एक एक मस्से में छुलाकर सबको एक लत्ते में बाँधकर उस लत्ते को हाथ में लेकर दोनों पाँव के बीच से हाथ निकाल कर उस पोटली को इस तरह फेंके कि कंधे के ऊपर से पीठ की तरफ गिर जावे एक महीने में सब मस्से दूर हो जावेंगे एक मित्र का आजमाया हुआ है।

बद का यत्न।

चाहिये कि आरम्भ में उसके गल जाने का यत्न करे क्योंकि जब पककर फूट जाती है बहुत दुःख देती है और कभी कभी उसके चीरने की आवश्यकता हो जाती है उस समय बहुत दुःख होता है।

औषध—बद को गुणकारक—केले की जड़ मनुष्य के मूत्र में पीसकर गुनगुना कपड़े पर रखकर लगावे।

अन्य—पीपल के पत्ते सीधे तरफ गरम करके बाँधे।

अन्य—लसोड़े के पत्ते गुनगुने बाँधे।

अन्य—नरसें के पत्ते बाँधे।

अन्य—सँभालू की पत्ती गुनगुनी बाँधे।

अन्य—मेथी हालों में पीसकर लेप करे।

अन्य—आमला, लसोड़े की छाल, इमली की छाल पानी में पीस कर बाँधे।

अन्य—विनौले इतना कूटे कि टिकिया की तरह हो जावें गुनगुना करके बाँधे।

अन्य—घिकुवार का पट्ठा दो टुकड़े करके थोड़ा रसौत और हल्दी पीसकर उस पर रखकर गुनगुना करके बाँधे।

अन्य—आरम्भ में चूना और शहद मिलाकर कपड़े पर मरहम की तरह लगाकर बद पर बाँधे और बाजों ने चूने में अण्डे की सफेदी मिलाकर लगाना लिखा है।

अन्य—बद को गुणकारक—हड़की छाल रेंड़ी के तेल में भून पीसकर सिरके में खमीर करके लेप करे।

अन्य—बद के तोड़ने के वास्ते शीघ्र गुण करे—तूतिया आधा भाग, हालों, हल्दी, राल, एक एक भाग, गूगुल दो भाग, गुड़ अढ़ाई भाग पीसकर लेप करे।

अन्य—बद को गुणदायक—चने का आटा गूगुल में मिलाकर टिकिया बनाकर बाँधे ऊपर से नींबकी पत्तियाँ गरम करके बाँधे और केवल नींब के पत्ते ही बाँधना काफी है।

लेप–कुचला चन्दन की तरह घिसकर कालीमिरच मिलाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–राई गरम पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य–बद के लिये आज़माया हुआ है–जो बद बड़ी हो चार दिन में पचा दे–प्याज को छूरी से कीमा करके असमर्थ लड़के के मूत्र में पका वे जब खूब गल जावे टिकिया बनाकर बाँधे।

औषध–बगल की सूजन को जिसे हिन्दी में कखुआरी कहते हैं गुणकारक–राई गरम पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य–कान के पीछे की सूजन और कखुआरी शीघ्र पचावे–तुलसी की पत्तियाँ उसके बराबर अरण्ड की कोंपल पीस कर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना लेप करे।

शोथ का यत्न।

फूलने और अंग के मोटे होने का नाम सूजन है कि अंग पर मल गिरने से पैदा हो और यह सूजन चारों दोष या वात से होता है, इसका यत्न माद्दे अर्थात् विकारकी रोकनेवाली, गलाने-वाली, पकानेवाली और बहानेवाली चीजों का सेवन करना है।

जदवार की गोली–जो सूजन के गलाने में तंजबी खताई के बदले काम देती है–जदवार, रसौत, गेरू, खतमी के बीज, लालचन्दन, रेवंदचीनी, मकोय, सफेद कत्था, कालीजीरी बरा-बर कूट छानकर गोलियाँ बनावे मकोय के हरे पत्ते या हरे धनिये के रस में या सिरके या गुलाब या पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य–मुख की सूजन को गुणदायक है–हल्दी, गेरू, सोंठ, बिस्मार बराबर कूट छानकर गोलियाँ बनावे और मकोय के पत्तों के रस में पीसकर लेप करे।

औषध–जो पीड़ा को ठहरावे और सूजन को गुणकारक और पीड़ा को शान्तकरे–अजवाइन महीन कूट छानकर नींबू के रस में पकाकर गुनगुना सूजन पर बाँधे और जो नींबू का रस न हो सिरके में सेवन करे।

लेप–सूजन और जोश को गुण करे–आँब की बिजली

पानी में पीसकर गुनगुना लगावे खैरुलतिजारब में लिखा है कि गलाने में जद्वार के सदृश है।

अन्य—वरम को पचावे अरण्ड की छाल, विषखपरे की छाल, सोंठ पीसकर गुनगुना लेप करे।

औषध—धतूरे के पत्ते गुनगुने शोथपर बांधना गलाता है।

अन्य—बकरीकी मेंगनी लेपकरना पुरानी सूजनको गलाता है।

औषध—कान के नीचे की सूजन और बगल की सूजन जल्दी गलावे—मिस्सी जो मशहूर दरख्त है जिसे चकसौनी भी बोलते हैं उसकी पत्ती लेकर उसकी बराबर अरण्ड की कोंपल पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना बगल पर बांधे।

अन्य—बगल के वरम को गुण करे और इस औषध को लालदारू कहते हैं—कत्था, मुरदारसंग, तज, रक्तचन्दन, कबाबा, तूतिया सब्ज ये कूट छानकर पानी में मिलाकर लेप करे।

लेप—पीड़ा के ठहराने और मलके पकानेको गुणकरे—मूँग, जौ, लोबिया और मसूर का आटा बराबर लेकर सिरके और पानी में घोलकर लपटों की तरह पकाकर लेप करे।

अन्य—पीड़ा और सूजन को गुण करे—सिरस के पत्ते हर-रोज कई बेर गरम करके बांधे।

अन्य—सूजन और सख्ती को गुण करे—बरगद के पत्ते घी में तर करके गुनगुने बांधे।

अन्य—गूलर के पत्तों का रस निचोड़कर जौ के आटे में मिलाकर बांधे सख्त वरम को गलावे।

अन्य—वरम को गलावे—पियोटन के पत्ते गरम करके बांधे।

अन्य—गाय का गोबर वरम पर बांधे।

अन्य—धनियां मनुष्य के मूत्र में पीसकर लेप करे।

लेप—जायफल एक दाम, सोंठ दो दाम, कंघी दो दाम सिरके में पीसकर गरम करके लगावे वरम को गुणकारक—इन्द्रायन की जड़ सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—ईसबगोल जवकुट करके लेप करे।

अन्य–वरम को पकाकर पीव निकाले–पीपल की छाल पीसकर लेप करे।

अन्य–अब्बासी के पत्ते गरम करके बांधे।

लेप–वरम को पकाय तोड़कर मल निकाले–खवासन के बीज पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–कंघी के पत्ते, इमली के पत्ते, चावल थोड़े थोड़े लेकर औटावे और पीसकर फोड़े पर लगावे एक दिन में पकावे।

अन्य–इमली के बीज पकाकर बांधे फोड़ा के तोड़ने और पकाने को गुणदायक है।

अन्य–फोड़े के तोड़ने को गुणदायक है–सरू के पत्ते, मूँग की दाल, कबूतर की बीट पीसकर गुनगुना फोड़े पर बांधे।

लेप–फोड़े को गुणदायक है और मल को पकाकर निकालता है–थोड़ी खाने की तम्बाकू पानी में पकाकर लेप करे।

''लेप फोड़े को गुणदायक–जिस दिन फोड़ा निकले चूना और तेल मिलाकर लगावे बढ़ने न देगा।

औषध–उस फोड़े के वास्ते जो पीड़ा अधिक करे और फूटा न हो इससे अधिक कोई औषध फोड़ने में बलवान् नहीं है सिरस के बीज, मैनफल, जंगार नौ नौ माशे, रेवन्दचीनी एक तोला भर, प्याज, नींब के पत्ते एक एक तोला, एलुवा छः माशे, नाखूना, गूगल, अलसीके बीज सात सात माशे, मेथी छः माशे पीसकर तेज शराब में मिलाकर गुनगुना लगावे।

अन्य–फोड़े को गुणदायक–कबूतर के पर जलाकर उसकी राख तेल में मिलाकर लेप करे फोड़े को पकाकर तोड़ डाले।

पट्टी–मैदा लकड़ी दो टंक कूटकर लड़के के मूत्र में पकाय पीसकर कपड़े पर रखकर पट्टी की सदृश बांधे।

औषध–घाव को खोलने के लिये हल्दी जलाकर उसकी राख कड़वे तेल में मिलाकर घाव पर रक्खे।

लेप–फोड़े के तोड़ने के वास्ते साबुन, रेवन्दचीनी, गूगल, मैनफल पीसकर कपड़े में रखकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–घाव को गुणदायक है–लसोड़े की पत्ती गोंदी जलाकर उसकी राख घी में मिलाकर घाव पर रक्खे ।

अन्य–बगल के फोड़ों के वास्ते गुण करे–सोंठ, रेंड़ी दोनों पानी में महीन पीसकर गुनगुना लेप करे और ऊपर से अरण्ड के पत्ते बांधे ।

औषध–पांव के छालों को जो राह चलने से पड़ जाते हैं गुणदायक है–चावल पकाकर दही में मिलाकर लेप करे तुरन्त आराम हो जावे ।

अन्य–भगन्दर को गुणकारक–अड़ूसे की पत्ती पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर भगन्दर पर बांधे ।

अन्य–भगन्दर की सूजन को गुण करे–करील के पत्ते और अरण्ड गरम करके बांधे वरम को पचावे ।

अन्य–बात की पीड़ा को गुणदायक–अकरकरा, कायफल, खुरासानी अजवाइन, सोंठि, नरकचूर बराबर लेकर तिल और रेंड़ी के तेल में मिलाकर लेप करे ।

अन्य–बात की पीड़ा को गुणदायक–रेंड़ी के तेल या मीठे तेल में मर्दन करके महुवे के पत्तों पर वह तेल लगाकर गुनगुना बांधे ।

अन्य–उस सूजन के वास्ते जो भिलावें के धुवें से पैदा हो गुण करे ।

अन्य–आंबाहल्दी, साठी के चावल, घासदूब पानी में पीस कर वरम पर लेप करे ।

अन्य–चिरौंजी खाना भिलावें की सूजन को गुणदायक है ।

अन्य–गूलर की छाल पानी में पीसकर लेप करे भिलावें के धुवें के वरम को गुण करे ।

अन्य–मुरदारसंग पीसकर लगावे ।

अन्य–मीठा तेल मले उसी समय सूजन दूर हो जावेगी ।

अन्य–उस सूजन के वास्ते जो भिलावें के धुवें से हो–तेंदू की लकड़ी पीसकर लेप करे ।

अन्य–रसूली सूजन के वास्ते गुण करे–कुकरौंधे के पत्ते घी में भिगोकर शुरू में एक सप्ताह पर्यन्त रसूली पर बाँधे।

छोटे दानों को जिन्हें फुन्सियाँ बोलते हैं उनका यत्न।

सिरस के दरख्त की छाल पानी में पीसकर लगावे।

गोली–फुन्सी और बदन के जोश को गुण करे–गेरू, रसौत, जंगी हड़, मुरदारसंग, कत्था, लालचन्दन बराबर कूट छानकर गोलियाँ बनावे और मकोय के रस में लेप करे।

गोली–हर प्रकार की फुन्सियों को गुणदायक है–मुरदारसंग, पीले हड़ की छाल, भंग, चूने की कली, सफेद कत्था एक एक भाग, तूतिया आधा भाग पानी में गोलियाँ बनाकर आवश्यकता पर घी में रगड़ कर लेप करे।

गोली–फुन्सी को गुणदायक–कत्था, मुरदारसंग, भुना तूतिया, बेलगिरी बराबर पीसकर गोलियाँ बनावे और समय पर पानी में पीसकर लगावे ये गोलियाँ उस फोड़े को भी गुण करती हैं जिसे औरंगजेबी कहते हैं अर्थात् वह फोड़ा जिसमें चलनी के सदृश छिद्र होते हैं।

लेप–उन फुन्सियों को गुणकारक जिनमें दाह हो–गेरू, माजू, कत्था सिरके में पीसकर लेप करे।

गोली–फुन्सी को गुणकारक–सफेद कत्था, भुना तूतिया, जलीसुपारी, मुरदारसंग, पीलेहड़की छाल, रेवन्द खताई बराबर पानी में पीसकर गोलियाँ बनावे और आवश्यकता पर लगावे।

लेप–कंठमाला को जो गरदन के नीचे होता है गुणदायक है–सन के बीज, मूली के बीज, सहँजने के बीज, जौ, सरसों, अलसी बराबर कूट छानकर गौ के दूध में पीसकर लेप करे।

अन्य–चट्टों और दाद को गुणदायक–अमचूर पानी में पीसकर थोड़ा खारी नोन मिलाकर लेप करे।

अन्य–उस फुन्सी के लिये जो मकड़ी मलने से हो जावे गुणदायक है–मडुआ पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–सफेद जीरा, सोंठ पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य—मकड़ी के बिष और उसके दानों को गुणदायक है—केंचुवा पीसकर मले जो केंचुवा न मिले उसकी मिट्टी का लेप करे।

अन्य—मकड़ी के दानों को गुणकारक—चूना नींबू के रस में खरल करके लेप करे जो नींबू न मिले मीठे तेल और चिरौंजी में पीसकर लेप करे।

अन्य—मकड़ी के विष को—रक्त चन्दन, श्वेत चन्दन, मुरदारसंग पीसकर लगावे।

अन्य—खली और हल्दी पानी में पीसकर लेप करे—मकड़ी का विष दूर हो जावे।

हाथ पाँव के फट जाने का यत्न।

इस रोग का कारण खुश्की है।

औषधि—हाथ पाँव के फट जाने के लिये मेहँदी पानी में पीस कर लगावे—चार घड़ी के पीछे दूर करके रेंड़ी का तेल मले।

अन्य—एड़ी फट जाने के लिए बरगद का दूध घाव में भरदे।

अन्य—बबूल का गोंद पीसकर उसमें भर दे।

अन्य—गाय की कलम या बकरीकी कलम की मींगी भर दे।

अन्य—साबुन लाहौरी पानी में पीसकर रात को सोने के समय घाव में भर दे सुबह को धो डाले।

लाभ—जानना चाहिये कि जो खुरदरा पन हथेली में पैदा हो उसको छाजन कहते हैं और जो दाना कि पाँव के घाव पर होजावे उसको उकौता बोलते हैं उकौते की दवायें बर्णन हो चुकी हैं।

बफारा—छाजन को गुणकारक—बबूल की छाल, आँब की छाल औटावे और हाँड़ी पर सरपोश मजबूत छिपाये कि बुखार बाहर न जावे फिर हांड़ी को उतारकर हथेली और तलुओं को बफारा दे और बफारे के उपरांत घी या मक्खन मले।

अन्य—छोटी कटाई जड़ पत्ते और डाली के रेजा रेजा करके पानीकेसाथहांड़ी में डालकर मजबूत सरपोश से छिपाकर औटावे कि उसका बुखार बाहर न जावे फिर रोगी के हाथ पाँवों में

घी मलकर उसका बुखार ले और जब ठंढा होने लगे पानी से हाथ पाँव धोवे ।

औषध–खाजन को गुणदायक–थोड़ा नौसादर मीठे तेल में पीसकर मले ।

यत्न–हाथ पाँव के बिगड़ जाने के लिये कि सरदी से काले हो जावें पहिले हाथ पाँव को गरम पानी में रक्खे फिर तेल गुनगुना मले ।

जूं के अधिक होने का यत्न ।

इसका कारण शरीर में मल का अधिक होना है शरीर को मुसिलों से साफ करे किताबुलखवास में लिखा है कि चाँदनी में बैठकर बालों में कंघी करना मुख्य जूँ को पैदा करता है ।

औषध–पारा मूली की पत्तियों के रस या पान के रस में हल करके उसमें तागा भिगोकर शिर में रक्खे दो तीन दिन में सब जूँ मर जावेंगे ।

सिरका जिसे हिन्दी में बफा बोलते हैं उसका यत्न ।

इस रोग का यत्न शिर में तेल डालना है ।

अन्य–जवासा कलोरि के मूत्र में पीसकर शिर में डाले ।

अन्य–चने के आटे को एक घड़ी सिरके में डाल दे फिर वह सिरका लेकर शहद में मिलाकर शिर पर मले ।

अन्य–नींबू का रस शक्कर में मिलाकर मले और दोपहर के पीछे शिर धो डाले ।

अन्य–साबुन से शिर धोना जूँ को मारता है और बफा को शिर से दूर करता है ।

अन्य–चुकन्दर की जड़ और पत्तों का काढ़ा थोड़े नोन के साथ तरेड़ा देना बफा और जूँ के दूर करने के वास्ते गुणकारक है ।

नाखूनों की दवायें ।

नाखून के टूटजाने को गुणदायक–अनार की पत्ती पीसकर बाँधे कदाचित् हाथ या पाँव टूट गया हो उस पर नीलाकपड़ा बाँधकर मूत्र किया करे ।

यत्न—नाखून के फट जाने का—एक भाग सिरका, दो भाग तिलों के तेल में औटावे और उसमें थोड़ा सरेश डालकर लगावे जब मरहम के सदृश हो जावे लेप करे।

चेचक का यत्न।

चेचक कई प्रकार की है एक छोटी चेचक जिसको खसरा बोलते हैं और एक वह है कि जिसके दाने बड़े हों उसके उत्तम प्रकार को मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध के बिकार या तरी के बिकार का जोश करना है—चाहिये कि जब शीतला की ऋतु, जो हिन्दुस्तान में बहुधा चैत का महीना है शुरू हो दूध पीनेवाले लड़के और उसको दूध पिलानेवाली को वह दवायें जो रुधिर को साफ करनेवाली हैं जैसे शाहतरे का अरक, सरफोंके का अरक, खूबकला, सादी उन्नाब का शरबत, काहू के बीज का शीरा और ईसबगोल का लुआब कभी कभी पिलाया करे और जिस लड़के की आयु दो वर्ष से कम हो शीतला के दिनों में निकलने के पहिले जोंकें लगानी चाहिये और उस ऋतु में चिकनाई, मांस और मिठाई से पथ्य करे और जब शीतला निकल आवें गरम और ठण्ढी चीजें न दे।

हिन्दुस्तान में जब लड़कों के शीतला निकलती हैं गरम चीजों का सेवन कराते हैं और भोजन में चने और गुड़ खिलाते हैं ऐसे उपाय से ईश्वर बचावे ज्वर और चेचक में केवल खिचड़ी या मूँगकी दाल खिलावे और मसूर की दाल भी गुणदायक है कई प्रकार चेचक के बड़े हैं उनमें आरोग्यता कम होती है उनमें से काली और ऊदी है उत्तमोत्तम सफेद और कम वह है कि जिसमें कम दाने हैं अब थोड़ी दवायें सुगम लिखता हूँ जो चेचक के कम निकलने के पहिले दे निश्चय है कि न निकले और कदाचित् निकले तो ईश्वर की कृपा से कम निकलें।

शकायक का शरबत लड़के को पिलाना चेचक निकलने को गुणकारक है उसका नुस्खा मिरगी में वर्णन हो चुका है।

अन्य—चेचक के दूर करने और कम निकलने के वास्ते—जब

चेचक का संदेह हो अगर लड़का दूध पीता हो चार तोले खोपड़ा उसके दूध पिलानेवाली को एक सप्ताह पर्यंत खिलावे यदि दो वर्ष का लड़का हो दो तोले भर खोपड़ा और अगर तीन वर्ष का हो तीन तोले इसी तरह एक सप्ताह पर्यंत उस लड़के की धाय को खिलावे ईश्वर की कृपा से चेचक कम निकलेगी यह नुस्खा एक फिरंगी ने बताया है।

अन्य-जो चेचक के दिनों में खिलावे चेचक न निकले और जो निकले कम निकले ऊदराज कि हिन्दू उसकी माला बनाते हैं पीसकर लड़के को पिलावे।

अन्य-चेचक के दिनों में निकलने के पहिले घोड़ी का दूध पिलावे।

अन्य-तीन या चार सेमल के बीज निगल जावे चेचक बहुत कम निकलेगी।

अन्य-आसारों, तुरंज के अरक के साथ चेचक निकलने के पहिले खिलाने से चेचक बहुत कम निकलेगी।

अन्य-हिंदू लड़के की चेचक के वास्ते गुणदायक है-छिली मुलहठी अधकुचली, अनारदाना बराबर अपने स्वभाव के अनुकूल पानी में औटाकर शहतरे के अरक के साथ पिलावे।

अन्य-चेचक के दानों को अच्छा कर दे-सिरसके दरख्त की छाल, पीपल के दरख्त की छाल, लसोड़े के दरख्त की छाल, गूलर के दरख्त की छाल, कूट छानकर गायके घी में मिलाकर दानों पर लगावे अगर चेचक दाह संयुक्त हो बहुत गुणदायक है-उबटना चेचक के दानों को गुणदायक है-आँबाहल्दी, सरकंडे की जड़, जलाई हुई कौड़ी बराबर कूट छानकर भैंस के दूध में मिलाकर रात को मुँह पर लगाकर सुबह भूसी पानी में भिगोकर उस पानी से धोवे।

उबटना-रंग को लाल करे और साफ करदे-छिले मसूर खरबूजों की गिरी दोनों बराबर पीसकर उबटना बनावे।

अन्य-नागरमोथा औटाकर सुबह को उससे मुख धोया करे।

वालों की दवायें।

वालों का बढ़ना और काला होना।

औषध–वालों को बढ़ावे–नींब के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर नहाने के समय शिर में लगावे और चार घड़ी के पीछे धो डाले।

औषध–वालों के लम्बे होने की–शीशम के बीज, बेर के पत्ते बराबर पीसकर दो दाम बालों की जड़ में मले चार घड़ी के पीछे गुनगुने पानी से धो डाले।

औषध–बालों के लम्बे होने के लिये–कलौंजी पानी में पीस कर उससे बाल धोवे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यंत धोया करे।

अन्य–आमला नींबू के रस में पीसकर बालों की जड़ों में मले।

अन्य–करील की जड़ पीसकर बालों की जड़ों में मले बाल लम्बे हो जावेंगे और वफा दूर होगी।

तेल–जो बालों को काला करे–एक सेर मीठे तेल में गेंदे की पखुड़ियां काटकर डेगची में डालकर औटावे फिर उसे जमीन में गाड़े एक महीने के पीछे निकालकर वह तेल बालों में मले।

तेल–बालों को काला रक्खे और सफेद न होने दे–हरी झाऊकी जड़ खूब कूटकर उतने ही तिल के तेल में और दोनों के बराबर पानी में औटावे जब सब पानी और आधा तेल जल जावे लेकर गाढ़ा गाढ़ा शिर पर लगावे थोड़े दिनों में सफेद बाल भी काले हो जावें और कभी सफेद न निकलें।

मक्खी का तेल–जो बालों को काला रक्खे–सौ मक्खियां तिलों के तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर साफ करके बालों में लगाया करे।

तेल–बालों के बढ़ाने और काला होने के लिये–सरो के पत्ते एक भाग, आमला दो भाग पानी में औटावे जब गल जावे तिल का तेल मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रहे औषधियों समेत हलकरके बालों में मले–तेल बालों के

बढ़ने के लिये—भँगरे का अरक मीठे तेल में औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे रोज बालों में मले।

औषध—नहाने के समय काले तिल की पत्तियों से बालों को धोवे बाल लम्बे और नरम करता है।

अन्य—बालों के लम्बे होने के वास्ते कड़ अर्थात् कुसुम के बीज कुसुम के वृक्ष की छाल दोनों बराबर जलाकर राख करे और चँबेली के तेल में मिलाकर मरहम के सदृश बालों की जड़ों में मले लम्बे और नरम हो जावेंगे।

अन्य—परसियावशान जलाकर शिर पर लगावे बालों के गिरने से रक्षा करे।

औषध—जो बालखोरे को गुणकारक है—हाथी दांत जलाकर उसकी बराबर रसौत मिलाकर लगावे।

अन्य—बालखोरे को गुणकारक—कदीर की कोंपल बिना पानी के पीसकर मले दो तीन दिन में बाल निकल आवें।

अन्य—भँगरा पीसकर मलना बालखोरे को गुणकारक है।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक—चुकन्दर के पत्तों का रस चार दाम कड़वे तेल में जलाकर लेप करे।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक है—घोड़े या गधे का सुम जलाकर उसकी राख मीठे तेल में मिलाकर मले और सींग जलाकर मलना भी गुणदायक है।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक है—गन्धक पानी में पीसकर शहद में मिलाकर लगावे।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक—आमला चुकन्दर के रस में पीसकर लेप करे पांच छः दिनों में बाल निकल आवें।

अन्य—बालखोरे के लिये—थोड़ा दही बेकलई तांबे के बर्तन में डालकर पैसेसे इतना हलकरे जबसब्ज होजावे फिर लेप करे।

अन्य—बालखोरे को गुणकारक—पहिले आमले के पानी से जहाँ बालखोरा हो धोकर हलके कई घावों पर उस जगह पर लगावे कि रुधिर निकल आवे फिर नौसादर महीन पीसकर

मक्खन में मिलाकर मर्दनकरे एकसप्ताहमें बाल निकल आवेंगे।
✓ अन्य--बड़ों का निश्चय है कि कुन्दश् और हाथी दांत का बुरादा मुर्ग की चरबी में मिलाकर जिस जगह पर लगावे यहां तक कि हथेली में भी बाल निकल आते हैं।

वह ओषधियां जो बाल निकलने न दें।

जो बैल का पित्ता मुर्ग के अंडे की सफेदी में मिलाकर बाल उखाड़कर लेप करे बाल कभी न जमें।

अन्य–जोंक को नोन में लथेड़कर सुखाकर बकरी के मूत में पीसकर जिस जगह बाल हों उखाड़कर लगावे फिर वहां बाल न जमें।

अन्य–ईसबगोल का लुआब सिरकेमें मिलाकर बाल उखाड़ कर मले अगर थोड़ा समन्दरझाग मिलावे बहुत गुण रखता है।

अन्य–बकरी की मेंगनी और राई महीन पीसकर बाल उखाड़ कर मले।

अन्य–रेंड़ी की गूदी पीसकर बाल उखाड़ कर मले।

अन्य–समन्दरझाग, अजवाइन, साफ अफीम सिरके में पीसकर ईसबगोलका लुआब मिलाकर बाल उखाड़कर लेप करे।

अन्य–कुचला पानी में पीसकर बाल उखाड़कर लगावे।

अन्य–जोंक सिरके में जलाकर बालों के उखाड़ने के पीछे लेप करे।

अन्य–बाल उखाड़कर चींवटी के अण्डे लेप करे।

अन्य–बाल उखाड़कर सर्प की केंचुल लगावे।

अन्य–चमगादड़ का रुधिर और मुर्ग का पित्ता और खरगोश का रुधिर और कछुए का पित्ता और तीतर की चरबी हरएक बालों को उखाड़कर लगाना बाल निकलने नहीं देता।

अन्य–नौसादर गाय के पित्ते में हल करके बाल उखाड़कर लगावे।

अन्य–अंजीर का दूध और सूखे मेंढककी राख और मेंढक का रुधिर जो बाल उखाड़कर लगावे यही गुण रखता है।

अन्य–बकरी का भेजा चूने में मिलाकर बाल उखाड़ने के पश्चात् लगावे।

अन्य–प्याज का रस, कालानोन सिरके में मिलाकर बाल उखाड़कर मले।

बाल गिरकर फिर न निकलें उसका यत्न।

चूहे की मेंगनियां सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य–लसोड़ा पानी में औटावे जब पानी गहरा हो जावे मलकर बाल गिरने की जगह पर मले।

अन्य–हरे परसियावशानको निचोड़कर मलना गुण करता है।

अन्य–पुराना बादामरोगन लगाना गुणदायक है।

अन्य–किस्त सिरके और शहद में पीसकर मले।

अन्य–बिच्छू मीठे तेल में जलाकर लेप करे।

अन्य–समन्दरझाग जलाकर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–चुकन्दर के पत्तों का लेप करना गुणदायक है।

अन्य–मेंढक जलाकर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–बकरी का सुम जलाकर सिरके में मिलाकर बाल गिरने की जगह पर मले।

लू लगने का यत्न।

इस रोग के नाश करने के लिये कच्चा आंब भूभल में गाड़ दे जब गल जावे निचोड़ कर शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर पिये लू के दुःखको कि बहुत विदेश में पहुँचता है गुण करता है।

ज्वर का यत्न।

एक हमीयोस अर्थात् दिवसिक–मुख्य करके ज्वर के तीन प्रकार हैं वह जो अधिक चिन्ता, शोच, हर्ष, जागने, तकाने, मिरगी, जुकाम, नजले और पेचिश आदिसे होता है बहुधा तीन चार दिन से अधिक नहीं रहता है उसका यत्न उस कारणको दूर करना है।

जैसे कि चिन्ता और विकल्प के ज्वर में हर्ष और आनन्द देना और क्रोध ज्वरमें धीरज देना और हर्ष ज्वर में अप्रतिष्ठा

और ग्लानि करना भूख के ज्वर में भोजन देना इसी तरह थोड़ी ठंढाई और मन को पौष्टिक औषध इसको काफी है।

दूसरा वह ज्वर जो किसी दोष से उत्पन्न हो उसमें जो मल रगों के अन्दर दुर्गंधित हो वह तप प्रति समय बराबर रहती है और जो मल, रगों के बाहर सड़ जावे वह तप हर वक्त नहीं रहती और रुधिर रगों के अन्दर रहता है।

जो खून के जोश से ज्वर हो उसे सोनोखस कहते हैं जो रुधिर की अधिकता के लक्षण वर्णन हो चुके हैं उन लक्षणों से रुधिर की अधिकता मालूम हो सकती है।

उसका यत्न—फस्दके पीछे रुधिर को ठंढी दवाओं से साफ करना जैसे कि ईसबगोल का लुआब, काहू के बीजों का शीरा, कासनी, शरबत उन्नाव आदि उन्नाव के शरबत का नुस्खा यह है कि पाव भर उन्नाव पानी में भिगोकर औटाकर छान ले और आध सेर कन्दमें कवाम करके रक्खे पैत्तिकज्वर जो उसका मल रगोंके बाहर सड़गया हो तीसरे दिन जूड़ी से आती है और पित्त की अधिकता मुँह का कड़ुवा होना और प्यास की अधिकता और रंग की जरदी से मालूम हो जाती है और जो उसका विकार यदि वह ज्वर बरावर होता है परंतु तीसरे दिन वेग करता है और कदाचित् पैत्तिक ज्वरका बिकार कलेजे के पास की रगों के अन्दर सड़ जावे ज्वर में दाह और गरमी बहुत होती है उसको मुहरका बोलते हैं।

उसका यत्न—ठंढी चीजें पिलाना और पित्तके पकाने के उपरांत निकलता—कल्क पैत्तिकज्वर को जो दिनी हो जावे गुणदायक है सदा पिलावे पैत्तिकज्वर बिल्कुल जाता रहे।

इमली दो तोले रात को पानी में भिगोदे सुबह को उसका साफपानी लेकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पहिले एक तोला ईसबगोल फांककर उस पर पिये—सिकंजबीन बजूरी, पैत्तिकज्वर को गुणकारक और यह नुस्खा साहब जखीरा सय्यदइस्माईल साहब का है कासनी की जड़ की छाल, कासनी की जड़

पालक के बीज, खीरे ककड़ी के बीज बराबर लेकर तीन भाग सिरके दो भाग शक्कर में कवाम करे और तरबूज के बीजों की गिरी का शीरा या मीठे कद्दू के बीजों की गिरी के शीरे के साथ पिये और जो सिरका न मिलावे उसको शरबत बज़ूरी बारद्क कहते हैं ।

तरबूज का शरबत पैत्तिकज्वर को गुणकारक—बड़े तरबूज के पानी के बराबर सफेद शक्कर मिलाकर कवाम करे खूराक स्वभावानुकूल ।

वंशलोचन की टिकिया—पैत्तिकज्वर को गुणकारक मुसिल के पीछे देनी चाहिये—वंशलोचन, गुलाब के फूल पाँच पाँच भाग, काहू के बीज, कासनी के बीज, तरबूज के बीजोंकी गिरी, खीरे ककड़ी के बीज, हरएक तीन भाग, नीलोफर के फूल दो भाग कूट छानकर टिकिया बनावे खूराक दो टंक ।

पैत्तिकज्वर को गुणदायक—काहू के बीज, खुरफे के बीज दो दो टंक पानी में शीरा निकालकर अलका साफ पानी दो तोले भर अधिक करके ईसबगोल एक तोला छिड़ककर पिये ।

अन्य—पैत्तिकज्वर को गुणदायक—शहतरे के पत्तों का शीरा कासनी के बीज दो टंक पानी में पीसकर सादी सिकंजबीन दो तोले मिलाकर पिये नींबू का शरबत—पैत्तिकज्वर को गुणदायक है और जले हुये दोष और रुधिर की गरमी को दुरुस्त करता है आधे रत्तिल शक्कर का कवाम करके छः दाम नींबू का रस छानकर अधिक करके कवाम पर आने के पीछे उतारकर रख छोड़े ।

काढ़ा—उस पैत्तिकज्वर को जो तीसरे दिन आता है वैद्यों की रीति पर गिलोय अर्थात् गुडुच, धनियाँ, रक्तचन्दन, कमल-गट्टे की गिरी, नींब के वृक्ष के अंदर की छाल हरएक पाँच माशे कूट छानकर तीन पाव पानी में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये और चिकारी करने के लिये शरबत नीलोफर दो तोले अधिक करे तो कुछ हर्ज नहीं—शरबत

नीलोफरका ठंढे शिरके दर्द और गरम तप को गुण देता है।

अन्य–हरे नीलोफर के फूल आधे रत्तिल, गोखुरू चार तोले, चार रत्तिल पानी में औटावे और छानकर सेर भर कन्द में कवाम करे खूराक इक्कीस टंक पर्यन्त।

कद्दू का रस–लौकी लेकर कपरौटी करके हल्के तन्दूर में एक ईंट पर रखदे जब पक जावे निकालकर उसकी मिट्टी ऊपर से दूर करके कद्दू में छेद करके उसका पानी लेकर कन्द या तुरंजबीन या शीरा खिश्त या शरबत या नीलोफर या सिकंजबीन या शरबत बनफ्शे के साथ जो उचित हो पिये।

काढ़ा–गरम और पुराने तप को गुणदायक–गिलोय, शहतरा, धनियाँ, मुलहठी, अधकुचली काकड़ासिंगी, कड़वी खस, रक्तचंदन, नींब के पत्ते, खरबूजे के बीज अधकुचले बराबर इसमें से दो दाम लेकर आध सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर पिये।

अन्य–पैत्तिकज्वर को गुणदायक–नीलोफर दो मिस्काल, खाकशीर एक मिस्काल दोनों को डेढ़ पाव पानी में औटावे जब आधपाव रहे महीन कपड़े में छाने जब नीलोफर रहजावे और खाकशीर छन आवे थोड़ी मिश्री डालकर पिये।

अन्य–ज्वर को गुणदायक–गुड़च, नींब की छाल, धनियाँ, पद्माक, रक्तचन्दन, खस बराबर दो दाम के अनुमान एक सेर जल में औटावे जब आधपाव रहे छानकर पिये।

अन्य–ज्वर को गुणदायक–छिली हुई मुलहठी, काकड़ासिंगी, गिलोय, शहतरा, चिरायता, खस, रक्तचन्दन, नेत्रवाला, अरलू की छाल, धनियाँ, जवासा दो टंक बराबर लेकर प्रतिदिन तीन पाव पानी में भिगोकर सुबह को औटावे जब आधपाव शेष रहे साफ करके पिये।

करंजुवे की गोली–कफ और पित्त को जूड़ी बुखार को गुण करे–करंजुवे की गिरी, पीपल एक एक टंक, सफेद जीरा, बबूल के पत्ते आधा आधा टंक कूट छानकर पानी में फालसे

के बराबर गोलियाँ बनावे तीन दिन तक एक गोली सुबह और एक दोपहर और एक शाम को खावे।

गोली—पैत्तिकज्वर को गुणदायक—सफेद कत्था चार भाग, कपूर एक भाग, कूट पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनावे खूराक एक गोली।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणदायक—हिंदुओं की रीति पर सफेद कत्था एक माशा, संखिया एक रत्ती पीसकर मोठ की बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली जूड़ी से पहिले खावे।

अन्य—जूड़ी बुखार के वास्ते चने के बराबर अफीम एक रत्ती नींब के पत्ते ढाई खूब पीसकर गुड़ में मिलाकर गोलियाँ बनावे और आने से तीन घड़ी पहिले एक गोली निगल जावे जब तक शुरू हो दूसरी गोली दे निश्चय है कि तीसरी गोली की आवश्यकता न हो।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणकारक—हुलहुल के पत्ते दाहिने हाथ में कलाई के जोड़ पर बाहर की तरफ रखकर उस पर एक छोटी फिटकरी मजबूत बाँधे वहाँ एक फफोला पैदा होगा नौबत के दिन जूड़ी न आवेगी और ज्वर नष्ट हो जावेगा।

अन्य—जूड़ी बुखार दूर करे—भुनी फिटकरी, मिश्री दोनों पीसकर रोगी के स्वभावानुकूल आधे माशे से दो माशे पर्यंत दे जो खाँसी हो इस औषध का सेवन करे।

अन्य—ज्वर को गुणदायक—तुलसी के पत्ते छः माशे, काली मिरचें चार, पीपल एक पीसकर एक तोला भर मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणदायक—अफीम एक माशा, कालीमिरच दो माशे, कीकर की लकड़ी का कोयला बराबर लेकर छः माशे पीसकर एक माशे कम वा जियादा स्वभाव के अनुकूल तप के वक़्त से चार घड़ी पहिले दे और निहार न दे कि कै हो जावेगी किन्तु पहिले थोड़ा सा भोजन करले और औषध खाने के पीछे जब दोपहर या अधिक बीते तब भोजन दे

इसके अन्दर न दे निश्चय है कि एकही खूराक काफी हो जावेगी।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणदायक—धतूरे के बीज एक कुल्हिया में भरकर उसका मुँह बन्दकर कपड़मिट्टी करके तंदूर में रक्खें जब बीज जल जावें उसकी राख चार माशे जवान को, चार रत्ती लड़के को खिलावे—हिन्दी औषध जो एक दिन में कफ और पित्तज्वर को दूर करे—हरताल, फिटकरी हरएक पांच टंक घीकुवार के रस में नींब के उस सोंटे से कि जिसमें पैसा जड़ा हो सोरह पहर रगड़े और टिकिया बनाकर सुखाकर मिट्टी के बर्तन में टिकिया के नीचे ऊपर पीपल या अरण्ड की लकड़ी की भस्म देकर रक्खे और बर्तन को कपड़मिट्टी करके बारह पहर जंगली कण्डे की आगदे खूराक एक चावल के बराबर भोजन दूध चावल।

बफारा—शीतज्वरको दूरकरता है—तिबकी पुस्तकों में लिखा है कि ऋतुके रुधिरका लत्ता जूड़ी दूर करनेको आजमाया हुआ है।

खस का खमीर।

पित्तज्वर और प्यास को गुणदायक और मन और कलेजे का पौष्टिक है—आधसेर खस के रस में चार दाम खस रात को भिगोकर सुबह को औटावे जब आधा रहे पावभर शक्कर डाल कर कवाम करे और एक माशा खस का अतर अधिक करके खमीर बनावे और थोड़ा गुलाब अधिक करे और शरबत की अधिकता के लिए कभी एक तोला मीठा कद्दू पीसकर डालते हैं और तपेदिक के वास्ते इसी शरबत में दो दिन चार रत्तीकपूर मिलाते हैं और अतीसार और गरम स्वभाव के समय दो टंक बंशलोचन मिलाते हैं और इस खमीर में बहुत गुण हैं।

लाभ—समय पर रोगी को भोजन दे किन्तु जब तपकी गरमी कम होने लगे भोजन दे गरम तप में उत्तमोत्तम भोजन—आस जौ या नरम खिचडी या दाल चावल और खुरफा, पालक का साग और कद्दू और तरोई है यदि कफज्वर का विकार रगों

के बाहर सड़गया हो हररोज ज्वर आवे और जो उसका विकार रगों के अन्दर सड़ाहो वह भी हररोज आता है—कफ के लक्षण—प्यास का होना निद्रा का वेग मूत्र में सफेदी मुँह का फीका होना है।

यत्न—मल के पकाने के उपरान्त कफ को निकाले।

काढ़ा—कफज्वर को गुणदायक—सौंफ एक टंक, सौंफ की जड़, मुलहटी छिली हुई, अधकुचली गावजवां, करफ्श की जड़ दो दो टंक, परसियावशान तीन टंक औटाकर गुलकंद दो तोले, सिकंजबीन बजूरी दो तोला हल करके पिये।

तिलिस्म—एक मक्खी, आधी कालीमिरच, बहुत थोड़ी हींग, पानी में पीसकर आँख में लगावे जूड़ी दूर हो जावे।

अन्य—तिलिस्म ज्वर को नाशकारक—उल्लू का पर और गूगल काले कपड़े में लपेटकर घी में तर करके बत्ती बनाकर जलावे उसका काजल लेकर आँखों में लगावे चौथिये बुखार को आश्चर्यदायक प्रभाव रखता है।

अन्य—सफेद धतूरा इतवार को उखाड़कर दाहने हाथ में बांधे एक दिन में तप दूर हो जावे।

गोली—कफज्वर को गुणदायक, वैद्यों का नुस्खा—बड़ी पीपल, करंजुवे की गिरी एक एक तोला, सफेद जीरा, बबूल के पत्ते आधे आधे तोला, कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक दोपहर और शाम को तीन दिन खावे ज्वर नष्ट हो जावेगा।

काढ़ा—मिले हुये बुखार को गुणकारक और हिन्दुओं की रीति पर—धमासा सात माशे बराबर शहद के साथ पानी में औटाकर पिये बजूरीका शर्बत सामान्य ज्वरों को गुणकारक—सौंफ, कासनी की जड़ हर एक चार दाम, कंद पावभर यथाविधि दवायें भिगोकर औटाकर छानकर कंद मिलाकर कवाम करे।

औषध—कफज्वर को गुणकारक—मकड़ी का एक सफेद जाला साफ करके गुड़में लपेटकर बारीसे पहिले निगल जावे शीत नहीं

आती है और ज्वर दूर हो जाता है परन्तु तीन दिन सेवन करना चाहिये।

औषध—मदार की कली जो खिली न हो गुड़ में लपेट कर गोली बनाकर निगल जाने से तीन दिनमें जूड़ी दूर होती है।

धतूरे की गोली—जूड़ी बुखार को गुणदायक—धतूरा बारह टंक, रेवन्दचीनी आठ टंक, सोंठ, बबूल का गोंद हरएक चार टंक कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे दो गोलियां जूड़ी आने के पहिले खावे।

औषध—कफ ज्वर को गुणदायक—करंजुवे की कोंपलें तीन, कालीमिरचें दो पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य—करंजुवे की गिरी पानी में पीसकर नाक में टपकावे जूड़ी बुखार से छुट्टी मिलती है।

गोली—जूड़ी बुखार को गुणदायक—मदार की जड़ दो भाग, कालीमिरच एक भाग दोनोंको बकरीके दूधमें पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनावे खूराक बारीसे पहिले एक गोली खावे।

आनन्दभैरव की गोली।

हिन्दुओं की वैद्यक में लिखा है कि यह गोली सम्पूर्ण कफ के रोग, कफज्वर, जुकाम, अजीर्ण और पांवके ठंढे पसीनेको गुणदायक है—शोधाबच्छनाग, कालीमिरच, पीपल, सोहागा, शिंगरफ बराबर नींबूके रसमेंपांच घड़ी खरल करके उड़दकेबराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली सुबह और शाम शक्करके साथ और जिस का स्वभाव बहुत ठण्ढाहो दो गोली दे और दूसरे नुस्खे में मैनफलके बीज, अकरकरा, सोंठ अधिक किया है सात दिन पर्यंत पानके रसमें पीसकर बनाना और उसके रससे खाना लिखा है।

गोली—जूड़ी बुखार को गुणकारक हिन्दुओं के ज्ञान से है—पारा, आमलासार गन्धक, शोधा बच्छनाग हर एक एक दाम, सोंठ, कालीमिरच पांच पांच दांग, धतूरे के बीज बीस दांग, हरताल आठ दांग, पारा और गंधक खूब पीसकर ओषधियां कूट छानकर चार पहर अदरक के रस में खरल करे और दो रत्ती

की गोलियां बनावे खूराक एक गोली शक्कर या पानी के साथ खाय।

औषध—जूड़ी बुखार को गुणकारक—पारा, गन्धक, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, सुहागा, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर दो पहर नींब के रस में खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे—खूराक एक गोली।

औषध—कफज्वर को गुणकारक—हुलहुल के पत्ते, कालीमिरच एक पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे और एक एक गोली तीन दिन तक खावे।

अन्य—कफज्वर को गुण करती है—मदार के पीले पत्ते कोयलों की आगमें राख करके सुबह के वक्त चार रत्ती शहद में मिलाकर खावे।

अन्य—रामबाण भूख को अधिक और बद्धकोष्ठ को दूर करती है और कफके तपों को दूर करती है—पारा, गन्धक, शोधा बच्छनाग, लौंग हरएक अढ़ाई अढ़ाई दाम, जायफल सवादाम, शोधा जमालगोटा डेढ़ दाम छानकर तीन दिन नींबके रसमें खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे दो गोलीतक गरम पानी के साथ भंग का चूर्ण वैद्यों का नुसखा जो एक घड़ी तप आने से पहिले खावे।

शीतज्वर को गुणकारक—पीपल, कालीमिरच, कलौंजी, चिरायता, गेरू एक एक माशे, भंग के पत्ते दो माशे कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक एक माशा बारी के पहिले खावे जो रोगी कम उमर का हो एक माशे से कम दे।

चूर्ण—वैद्य की औषध—कफ और सौदाके जूड़ी बुखार को गुणदायक है—एक दाम संखिया बैंगन में रखकर कपड़मिट्टी करके थोड़े जंगली कण्डोंसे फूँकदे फिर इसी तरह दूसरे बैंगन में रखकर आगदे फिर पीसकर लोहेकी कड़ाही में आध सेर पानी के साथ डालकर नरम आगपर पकावे जब सूख जावे उसको कड़ाही से निकालकर एक दाम गेरू के साथ खरल करे आव-

श्यकता पर एक चावल से एक रत्ती पर्यंत बलके अनुकूल रोगीको बताशेमें खिलावे भोजन चावल और छिलीदाल नमककमी खावे।

लाभ—चौथिया तप सौदावी है जो दो दिन बीच देकर आती है उसका विकार रगों के बाहर सड़जाता है और तप सौदावी कि उसका विकार रगों के अंदर सड़ जाता है और यह तप बरसों रहती है और कठिनता से दूर होती है इसका यत्न पकाने के पीछे मलका निकालना है अब यहाँ थोड़ी सुगम औषध चौथिये के ज्वर की वर्णन की जाती हैं।

औषध—जो चौथिये को गुणकारक—हींग, नोन दो दो माशे एक सेर जल में औटावे जब तीन चार दाम के अनुमान रहे पीजावे चौथिया बुखार कई दिन में नष्ट होगा।

अन्य—नौसादर तीन रत्ती, कालीमिरचें दो कूट छानकर ज्वर के दिन खिलावे।

अन्य—कलौंजी चार दाम महीन करके शहद में मिलाकर चार दिन बराबर खावे परंतु जिस दिन से कि तप की बारी हो उसी दिन से आरम्भ करे।

गोली—काले धतूरे के पत्ते, पान के पत्ते, कालीमिरच ढाई, महीन करके कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली सुबह और एक शाम को गरम पानी के साथ दे चौथिये को गुणकारक और आजमाया हुआ है।

चूर्ण—चौथिये और कफज्वर को गुणदायक—समंदरफल की गिरी, कालीमिरच, तुलसी के पत्ते बराबर कूट छानकर चूर्ण बनाकर एक माशा या कम या अधिक रोगी के स्वभाव व आयु के प्रमाण एक घड़ी पहिले समय से पानी के साथ खिलावे।

अन्य—टेसू के फूल, धनियाँ एक एक दाम, चने की भूसी दो दाम कूट छानकर तीन भाग करे एक भाग जल के साथ सेवन करे।

अन्य—चौथिये बुखार को गुणकारक—तीन चार माशे चूना

पानी में घोलकर एक नींबू उसमें निचोड़े जब चूना गाढ़ा होकर थिराय जाय उसका साफ पानी लेकर जब तप आने के लक्षण जैसे कि आलस्य और बोझ प्रकट हो पिलावे जो एक बेर पिलाना उसको नाश न करे दूसरी बेर दे।

औषध—कफज्वर को गुणदायक—तीन टंक अजवाइन कूट छानकर शहद में मिलाकर दे।

अन्य—चौथिये तप को दूर करे—घीकुवार काटकर उसके ऊपर की छाल दूर करके आग पर रक्खे और थोड़ी अफीम और हल्दी महीन पीसकर उस पर डाले फिर आग से उतार कर कपड़े में रखकर निचोड़े और बुनके दो प्यालों में भरकर पिये दो तीन दिन में चौथिया नष्ट हो जावे।

गोली—चौथिये को गुणदायक—पलाशपापड़े का लाल छिलका दूर करके उसकी सफेद गिरी लेकर उसके बराबर करंजुवे की गिरी मिलाकर खूब महीन पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनावे एक गोली बासी पानी से निगला करे।

अन्य—चौथिये के लिये नींब के वृक्ष की भीतरी छाल पाँच दाम आध सेर पानी में औटावे जब आध पाव शेष रहे तीन चार टुकड़े चकमाक पत्थर के लेकर आग में गरम करके उसमें बुझावे जब पाँच छः दाम पानी बाकी रहे रोगी को पिलावे इसी प्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली—पुराने तप के वास्ते—इस्पन्द भुना हुआ छः माशे, कलौंजी, पीपलामूल एक एक तोला भर कूट छानकर साढ़े तीन तोले भर गुड़ में मिलाकर आधे दाम के अनुमान गोलियाँ बनावे गरम पानी से निहार एक गोली खाया करे।

शरबत—सब प्रकार के ज्वर और खाँसी को दूर करता है—गिलोय, शहतरा, नीलोफर, खीरे ककड़ी के बीज, खतमी के बीज, कासनी के बीज, चन्दन बूरा एक एक तोला भर, मुलहटी तीन दाम, लसोड़े तीस दाने, बिहीदाना एक टंक डेढ़ पाव कन्द में कवाम करके शरबत बनावे।

काढ़ा–तप को गुण करे–खशखाश के पोस्ते दश कालीमिरच के साथ कूटकर औटाकर पिये।

अन्य–मुख्य करके चौथिये को गुण करती है–एक जूँ बाकले में छिद्र करके रखकर उसका मुख बन्द करके निगल जावे कलौंजी की जवारिश चौथिये के बुखार को गुणदायक और सौदावी तप को भी गुण करती है–तीसरा ज्वर का प्रकार तपेदिक है कि गैर असली हरारत मुख्य अर्थात् अवयव हृदय में स्थिर हो जाते हैं और यही ज्वर प्रति समय और बहुधा दिनी तप या और तप गरम रहते रहते तपेदिक हो जाती है दिनी तप अपने आप बहुत कम दिक होती है और इस ज्वर की गरमी का बेग भोजन के उपरान्त अधिक होता है इसका यत्न ठंढाई इत्यादि हैं।

कपूर की गोली–तपेदिक को गुणदायक–कपूर, केसर एक एक टंक, छिली मुलहठी, बिहीदाना, सफेद खशखाश हरएक दो टंक, खीरे ककड़ी के बीज छिलेहुये, काहू के बीज छिले हुये, चन्दन गुलाब में घिसा हुआ, छिले तरबूज के बीज तीन तीन टंक, सम्मगअरबी आधा आधा टंक दवायें कूट पीसकर टिकिया बनावे खूराक एक मिस्काल।

आबजन–जीर्णज्वरको गुणकारक–हरा कद्दू, तरबूज, छिले हुये जौ कुचलकर हरे खीरे ककड़ी के टुकड़े, नीलोफर, काहू के पत्ते, खुरफे के पत्ते इन औषधियों में से जितनी मिलें पानी में औटावे जब आधी शेष रहे आबजन करके शरीरसे जल पोंछकर ठण्ढे तेल में जैसे कि कद्दू का तेल आदि मर्दन करे।

कपूर की गोली–दाहज्वर और तपेदिक को गुणदायक है–चन्दन गुलाब में रगड़कर एक टंक जहरमोहरा रगड़ा हुआ सफेद कत्था, कतीरा, खुरफे के बीज, बनफ़शा, खशखाश के बीज एक एक टंक, केसर आधा टंक, मीठे कद्दू के बीजों की गिरी, बिहीदाने की गिरी डेढ़ टंक कूट छानकर, बिहीदाने के लुआब या ईसबगोल के लुआब में गोलियाँ बनावे।

अन्य—तपेदिक को गुणदायक—गुड़च जवकुट करके एक तोला भर, छिली मुलहटी अधकुचली, छः माशे खतमी के बीज, खुब्बाजी दो दो दाम, पावभर गरम पानी में भिगोदे सुबह उसका साफ पानी लेकर काहू के बीज और खुरफे के बीज उसी पानी में पीसकर थोड़ी शक्कर डालकर पिये इसी प्रकार कई दिन सेवन करे।

काढ़ा—तपेदिक को गुणदायक—वैद्यक की औषध—नीव के इक्कीस पत्ते, साबुत कालीमिरचें इक्कीस दोनों को महीन कपड़े में पोटली बाँधकर आध सेर पानी में औटावे जब चार दाम शेष रहे छानकर हर रोज दोनों समय पिया करे एक सप्ताह में अच्छी तरह आराम होगा।

बोहरान का वर्णन।

बोहरान रोगके साथ वैद्यके युद्ध को कहते हैं—यदि स्वभाव प्रबल होजावे वह बोहरान खरा है और एक लड़ाई में बिलकुल प्रबल न हो किन्तु दूसरी लड़ाई की इच्छा हो उसको बोहरान जय्यद नाकिस अर्थात् कुछ खोटा कहते हैं यह रोग के बढ़जाने का प्रमाण है और जो रोग प्रबल हो जावे उसको बोहरान रदी अर्थात् बुरा कहते हैं और जो बिलकुल न आवे किन्तु दूसरी लड़ाई की एहतियाजहोरदीनाकिस कहते हैं यदि प्रकृति बोहरान के समय विकार आजाय रईस और शरीफ से रजील जोड़ों की ओर दूर करे उसको बोहरान इन्तकाली कहतेहैं और बोहरानजय्यद के बारहदिन हैं चौथा १ सातवाँ२ग्यारहवाँ३चौदहवाँ ४ बीसवाँ ५ इक्कीसवाँ ६ चौबीसवाँ ७ सत्ताईसवाँ ८ इकतीसवाँ ९ चौंतीसवाँ १० सैंतीसवाँ ११ चालीसवाँ १२ और बोहरानरदी अर्थात् बुरेबोहरान भयानक के आठ दिनहैं छठा १ आठवाँ २ दशवाँ ३ बारहवाँ ४ पन्द्रहवाँ ५ सोलहवाँ ६ अठारहवाँ ७ उन्तीसवाँ ८ और दिन में बोहरान नहीं होता है तेरह दिन हैं—बाईसवाँ १ तेईसवाँ २ पच्चीसवाँ ३ छब्बीसवाँ ४ अट्ठाईसवाँ ५ उन्तीसवाँ ६ तीसवाँ ७ बत्तीसवाँ ८ तेंतीसवाँ ९

पैंतीसवां १० छत्तीसवाँ ११ अड़तीसवाँ १२ उन्तालीसवाँ १३ और पांच दिन सव रहते हैं उनमेंकभी बोहरान होता है और कभीनहीं होता—तीसरा १ पाँचवाँ २ नवाँ ३ तेरहवाँ ४ सत्रहवाँ ५ बुकरातके विचार से चालीस दिन के पीछे बोहरान नहीं होता है और बोहरान कई प्रकार का होता है कभी नकसीर फूटती है कभी दस्त आते हैं कभी कै होती है कभी पेशाब आता है कभी पसीना निकलता है ।

लाभ—जिस दिन तपआवे जो दिन उतरते आवे उस दिन को रोगका पहिला दिन गिनेंगे और जो दिन उतरने पीछे आवे उसके दूसरे दिन को पहिला दिन ठहरावेंगे और बोहरान और बारीके दिन मुसिल न देना चाहिये बहुत बुरा है अब उलथक के मुखाग्र करने के लिये जय्यदबोहरान के दिनों की संख्या ।

बोहरान जय्यद के बारहोंदिन दोहों में ।

दो० चौथा सतवाँ ग्यारवाँ, और चौदवाँ जानु ।
बीस इकिस अरु चौबिसाँ, फिर सतबीस बखानु ॥
पुनि इकतिस अरु चौंतिसा, सैंतिसवाँ मन देहु ।
अरु अन्तिम चालीसवाँ, द्वादश यह गनि लेहु ॥
तीसरे पँचवें नवम में, सत्रह तेरह जानु ।
इन दिवसन के मध्य में, कभी नहीं वह भानु ॥
छठें आठवें दशम में, और बारवें मानु ।
पन्द्रह सोलह अठरवें, अरु उन्तिसवें ठानु ॥
जो इनमें बोहरान हो, रदी है ताको नाम ।
बुरो बहुत बोहरान यह, भलो करैगो राम ॥

विष का यत्न ।

जिस मनुष्य ने विष खाया हो उसका यत्न सर्वमतानुसार गरम पानी से कै कराना चाहिए और कई बेर घृत और दूध पिलाना और मुर्गगूह पानीमें मिलाकर जिस वक्त पिलावे तुरन्त विष को कै कराता है और जानना चाहिये कि जंगल और नदी में काटनेवाले जानवर बहुत होते हैं उनके काटने से

स्वभाव में रोग प्रकट होते हैं इसकी पूरी रीति यह है कि जहर को सुखावे और जब तक रोग से छुट्टी न हो घाव को न भरने दे और जदवार और वह औषधियां जो विष को दूर करें खाने और पीने में सेवन करे।

अन्य–गरम जहरके सब प्रकारों को गुणदायक है–चौलाई की जड़ जो हरी हो एक तोला भर जो सूखी हो छः माशे पानी में पीसकर गायके घी के साथ खावे।

अन्य–विषको गुणदायक–गाय का घी दशटंक, लाहौरीनोन दो टंक मिलाकर खावे सांपके काटे हुये को भी गुणदायक है।

अन्य–जो छोटी कटाई पीसकर खावे वैद्योंके विचार में विष का नाशकारक है।

अन्य–कुचला, कालीमिरच पीसकर थोड़ा खावे सर्प के बिष को गुणदायक है।

अन्य–विषके सब प्रकारों को गुणदायक है–एक माशा भर दरियाई नारियल पीसकर पिलावे।

अन्य–बहुत जहरों को गुणदायक है–बिनौले की गिरी कूटकर गायके दूध में औटाकर पिलावे।

अन्य–कसेरु खाना विष को गुण करता है।

अन्य–विषको गुणकारक–बकरी की मेंगनी जलाकर खावे और लेप करे।

अन्य–अजवाइन खाना बहुत जहरों को दूर करता है।

अन्य–संखिये को गुणदायक है–कत्था दो तीन तोले पानी में घोलकर पिये।

अन्य–संखिये को गुणदायक–एक माशा कपूर कई तोले गुलाब में हल करके पिलावे।

अन्य–विषको गुणदायक–संखिया, बकरी का दूध औटाकर गायका घी दाग करके मिलाकर पिलावे।

अन्य–विष के करने के वास्ते–कमलगट्टा एक माशा, तूतिया दो रत्ती पीसकर गरम पानी में पिये विषको कैसे निकालता है।

अन्य–अफीम के जहर को गुणदायक–अरण्ड की जड़ पीस छुन का एक प्याला भर पिये।

अन्य–अरहर की पत्ती पीसकर पिये।

अन्य–अरण्ड की कोंपल पीसकर पिये।

अन्य–तेजबल पानी में पीसकर छुन का एक प्याला भर पिये।

अन्य–अफीम के बिषको गुणकारक–दो माशे हींग, दो तीन दफा करके खावे।

अन्य–अखरोट की गिरी अफीम का जहर दूर करे।

अन्य–गाय का घी और ताजा दूध अफीम की हानि से बचाता है।

अन्य–धतूरे के विष के वास्ते–बैंगन टुकड़े टुकड़े करके पानी में खूब मलकर पिलावे और जो बैंगन न मिले तो उसके पत्ते या जड़ पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य–धतूरे के विषके दूर करने को–दो दाम बिनौले की गिरी पानी में पीसकर पिये।

अन्य–नोन पानी में मिलाकर पिये।

अन्य–सिंदूर की हानि को गुणदायक है–सात दिन तक अदरक नोनके साथ किन्तु रोटीके साथ खावे और हर वक्त मुँह में रक्खे जिससे कि उसका रस कण्ठ में पहुँचे।

अन्य–नोन, तितली की पत्तियाँ, हरएक पाँच मिस्काल, चावल दश मिस्काल, अखरोट की गिरी तीस मिस्काल, सबको अंजीर के साथ कूटकर खिलावे।

अन्य–गुणदायक–पारा और शिंगरफ के बिकार को दूर करे–जवासा थोड़े पानी में पीसकर रस निकालकर पिये।

अन्य–रेंड़ी का तेल पाँच माशे, आधपाव गाय के दूध में हल करके पिलावे।

अन्य–भिलावें की हानि को गुणदायक–जो भिलावाँ खाने से शरीर में खुजली और सूजन पैदा हो, इमली की पत्तियाँ

का रस निकालकर पिये या उसके बीज पीसकर खावे या चिरौंजी और तिल भैंस के दूध में पीसकर खावे।

अन्य–जो किसी ने भिलावाँ खाया हो उसके विकार के दूर करने के लिये अखरोट खावे और भिलावें के धुवें से जो अंग पर शोथ हो आँवाहल्दी, साठी के चावल, दूब, वासी पानी में पीसकर सूजनवाले अंग पर जोर से मले या काले तिल सिरके और मक्खन में मिलाकर लगावे।

अन्य–बच्छनाग के विषको गुणदायक–सोंठ बहुत गुणकारी है और यह शोधक है जिस तरह चाहे खावे।

अन्य–मकड़ी के विष को गुणदायक–चौलाई का साग पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–उस मनुष्य की औषध जिसे शेर का बाल खिलाया हो कसौंदी के पत्तों का रस तीन दिन पिये।

अन्य–तीन चार झींगे निगल जावे और शेर के बाल के खाने के यह लक्षण हैं कि बैठनेके समय पेट में पीड़ा हो और जो अरंड के पत्ते पर मूत्र करे पत्ता टुकड़े टुकड़े हो जावे।

अन्य–सब प्रकार के विष को गुणदायक है–खैरुलतिजारब में लिखा है कि हुलहुल के बीज पाँच टंक पीसकर खावे।

अन्य–सांप के विष के वास्ते सांप कई प्रकार का होता है परन्तु काले सांप का विष औरों से बड़ा बलवन्त होता है समय नहीं देता है कि जिस जगह सांप काटे वह अंग यदि काटने के योग्य हो जैसे उँगली तुरन्त काट डाले और जो काटने के लायक न हो वह जगह आग से जला दे और साँप काटे हुये को सोने न दे और चक्की की आवाज सांप काटे हुये के कान में पहुँचने न दे।

अन्य–सांप काटे हुए को गुणदायक और आजमाई है, जो काले सांप ने काटा हो सात जमालगोटे और जो और किसी तरह के सांपने काटा हो दो तीन जमालगोटे छीलकर खिलावे और मूँग की बराबर पीसकर आँखों में लगावे जमालगोटे के

खाने के पीछे सींगी से जिस जगह सांप ने डसा है खूब चूसे कि विष शरीर में न पहुँचे और बहुत सा लहसुन प्याज और राई का खाना सर्पकाटे को गुणदायक है—मुजर्रबात अकबरी में लिखा है कि सर्पका डसा हुआ मूर्च्छित हो गया हो उसके उदर पर नाभिके ऊपर उस्तरे मारे कि ऊपर का चमड़ा छिल जावे और रुधिर न निकले फिर जमालगोटा पानी में पीसकर लगावे कै शुरू होगी और होश में आवेगा फिर और उपाय करे और एक पुस्तक में लिखा है कि सांप का डसा हुआ अगर मूर्च्छित होगया हो और हिलता डुलता न हो परन्तु अभी तक मरा नहीं किन्तु जीता है कुचला पानी में पीसकर उसके कण्ठ में डाले और थोड़ा पीसकर गरदन और बदन पर मले होश में आ जावेगा।

अन्य—सांप के डसे हुये को गुणदायक और आजमाया हुआ है—तीन मदार की कोंपलें गुड़ में लपेटकर खिलावे और उसके ऊपर घी पिलावे और चार मदार की कलियां, सात कालीमिरचें, एक माशा इन्द्रायण पीसकर देना लिखा है।

अन्य—मदार का दूध जिस जगह सांप ने डसा हो टपकावे जबतक सूख न जावे मौकूफ न करे जब जहर का प्रभाव न रहेगा दूध सूखना बन्द होजावेगा।

अन्य—मदार की जड़ पीसकर सांप काटे हुये को पिलावे और बाजे इसमें मदार की रुई भी मिलाते हैं।

गोली—कालीमिरच, जमालगोटे की गिरी सात सात माशे, तीन कागजी नींबू के रस में पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियाँ बनावे और पानी में पीसकर सांप काटे हुये की आंख में लगावे और दो तीन खिलावे।

अन्य—सांप के विष को गुणदायक—कसौंदी के बीज महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—सांप के विष को गुणदायक—एक खटमल निगल जावे।

अन्य—सांप के विष को दूर करे—सुहागा तेलिया एक दाम भूनकर तेल में मिलाकर पिलावे।

अन्य—चूहे का पेट फाड़कर जहां सांप ने काटाहो बांधे जहर को सुखाता है।

अन्य—सांप के विष को गुणकारक—सिरस के दरख्त की छाल और उसके जड़की छाल और बीज और फूल चारों एक एक दाम एक चमचे भर गाय के मूत्र के साथ एक दिन में तीन बेर करके पिलावे सांप का विष अपना फल न करे सिरस का दरख्त कि उसकी छाल काली होगई है उसमें बहुत गुण हैं और बाजों ने लिखा है कि जब ज्येष्ठ का महीना हो सिरस की छाल तीन दिन हररोज दो टंक साठीके चावलों के धोवन में पीसकर पिये एक वर्ष पर्यन्त जहरदार जानवरोंके विष से बचा रहे और उस मनुष्य को जो जानवर काटे वह जानवर तुरन्त मरजावे यह बात मुख्य है।

अन्य—जामुन की अढ़ाई पत्ती पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य—ताजा केंचुवा दो माशे भर पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य—एक तख्ता सफेद कागज का थोड़े पानी में घोले और छानकर पिलावे।

अन्य—जिस जगह सांप का डंक या और विषैले जानवरों का जैसे कि बावले कुत्ते का लगाहो उस पर मूत्र करना गुण देता है।

अन्य—कमल कूट छानकर पानी में मिलाकर पिलावे कै आयेगी सांप का विष दूर होगा।

अन्य—सांप के विष को गुण करे—समन्दरफल महीन पीसकर दोनों आंखों में लगावे।

अन्य—गँगनधूल पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य—कमोंदी की जड़ एक टंक, मिरच आधी टंक खावे।

अन्य—दो टंक फिटकरी पानी में पीसकर पिलावे सांप के विष को दूर करे।

अन्य—महुआ और कुचला पीसकर लेप करे।

लाभ—पुस्तकोंमें लिखा है कि बारासिंगे का सींग लटकाना सर्प इत्यादिक विषैले चौपायों के काटने से रोकता है और बारासिंगे का सींग और बकरी का सुम और अकरकरे की धूनी से सर्प भागता है और राई सर्प को मार डालती है अगर राई को नौसादर के साथ घरमें डाले सांपभाग जावे और फिर न आवे।

अन्य—बिच्छू के विषको गुणदायक—तीन तोले लहसुन का रस और तीन तोले शहद उसी समय खिलावे और थोड़ा जमालगोटा पानी में पीसकर आंख में लगावे और जिस जगह काटा हो वहां भी मले या तितली के पत्तों का पानी थोड़ा मुँह में टपकावे कई वेर के सेवन से बिच्छू का बिष और सप का भी दूर होजावेगा।

अन्य—विच्छू के काटे हुये पर उसका मलना गुणदायक है।

अन्य—मदार का दूध विच्छू के घावपर मले।

अन्य—मक्खी का बिच्छू के घावपर मलना गुणकारी है।

अन्य—लहसुन सूखा और असचूर पीस कर घाव पर लेप करे।

अन्य—समन्दरफल पीसकर लेप करे।

अन्य—मुश्की घोड़े का नाखून पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—नौसादर, सुहागा, चूने की कली बराबर हथेली पर मलकर सूँघे और कसौंदी का फल भूनकर खावे और कसौंदीके बीज पीसकर लेप करे।

अन्य—मोर का पर चिलम में रखकर तम्बाकू के तौर पर पिये।

अन्य—चूहे की मेंगनी लेप करे।

अन्य—सज्जी महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करे।

अन्य—पलाशपापड़ा पानी में पीसकर घावपर लगावें।

अमल—खैरुलतिजारबमें बिच्छू के विषके दूरकरने के वास्ते लिखा है कि बीस अंक उल्टे गिने अर्थात् बीस से प्रारम्भ और एक पर पूर्णकरे विच्छू का विष दूर होजावेगा।

अन्य–अशनान और अजवाइन औटाकर घाव पर तरेड़ा दे।

अन्य–बिच्छू के विष को गुणदायक–मूली नोन में मिला कर घाव पर रक्खे जो मूली बिच्छू पर रक्खे मर जावे।

अन्य–हरताल, हींग, साठी के चावल पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य–बिच्छू के डंक की पीड़ा को गुणदायक है–भंग के बीज कूटकर मोम में मिलाकर खावे।

अन्य–घासकी पत्ती घी के साथ पीसकर घावपर मले।

✓अन्य–नींबू का रस डंक के घावपर खूब मले।

अन्य–नागरमोथा बिच्छू के जहर के दूर करने के वास्ते पीना और लगाना गुणकारी है।

✓अन्य–मांजिज में लिखा है कि एक मनुष्यके शरीर में बिच्छू ने चालीस जगह काटा उसने शीघ्रही दो टंक इन्द्रायण का हराफल खालिया उसी समय आराम हो गया।

अन्य–जो बिच्छू किसी जगह जलावे उस जगह से और बिच्छू भागजावे।

अन्य–हींग, हरताल, तुरंज को पीसकर गोलियां बनावे जिस जगह बिच्छू ने काटा हो लेप करे।

अन्य–प्याज का जीरा मले और थोड़ा गुड़ खावे।

अन्य–मोम जलाकर बिच्छू के घाव में उसकी धूनी दे। अच्छा होजावे।

अन्य–विषखपरे के पत्ते और डाली चरचरे के साथ मिला कर मले।

अन्य–कोंच के बीज छीलकर बिच्छू के डंक पर मले।

अन्य–गोबरौले कीड़े को जो गोबर में पैदा होता है बिच्छू के घाव पर मलना गुणदायक है।

भिड़ के विष की गुणदायक दवायें।

ईसबगोल सिरके में डाल कर लुआब निकाल कर पिये।

अन्य–भिड़ के डंक को गुणकारक–तीन हथेली भर धनियां खावे।

अन्य–काई सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य–खतमी और खुब्बाजी का लुआब मले।

अन्य–मक्खी डंक की जगह पर मले।

अन्य–शहद खावे और लेप करे।

अन्य–मकोय की पत्ती सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य–घी इक्कीस बेर धोकर लगावे।

अन्य–अंग को दो तीन बेर गरम पानी से धोवे।

अन्य–हरे धनियें का रस सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कपूर सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य–भिड़ के छत्ते की मिट्टी लेप करे।

अन्य–तिल सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य–गन्धक पीसकर लेप करे।

अन्य–जिसको भिड़ काटे वह अपनी जिह्वा पकड़ ले डंक के दुःख से बच जावे।

अन्य–नया गोबर लगावे।

अन्य–जिस जगह गन्धक या लहसुन जलावे उसकी गंध से भिड़ भागती है।

औषध–छिपकली के काटने का तेल और खाल मले और पानी में भूसी औटाकर गरम तरेड़ा दे।

दीवाने कुत्ते का यत्न।

जिस मनुष्य को बावला कुत्ता काटे थोड़ी देर के पीछे उस मनुष्य को एक दशा उन्माद की रीति पर हो जाती है जब इस दशा में जियादती हो जीने की आशा नहीं इसके यत्न में देर न करे और चालीस दिन तक घाव को भरने न दे और सींगियों से खूब चूसे और घाव के गिर्द पछने लगावे और लहसुन सिरके में पीसकर लेप करे और हवा की सरदी

से पथ्य करे और जब कुत्ते का काटा हुआ पानी से डरे जीने की आशा नहीं।

औषध—एक तोला भर लसोड़े की पत्ती पंद्रह कालीमिरच के साथ पीस छानकर पिलावे कुत्ते के काटे हुये को आश्चर्यदायक और आजमाई हुई है।

अन्य—प्याज कूटकर शहद में मिलाकर लेप करे कि घाव न भरे।

अन्य—कुचला मनुष्य के मूत्रमें औटाकर पीसकर लेप करे और शराबमें औटाकर छाल दूर करके एकरत्ती हररोज खाया करे या पानीमें औटाकर कूटकर थोड़ा गुड़ मिलाकर खावे।

अन्य—तीन दाम कड़वीकठ, अधकुचली एक प्याले भर पानी में औटावे जब एक दाम शेष रहे साफ करके पिये।

अन्य—जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के घाव भरे और उसका जहर असर न करे।

औषध—जो कुत्ते काटे हुए को दीवानगी की हालत में भी दे गुण करे—यह दवा आजमाई हुई है जो बरसात में पैदा होती है उसको तलैना भी कहते हैं उसे एक डिबिया में बन्द करके सुखाकर चने की बराबर गुड़ में लपेटकर खावे।

अन्य—अंगूरकी लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये मुख्य गुणकारक है—डाक्टर अंग्रेजी की जबानी लालबनात लेकर चने की बराबर सात टुकड़े करके गुड़ में सात गोलियां बनावे और खावे।

अन्य—पछने लगाने और रुधिर निकालने के पीछे राई कूट कर लेप करे।

अन्य—मदार का दूध घाव पर लगावे।

अन्य—उसी कुत्ते के बाल जिसने काटा हो जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य—कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायक है।

अन्य—मूली के पत्त गरम करके घाव पर रक्खे।

अन्य–चूहे की मेंगनी पीसकर लगावे।

अन्य–सँभालू के पत्तों का लेप गुणकारी है।

अन्य–बाजरे का फूल जो बाजरे की बालीमें होता है एक माशा भर गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर हररोज खावे।

अन्य–दो दाम कलौंजी गुनगुने पानी के साथ तीन दिन फांकना गुणदायक है।

गोली–चूहे के विष को गुणदायक है–सिरस के बीज, नींब के पत्ते, करंजुवे के बीजों की गिरी बराबर के गाय के मूत्र में पीसकर गोलियां बनावे और समय पर रगड़कर लेप करे जो गाय की चरबी घर में जलावे सब चूहे भाग जावें।

औषध–मनुष्य के काटे हुये विषको गुणकारक है–गोभी के पत्ते शहद में पीसकर मले।

औषध–बिल्ली के काटने के जहरको फायदा करे–काले तिल पानीमें पीसकर मले और पुदीना भी खाये और मले।

औषध–कनखजूरे के जहर को गुण करे–मीठा तेल चिराग में जलाये फिर जितना तेल चिराग में रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो मले।

दवा–बन्दर के जहर को गुण करे–मुरदारसंग, नमक पानी में पीसकर मले और कलौंजी और शहद लगावे कि घाव खुला रहे और प्याज पीसकर मलना भी लाभ दे।

अन्य–मच्छरों के दूर करने के लिये लिखा है कि घोड़े की दुम के बाल कोठरी के दरवाजे पर लटकाये मच्छर वहां कम आवें और भूसी, गूगुल, गन्धक और बारासिंगे के सींग की धूनी से मच्छर भागते हैं।

तौलों के नाम और उनका हाल।

तौल का नाम	तौलों का हाल
अवरीक	तिबकी रूसे दो मन और बाजोंने पांच रतिललिखा है।
उरजा	चावल को कहते हैं और उससे चावल छोटा मुराद है कि दो राई के बराबर है।

असनार साढ़े चार मिस्काल और हिन्दी के हिसाब से एक तोला पांच माशा सात रत्ती।

औकिया उसे अदकिया भी कहते हैं साढ़े सात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्ती है।

वाकला आधा दिरम और वाकलाई इस्कंदिरया।

और हाकला नौ कैरात और मिसर के हिसाब से वाकल अड़तालीस जौ के बराबर कि डेढ़ माशा होता है।

परमा दो कैरात।

वंदका कोई एक दिरम और बाजे एक मिस्काल कहते हैं।

वहलोली एकदाम और कइयों ने चौदह माशे लिखा है।

पंसा बारह माशे अर्थात् एक तोला।

टंक चार माशे और बाजोंने चौबीस घुंघुची भर बताया है।

छटांक हिन्दी में सेरके सोलहवें हिस्से को कहते हैं एक छटांक आलमगीरी सेर का चार तोला है।

दाम एकतोला आठमाशा और बाजोंनेलिखा हैकि पक्कादाम एकतोला नौमाशा और कच्चादाम एकतोला दोमाशा।

वांक दवांग } तिब से एक दांग पौने चार रत्ती और शरा से चार रत्ती और पौन चावल।

दिरम तीन माशे और बाजे साढ़े तीन माशे और कोई दो माशे दो रत्ती बतलाते हैं।

दिरहम अड़तालीस जौ भर।

दीनार एक मिस्काल।

रत्ती चार दरमियानी जौ।

रतिल अड़तालीस तोले साढ़े चार माशे होता है।

कैरात सवा चार जौ भर।

माशा आठ रत्ती या बत्तीस जौ या चौंसठ चावल भर।

मिस्काल एकसौ बीस जौ भर है कि तीन माशे छः रत्ती होता है और बाजों ने तीन माशे पौने दो रत्ती लिखा है और शेखउलरईस के हिसाब से बत्तीस जौ भर होता है।

इति इलाजुल्गुरबा भाषा सम्पूर्णम्